"पोषणम् तदनुग्रह", अर्थात् भगवान के अनुग्रह को ही 'पोषण' कहते हैं। भगवान का जीव पर सब से बड़ा अनुग्रह यही है, कि वह उनसे प्रीति करने के योग्य हो। और जब जीव भगवान से प्रीति करने लगता है तभी भगवान उसकी प्रीति से पुष्ट होते हैं। इसी को "पुष्टि मार्ग" कहते हैं।

विश्वपालक केवल 'लाड़' से ही पुष्ट होते हैं जैसा कि ग्रन्थकार का स्वयं कथन है—

"विश्व पालक पलत नन्द वृषभानु घर, अहा अचिरज महामुनिनु यौं उच्चरयौं।
काल हूँ होत भय भीत भृकुटी चढ़त, माइ की संकतें हियो जिनकौ डरयौ॥"

(ला० सा० श्री राधा बाल विनोद पृ० १२)

"धन्य व्रजपति व्रजरानी जिन के सुख पलत अखिल भवन सुख भरन॥"

(ला० सा० विवाह उत्कण्ठा पृ० ६३)

पूज्यपाद श्री१०८ श्री ग्रन्थकार चाचा जी श्री हित वृन्दावनदास जी की जीवनी अन्यत्र "ग्रन्थ एवम् ग्रन्थकर्ता का संक्षिप्त परिचय" के शीर्षक से दी गई है अतः यहाँ विशेष कुछ लिखने की आवश्यकता नहीं है। यद्यपि आपने 'निकुञ्ज' एवम् 'व्रजलीला' दोनों को विस्तार पूर्वक गायन किया है परन्तु तो भी इस ग्रन्थ में प्रायः व्रज सम्बन्धी लीलाओं का ही विशेषतया वर्णन किया गया है। शान्त, दास्य, सख्य, वात्सल्य और मधुर पांचो प्रकार के लाड़ों से लाल ललना को लड़ाया है। शान्त रस के तो उपासक ऋषि मुनि महात्मा हैं जो समय समय पर श्री नन्द वृषभानु के घर आकर अपने आशीर्वादों से लड़ाते हैं—
"रानी तेरो चिरजीवो गोपाल।" अन्य रसवालों का तो कहना ही क्या है—
"श्रीराधा व्रजपति सुवन दुहुँ दिसि लाड़ अछेह। जिनपर गोपी गोप सब बरषत हितकौ मेह॥"

(ला० सा० श्री कृष्ण सगाई पृ० ८४)

यद्यपि आपने इस ग्रन्थ में श्री प्रिया प्रीतम को, बाल, पौगण्ड, किशोर सभी अवस्थाओं के लाड़ों से दुलराया है तो भी किशोर लीलाओं--विवाह, गौनाचार आदि का वर्णन अधिकतर किया गया है। इसके भी तीन हेतु है—

(१) किशोर में ही पूर्ण लाड़ की परिसमाप्ति है।

(२) उत्साह, उमंग, चाव, चौंप आदि लाड़ के प्राण हैं। यह सब अंग विवाह में ही पूर्णतया चरितार्थ हो सकते हैं।

(३) प्रथम मिलन के अधिक सुख के वर्णन करने के आशय को "गौनाचार" के लाड़ द्वारा वर्णन किया गया है।

श्री ग्रन्थकार श्री हित पद्धति अनुसार श्री नन्दगाँव बरसाने के नाते सम्बन्ध को लेकर ही भजन करने की आज्ञा करते हैं—

"रस रसकनि हित विस्तरन प्रगटे साँवल गौर। या रस विनु दूजौ कहाँ हो रसिकनि कौं ठौर॥
वार वार दुलराइये हित पद्धति अनुसार। जो नातौ तजि कैं भजै तौ छानतु है छार॥
बरसाने नँदगाम कौ नातौ सजन अनादि। इहि तजि भजै जो आनविधि रसिक कहावै बादि॥
सुख अनंत नाते सहित दुलरावै बहु भाइ। नाते बिनु जैसें सिता चाबै धूरि मिलाइ॥

है अनादि दोऊ धन धनी विदित तात पुनि मात। नाते बिनु नीरस जु कवि कयौं भाषत मुख बात ॥
नाते लाड़ जु बरनते बली प्रेम हिय होइ। कुकवि पिटभरा खात खरि स्वाद तसमई खोइ ॥"
(ला० मा० यशुमति मोद प्रकाश पृ० ३१४)

ग्रन्थकार के सभी प्रस्तुत विषयों पर विवेचनात्मक स्पष्टीकरण करनेमे 'भूमिका' का कलेवर अधिक बढ़ जायगा अतः इस विषय को ग्रन्थकार के ही आशीर्वादात्मक शब्दों में समाप्त करते हैं।

"श्रवण कथन वेली ललित उपजै उर अनुराग। वृन्दावन हितरूप वलि भक्ति जगमगै भाग ॥"
(ला० सा० श्री कृष्णमगाई पृ० ६६)

निम्नलिखित सभी महानुभावों ने परोक्ष अथवा अपरोक्ष जिस किसी रूप में इस ग्रन्थ के प्रकाशन में सहायता दी है मैं उस सम्बन्ध में संक्षिप्त वर्णन एवम् कृतज्ञता ज्ञापन करता हूँ।

मैं कई वर्षों से इस ग्रन्थ के प्रकाशन कराने का विचार स्वयं कर रहा था परन्तु कई कारणों से यह कार्य सम्पन्न नहीं हो पारहा था। इधर मेरे बुआ के सुपुत्र भाई साधुरामजी (मालिक फर्म ला० जुगल किशोर काशीराम रोहतक) जो यहां बहुतबार आते जाते रहते हैं। उन्होंने इस ग्रन्थको देखकर यह इच्छा प्रकट की कि यह सेवा मेरी ओर से होजाय तो अच्छा है। मैंने इसे सहर्ष स्वीकार किया, इसलिये इसके प्रकाशन कराने का परम सौभाग्य उन्हीं को प्राप्त हुआ है। इसके लिये उन्हीं को बधाई दी जाती है।

श्री १०८ पूज्यपाद श्री गो० हितानन्द जी, श्री १०८ पूज्यपाद श्री गो० रूपलाल जी अधिकारी तथा श्री १०८ पूज्यपाद श्री गो० ललिताचरण जी बी. ए. एल. एल. बी. इन महानुभावों की सहायता के बिना इस ग्रन्थ का प्रकाशन होना कठिन ही नहीं वरन एक प्रकार से असम्भव था। परन्तु आप सभी ने अपने हस्तलिखित अमूल्य ग्रन्थों को दीर्घकाल तक प्रयोग करने की छूट देकर तथा समय समय पर अपनी बहु मूल्य सम्मतियाँ देकर इस ग्रन्थ का प्रकाशन कार्य सुलभ एवम् सम्पन्न कराया, अतः मैं इन तीनों का कृपा प्रसाद मनाता हुआ श्रद्धा पूर्वक इन के चरण कमलों में अभिवादन करता हूँ।

प्रूफ संशोधन कार्य के लिए अपना अमूल्य समय प्रदान कर तथा 'ग्रन्थकार और ग्रन्थकारका संक्षिप्त परिचय' लिख कर देनेका कार्य करके श्री बाबा जी महाराज श्री किशोरीशरण जी 'अली' ने बड़ी कृपा की है तथा श्री बाबा जी महाराज श्री ध्रुवअली शरण जी ने भी काफी सहयोग दिया है अतः दोनों महानुभावोंके चरणोंमें कृतज्ञता ज्ञापन करता हुआ मैं सविनय दण्डवत प्रणाम करता हूँ। इसी प्रकार लाला प्रभुदयाल जी ने अपना हस्तलिखित ग्रन्थ देकर बड़ी कृपा की है अतः मैं आपका कृतज्ञ हूँ। श्री गोपाल प्रसाद जी पुरोहित ने प्रूफ संशोधन कार्य में जिस लगन एवम् क्रियाशीलता का परिचय दिया है वह प्रशंसनीय है। पं० श्री लल्लनजी मिश्र अध्यक्ष प्रकाशन विभाग प्रेमधाम तथा अन्य जिन महानुभावों ने सहायता दी है,मैं उन सभी का कृतज्ञ एवं आभारी हूँ।

यद्यपि ग्रन्थ के संशोधन का कार्य बहुत सावधानी से किया गया है परन्तु फिर भी बहुत सी त्रुटियों का रह जाना सम्भव है अतः पाठकगण उन दोषों के लिए क्षमा करेंगे।

विनीत—
रतलाल वेरीवाला

॥ श्री हित ॥

ग्रन्थ एवं ग्रन्थकर्त्ता का संक्षिप्त परिचय

इस ग्रन्थ के कर्त्ता चाचा श्री हित वृन्दावन दासजी श्री श्रीराधावल्लभीय सम्प्रदाय के प्रसिद्ध महात्मा एवं यशस्वी वाणीकार हैं। श्री राधावल्लभीय सम्प्रदाय अपने वाणी साहित्य के लिये प्रसिद्ध है।

हृदय में प्रेम का उदय होने पर गान का प्रादुर्भाव होता है और प्रेम के अनन्त गुणों का गान ही 'वाणी' कहलाता है। जो प्रेम की कृपा प्राप्त कर सके हैं उन्होंने मुक्त कंठ से उसका गान किया है। चाचा श्री हित वृन्दावन दास जी को श्री गुरु कृपा से अल्प वय ही में यह कृपा प्राप्त हो गई थी और तभी से उन्होंने वाणी गान प्रारम्भ कर दिया था। एकबार प्रारम्भ होकर यह गान उनके सुदीर्घ जीवनकाल में बराबर चलता रहा और इसके द्वारा एक बहुत विपुल साहित्य की सृजना होगई। चाचाजी के प्राप्त साहित्य की पद संख्या लगभग एक लाख के है जो कि नई खोज के साथ बराबर बढ़ रही है। मेरी समझ में ब्रज साहित्य के इतिहास में इतनी संख्या में रचना करने वाले सर्व प्रथम चाचाजी ही हैं।

इन्होंने परम्परागत विषयों पर तो विपुल रचना की ही है, रसास्वाद के नये प्रकारों के आविष्कार में भी इनकी प्रतिभा ने बड़ा काम किया है। श्री सूरदासजी ने श्री कृष्ण की बाल लीलाओं को मानवीय जीवन के अधिक से अधिक निकट लाकर उसको परम आस्वाद्य बना दिया है तो चाचाजी ने श्री कृष्ण-राध्या श्री राधा जी की बाल लीलाओं की अभूत और अभिनव रस सुधा का वितरण किया है और प्रेम की शृङ्गारमयी लीला को साधारण जीवन की मधुर अनुभूतियों के साथ मिला कर उसको सुगम एवं सुबोध बनाया है। 'लाड़ सागर' इसका उत्तम उदाहरण है इसमें प्रधानतया श्री वृषभानुनन्दनी एवं नन्द-नन्दन के विवाह का वर्णन है जो लोक में प्रचलित विवाह की रीति से किया गया है। लोक में प्रचलित वैवाहिक रीति स्वयं आकर्षक एवं रसमयी है, प्रेम स्वरूप श्री श्यामाश्याम एवं उनके नित्यपरिकर के द्वारा अंगीकृत होकर तो यह रीति परम प्रेम का धाम बन गई है। साधारण सहृदय व्यक्ति भी इसके द्वारा एक क्षण में परम प्रेम की झाँकी पा जाता है। इसीलिये पिछले १५० वर्षों से यह ग्रन्थ प्रेमी जनों के हृदय का हार बना हुआ है।

"मिश्र बन्धु विनोद" में चाचाजीका जन्म सम्बत् १७७०वि०और "ब्रज माधुरी सार" में सं० १७६५ दिया हुआ है। किन्तु इनकी वाणी के अनुशीलन से वह सं० १७४४ अथवा इसके पूर्व ही सिद्ध होता है। इनकी अब तक उपलब्ध रचनाओं में अन्तिम रचना सं० १८४४ की है। सं० १८३५ तथा १८३६ की रचनाओं में इन्होंने अपने को अत्यन्त जराग्रसित एवं चलने फिरने में असमर्थ बतलाया है (देखिये आर्त पत्रिका) अन्यत्र इन्होंने यह कहा है कि मेरे अधिक जीने से लोग ऊबसे गये हैं और अनेक लोग मेरा 'उठ जाना' चाहते हैं।

> थोरे दिन रहै पाहुनो प्रीति करै सब कोइ। मचलि रहै घर बहुत दिन न्याइ निरादर होइ।
> एक बिचारै राखिवौ बहुत चहैं उठि जाइ। न्याइ बटोही बापुरो मन ही मन पछिताइ॥
>
> (इष्ट मिलन उत्कण्ठा वेली)

इससे यह सिद्ध होता है कि चाचा जी को पूर्ण आयु प्राप्त हुई थी और इनकी १०० वर्ष की आयु मानकर हमने इनका उपरोक्त जन्म काल निर्धारित किया है।

चाचाजी जन्म से ब्रजवासी थे "जन्म ते सेई जु ब्रजरज अब हियौं अकुलाइ"
(आर्त्त पत्रिका)

किन्तु ब्रजके किस ग्राम या नगरमें इनका जन्म हुआ इसका पता नहीं चलता। 'मिश्र बन्धु विनोद' में इन्हें ब्राह्मण और 'ब्रजमाधुरी' सार में गौड़ ब्राह्मण लिखा गया है,किन्तु इसके आधार का कोई उल्लेख नहीं दिया है। श्री हितदास जी, श्री गो० चन्द्रलाल जी और श्री गोविन्द अली जी ने इनके परिचयात्मक छप्पै लिखे हैं किन्तु इनकी जाति के सम्बन्ध में उनमें भी कुछ संकेत नहीं है। चाचाजी की वाणियों से कुछ ऐसे अस्पष्ट संकेत अवश्य मिलते हैं जिनसे उनका ब्राह्मण होना ज्ञात होता है।

इनका शैशव कष्ट के साथ व्यतीत हुआ था और यह अपनी माता या पिता के साथ छोटी अवस्था ही में वृन्दावन आगये थे, यहीं पर इनकी शिक्षा दीक्षा भी सम्पन्न हुई।

श्री हित महाप्रभु का तृतीय अवतार माने जाने वाले समर्थ रसिक एवं वाणीकार गो० श्री हितरूप लाल जी महाराज इनके गुरु थे। गुरु चरणों में इनकी अगाध श्रद्धा थी। अपने प्रत्येक पद में इन्होंने श्री हितरूप को बड़े प्रेम और श्रद्धा के साथ स्मरण किया है। इन्होंने अपनी छाप ही "वृन्दावन हितरूप" बनाली थी। और सर्वत्र इसका ही प्रयोग करते थे।

चाचाजी ने बहुत दिनों तक गृहस्थाश्रम में रहकर अंत में सं० १८०१ में विरक्त वेष ले लिया था सं० १८१३ तक अखण्ड वृन्दावन वास कर फिर भरतपुर नरेश कृष्णगढ़ नरेश आदि आदि श्रद्धालुओं के राज्यों को पवित्र किया। फर्रुखाबाद तथा दीरघपुर को भी आपने पवित्र किया। कोसी तथा कामवन में कुछ दिन निवास करके ब्रज चौरासी कोसमें भ्रमण करते रहे और सं० १८३६ में कृष्णगढ़ से आने के बाद अन्त समय तक श्री वृन्दावन में ही निवास किया। सं० १८५०-५१ के आस पास श्री सेवाकुञ्ज में समाज सुनते सुनते अन्तर्धान होगये।

चाचाजी उच्चकोटि के कवि एवं रससिद्ध महात्मा थे, वाणी का एक प्रवाह सा इनके मुख से निकलता रहता था, यह जिस विषय का भी गान करते थे जी भरकर करते थे। सरल ब्रजभाषा में प्रेम के गहन रूपों का सुन्दरतम वर्णन इनकी वाणी की विशेषता है। लीला गान के अतिरिक्त इन्होंने इतिहास ग्रन्थों उपदेशात्मक पद्यों के सृजन के साथ पुराणों के सुन्दर अंगों के अनुवाद भी किये हैं। इनका बहुत अधिक साहित्य अप्रकाशित है। इनकी वाणी का बहुत ही छोटा अंश प्रकाशित हो पाया है। प्रस्तुत ग्रन्थ के प्रकाशक का यह पुन्य प्रकाशन कार्य सर्वथा अभिनन्दनीय और स्तुत्य है। ब्रज साहित्य का सागर अगाध और असीम है उसमें आज भी कितने ही अमूल्य रत्न छिपे पड़े हैं। "साहित्य रत्नावली" ग्रन्थ में इनके रचित ग्रन्थों की संख्या १४८ दी गई है जिनमें इनके रचित ७ सागरों की संख्या भी सम्मिलित है।

हमें आशा है कि भक्त हृदय लाला रतनलाल जी को पुण्य प्रेरणा के फल स्वरूप ला० साधुराम जी के इस प्रकाशन से रसिक जगत को एक अद्भुतानन्द, साहित्यिक जगत को एक अद्भुत वस्तु और प्रकाशक जगत को एक अद्भुत क्षेत्र की उपलब्धि होगी. अतः इसका सम्पूर्ण श्रेय लाला रतनलाल जी तथा ला० साधुरामजी को ही है। अतः उनको हार्दिक धन्यवाद देते हुये इस लेख को समाप्त करते हैं।

—किशोरीशरण 'अली'

श्री लाड़ सागर की विषय-सूची

* श्री राधावल्लभो जयति *

* श्री हित हरिवंशचन्द्रो जयति *

श्री लाड़ सागर

श्री राधा वाल विनोद

राग रामकली–पद १

प्रणऊँ श्री मुरलिका अवतार। व्यास द्विजवर कुल धरयौ वपु कह्यौ मथि श्रुति सार ॥ तव अरंभ्यौ रास अव कियौ जगत पर उपकार। महाँ दुर्ल्लभ रस चितायौ गौरश्याम विहार ॥ शरनि नौका सुदृढ़ गहि तरि गये भव निधि पार। महत महिमा कहन कौं नहिं वनत बुद्धि विचार ॥ जुगल सेवन भाव अलि कियौ सुमति रस विस्तार। श्रीराधा पदपद्मभौंरी भ्रमति वारंवार ॥ श्याम हू आधीन जाकें छिनक तजत न लार। उच्च पद दरसाय मेट्यौ सकल जग भ्रम जार ॥ नंद सुत वृपभानु तनया चरित किये प्रचार। वृन्दावन हितरूप को अस भजन रस दातार ॥

राग रामकली–पद २

देखो प्रात कौतुक एह। पौढ़ीं कीरति अंक राधा रह्यौ जगमगि गेह ॥ वदन ससि तें सतगुनौं वाढ़त जु छिन छिन तेह। जगि जगि रानी वहुरि पौढ़ति राति करि संदेह ॥ कुँवरि अंचल गहि कहति मैया वचन सुनि लेह। नसि गयौ निशि तिमिर है गयौ भोर लाड़ू देह ॥ सुखित सुनि जननी भई

वरष्यौ अमी मनु मेह । वृन्दावन हितरूप अंक लगाइ भीजत नेह ॥

राग रामकली–पद ३

गाढ़ो दही दै री माइ । भोर लागी भूख श्रीराधा कहति तुतराइ ॥ नींद वस कीरति जु अतिलड़ि मचलि देति जगाइ । मोहि लैकैं अंक मैया भली वेगि जिमाइ ॥ श्रीदामाँ जगिहे चपल तो जाइगो डहकाइ । चिबुक गहिकैं कुवँरि ठिनकति उठि आलसहिं गँवाइ ॥ लली मुख के चाँदने नहि प्रात जान्यौ जाइ । वहुत निसि यों कहति रानी लेति अंक लगाइ ॥ वेटी चंद प्रकाश अवहीं उठी कहा वराइ । वंधु तें जिनि डरै प्याऊँ दही तोहि अघाइ ॥ चिरैयाँ चुहकति जु जननी सुनें किन चितलाइ । वावा सों कहिहौं खिजावति मोहि राति वताइ ॥ नींद अहुराई उठी रानी तबै अकुलाइ । नैंन पूरित वारि चूँवति वदन पुनि पछिताइ ॥ नीर मुख जु प्रछाल लाई दही सिता मिलाइ । लाड़ भींजति हिये अपने कर जु पान कराइ ॥ वहुरि मठरी रस पगी दई हांथ कुँवरि गहाइ । अजिर खेलौ वैठि जननी भूरि लेति वलाइ ॥ नूपुरनि धुनि होति मृदु मृदु चरन धरति उठाइ । शोभा कौ विरवा मनों यह पवन झोका खाइ ॥ भान घरनी ओट ह्वैकैं निरखि परम सिहाइ । वृन्दावन हितरूप जैसें रंक थाती पाइ ॥

राग रामकली–पद ४

मैया घैया काढ़ि पिवाइ । खिरक तें वावा जु लाये अवहि गाइ दुहाइ ॥ करन दैउँ न काम घर कौ कहा वकावति मोहि । रई गहि ठाढ़ी भई देउँ न विलोवन तोहि ॥ अरी राधा भली वेटी तनिक धरि मन धीर । उठत माँखन मागि है श्रीदाम तेरौ वीर ॥ मचलि माँगन की जु शोभा निरखि कीरति नैंन । प्रेम कीनी धावरी मुखतें न निसरत वैन ॥ गहे अंचल कहति अतिलड़ि देह मैया देह । वहुरि मैया जागिहै धमतूर माँचै ग्रेह ॥ कटोरा लुढ़काइ दैहै लै भजैगो कोर । तूं जु हर हर हँसैगी चलि है न वल कछु ओर ॥ अरी वेटी वहिन भैया मिलि जिमाऊँ साथ । वहुत घैया काढ़ि प्याऊँ आपनें ही हाथ ॥ छाड़ि दै कर रई अव मोहि करन दै घर काज ।

वृन्दावन हित रूप तौ लौं खेलि सखिनु समाज ॥

राग रामकली–पद ५

मैया को नंदीश्वर राइ। कौंन ताकी घरनि मोकौं देहि नाम बताइ ॥ हौं गई ही बाग खेलन सखिनु मिलि समुदाइ। एक आई नारि उत तें लै चली बहकाइ ॥ गोद भरि मेवा जु दैहै नये पट पहिराइ। कही हँसि हँसि बात ऐसें सबै लई बौराइ ॥ घोष की रानी बड़ी ताकौं मिलाऊँ जाइ। करै तुमसों प्रीति अधिकी जैसें कीरति माइ ॥ गोद लै कें बैठि है पुनि पुनि जु लेहि बलाइ। सुनत राधा नाम सब पुर वधू आवैं धाइ ॥ जो रुचै तुमकौं खिलौंना सोई देहि मँगाइ। बहुरि घर करि जाउँगी अब धरौ इतकौं पाँइ ॥ ऐसें कहिकें उनि जु सबहीं लईं संग लगाइ। गई बट संकेत चोटी कुसुम रची बनाइ ॥ वह जु मन फूले अधिक ही डरयौ सौ कछु पाइ। तब ललिता चेती कही कछु बात सहज सुभाइ ॥ कौंन नातौ गाम काके चली धाम सिहाइ। मोहि ठगनी सी लगति मारग मिली यह आइ ॥ पट भूषण सबके जु लैहै यौं दई डरपाइ। बरसानें की ओर तब आईं जु सबहिं पलाइ ॥ रानी को ही भाम वह मो सों जु कहि समुझाइ। जो तू मानै झूँठ तो सब सखिनु बूझि बुलाइ ॥ अतिलड़ि की सुनि बात कीरति चितई मृदु मुसिकाइ। ललिता कौं लै अंक चूंबति वदन अधिक लड़ाइ ॥ बेटी राधा बहिन कौं चातुरी तू जु सिखाइ। लली की सुनि बात जननी नाहिं श्रवन अघाइ ॥ भेद भाव जु सजन घर को कहत मन जु सकाइ। वृन्दावन हितरूप सुख के सिंधु में मन न्हाइ ॥

राग रामकली–पद ६

घैया काढ़ि मैया दियौ। कनक के भरि भरि कटोरा धापि अतिलड़ि पियौ॥ श्रीदामा जाग्यौ जु तबही अधिक ऊधम कियौ। कुवँरि भाजन डारि अंचल मात कौ गहि लियौ ॥ अरी राधा डरी क्यों भैया न तोकौं छियौ। लोल लोचन सुता के लखि प्रेम लरज्यौ हियौ ॥ कौंन तें भई भीत बेटी ह्याँ

न कोऊ वियौ। वृन्दावन हितरूप देत असीस तुम चिरजियौ॥

राग रामकली–पद ७

रानी मुख सुता कौ चहति। सुधा सिंधु न पार पावै समुझि मौंगी रहति॥ वारि राई लौंन चटकति आँगुरी कर गहति। भाग्य महिमा फली अपनें मनहिं मन सो कहति॥ जाग्रत कै यह सुपन सुख के गहर में मति वहति। विधि कौ कृत्य विचारि कृपा अगाध लाहौ लहति॥ सुता कै धौं प्रान थाती छिनु न अंतर सहति। वृन्दावन हित रूप राधा देखि रति दुख दहति॥

राग रामकली–पद ८

मैया गुड़िया देहि वनाइ। जिनकौ सुन्दर रूप भूषन वसन दे पहराइ॥ सुघर सोनी नगर में ताकौं जु लेय वुलाइ। कनक चौकी करै निर्मित रतन विविधि जराइ॥ जरी तारन के जु अंवर ते विचित्र विछाइ। तापै पुनि गुड़िया जु गुड़रा मो हाँथन वैठाइ॥ व्याह मंगल रचौं सामा सवहि देहि सजाइ। ललितादिक साथिनि जु मेरी तिनहिं वोलि गवाइ॥ पाक उज्ज्वल करौ रानी सादर सखिनु जिमाइ। विविधि वाजे वाजनैं मंगल भवन दरसाइ॥ सवै विधि तव करी रानी कुवँरि भलौ मनाइ। वृन्दावन हित रूप मधुरे वैंन सुनत सिहाइ॥

राग विलावल–पद ९

रानी तेरी पौरि पै इक भिक्षुक आयौ। मोहि देखि विरम्यौ कछु दृग जल ढरकायौ॥ राधा राधा नाम रुचि रसना सरसायौ। मैया तेरे भाग कौं कछु अधिक मल्हायौ॥ वावा कौ परताप अति कहि सीस डुलायौ। काहू सौं जाचै नहीं उर प्रेम घुमायौ॥ इत उत दृष्टि दुराइकैं द्वारें सिर नायौ। काँधे वाके जंत्र हो मधुरे जु वजायौ॥ ताकि ताकि मो चरन दिसि वह अति वौरायौ। वार वार फेरी जु लै तन कंप जनायौ॥ हौं ठाड़ी ही सखिनु में मोहि निकट वुलायौ। पुनि पुनि लै लै वारनैं आनंद वढ़ायौ॥ लोटि गयौ

तब भूमि पै तन रज लपटायौ। परिदछिना करि सबनि की पाछें कौं धायौ ॥ हम टेरति फेरति रहीं उनि सुनि बहरायौ। मैया वाके नाम कौं काहू न बतायौ ॥ भाग बली मेरी लाड़िली काहे न विरमायौ। मो दिसि सखी पठाइकें तैं क्यों न सुनायौ॥ देती रतननि थार भरि अरु वा मन भायौ। भिच्छुक खाली फिरि गयौ सुनि हिय अकुलायौ॥ अस आयौ तो जनम दिन मोहि बहुत बितायौ। परचौ वाके बचन कौ मैं सबही पायौ॥ नारद नाम विरंचि सुत जग विदित कहायौ। मैं पहिचान्यौं बुद्धिसों तैं लच्छण गायौ॥ तू न दूध पीवत हुती तब हाथ दिवायौ। यह गंडा तेरे गरें उनहीं पहिरायौ॥ ता दिन तैं डरपी न तू अति सुख अधिकायौ। अति हित तेरे तात सों तोहि देखि सिहायौ॥ जननी उन किहिं कारनें दृग नीर बहायौ। हौं जु सत्य करि मानिहौं तेरौ समुझायौ॥ कीरति जू पुचकारि कें प्यारी उर लायौ। वृन्दावन हितरूप बलि वाकौ प्रेम जतायौ॥

राग विलावल–पद १०

अरी राधा तो जनमते मो घर भयौ तीरथ। खोजत आवैं महामुनि तो तात नगर पथ॥ कोऊ कहे सुता सुलच्छणी कोऊ कहे निगम गथ। महरि सगाई हित बढ़े नित नये मनोरथ॥ मैं पूरव सुकृत लुन्यौं दीयौ जो अपुहथ। वृन्दावन हितरूप फल दियौ दई जथारथ॥

राग विलावल–पद ११

राधा मेरी कुल मणी जाकी लोक बड़ाई। और न कोऊ उहि घड़ी जग जननी जाई॥ नवग्रह विधिना दाहिनों शुभ लगन महाई। मूरति शोभा लाड़िली दृग आगें आई॥ नर नारी करैं न्याइ हित को अचिरज माई। विनु देखें शुक सारिकनि हिय अति अकुलाई॥ मुनि ज्ञानी रूखे महा तन सुधि बिसराई। तेऊ देखन आवहीं रहे भीर सदाई॥ तात सुकृत सागर जु सम जाकी थाह न पाई। मो दृग शीतल करन कूँ तन अमित निकाई॥ खेलति अजिर सखीनु की मंडली बनाई। वे उड़गन यह राजहीं ससि सम

सुखदाई ॥ बरसानों निर्मल गगन जहाँ ओप बड़ाई । मिठबोलनि अमृत श्रवति सबके मन भाई ॥ लाड़नि की अभिलाष बहु नहिं उर जु समाई । करिहों लाइक भूपकें इहि कुँवरि सगाई ॥ ब्याह चाह हीयें बढ़े दिन दिन जु सवाई । वृन्दावन हितरूप की दिन जात लगाई ॥

राग बिलावल–पद १२

मैया मैया लै गयौ मो सी गुड़िया मेरी । वह सुंदर ही सवनि में मोहि सौंह जु तेरी ॥ भोजन तबही करौंगी लै देहै एरी । ना जानौं इहि चपल नें किहिं ठौर बगेरी ॥ बेटी प्यारे वीर सों चोरी अरभेरी । ऐसी अरबी जिन करौ अब भई बड़ेरी ॥ गुड़ियनि कौ मंदिर तहां यह देत हौ फेरी । आइ देखि हरहर हँसत ठाड़ौ मो नेरी ॥ बेटा बहिनि खिजावनें तें कुमति सकेरी । कहाँ धरी अब लाइदे सुनि सीख सबेरी॥ हौं पीवत हो दूध इन दियौ भाजन गेरी । मैं याकी गुड़िया हरी अब कहतु हौं टेरी ॥ रानी लिये पुचकारि उर बरषी सुख ढेरी । वृन्दावन हितरूप यह कही लाड़ पहेरी ॥

राग भैरो तालभप–पद १३

मैया उठि भोर भयौ दधि बिलोइ री । बीते सब जाम राति पीरीपह होति जाति वदन खोल देख लेहि अब न सोइ री ॥ बार बार कहति तोहि माखन दै काढ़ि मोहि सुनति नहीं रानी रही नींद भोइ री । ऐसें कहि अंचल गहि ठोड़ी भकभोरति है रई औ बिलोवनी लै नीर धोइ री ॥ मोकों पौ परी सूझि माँगी रही सहज बूझि आलस में दहल रही दृग लुकोइ री । बाछरू जु मेलि दये बाबा उठि खिरक गये मोहि लगी भूख तू न चेत होइ री ॥ दूध के जु भाजन लै ग्वाल भवन आये हैं मानैं जो न बात तौ तू नैंन जोइ री । प्रान हू तें प्यारी मोहि कहति रहति द्यौस राति मानति हौं झूठ देखी उर टटोइ री ॥ कीरति हँसिलई अंक निरखति है मुख मयंक लली लाड़ माँहि प्रेम उर समोइ री । बलि बलि वृन्दावन हितरूप धन्य जनम मानि कुवँरि कौं जिमाइ प्याइ अमी तोइ री ॥

राग भैरो झपताल–पद १४

कीरति जागी जु भोर निरखि सुता वदन ओर आनँद के सिंधु माँहि मगन अति भई। शोभा बाढ़ी मयूप त्यौंहीं बढ़ी दृगनि भूख मनहीं मन कहति भयौ दाहिनो दई॥ लोक ओक अवनि माँहि राधा सी लली नाहिं प्रभु की प्रभुता विचारि चरन दिसि नई। सोचति है बार बार डरति आपु डीठि भार करजनि कौं चटकि कैं बलाइ कर लई॥ निशि कौ गयौ तिमिर भाग बेटी अब जाग जाग माखन देउ काढ़ि वेगि डारि दधि रई। जेंवो अब वीर जुता मेरी सुकुमारि सुता दूध नहीं पियौ राति वेगि सोइ गई॥ अंगन तें उठति काँति भवन माहि नाहिं समाति जननी के हियें प्रेम वेलि सी बई। मैया के वचन भनक परी कुवँरि श्रवन तनक बेटी उठि झपत पलक आलस तन छई॥ रवकि लई उर उचाइ शोभित भई इहि जु भाइ ललितलता लगी मनौं मधुर तेज जई। बलि बलि वृन्दावन हितरूप गोप वंश उदित नंद सुवन अह्लादिनि परम रस मई॥

राग भैरो झपताल–पद १५

प्रात भयौ मोदक भरि थार लाइ री। अरी भली हिता माइ झारी लै मुख धुवाइ मीठौ दधि भाजन भरि मोहिं जिमाइ री॥ ललितादिक सखि बुलाइ तिनकौ मंडल बनाइ बैठौं हौं मध्य तू गिरि चरित गाइ री। भाँति भाँति सुख जु पाइ भोजन करि करि अघाइ गोप सुता ढिंग ढिंग बैठारि आइ री॥ इहि विधि कौ सजि समाज करन देउ तबहीं काज आगें तुहि धरन देउ तबहीं पाइ री। सुता वदन ओर चहति हँसि हँसि रानी जु कहति अरवी तजि राधा हौं लेउ बलाइ री॥ प्रान भावँती सुलली सीख मानि लेहु भली माखन कौ लौंदा देउ दधि चलाइ री। जिनि चलाइ रहि री रहि नेंती कर लीनी गहि बाबा कौं टेरति ऊधम मचाइ री॥ वदन कछु अनखति सी हिये में सिहाति माइ रूखे से वचन कहति भ्रुव चढ़ाइ री। मेरौ श्री दामा कुवँर वाही सौं करौं प्रीति तू रहि अब तात संग लेइ लगइ री॥ ससिसो

मुख रोस भरयौ उद्दिम मन और धरयौ दधि कौ भरयौ माँट अवनि दियौ ढुराइ री। वलि वलि वृन्दावन हितरूप परम कौतुक इहि दै कपाट भवन दुरी कुँवरि जाइ री ॥

राग भैरौ तालझप–पद १६

हँसति लसति भान घरनि ललिता सों बूझति है कहाँ कनक तनी वेगि दै वताउ री। फिरतु वह्यौ अजिर दही तदपि हौं सोच रही अतिलड़ि डरि गई भाजि खोजि लाउ री ॥ मैया देखी ज़ु मैं न कहाँ गई मृगज नैंन दामिनि सी कौंधि छिपी कर उपाउ री। वेटी अकुलात हीय देखे विनु कल न जीय मों सों गई रूठि ताहि तू मनाउ री ॥ माँगे सो सो ज़ु दैंउ हिये सों लगाइ लेंउ नैंननि की थाती अवहीं मिलाउ री। डाँटौं नहि वाहि फेरि कहि दे तू टेरि टेरि आउ मान प्यारी मो उर सिराउ री ॥ आई घर घर निहारि बुधि वल सव रही हारि सखिनु शोभ दैंन लली मुख दिखाउ री। मैया उर सवल नेह राधा विनु रुचि न ग्रेह भोजन वार करि हैं सुधि रावल राउ री॥ चंपकलता चित लगाइ खोजि दधि ही भरे पाइ वाही भवन वैठी लखि कह्यौ आउ री। जैसें हेजुवती धेंनु वच्छा दिसि कियौ गैन ऐसें लई उर लगाइ भींजि भाउ री ॥ चूँवति मुख पावति सुख भूलि गयौ सवहीं दुख निधनी धन पाइ ज्यों ज़ु वढ़त चाउ री। वलि वलि वृन्दावन हितरूप कर जिमावति है कुँवरि कहति मैया मंगल गवाउ री ॥

राग रामकली–पद १७

राधा लाड़ मूरति वनी। जदपि काम विगारि भाजति तदपि प्यारी घनी ॥ मेरी सीख न सुनत राखति अर ज़ु मन अपनी। अति हठीली कुँवरि तोसौं पचि रहतिं सव जनी ॥ हौं रहति तकि वदन दिशि हित करत रावल धनी। और कौ समुझाइ है सुनि कुँवरि चंपक तनी ॥ घोष में कन्या जितीं तिनमें मुकट तू मनी। रचति नाना खेल वचन पियूष से श्रवनी ॥ गोप गोपिनु प्रान हू तें अधिक प्यारी गनी। जिहिं घर तू नहिं जाहि ते गनें

वृथा दिन रजनी ॥ श्रवन शीतल होंहिं जब कहै बात तू सुख सनी । को महा मणि कौन छिन भई गोप कुल प्रगटनी ॥ तेरी राति न और जनमीं महा मुनि यों भनी । निरवधि आनँद भानपुर वीथीनु में वरपनी ॥ भूरि मेरो भाग्य तू मिली सुख जु पारस कनी । वृन्दावन हितरूप जियौं निहारि ज्यौं मणि फनी ॥

राग रामकली–पद १८

आई एक नौतन नारि । काहू सौं बातैं करै मो तन जु हाथ पसारि ॥ महरि पठई मोहिं कछु अभिलाप मन में धारि । भान कुल कन्या रतन ताकौं जु आउ निहारि ॥ एक आवति द्वै जु आई बहुरि आई चारि । कान लगि लगि करति चरचा नैन.भींजति वारि ॥ नाम तेरौ लैंहि कहैं बड़ भाग्य यौं जु पुकारि । हौं जु खेलति पौरि पै वे रहीं झुरमुट पारि ॥ एक कर पर कर धरें हँसि जाति पटकति तारि । ललिता उनकौ देखि कौतुक अनखि दीनी गारि ॥ मैया को है महरि सो झगरौ रही बिच डारि । वृन्दावन हितरूप कीरति उर लई पुचकारि ॥

राग रामकली–पद १९

बेटी नंद राजा जहाँ । गाँम वह ऊँचौ नंदीश्वर महरि रानी तहाँ ॥ वह सगाई हेतु सुत प्रमुदित रहति मन महाँ । वर कारौ वरनी जु गोरी वनैं वानिक कहाँ ॥ जननी कैसे होत सगाई हौं समझतु यह नहाँ । वृन्दावन हित-रूप सुनि सब हँसीं लगि गलवहाँ ॥

राग बिलावल–पद २०

कहि मैया रावल कहाँ जहाँ जनम जु मेरौ । चलिकैं मोहिं दिखाइ दै गुन मानौं तेरौ ॥ अरी राधा तो बुद्धि में शारदा वसेरौ । बात बड़ी कहै वैस लघु समुझति जु घनेरौ ॥ रावल पति कहैं तात सौं संदेह निवेरौ । कौन दिशा किहिं ठौर है वह कैसो खेरौ ॥ निकट जहाँ रविजा वहै गोकुल तिंहिं नेरौ । रजधानी तो तात की वह नगर वड़ेरौ ॥ कब मोहिं नैंन दिखाइहै

मुख रोस भरयौ उद्दिम मन और धरयौ दधि को भरयौ मॉट अवनि दियौ ढुराइ री। वलि वलि वृन्दावन हितरूप परम कौतुक इहि दै कपाट भवन दुरी कुँवरि जाइ री ॥

राग भैरो तालझप–पद १६

हँसति लसति भान घरनि ललिता सों बूझति है कहाँ कनक तनी वेगि दै वताउ री। फिरतु वह्यौ अजिर दही तदपि हौं सोत्र रही अतिलड़ि डरि गई भाजि खोजि लाउ री ॥ मैया देखी जु में न कहाँ गई मृगज नैंन दामिनि सी कोंधि छिपी कर उपाउ री। वेटी अकुलात हीय देखे विनु कल न जीय मों सों गई रूठि ताहि तू मनाउ री ॥ माँगै सो सो जु दैंउ हिये सों लगाइ लेंउ नैंननि की थाती अवहीं मिलाउ री। डाँटों नहि वाहि फेरि कहि दै तू टेरि टेरि आउ प्रान प्यारी मो उर सिराउ री ॥ आई घर घर निहारि बुधि वल सव रही हारि सखिनु शोभ दैन लली मुख दिखाउ री। मैया उर सवल नेह राधा विनु रुचि न ग्रेह भोजन वार करि हैं सुधि रावल राउ री॥ चंपकलता चित लगाइ खोजि दधि हीं भरे पाइ वाही भवन वैठी लखि कह्यौ आउ री। जैसें ह्वेजुवती धेंनु वच्छा दिसि कियौ गैन ऐसें लई उर लगाइ भींजि भाउ री ॥ चूँवति मुख पावति सुख भूलि गयौ सवहीं दुख निधनी धन पाइ ज्यों जु वढ़त चाउ री। वलि वलि वृन्दावन हितरूप कर जिमावति है कुँवरि कहति मैया मंगल गवाउ री ॥

राग रामकली–पद १७

राधा लाड़ मूरति वनी। जदपि काम विगारि भाजति तदपि प्यारी घनी ॥ मेरी सीख न सुनत राखति अर जु मन अपनी। अति हठीली कुँवरि तोसों पचि रहतिं सव जनी ॥ हौं रहति तकि वदन दिशि हित करत रावल धनी। और को समुझाइ है सुनि कुँवरि चंपक तनी ॥ घोप में कन्या जितीं तिनमें मुकट तू मनी। रचति नाना खेल वचन पियूप से श्रवनी ॥ गोप गोपिनु प्रान हू तें अधिक प्यारी गनी। जिहिं घर तू नहिं जाहि ते गनैं

वृथा दिन रजनी ॥ श्रवन शीतल होंहिं जब कहै बात तू सुख सनी । को महा मणि कौन छिन भई गोप कुल प्रगटनी ॥ तेरी राति न और जनमीं महा मुनि यों भनी । निरवधि आनँद भानपुर वीथीनु में वरपनी ॥ भूरि मेरो भाग्य तू मिली सुख जु पारस कनी । वृन्दावन हितरूप जियौं निहारि ज्यौं मणि फनी ॥

राग रामकली–पद १८

आई एक नौतन नारि । काहू सौं वातैं करै मो तन जु हाथ पसारि ॥ महरि पठई मोहिं कछु अभिलाप मन में धारि । भान कुल कन्या रतन ताकौं जु आउ निहारि ॥ एक आवति द्वै जु आई बहुरि आई चारि । कान लगि लगि करति चरचा नैंन भींजति वारि ॥ नाम तेरौ लैंहि कहैं बड़ भाग्य यौं जु पुकारि । हौं जु खेलति पौरि पै वे रहीं झुरमुट पारि ॥ एक कर पर कर धरैं हँसि जाति पटकति तारि । ललिता उनकौ देखि कौतुक अनखि दीनी गारि ॥ मैया को है महरि सो झगरौ रही बिच डारि । वृन्दावन हितरूप कीरति उर लई पुचकारि ॥

राग रामकली–पद १६

बेटी नंद राजा जहाँ । गाँम वह ऊँचौ नंदीश्वर महरि रानी तहाँ ॥ वह सगाई हेतु सुत प्रमुदित रहति मन महाँ । वर कारौ वरनी जु गोरी बनैं बानिक कहाँ ॥ जननी कैसे होत सगाई हौं समझतु यह नहाँ । वृन्दावन हित-रूप सुनि सब हँसीं लगि गलवहाँ ॥

राग बिलावल–पद २०

कहि मैया रावल कहाँ जहाँ जनम जु मेरौ । चलिकैं मोहिं दिखाइ दै गुन मानौं तेरौ ॥ अरी राधा तो बुद्धि में शारदा बसेरौ । बात बड़ी कहै बैस लघु समुझति जु घनेरौ ॥ रावल पति कहैं तात सौं संदेह निवेरौ । कौंन दिशा किहिं ठौर है वह कैसो खेरौ ॥ निकट जहाँ रविजा बहै गोकुल तिहिं नेरौ । रजधानी तो तात की वह नगर बड़ेरौ ॥ कब मोहिं नैंन दिखाइहै

चित चलतु दरेरौ । तरनि सुता जल न्हाइये तट कीजे फेरौ ॥ लली वचन सुनि प्रेम नें कियौ उर उरभेरौ । कौंन महाँ मणि औतरी कुल कियौ उजेरौ॥ सखी कहति लगै दीठि जिनि प्यारी मुख तन हेरौ । राई लौंन उतारिकैं लै दूरि वगेरौ ॥ यह सुदृष्टि करै जहाँ तहाँ लक्ष्मी करै डेरौ । वृन्दावन हित रूपनी वरषै सुख ढेरौ ॥

राग भैरौ ताल चर्चरी पद–२१

अहा कौतुक महा गोप वृषभान घर । खेल नाना रचति कुँवरि गौरांग जहाँ किधौं छविलता कै दामिनी कौ निकर ॥ किधौं कीरति सुकृत पुंज दरस्यौ दृगनि किधौं रावल धनी लह्यौ कोऊ भूरि वर । किधौं यह अमी कौ जलद रहै ऊनयौ आठहू पहर लाग्यौ जहाँ विपुल भर ॥ परम आनंद के उदधि में क्रीडहीं सफल जीवन मानि घोष नारी जु नर । देव मुनि चरन आसा जु लागे ललकि कहा कहौं इहाँ रस रूप सबतें जु पर । निगम निर-धार करि रूप नहि कहि सक्यौ काल कौंपतु सदा रहै जाके जु डर । नंद वृषभान के भवन दुरि विचरहीं मानुषी चरित सोई रचित मनोहर ॥ जज्ञ करि भोग अर्पत जु वहु भाइ सौं ते नहीं रुचत प्रभुता अपरिमित जु घर । मचलि कैं ग्रास माँगत जु इतराइ कैं स्वान मंजार लखि डरि लगत माइ गर ॥ सुखित किये दास पुनि सुखित जननी जनक करी कमनीय लीला महा मधुर तर । वृन्दावन हित रूप वंदि दुहुँ पौरि रज दासि सुख रासि अभि-लास भरि हैं सुभर ॥

राग भैरौ ताल चर्चरी पद–२२

जनक जननी जु आनंद वर्द्धन वली । प्रातही चंद सौ वदन जगमगि रह्यौ मातु के अंक तें उठि जु वैठी लली॥ कहति मोहि भूख लागी अधिक श्रवन मुनि कलेऊ देहु मैया जु मेरी भली । वदन तें कवहुँ पट ऐंचिकैं लेति है कवहुँ कर गहि जगावति पटकि पग तली ॥ उच्च सुर करति है रुदन कवहूँ अधिक तू न मानति जु हौं पास वावा चली । ममुभि कैं मौंन कीरति

जु मुख गहि रही परम कौतिक निहारति जु भाग्यनु फली ॥ लकुट लै फोरि भाजन जु दधि कौ दियौ डरपि कैं भगन की आपु ताकति गली । जागि अनुरागि वृषभान घरनी कहति कहा कियौ कुवँरि यह सेत भई भुव थली ॥ तात की गोद में जाइ दुबकी जबहि मात की मानि भय सुता अति अच-पली । हँसति रानी उठी कहाँ गई राधिका कौंन कौतुक कियौ आइ देखौ अली ॥ कहत रावल धनी तुम रुठाई जु क्यों कंठ लपटाइ लई मानि अति रँगरली । वृन्दावन हित रूप बाल लीला ललित कौंन रसना कहौं शारदा मति हली ॥

राग भैंरो ताल चर्चरी पद–२३

अरी मो लली कहि भली कछु बात री । हौं जु प्यारी लगौं बीर श्रीदाम कै कै लगै अधिक प्यारौ जु तुहि तात री ॥ हँसति अति लसति अंचल जु मुख ढाँपिकैं लघु तड़ित शशि मनौं जलद दुरि जातरी । अधिक करि लाड़ बूझति जु पुचकारि पुनि खोलि मुख देति कछु मंद मुसिकातरी ॥ कितौ आनंद उर नैंन को कहि सकै चटकि कर आँगुरी होति बलि मात री । मोहि प्यारे लगत नगर सब बगर के लाज सौं भींजि कछु कुवँरि तुतरात री ॥ हौं न तो व्याह में खरचिहौं दाम अब निपट अरबी करति नेकु न डराति री । एक सम कह्यौ तैं सबनि के लाड़ कौं कौंन सनमानि है सजन जु बरात री ॥ माइ के वदन यह वचन रूखौ सुन्यौ अधिक फरकन लगे गौर सब गात री । वृन्दावन हितरूप कहति पुचकारि कैं प्रान सम लली मोहि सौंह तो भ्रात री ॥

राग भैंरो ताल चर्चरी पद–२४

दुहूँ घर रूप की रहत माँची हई । उतहि ब्रजराज इत गोप वृषभान कैं कुवँर अरु कुवँरि प्रगटित जु जबतें भई ॥ नगर के नारि नर प्रेम भींजे रहैं देव मुनि भीर पौरो रहै नित छई । बाल लीला करैं अति अलोकिक महा सुख जु बरषा रहै जहाँ नित नित नई ॥ अखिल ब्रह्माण्ड कारन जु कमनीय

अति ओटि कर ग्रास मागैं जु अचिरज दई। धन्य वड़ भाग्य श्री महरि कीरति अहा कौंन से सुकृत की लवधि वांछित लई॥ कौंन प्रभुता कहौं घोप के ईश की गाइयै चरित रावलधनी सुख मई। मिटि गयौ तिमिर निमू ल नीरस जगत रस मई वेलि रसिकनि जु हीयें वई॥ गोप कुल दई दरसाय महिमा महत निरखि वेहद जु छवि भूख नैंननि गई। वृन्दावन हितरूप व्रज वह्यौ उदधि रस सवनि पियौ धापि विमुखन जु छाती तई॥

राग भैरो ताल चर्चरी—पद २५

धाम कौ काम कवहूँ न पूरो परयौ। लली अरु लला अंचल न छिन छाँड़हीं रहतु अनुराग जननीनु के हिय भरयौ॥ निगम समुझ्यौ न देख्यौ तनक दृष्टि भरि रूप दुर्लच्छ काहू न निरनौं करयौ। नंद वृपभान कीं घरनि मुख चूँविकैं मचलि कहें गोद लै तवहीं आँकौ भरयौ॥ विश्व पालक पलत नंद वृपभान घर अहा अचिरज महा मुनिनु यौं उचरयौ। काल हूँ होत भय भीत भृकुटी चढ़त माइ की संक तें हियौ जिनकौ डरयौ॥ नहीं विधि नहीं शिव नहीं कमला लह्यौ जलद आनंद सो घोप विनमित झरयौ। जज्ञ के भोग कौं पद्ममनो परिहरयौ माइ कौ ग्रास मुख प्रीति सों आदरयौ॥ रसिक जन हेत कमनी उभै वपु धरे गोप गन इन्द्र तिनको सुजस विस्तरयौ। वृन्दावन हितरूप ललित शृङ्गार रस तरु अलोकिक जु सो सींचि कीयौ हरयौ॥

दोहा—विनु मित सागर देखियै श्री कीरति कौ भाग। शारद अंत न पावही नित वरनत हिय लाग॥ रावल पति के लाड़ कौं वरनत थके मुनीश। शिव विरंचि जा पौरि रज चाहत धारयौ शीश॥ वाल चरित श्री राधिका अखिल सुखनि को भौंन। आनंद के आनंद कौं समुझन समरथ कौंन॥ मैं लघुमति वरनें कछू श्री हरिवंश प्रसाद। अनुरागी ही जानिहैं या कनिका को स्वाद॥ ठारहसै वत्तीसयौं वर्तमान है वर्ष। सुदि अपाढ़ एकादशी कथ्यौ इष्ट उत्कर्ष॥ सुपद पचीसी यह कथी राधा वाल विनोद। वृन्दावन हितरूप वलि देहु दासि भरि गोद॥ ॥ इति श्री राधा वाल विनोद॥

श्री कृष्ण बाल विनोद विवाह उत्कण्ठा

राग रामकली—पद १

श्री हरिवंश कृपा जु बली रे। मिलन राधिकावल्लभ चाहे तौ यह सुगम गली रे॥ गुरु हित रूप चितायौ ऐसें तू लखि भाँति भली रे। बन्दौं रसिक अनन्य सबनि की इहि विधि आस फली रे॥ लीला ललित रसमई ब्रजपति-नंदन भानुलली रे। बरनि माहिले हित सौं रसना ज्यौं होइ रंग रली रे॥ यह पथ लागि जाउँ बलि तेरी अखिल सुखनि अवली रे। वृन्दावन हितरूप सुमति देहु तुम विभु प्रणत पली रे॥

राग रामकली—पद २

उर अभिलाष बाढ़ी घनी। गुरु हितरूप पुजाइहैं करि मना पद नवनी॥ ब्रज रस सिंधु अगाध अंजुरि देहु मम सिर मनी। तृषित जाचत दीन करौ सुदृष्टि लोचन अनी॥ अतर्कि रचना गोप गृह दुरि रमत लोकनि धनी। नर लीला माधुर्य रसिकनि हेत ही थर्पनी॥ ताहि गाऊँ कृपादत है अलप मति अपनी। लगैं फीके और रस अमृत जु चाखत कनी॥ करत बाल विनोद हरि कौतुक परम कमनी। वृन्दावन हितरूप विनमित शेष हू यह भनी॥

राग रामकली—पद ३

जननी जनक कौं सुख देत। कौंन महिमा गनौं भागिनु रमत ललित निकेत॥ महरि छिन छिन रहैं सम्हारत रंक ज्यौं धन हेत। अंक राखि जिमा-वहीं जाहि निगम गावत नेत॥ ब्रजजन भींजत प्रेम छिन होंइ चेत छिन जु अचेत। वृन्दावन हितरूप बालक वृन्द मिलि सुख लेत॥

ब्रज की धूरि में तन सने। लेत कन्ध चढ़ाइ काह्न श्याम वाहन बने॥ कहत मो चलि वेगि मोहन पग उठाय जु घनें। पीत मेरौ देहु भैया कपट तजि अपनें॥ तन प्रस्वेद जु धूरि लपटे तनक श्रम नहिं गनें। मित्र कौं आनंद

दायक कर सकत नहि मनें ॥ खेल नाना रचत कर पटकाइ तारी हनें। जीत मानत आप हारे जे रहे पक्षमने ॥ बालकुनि सों प्रीति तिनकें कर खुजावत तनें। वृन्दावन हितरूप कौतुक चरित जात न भनें ॥

राग रामकली—पद ५

मोहन मान लै मो कह्यौ । कहत मैया अंग पोंछौं धूरि में सनि रह्यौ ॥ खेल तें न अघाइ कवहूं हठ जु गाढ़ौ गह्यौ । मुख गयौ कुम्हिलाइ भूखौ में जु नीकें चह्यौ ॥ श्रम न रंचक गनत तेरैं तन पसीना वह्यौ । वहुत ऊधम करत मोपै जात नाहिंन सह्यौ ॥ दिन दिन दुवरौ होत को सुख खेल में तैं लह्यौ । वृन्दावन हितरूप आवौ देंहुं गाढ़ौ दह्यौ ॥

राग रामकली—पद ६

मैया लागिहौं तो चरन । वेगि दौरयौ आइहौं अव कहि सगाई करन ॥ ऐसौ तो मुख वचन निकसैं मो उर आनँद भरन। कवहू न तेरौ कह्यौ डारौं कवहूं न लागौं अरन ॥ वेटा नियरें आउ तेरे तेल डारौं करन। वदन लागै चीकनौ सुत होय शोभा धरन ॥ विनु जतन आवै सगाई सुनहु साँवल वरन । दही माखन घनौं अपने डोलि जिन घर घरन॥ राज सुत कमनीय दाइक मोद नारी नरन । मन लियैं सव कौ चलौ लगिये न कवहूँ लरन॥ तात के ढिंग वैठि मीठे वचन लगि उच्चरन । वृन्दावन हितरूप मोहन मदन कौ मन हरन ॥

राग रामकली—पद ७

जव तें वच्छ पालक भयौ । तादिन तें आनंद मो हिय वढ़त है नित नयौ ॥ यौं कहिकें पुचकारि रानी हाथ लाड़ू दयौ । आउ तेरी गुहौं चोटी रवकि अंकन लयौ॥ सुनत ऐसे वचन हाथ छुड़ाय कें भजि गयौ । कहति जसुमति कान्ह तैं जु कुवुद्धि विरवा वयौ ॥ पूत कैधौं धूत चोरी करि सवै रिझयौ । वृन्दावन हितरूप तैं वलि भ्रात कौं दुखयौ ॥

राग रामकली—पद ८

कहि में को दुखायौ माइ । मेरी नहिं परतीत राखत कौन तोहि पतिआइ॥

बांधि सूधौ करौंगी कहा दूर तें बतराइ। चुटिया हू नहिं गुहन दीनी गयौ तुरत पलाइ ॥ नट की सी खेलत कला बहु करत दाइ उपाइ। फोरि तैं ही दधि मथनियाँ वानर दियौ बताइ ॥ सब निकसिहैं गुन जु तेरे राखे मैं जु दुराइ। प्रगट अब कर देउंगी आवें जबै व्रजराइ ॥ तात सों जिनि कहै जननी चोटी लेहुं गुहाइ। घेरिहौं तो बाछरू काहें जु अधिक रिसाइ ॥ भली बात न करै मन दै मोहू तें न डराइ। भांडे फोरत फिरै घर घर तू पढ्यौ अन्याइ ॥ चोरी कौ दधि लगै मीठौ मेरौ दियौ न खाइ। सबै नकबानी करै बोलत जु अब तुतराइ ॥ सगाई कौं बहुत ठिनकै मन दियौ बगराइ। अपु रहै निरदोस औरनि दोस देत लगाइ ॥ जानि बिगरत बात मैया निकट आये धाइ। वृन्दावन हितरूप लागे महरि के तब पाइ ॥

राग रामकली–पद ६

मोहन समझि की बलि जाउँ। कहति गोपीं और काढ्यौ बाप कौ तुम नाउँ ॥ न्याइ की सुनि बात कान्हर नहीं चुगली खाउँ। तनक सौ अति छल भरचौ तैं सब नचायौ गाउँ ॥ कहा देहुँ उराहनौ मुख कहत हौं जु सकाउँ। दूध हाँड़ी फोरि कैं आयौ पिछौड़े पाउँ ॥ यह कहति है झूठ हौं पर सदन जात डराउँ। बसति है किहि ओर मैं देख्यौ न याकौ ठाउँ ॥ जो बिगारै काम तासौं उलटि हौं जु रिसाउँ। वृन्दावन हितरूप झूंठी बात कौं पछिताउँ ॥

राग रामकली–पद १०

कारौ रहैगौ तू लला। को करैगो व्याह इन गुन भयौ अति लै चला ॥ कटि न बाँधी ही लंगोटी तब तें सीख्यौ कला। अब करै सो न्याइ गिरिधर हमनि समझी भला ॥ घर घरतें सब हंसति आईं जुरीं बहु अबला। सजन घर के बांटिहैं कब महरि हांड़ी डला ॥ अरी आँखि बचाय मेरौ चोरि लायौ छला। मैं धरी गिरि भोग मेवा यह न छोड़ी गला ॥ निसि अँधेरी जन्म लच्छण चोर है घर घला। वृन्दावन हितरूप वंदौं वांम पद इहि तला ॥

राग रामकली–पद ११

सुनि करतूत अपनी पूत । इनि गुननि तू व्याह चाहे अरे कान्हर धूत ॥ सजन को व्यौहार ज्यों कोउ वँधे काचे सूत । तैं मचाई रौर पुर जहां तहां वरनत दूत ॥ लायक को सनवंध करि है देखि छल जु सँजूत । वृन्दावन हित रूप तो औगुन जु सिंधु अकूत ॥

राग रामकली–पद १२

मैया कौन मो सम और । ऐसे काज संभारिहौं तो यश वढ़ै सव ठौर ॥ मोहि खोटो जो कहै सो निपट ही मति वौर । गोपनंदन जिते तिनमें जानि मोहि सिरमौर ॥ जननी करौ जिन गुसा पाल्यो मोहि दै दै कोर । करौं आजु प्रसन्न गैया लाइहौं दुहि धोर ॥ रीझिकैं तव वांधिहै सिर सेहरो पुनि मोर । वड़े नृप की सुता व्याहौं रूप सीवाँ गोर ॥ जान देउँ न अकरि काहू दान लैहौं दौर । वृन्दावन हितरूप रानी गनि न मुहि डरपोर ॥

राग रामकली–पद १३

मैया याकौ अर्थ वताइ । राति देख्यौ सुपन सो तोकौं सुनाऊँ गाइ ॥ वड़ो कोऊ नगर तामें महल कनक जराइ । वसत ऊंचे शैल तर शोभा न वरनी जाइ ॥ तीर वन उपवन घनें सोहत जु नाना भाइ । भरे निर्मल वारि सरवर चितहिं लेत चुराइ ॥ ऊजरे सव लोग अति अनुराग उर दरसाइ । तहां नृप कौ भवन सुन्दर संपदा सरसाइ ॥ खेलत ताकी पौरि सुन्दरि रूप गुण समुदाइ । ताही सम अगनित सहेलीं वनी एक वनाइ ॥ परम कौतिक रूप रचना दृगनि लखी अघाइ । मोहि देखत सव हँसीं इक लियो वदन दुराइ ॥ इक सखी करि सैन मो तन निकट लियौ वुलाइ । इक चिरावै इक सिखावै एक कहै लगि पाइ ॥ एक नियरें लै चली इक मोहि घेर्यौ आइ । एक वोली धूत कारो तू न संग लगाइ ॥ एक गुलचै एक वरजै एक लेत वलाइ । एक मेरी ओर लखि फूली न अंग समाइ ॥ एक मुरली लै गई मो तन कछु मुसिकाइ । एक लाई छीन कें तासौं कछु अनखाइ ॥ इक कहै

सुनि री भटू याहि पछिमनों अहुटाइ । इक कहै व्रजराज सुत यासौं जु क्यौं सतराइ ॥ इक कहै यह ग्वार लावै वाछरूनि चराइ । इक कहै यह तनक सौ री व्याह कौं अकुलाइ ॥ एक तिन में मुख्य शोभा कहत मति बौराइ । वदन वारौं शशि निकर छिन छिन कला सरसाइ ॥ जोति छूटी अंग तें अवनी रही छवि छाइ । कौन विधना रची सन्मुख दृष्टि जात डराइ ॥ अखिल रस की सार मूरति मन रह्यौ अरुझाइ । निरखि तन भयौ ताँवरो मोहि लयौ प्रेम दवाइ ॥ कह्यौ मेरे श्रवण लगि इक सखी नें समुझाइ। यह तुम्हारी दुलहिनी सुनि कुवँर गोकुलराइ ॥ तवहिं खुलि गये नैन दीयौ तैं जु मोहिं जगाइ । वृन्दावन हितरूप सुपनें फल जु वरनि सुनाइ ॥

राग रामकली–पद १४

लडैते सुपन अर्थ मैं पायौ । मो वांच्छित गिरिराज करैगौ जो नित दूध न्हवायौ ॥ जा घर की अभिलाप करति हौं सो तुहि दई दिखायौ । धन्य भाग मेरे मोहन को आगम जाहि जनायौ ॥ धन्य सुकृत व्रजपति को गनियें काज भयौ मन भायौ । धन्य आजु की रजनी मंगल होंनहार दरसायौ ॥ धन्य भई ये वातें सुनि नारायण देव मनायौ । धन्य श्रवन मो प्राण भामते हीयौ अधिक सिरायौ ॥ धन्य कूखि उतपन्न भई जहां जिन तुहि वदन दिखायौ । धन्य महामणि लोकनि अस जस सिंधु जनक सरसायौ ॥ धन्य जनम तेरौ मो कान्हर गरग महा मुनि गायौ । धन्य सफल ह्वै है अव वानो व्याह निकट दिन आयौ ॥ धन्य घरी को भई प्रात ही अमी जलद वरसायौ । धन्य वदन तेरौ कुल मंडन विरवा प्रेम वढ़ायौ ॥ धन्य असीस फली मोहि काकी विधि तन गोद उचायौ । धन्य होहिगौ तात सुनैं यह तो मुख वचन सुहायौ ॥ धन्य काग वोल्यौ मो नगरी सगुन दूसरो लायौ । वृन्दावन हितरूप महरि सुत कर जु चटकि दुलरायौ ॥

राग रामकली–पद १५

रोहिनी सुनों लाल कौ सुपनौं । कन्या गोप प्रात कोउ देखी भलौ भाग

यह अपनौं ॥ रूप अलौकिक ताकौ वरन्यौ दई चरित कर थपनौं। अगनित गोप सुतानि मुकुटमणि मदन मान कौ ढपनौ ॥ अहो वड़ी,सुनि सुत की वातें नसि गयौ उर कौ तपनौं। हिय उमग्यौ आवत आनंद सौं या सुख को नहिं नपनौं ॥ प्रभु मो वेगि पुजैहें आसा नामावलि रुचि जपनौं। वृन्दावन हितरूप महरि यौं वरनि प्रेम भयौ कपनौं ॥

राग रामकली–पद १६

मैया इक मिल्यौ पढ़ेला वन में। मेरौ हाथ देखिकें वह आनंद भरि गयौ मन में॥ कह्यौ होहिगो व्याह वेगि सुभ लच्छण वरने तन में। तात मात सुख दैहै ह्वैहै रुचि पालन गोधन में॥ कहा सुनाऊँ गाय सुयश मुख सुनियेगौ सव जन में। वार वार व्रज रच्छा करि है निपुन निवाहनि पन में ॥ ता घर होहि सगाई राजा जो गोपन के गन में। रूप आगरी दुलहिनि आवै लायक सील चलन में ॥ नंद भवन यौं करै उजेरौ जैसें दामिनि घन में। वृन्दावन हितरूप महरि सुनि लाल भरयौ अंकन में ॥

राग रामकली–पद १७

मैया व्याह कौन विधि करिहै। हौं वैठौं जव पट्टा लाड़ कितै गोद मो भरिहै॥ माखन काढ़ि भोर ही मेरी रोटी अधिक चुपरिहै। करि लै मोटौ मोहि वेगि दै वलिदाऊ तव डरिहै ॥ वावा के परताप जीतिहौं मोसौं कोऊ न अरिहै। तो रानी कौ वेटा व्रज में को मेरी सरवरिहै ॥ मेरी भुजा देखिकैं सव कोउ पाछैं ही कौं टरिहै। और सवनि के नाम जु वोदे मेरो नाम जु हरि है॥ वड़े गोप घर व्याह होहि तौ कोऊ न कवहूं लरिहै। राखैं कानि सवै मो आगें दीन वचन उचरिहै॥ सुजन सवै मुहि आदर दैहैं दुर्जन छाती जरिहै। मो रच्छा गिरिराज करैगौ पापी पाप जु मरिहै ॥ गोधन पाल नाम है मेरौ सव विधि काज सुधरिहै। साधुन कैं साधुता सुभूषण कपटी कपट उघरिहै ॥ कहा लाभ ह्वै है कुरूख सौं आम अमृत फल झरिहै। को जननी मेरी सी जो नित नए लाड़ विस्तरिहै ॥ को व्रजपति सौ तात वात मेरी जु

प्रीति अनुसरिहै। वृन्दावन हितरूप सगाई करन सजन आदरिहै ॥

राग रामकली–पद १८

मैया हौं माखन लौंदा लैहौं। भरि दै न्यारौ मोहि कटोरा बलिदाऊ नहिं दैहौं ॥ मोटी रोटी सानि सानि कैं कूदि कूदि हौं खैहौं। रीझि रीझि सब व्याह करैंगे जब मोटौ ह्वै जैहौं॥ दुहती बार हाथ बाबा के धार सु दूध अचैहौं। रानी बड़ौ बेगि दै ह्वैहौं गाइनि बन जु चरैहौं ॥ कौंन करै मेरी सर ब्रज में सब तें बली कहैहौं। दैहौं दण्ड दुष्ट धेनुक जो आज्ञा तातहिं पैहौं ॥ जम्यो दही बासन में ताके ऊपर कौ जु अचैहौं ॥ पय औटत जो परै मलाई व्यारू सो जु करैहौं ॥ काली दैहौं देश निकारौ याकी गनत न भैहौं। हौं गिरिराज कृपा बल गाजौं सबकौं नाच नचैहौं ॥ ऐसी व्याह दुलहिनी लाऊँ मैया मन सरसैहौं। वृन्दावन हितरूप आगरी जा पद सबनि नवैहौं ॥

राग रामकली–पद १६

रानी बात कान तो डारी। जै है काल्ह तालबन याके मन की मैं जु विचारी ॥ बाबा मो सों कही जान उत दीजौ जिन गिरिधारी। बरनत सो तेरेई आगें कब सिख सुनैं हमारी ॥ छाछ चोर की कौंन करै पति थोथो गाल बजारी। सुख जिन अधिक लगाइ रचैगो यह बन कौतुक भारी ॥ कहौ करैगी याकौ तौ यह बदै न नर अरु नारी। यह कारौ याके समान दै व्याह दुलहिनी कारी ॥ बरन मिलैगो याकौ वाकौ विधनै लगै न गारी। सजननि कौ उराहनौ मिटिहै मैया चेत सवारी॥ बन में रचत अनोखी लीला तैं कबहू न निहारी। कोटि धूत तेरे सुत ऊपर मैं कीनें बलिहारी ॥ लाड़ किये तें बेटा बिगरै सब कोउ कहत पुकारी। वृन्दावन हितरूप श्याम की राह लोक तें न्यारी ॥

राग रामकली–पद २०

अवनि पर सब कोऊ पगलावै। हौं कब चढ़यौ अकास मनसुखा

न्यारी राह बतावै ॥ गांव गोयरें बछरा नित उठि मेरे संग चरावै । ऐरे दई सवारें तोकों झूंठ कहन ही भावै ॥ इत की उत की झूंठी सांची वातें बहुत मिलावै । तू वक्ता श्रोता व्रजरानी भले पुराण पढ़ावै ॥ बंदी किधों हमारे कुल कौ बिरदनि आइ सुनावै। वानर कौसौ घाउ आपनें हाथन लोंच बढ़ावै। बाबा जू कौ राज तहां कोउ दौरा रहन न पावै । हों राजा कौ कुंवर ताहि तू नित उठि दोस लगावै ॥ भैया तेरौ वाक कहा मैया हू के मन आवै । वृन्दावन हितरूप साधु कों दोस असाधु लगावै ।

राग बिलावल–पद २१

हँसीं दस पाँच गोपिका सुनिकें । बड़ी साधुता निकसी उर तें लाल बोलिये पुनि कें ॥ जिनके भाँडे फोरि बगाये तिनके उर रहे धुनि कें । यह चतुराई ब्रजपति नन्दन पढ़े कौन से मुनि कें ॥ पटकत चरण किंकिनी नूपुर भये जु रोचिक धुनि कें । जननी अधिक सिहात लाल गुन हियें धरति है चुनि कें ॥ ब्याह बधायें गायौ चाहति ये गरुवे गुन गुनि कें । वृन्दावन हितरूप हयौना खान फूल तरुनिनि कें ॥

राग बिलावल–पद २२

आयगयौ भवन घोप की रानों । हरि हलधर पुचिकारि गोद लै मन में अधिक सिहानों ॥ गिरिधर तूं क्यों होत दूबरौ ऐसें कहि मुसिकानों । महरि कहति याहि सखा चिरावें ब्याह करन उकतानों॥ चिपटि गये बाबा छाती सों लाज भींजि गए जानों। कितनी बड़ी लेहुगे दुलहिन मो सों श्याम बखानों ॥ संपति बहुत ब्याह कों चहियें तू कहि कहा कमानों । हों चलिहों न बरात लाल तुम बलि की सीख न मानों ॥ दोऊ कर मीड़त हैं अखियाँ यह छवि कहा बखानों । कमल कमल भयौ संपुट मनुआंसू मकरंद चुचानो ॥ पुनि पुचिकार कहत हों चलिहों अब जिनि अरवी ठानों । वृन्दावन हितरूप तनक सी सुनि क्यों बात डरानों ॥

राग विलावल–पद २३

बाबा तुम हू नाम धरत हौ। हौं पुकार अब कासौं करिहौं बलि की ओर ढरत हौ॥ मोहि कछू झूंठौ सौ पारत उन उर मोद भरत हौ। कै कहुँ आनि मनसुखा सिखये ऐसे जानि परत हौ॥ तुम राजा हौं बालक क्यौं निवले की घात करत हौ। कहौ व्याह की बातें तब मुख सुख के बीज झरत हौ॥ आजु देखि बलि ओर कछू रूखे बचननि उच्चरत हौ। मैया कहत लाल अब चुप रहि तातहु तें न डरत हौ॥ बहुत ढिठाई देत लाड़िले सबही सौं जु अरत हौ। चरन लागि कर जोरि कहा गुन उर तें अब उघरत हौ॥ तुम चिर पारी श्याम व्याह की नाहीं करत लरत हौ। वृन्दावन हितरूप खिलौना व्याह जानि झगरत हौ॥

राग विलावल–पद २४

बेटा ऐसौ व्याह करौंगौ। बड़े बड़े भूप बरात चलैंगे बड़ी बड़ी बंब धरौंगौ॥ बागे और दुसाला गहनें सब ग्वालन कौं दैहौं। मेरे मोहन कौं सुख दैहैं संग सबनि कौं लैहैं॥ बड़े बड़े गजराज मगाऊं झूल परैं सकलाती। आगें चलै साजि अंबारी पाछें सकल बराती॥ काबुल के तुरकी जु मगाऊं बड कच्छी अरु ताजी। तिन्हें सिंगारि चलौंगौ अति लड़ देखत गुन होहु राजी॥ सास ससुर सौं बहुत प्रीति करि मचलि दायजौ लीजौ। हौं बहु लार दर्ब लै चलिहौं भिक्षुक जन कौं दीजौ॥ तो समान जहं होहि दुलहिनी ताकी लेहुँ सगाई। वृन्दावन हितरूप उतावल करि जिन कुँवर कन्हाई॥

राग विलावल–पद २५

बाबा मोहन चपल अति बहु गुननि भरयौ है। मेरी कबहुं न सीख सुनै मन रोप धरयौ है॥ टेढ़ी बातनि कहनि कौ याहि अमल परयौ है। बरजत बरजत जल धसै तहां फिरत तरयौ है॥ कालीदह देखन चहै तुम मनैं करयौ है। जान जान नित कहत है मोसौं काल्हि लरयौ है॥ पच्छ तुम्हारी

पाइ कैं मोतें न डरयौ है। तिरछौ तिरछौ चलत है सब सों जु अरयौ है॥ बात चली नहिं व्याह की किन याहि वरयौ है। हौं उठि जैहौं सासुरे यों कहि झगरयौ है॥ बहुत हँसे ब्रजराज जू मुख सुधा झरयौ है। सुत की भोरी बात सुनि हिय भयौ हरयौ है॥ कहा नाम है सासुकौ नृप पुनि उचरयौ है। वृन्दावन हितरूप उर भरि लाड़ ढरयौ है॥

राग विलावल–पद २६

आज्ञा लै कैं तात सों खेलन मन कीयौ। तिरछे देखत ओर वलि मनुमादिक पीयौ॥ इन वावा के कान भरि कोधौं यस लीयौ। मिथ्या औगुन मो कहत संक्यौ नहिं हीयौ॥ विहरत वालक वृन्द में सबकों सुख दीयौ। हाथ मारि भाजे वहुरि मो तन कोऊ छीयौ॥ त्रिभुवन मोहन मदन कौ मुख देख जु जीयौ। वृन्दावन हितरूप वलि रच्यौ को विधि वीयौ॥

राग विलावल–पद २७

महरि कहत है श्याम सों आवौ उवटि न्हवाऊँ। जनम द्यौस तेरौ लला सिंगार कराऊँ। केसर अजिर लिपाइकैं पुनि चौक पुराऊँ॥ वन्दन माल वँधाइ कैं कदली रुपवाऊँ॥ पुर की वधुनि वुलाइ कैं मंगलनि गवाऊँ। रोरी अछत लाइकैं तुम भाल लगाऊँ॥ आजु नछत्र सुरोहिनी तो पै दान दिवाऊँ। गरग महामुनि वोलि कैं आसिखा पढ़ाऊँ॥ लाडू अरु मेवा सिता लै तोहि जिमाऊँ। जो वेगौ नहिं आइहै तौ वलिहि वुलाऊँ॥ रानी मोहि वहकावही हों तोहि न पत्याऊँ। व्याह करन मेरौ कहै तौ अवहीं आऊँ॥ वेटा छवि गुन आगरी दुलहिनो मँगाऊँ। जो सिख मानैं तुरत पुनि खेलनि जु पठाऊँ॥ आऊँ अपनौ पोत लै तोहि सत्य सुनाऊँ। वृन्दावन हितरूप वलि मनसुखै हराऊँ॥

राग विलावल–पद २८

जाहु जाहु तुम खेल तजि काके हौ वारे। आवन देहु न श्याम कों तुम दई सम्हारे॥ खान पान भूले सवै कहूँ घर न तिहारे। मारग देखत हों-

हिंगे पितु मात विचारे ॥ आये हो तुम भोर के मैं भलें निहारे । हौं तुम दुखिया जनम के सब औगुन गारे ॥ गिरिधर कौं करि देहु विदा मेरे नैननि तारे । तुम्हें चढ़ायें फिरत है याके चरन जु हारे ॥ बैठि खेल नहीं जानहू तोरत तरु डारे । सिखवैं नहीं बूढ़े बड़े मनसुखा विगारे ॥ एक खेल नहीं खेलहू बहु खेल पसारे। अरी भट्ट गहि लाउ तू पीताम्बर वारे ॥ सबै अनमनें टरि गये रानी ललकारे । वृन्दावन हितरूप बलि रहे नन्ददुलारे ॥

राग आसावरी ताल आड–पद २६

न्हाइलें मेरे कुँवर कन्हैया । दौरि आउ तजि खेल वेगि दै आवत ब्याई गैया ॥ तू लागत चाकर सौ लागत राजा सौ बलि भैया । मेरौ कह्यौ मानिहे जौ देउँ लाड़ू लेउँ बलैया ॥ होहि बड़ौ बलवान लाल तोहि काढ़ि पिवाऊँ घैया। आवै आज सगाई तेरी हौं बाँटिहौं बधैया॥ यह सुनि लाल दौरिकें आये करति उबटनौ मैया । वृन्दावन हितरूप ब्याह की फूल बढ़ी अधिकैया ॥

राग सारंग–पद ३०

अरी मा कब आवैंगे नेगी । उबटनि कर न्हवाइ ताते जल तन सिंगार करि वेगी ॥ कैसो गांव दुलहिनी कैसी मुहि दिखाइ कब देगी । मेरौ ब्याह होइगौ तब जब बलि की सीख न लेगी ॥ बाबा की आज्ञा में चलिहौं तू बहुतै रीझैगी । वृन्दावन हितरूप महरि हँसि झुकी खंभ लई थेगी ॥

राग सारँग–पद ३१

दुलहिनि कितिक बड़ी आवैगी । हा हा कहि सांची तू मैया कब घोरी गवैगी ॥ कब ग्वालनि कौं बागे नाना विधि के पहिरावैगी । मोहि घर राखि गउनि पै कब बलि भैयै पठवावैगी॥ बाबा सौं कहि सुंदर घोरी कब मंगवावैगी । कब पट्टा बैठारि अंग मो तेल चढ़ावैगी ॥ कौन भवन बैठी जु ब्याहुली कबहिं दिखावैगी । झूठी बातें कहि कहि कत मोहिं नित बहका-वैगी ॥ सुन्दर अधिक बहुरिया मोहन तोहि नचावैगी । वृन्दावन हितरूप

सांचिसुनि धन खरचवैगी ॥

राग सारँग–पद ३२

वहुत धन मैया तोकों देहों। वावा के जु देस निकसैगो दान सवनि पै लैहों ॥ मो पै अकरि न कोऊ जैहे सवहीं कों जु रिझैहों। वावा कों राजी राखोंगो तेरो भलो मनैहों ॥ करि दै व्याह भली मेरी मैया वेगि सासुरें जैहों। वृन्दावन हितरूप तात कों यशमाला पहिरैंहों ॥

राग सारंग–पद ३३

धन्य सुत तू रानी कौ जायौ। करौं सगाई वड़े सजन घर महरि सीस कर लायौ ॥ वदन चूंवि अंकनि ले वैठी अपनौ भाग मनायौ। वड़ी वात छोटे मुख सुनि कें हियौ प्रेम भरि आयौ ॥ पूरव सुकृत विचारि आपनौं नारायन सिर नायौ। सिंधु सुता के ईश करौगे कव मो मन कौ भायौ ॥ वय गुन रूप समान दुलहिनी देहु कहि गोद उचायौ। वोल्यौ काग दाहिनौं ताछिन अलभलाभसौ पायौ ॥ सत्य सत्य वानी नभ सुनि कें मन आनंद वढ़ायौ। वृन्दावन हितरूप श्याम कौ भाग्य मानि जु लड़ायौ ॥

राग धनाश्री ताल आड़–पद ३४

मैया मोहि ग्वाल चिरावत भारी। तेरी करैं सगाई को यौं कहि जु वजावत तारी ॥ मेरी ओर करत नहीं कोऊ यह चिर सवहिनु पारी। वलि दै सैन सिखावत्त सवकों नेकु वरजि हा हा री ॥ मो सों कहे करोंटो भोंडो है काकी उनहारी। तोहि लगत हौं कैसौ मैया कहि यह वात विचारी ॥ मेरौ राजकुवाँर लाल हौं सुन्दरता पर वारी। वृन्दावन हितरूप पुंज तू वकत हैं ग्वाल लवारी ॥

राग रामकली–पद ३५

मैया वलिदाऊ कछु कहेगो। नेगी देखन आवें ता दिन यह मौंगों न रहेगो ॥ ग्वाल सिखाइ कूट करवावत को यह वात सहेगो। वावा सों कहि वरजि राम कों फिर न कुटेव गहेगो ॥ खोटी कहत आज जो मेरी काल्हिहु

कहन चहैगो । बृन्दावन हितरूप सजन सुनि कैसें हिय उमहैगो ॥

राग रामकली–पद ३६

सुनत यह बात हंसीं ब्रज बाला । ऐसी चाह ब्याह की जौ तो चोरी तजि नंदलाला ॥ बात तोतली मैया सों कहि करत हो अधिक निहाला । पोलि काढ़िहैं सखा संग के चलत अनोखी चाला ॥ मांगत दान दही को समझत रीति सबै गोपाला । बलि मैया कौं दोस देत मुख बोलत बचन रसाला ॥ निपट गुनीले हम जानति हैं कहा बजावत गाला । बृन्दावन हितरूप रावरे यश की फेरति माला ॥

राग रामकली–पद ३७

देहिगो कारे कों को बेटी । गरें दिपति गुंजन की माला सेली काँधि लपेटी ॥ ता पै लच्छन चोर लाल तन लाज तनक नहिं भेंटी । मोरन के पाखनि की टोपी माथे में उरसेटी ॥ पोली बांस बसुरिया देखौ कटि ऊपर खुरसेटी । बृन्दावन हितरूप दान की बन में बात खखेटी ॥

राग रामकली–पद ३८

घरबसी तूं को कितते आई । बिनहीं कारन भवन पराये चपरी लेत लराई ॥ नाम धरति है मैया मोकों यह मनसुखा सिखाई । कहि वेगी घर जाइ आपने याके मन की पाई ॥ चोर चुगल की यह जु मिलनियाँ कैसी बात बनाई । बन्यौ ब्याह बरबस बिगारिहै हियें भरी जु खुटाई ॥ हँसनी ठगनी जानि परति है तैं कत मुँह जु लगाई । बचननि और पेट कछु औरै खरचति है चतुराई ॥ बाबा की सौं महा ढीठ यह करि जैहै भड़ियाई । तू रानी न प्रीति करि यासों लैहै मति बौराई ॥ ताहि न घर में आवन दीजै काटै बात पराई । बृन्दावन हितरूप नीति की बात कही सुनि माई ॥

राग रामकली–पद ३९

याहि हौं जानत हौं लरिहाई । इक दिन खेलत हो पौरी मोहिं चोरी दई लगाई ॥ मैं काढ्यौ बानर घर में तें समझै यह न भलाई । नीठ नीठ

हौं वच्यौ नाहरी ब्याई मानौ धाई ॥ याहि अन्न भावै तब जब पर घर में करै लराई । उठत खाट तें कलह मचावै निन्दा करै पराई ॥ सांच कहत हौं आजु दही याही के वेटा खाई । याकैं नाहिं कानि अपनाइत कौंन देस तें आई ॥ अति झगरारू वड़ी सूमनी जौ देहि भोर दिखाई । ताहि न मिलै अन्न संध्या लगि मैं जु वात परचाई ॥ हँसि वोली गोपी व्रज मोहन कहाँ यह वुद्धि कमाई । वोलौ सांचि यशोमति आगें जिन खरचौ चतुराई ॥ सांचु कहत हौं तू सवकी विचरावति फिरति सगाई । वावा की सौं मैं सोची तें खोटी वात चलाई ॥ वहुत सगाई कौं फूलत हौ कहा डरी सी पाई । चलौ आप कुल रीति लला अव जैसें होइ वड़ाई ॥ जाहि घरवसी फिर वोली तू किन यह सीख सिखाई । मैया कही काल्हि आवैगी तू जिन लेहि वुराई ॥ करौं प्रीति तेरे वेटा सौं मानि भलौ घर जाई । दूध दही के भांड़े वानर फोरत करौं सहाई ॥ हँसि गोपी गई भवन जसोमति भरि लये अंक कन्हाई । वृन्दावन हितरूप चूमि मुख लेत वारने माई ॥

राग रामकली–पद ४०

लाल कहिं सव सौं मीठी वानी । तोसौं करैं प्रीति तव मोहन मेरे गर्व गुमानी ॥ उज्ज्वल सिता लाइ भीतर तें लै माखन में सानी । अपने हाथ जिमावति रुचि सौं नंद महरि की रानी ॥ अव जिन पर घर जाइ लाड़िले हौं सुनि वात सिहानी। जेंइ जिमाइ सखनि कौं माखन में भरि धरी मथानी॥ घोष नृपति कौ तू जु भाँवतौ काहु न करि नकवानी। दूध दही घरहीं वहुतेरौ क्यौं होइ वन में दानी ॥ सुनी वात तैं कापै मैया काहू चुगल वखानी । मो सौ साधु न यह व्रज मंडल जिन जानी तिन जानी ॥ वालक तदपि वहुत समुझत हौं तैं न रीति पहिचानीं । राजनीति वावा ने सिखई मोकों सवतें छानी ॥ लीजे कर पुनि तेज राखिये गोपनि की रजधानी । वृन्दावन हित-रूप मेंड़ वांधे विन आये पानी ॥

राग रामकली–पद ४१

रोहिनी राजा बेटा मेरौ। स्यानी बात कहत हे सबहीं ये कछु पढ़यौ घनेरौ॥ बड़े गोप कैं करौं सगाई वेगि ही भाँवरि फेरौं। अब न बहुत खेलनि मन देहै आवै जब तब टेरौं॥ बाबा के संग भोजन करिहै काल्हि जु न्हाइ सवेरौ। दूरि निकसि जिन जाउ बाछरू गाँव गोइरें घेरौ॥ बहुत दोइजौ मोहन लावै गाइ खिरक भरि खेरौ। बड़ौ भाग कह्यौ गरग श्याम कौ जनम पत्र जब हेरौ॥ चुनि पहिराऊँ वसन लाल तू आइ बैठि मो नेरौ। लगै सबनि तें सुन्दर तब मनसुखा मनौ तो चेरौ॥ वे चाकर तू सबकौ राजा करि सिंगार बड़ेरौ। वृन्दावन हितरूप सजन देखि व्याह करैगो तेरौ॥

राग रामकली–पद ४२

ठोड़ी श्याम गही कर दर है। मोहि बताइ वेगि दै मैया कहाँ सजन कौ घर है॥ कैसौ देश राज है कैसौ कैसौ बसत नगर है। कब आवै टीकौ बताइदे लाल गही यह अर है॥ झूंठौ परत सखन में हौं तेरी न बात कौ थर है। मोहि चिरावैंगे बलिदाऊ ताकौ लागत डर है॥ आजु आजु कहि नित बहकावति नित जु परत अंतर है। नित हौं निकसत बाट खिजावत सब मिलि नारी नर है॥ सबै हँसारू लोग कौंन जन जासौं मेरी लर है। वृन्दावन हितरूप वचन सुनि महरि हँसी हर हर है॥

राग देवगंधार–पद ४३

मैया अब हौं न बछरुवा रोकौं। मेरी बात न तू मानति है अब तोहि काज न टोकौं॥ सास ससुर कौ नाम न लेई नित बहकावति मोकौं। जो कोउ चपरि चिरावै मैया ताहि पकरि हौं ठोकौं॥ व्याह व्याह कहि रही सबनि सौं हौं दुलहिनि न विलोकौं। वृन्दावन हितरूप घोप की लज्जा रानी तोकौं॥

राग देवगंधार–पद ४४

लाल तेरी मीठी लागति बतियाँ। जननी बलि बलि जाइ सुनत ही अधिक सिरानी छतियाँ॥ मेरे मन अभिलाप व्याह की बढ़त रहत दिन

रतियाँ। वह दिन दई दिखावै नैननि हौं याचत वहु भतियाँ ॥ गोपराइ सौं कहि जु सजन घर आजु पठाऊँ पतियाँ। सुनिलै मेरी सीख लाड़िले तजि चोरी की घतियाँ ॥ वेगि व्याहिहौं सुत अवही उखरीं न दूध कीं दतियाँ। बृन्दावन हितरूप श्याम समुझावत सुख सरसतियाँ ॥

राग देवगंधार–पद ४५

श्याम सुनि वात श्रवण दै मेरी। चोटी चुपरि गुहनि दै आवै वेगि सगाई तेरी॥ धूसर अंग लगत नहीं आछौ देखि मुकर मुख हेरी। औरनि के सुत फिरत चीकने तैं तन धूरि वगेरी॥ महा धूत तैं उठत भोर हीं चूल्हे राख खखेरी। वावा देखि खीजेंगे तोकों लै वैठैं नहिं नेरी॥ तोहि खेल में अधिक रुचि वढ़ी अवनी पाग वखेरी। पीत पिछौरी गोवर सानी कहाँ नच्यौ लै फेरी॥ ज्यौं ज्यौं वड़ो भयौ तू मोहन त्यौं त्यौं कुमति सकेरी। भलौ सजन को वेटी दैहै औगुन निकसत ढेरी॥ तेल लगाइ न्हवाऊं तोसों कहिहौं एक पहेरी। भूख्यौ पेट पीठ सों लाग्यौ जेंलै करि न अवेरी॥ दिन दिन गुसां वढ़त तेरे उर वुद्धि कहाँ उरझेरी। होत दूवरौ सुनत न एको वार वार हौं टेरी॥ राजकुवाँर आइहै अव मैया दिशि दियें दरेरी। मानत वचन रोहिनी कौ तजि दैहै ढुंगनि अँधेरी॥ हँसि लागे जननी उर गिरिधर परम प्रेम मति प्रेरी। कहा मित करौं महरि सुख कौ कवि पचि पचि गये वड़े री॥ सुविधि न्हवाय वसन आभूषण अपु कर अंग रचे री। बृन्दावन हितरूप जिमावत नाना पाक सचे री॥

राग देवगंधार–पद ४६

मैया नाम सास कौ लै री। वहुत भलौ मानौंगौ तेरौ हौलें हीं कहि दै री॥ तेरौ अरु वावा कौ चेरौ चरण लागिहौंने री। कौन गोप गृह प्रगट भई जो मेरी दुलहिनि है री॥ लाऊं पसर चराइ गाइ वन मोहि न रंचक भै री। दूध दुहाऊं अधिक वछरुवन प्याऊं वहुरि अघै री॥ तेरी आज्ञा लियें चलौं नहिं जाउं जहां वरजै री। वात पेट की कहिदै मोसों किंहि

दिन ब्याह करै री ॥ रथ सुखपाल रचैगी केते हाथी घोरा कै री। कैसी चलै बरात सजन घर कैसौ रंग मचै री ॥ सब ग्वालन दै संग मनसुखा चलै न चुगला बैरी । गह गहे धुरहिं निसान कौन दिन अरु बाजे केते री ॥ कब बाँधै मो सीस सेहरौ कब बहु धन खरचै री । वृन्दावन हितरूप कौन दिन मंगल महा रचै री ॥

राग देवगंधार—पद ४७

रोहिनी सुनौ लाल के बैना। दिन दिन बढ़त ब्याह अभिलाषा हौं देखौं कब नैंना ॥ सत्य करैं श्रीपति मेरे गिरिधर अब जु बहुत दिन हैं ना। हैं गिरिराज सहाय हमारें अधिक कृपा कौ ऐना ॥ अबही सगुन भलौ मोहिं आयौ चित पायौ अति चैना । मंगल ब्याह बेगिहीं रचिहौं अरु गोपनि की सैना ॥ जहं तहं बात चलत दिन हीं दिन ब्रजपति हां जु कहें ना । छोटे घर की लेंइ न सगाई बड़े गोप की लैं ना ॥ होंहिं कौतिकी सुरनर मुनि जब जानि साज चलै गैंना । दिन दूलह मेरे अति लड़के चरण लुटैं गन मैंना ॥ हय गय गाँव दाइजौ लैहौं अरु गाइन के टैंना । वृन्दावन हितरूप सजन ऐसे बिनु बान बनैंना ॥

राग सारंग—पद ४८

सुनी ये मैया मुख की बात । आइ गये बलिराम तिहिं घरी मोहन जीय सकात ॥ याकौ ब्याह करैगो को सुनि अति हीं कारो गात । औरौ गुन सब बरनि सुनाऊं ढिंग बैठें जब तात ॥ सबही सौं बढि बोलै री यह सबही सौं इतरात। सब कौं टोंकै सबै चिरावै मारग आवत जात॥ बन में कौतुक बहुत करत है मोह तें न डरात । गुनही में गुन बहुत लपेटै ज्यों केरा के पात ॥ नैननि और बैन कछु औरै हियें और दरसात । यह छोटो सौ दीसत मन सौं करै बड़ी सी बात ॥ ग्वालनि के तन भरै चहुंटिया चुटिया बाँधि सिहात । एकनि कौं जल माहिं ढकेलै एकनि कौं देइ लात ॥ खेलत है यह खेल अनोंखे कहत जु मन सकुचात । वृन्दावन हितरूप स्याम की हौं नहिं जाउं बरात ॥

राग सारंग–पद ४६

कहे जौ हौं दाऊ कौ चेरौ । मैया ब्याह होन तब देहौं जतन करै बहुतेरौ ॥ देखनि कौं जब नेगी आवैं औगुन कहौं घनेरौ । वे सुनिकैं पाछे भाजेंगे मोहन चेत सवेरौ ॥ ह्वैहै दीन सखन सौं मो सौं मिलि बैठैगो नेरौ। तबही बानिक बनि है मैया तजि अभिमान अंधेरौ॥ राखत कानि बहुत दाऊ की पुनि चितवत तिरछेरौ । हिय अकुलात बात कहिबे कौं लाज दै रही घेरौ ॥ बालक जान चिरावत मेरे मन डारत अरुझेरौ । मैया होइ निबल कौ कैसें तेरे गाँव बसेरौ ॥ भुज भरि लियौ रोहिनी पुनि पुचिकारि बदन कर फेरौ । बड़ौ धूत बलिदाऊ बेटा बोलत निपट दरेरौ ॥ तेरी बात सांचि हौं मानौं याकी दूर निबेरौं । वृन्दावन हितरूप सजन घर बेगि जाइ दै डेरौ ॥

राग सारंग–पद ५०

मनसुखा बलि ने टेरि बुलायौ । कहि मैया तू मोहन के गुन मेरौ बचन न भायौ ॥ मोकौं धूत कहति है रानी याहि कंठ लपटायौ । ये अब करतब नैन देखिहैं हमनि न्याव भरि पायौ ॥ मै तौ जाइ वा दिना याकौं कैसी भाँति बचायौ । अति कारे विष धर के बिल में याने हाथ चलायौ ॥ पुनि सांकरी गैल में ता दिन ब्याई गाइ दबायौ । तब हौं आड़ी लाठी दै कैं याहि बाथ भरि लायौ॥ और दिना पुनि जल पैरतु हो तामें गोता खायौ। मैं अरु तैं अपनीजु भुजाबल याकौं पार लगायौ ॥ कारौ गुन मानैंगो काकौ यौं पंडितनि बतायौ। यह सुनि हँसीं सकल ब्रज बनिता मोहन हू मुसिकायौ॥ यह बालक बलिराम बड़ो क्यों उखटा पुखटी आयौ । क्यौं रे चपल गात तू कान्हर सुनत न सिख इतरायौ ॥ दाऊ अरु मनसुखा आजु कछु कूटक नयौ उपायौ । हौं न भोर तें बाहिर निकस्यौ तदपि दोप लगायौ ॥ काल्हि अँध्यारी रात गली में मोहिं बहुत डरपायौ । कारी कामर ओढ़ि रीछ सौ पाछें तें उठि धायौ ॥ नीठ नीठ अपनी पौरी लौं आइ बहुरि समुहायौ । हर हर हंस्यौ बड़ौ अन्याई तब मैं मारि भगायौ ॥ धक धक होत हियौ मेरौ

अवहूं तदपि न तोहि जतायौ । उलटौ लै उराहनौ अब बलिदाऊ बाहि सिखायौ ॥ सुनि मनसुखा महरि यौं बोली तैं का कर्म कमायौ । छोटौ भैया पुनि अति बालक देखि न तू पछितायौ ॥ याके पेट माहिं है डाढ़ी क्यौं छोटौ जु कहायौ । मैया इन सबही व्रज अपने नख के अग्र नचायौ ॥ बेटा दाँत चढ़ाइ न यह सुत श्रीपति मोहिं दिखायौ । बोलौ हंसौ संग सुख विचरौ मैं फल भाग्य मनायौ ॥ पट भूषण देंउ होहि वह दिना विधि तन गोद उचायौ । वलि मनसुखा वचन शीतल कर जसुमति हिय हुलसायौ ॥ ओलिनु में सादर नाना मेवा पकवान भरायौ । वृन्दावन हितरूप श्याम अति लड़हिं अंक वैठायौ ॥

राग विलावल—पद ५१

बूझत गोपी चतुर महाई । कैसी दुलहिनि चाहौ मोहन मोसौं कहौ समुझाई ॥ नैंननि जैसी देखी तैसी वैननि कही न जाई । नहिं यह सृष्टि कहौं काके सम कौंन विरंचि बनाई ॥ शशि के निकर लजावति जाके मुख अस सुंदरताई । अमी श्रवत है वचन अंग अंग वरनौं कहा निकाई ॥ सुर पुर नाग लोक की कन्या वारौं नख सुथराई । छवि की छटा विलोकि दामिनी घन के माहि समाई ॥ शोभा अवधि अवधि सब गुण की वड़े गोप की जाई । वे दुलहिनि तुम दूलह वलि वलि मेरे मन यह भाई ॥ निर्मित करी दई यह जोरी हौं सांची सुधि लाई। वाहू नगर कहत सब ऐसें इहि सम वर जु कन्हाई ॥ होहि वेगि दै तिलक लाल कौ मैं सब मन की पाई । हौं अब जाइ कहौंगी वेगी तुम कुल रीति वड़ाई ॥ मो चित वृत्ति लगी उन चरननि देखि भली विधि आई । लाल रहौ निहचिंत बुद्धि बल लाऊँ वहि जु सगाई॥ लोक मुकुट मणि वाला लाला कटि वारौं मृगराई । नंद भवन कौ भूषण दरसत तुमतें छवि जु सवाई ॥ काम रीझ के करिहौं जब तब दीजे यहै वधाई । वृन्दावन हितरूप मोहिं उनही की गनों सदाई ॥

राग विलावल–पद ५२

धनि तू वसत कौंन से पुर है। श्रवण दियौ आनंद अधिक पुनि अधिक सिरायौ उर है॥ ज्यों सद वैद्य औपधी सेवत भाजत तन तें जुर है। जेसें तत्व विचारत हीयें भक्ति होत अंकुर है॥ यौं यह होइ मनोरथ मेरौ जो तू करुना दुरहै। नाम गाँम अव वदन प्रकासौ दीपत परम चतुर है॥ अवकें जाइ लेउँ सव मन की वचन ग्रन्थि जव घुरहै। परपक होन देउ कारज तव नाम गांम कहा दुर है॥ वहुत होत आधीन लाल को अति ही मन आतुर है। वृन्दावन हितरूप वनी सुनि प्रेम भंग कियौ सुर है॥

राग विलावल–पद ५३

लाल अव वेगि जाइ हों आऊं। सावधान तुम होहु वलि गई ठीक संदेसौ लाऊं॥ तुम काहू सों कहो न अवहीं जो लगि वचन पकाऊं। हों उनकी हितकारिनि ऐसें तुमहीं कों जु सुनाऊं॥ उहि पुर सव अनुरागी मोहन कहा रस रीति जु गाऊं। देखि परम आनन्द भीजिहौ ऐसी जुगति वताऊं॥ अखिल सार वपु गोप सुता वहि को सम दै समुझाऊं। मेरौ चीतौ दई करै जो तौ दृग तुरत दिखाऊं॥ राजा जाकौ तात मात तिनकों यह वात जताउं। अति उत्कंठा श्याम हिये की होंहीं सुविधि पुजाऊं॥ नाना करों उपाय वुद्धि वल फेरे दुहुनि फिराऊं। वृन्दावन हितरूप दासि दूलह दुलहिनि की पाऊं॥

राग विलावल–पद ५४

श्याम ने वचन ता घरी दीयौ। तू दुलहिनि की होहु भांवती में हूं यह पन लीयौ॥ तेरे वचन अमी मम अंचवत सुखित भयौ अति हीयौ। यह गुन हों कवहूं नहिं भूलों जो मो कह्यौ जु कीयौ॥ चली तहां तें भाम लाल करि सौंहैं तिनका छीयौ। वृन्दावन हितरूप कान्ह धनि गनतु भाग्य को वीयौ॥

राग सारंग–पद ५५

लाल वावा संग जेंवन आयौ। छोटी सी थारी यह भारी ताहि आइ

अपनावौ ॥ जो आगें आवै बलिदाऊ तौ तुम धूम मचावौ । तात बहुत आदर नहि देहैं जो तुम ढील लगावौ ॥ मो नैंननि कौ गहनों मोहन वेगी वदन दिखावौ । रानों घोष आस सुख देहैं तुम जु लाड़ जुत पावौ॥ व्यंजन स्वाद लेहु मेरे प्यारे दृग आनँद बढ़ावौ । होड़ी होड़ा हरि अरु हलधर ओदनकौरखु ढावौ ॥ इत उत वैठौ ढिंग वावा के मांगि पाक परसावौ । मैया खीर बनी है आछी भाजन भरि कैं लावौ ॥ तात जेंइयौं पाछें तुम आगें हमकौं जु जिमावौ । ब्रजपति हंसे हंसी ब्रजरानी यौं सुत सुख सरसावौ ॥ मोहन कही सुनौं बलिदाऊ अवकैं कढ़ी मंगावौ । कैसी बनी आज दुध लपसी याकौ स्वाद बतावौ॥मैया दई अधिक तुम याकौं मोहीं कौं डहकावौ । मोहन यह कुटेव जेंवत हू चंचलता जु जनावौ ॥ झगरो करत परस्पर वावा हू सों नहिं सकुचावौ । दोऊ बंधु नेह सों जेंवौ मेरौ हियौ सिरावौ ॥ तेरी दृष्टि बचाइ चिरावत वलिहि क्यौं न समुझावौ । वासौं प्रीति अधिक राखत हौ मोहीं कौं वहकावौ ॥ राम कृष्ण पूरन भये अव कर वावा जल अचवावौ वृन्दावन हितरूप महरि घर यौं नित रहत बधावौ ॥

राग सारंग–पद ५६

मैया वात नई सुनि अब की । भामिनि एक संदेसौ लाई मो ढिंग आई रबकी ॥ छाने छाने समाचार वह मोसौं बरनत कब की । दुलहिनि एक बताई ऐसी लोक मुकटमणि सब की॥ दही विलोवन तू लागी ही वात करति वह जब की । बड़ो गोप ब्रज मंडल ताकी करत प्रसंसा तब की॥ कहि गई वेगि सगाई लावनि वह मेरे ही ढब की।वृन्दावन हितरूप वात यह अब न रहैगी दबकी ॥

राग सारंग–पद ५७

लाल तोहि बड़ो गनौं कै छोटौ । मोतें छानी वात करत है बड़ो पेट कौ खोटौ ॥ कौन घरगई ठगिनी जिन वालक सौं वाँध्यौ जोटौ । तैं हू रीति अनोखी काढ़ी नेकु न राखत ओटौ ॥ लै जाती वहकाय व्याह की वातन

तोकौं पोटौ । श्रीपति भये सहाय पुन्य व्रजपति कौ कोऊ मोटौ ॥ कितनी वड़ी रंग की कैसी कितर्तें आई लै लोटौ । वृन्दावन हितरूप श्याम मो इकलौती कौ ढोटौ ॥

राग साँरग पद–५८

मैया वाकी मानि भलाई । उनतौ मोसौं कछु कह्यौ नहिं में हीं वात चलाई ॥ शीलवंत गुनवंत भामिनी भले भवन तें आई । सूधे मन सौं राज भवन की कन्या मोहिं वताई ॥ ऐसी वरणी शोभा उन मुख कहत कहत वौराई । अव की तोहि मिलाऊं रानी जिन जिय गनौं भुराई ॥ जुरि आई दस पाँच वधू वतरावनि यह सुनि पाई । वना व्याह विचधरिया अव विधि सव ही वात वनाई ॥ छोटौ पेट भरे गुन केते कहि गोपी मुसिकाई । महरि बुद्धि तीछन वेटा की वाँटौ समझि वधाई ॥ सकुचि उठि गये वाहर गिरिधर ग्वालन धूम मचाई । आयौ व्याह उमाहैं वारौ वेगि मिलौ रे भाई ॥ तारी दै दै नाचत सवही हलधर सैंन जताई । कान्ह पीत पट करी गोमठी सवके तन पटकाई ॥ आइ गये व्रजराज गोद भरि लीने कुँवर कन्हाई । वृन्दावन हित-रूप श्याम की वाल केलि सुखदाई ॥

राग सारंग–पद ५९

वावा वनैं न वलि सौं मोसौं । ग्वाल सिखाइ चिरावत मोकौं कहे देत हौं तोसौं ॥ अव वछरनि कौं ग्वालन देहौं गाइ चरावनि हौंसौं । वन डोलनि कौ वल है मो में जिन जानौं छोटौ सो ॥ जाइ अछीकर घास चराऊं नीर पिवाऊं गोसौ । दूध कटोरा अव न पियौंगौ धार थननि की चोसौं ॥ वड़ौ वली जो लरनि आइहै तासौं हौं उरझौ सौं । तुम जिन जिय में चिंता लावौ हौं दिन दिन जु वड़ौ सो ॥ अपु तें वड़ौ अगमनौं करिहौं हौं रहि जाउँ उरौ सौ । वृन्दावन हितरूप नित नयौ गाइनि सुख वढ्यौ सौं ॥

राग आसावरी ताल आड़–पद ६०

गिरिधर तें मो हियौ सिरायौ । तोतें कारज सवै वनैंगो मरम वात को पायौ ॥

मन साहस तू बड़ौ धरत है घर कौ बोझ उचायौ। करत सीस अघ्रान चूँवि मुख हिय सौं हरषि लगायौ ॥ मेरौ कियौ मनोरथ पूरन धनि तू रानी जायौ। क्यौं न होइ परतापी मैं नारायन देव मनायौ ॥ सुदिनु देखि देउँ गाइनि पाछैं वचन मोहि अति भायौ। वलि सौं करिलै प्रीति लाड़िले मै कुल धर्म सिखायौ ॥ आज्ञा लियें बड़े की चलिये यह मत ग्रंथनि गायौ। छोटे की अति रच्छा कीजे सम जो मित्र कहायौ ॥ सुनि गोपाल होइ जिनि दुवलौ खेल वहुत मन लायौ। बृन्दावन हितरूप नंद कहि प्रेम गरौ भरि आयौ ॥

राग आसावरी–पद ६१

तात के काँधें चढ़े कन्हाई। कंचन विटप शिखर वड़ि कमनी मनु तमाल छवि छाई ॥ किधौं कनक के मेरु महा मर्कत मनि देहि दिखाई। किधौं महा कमनी गिरि ऊपर श्याम घटा झुकि आई ॥ किधौं महा सव तें जुविलच्छन कौतिक कह्यौ न जाई। पट अरु चार कमल तहाँ फूले जुग रवि शोभा पाई ॥ गौर श्याम द्वै इंदु उदै भये वरसत सुधा सवाई। निकट विधुंतुद ताकी संका तनकन मन में आई ॥ पन्ना हरित लसत उर कठुला मुक्ता माल सुहाई। मनहुँ नाभि सर वसन हंस शुक सैनी भीर मचाई ॥ चपल चरन वाजतिं घूँघरियाँ नाद महा सुखदाई। मदन मुनैंयाँ पढ़त मनौं तरु साखनि मुदित महाई ॥ गिरि कौ धरन धरन वसुधा कौ शोभा धरन सदाई। ताकौं धरें फूल मन वाढ़ी अहा प्रेम प्रभुताई ॥ काँधे तें उतारि पुचकारत प्रेम न हियें समाई। बृन्दावन हितरूप श्याम गोदी धरि वात चलाई ॥

आसावरी–पद ६२

गिरिधर व्याह चाह तुहि भारी। औरनि के मुख सुनियत कवहूँ तें मुख तें न उचारी ॥ सकुचे वहुत ग्रीव नीची करि रहि गये वाल विहारी। तात कहत चुटकी दै सन्मुख नाहिंन सकत निहारी ॥ निपट मिलनियाँ सुवल समुझि कैं आइगयो तिहिं वारी। वावा मतो मानि लै मेरो मैं इक वात विचारी ॥ याको व्याह करौ ऐसे घर जहाँ कमला अधिकारी। गोकुल पति

हँसि कह्यौ सुवल सौं मैं चित इही जु धारी॥ सुर नर मुनि सब करौं कौतिकी जो गिरि होइ हितकारी। वृन्दावन हितरूप लोक साकौ होइ मंगलकारी॥

राग सारँग–पद ६३

यह सुनि हँसत हँसत हरि आये। गोकुलपति मैं आज गली में आवत अवहीं पाये॥ मेरी ओर सुवल नें कीनी वहुत भाँति समुझाये। बड़ौ व्याह कह्यौ करिवे मैं गिरिराज जु आज मनाये॥ दई दाहिनों जानौं सवही काज भये मन भाये। मेरौ हितू सुवल ही निकस्यौ झूँठे और दिखाये॥ और न उहाँ दूसरौ मैया जव मोहिं वचन सुनाये। चुगला वगुला दूरि रहि गये पाछें सव पछिताये॥ गाइनि ग्वाल करनि कह्यौ मोकौं पुनि मन अधिक सिहाये। खोजन कह्यौ सजन कोउ राजा अरु मो तन मुसिकाये॥ कहा करैगौ अव कोउ मेरौ जो मैं तात रिझाये। मैया तू सहाय नित कीजौ अरु सव धोइ वहाये॥ वेटा ऐसौ गर्व न कीजे क्यों जु सखा निंदराये। यह कुवुद्धि तुम में वावा के वचन सुनत इतराये॥ सिद्ध होंन दै व्याह विना वादर कित जल वरसाये। वृन्दावन हितरूप श्याम तैं पाहन पगन चलाये॥

राग गौरी–पद ६४

कहै मधुमंगल सुनि रे मोहन। मैया वावा देखत रहिहैं जो हम परिहैं गोंहन॥ तेरे करतव हम सव जानत वूझि खाँइ कहु सौंहन। औगुन देखत कौंन घरगयौ लगै तोहि वर टोहन॥ मनियाँ मिंही जु मोटे धागे कैसें लगिहै पोहन। चोढ़ गाइ थन लागि दोहनी दूध भरै क्यों दोहन॥ हम सौं मिलें सगाई सुधरै नातर करैं विछोहन। गाँव सींव नेगी न झाँकिहैं तुम लगिहौ मग जोहन॥ वलि पद नवौ नवौ ग्वालन पद तजौ वानि अरु कोहन। वृन्दावन हितरूप रहौगे नहीं नचावत भौंहन॥

राग गौरी–पद ६५

वतवना तू मधुमंगल एरे। तेरौ इतनौं वैर एक दिन में वछरा नहिं घेरे॥ मोहन पाँइ न लगि है मैया जतन करै वहुतेरे। कहा मोहिं डरपावत

बाबा करिहैं ब्याह घनेरे ॥ तेरी बलि की गदी मिली है करिहौ ऊजर खेरे। बहुत ब्याह कारज बिगारिहो मै गुन नीके हेरे ॥ मना मनसुखा रेंता पेंता ये सब मेरे चेरे। बलि अरु तेरी काँनि करत हौं जिनि पढ़ि वाइ पहेरे ॥ सीख तुम्हारी सुनिहैं भैया ते बिनु नीर बहे रे। बन ही में के पंच लला तुम इनि बातनि जु बड़े रे ॥ बड़े हाँ करैं तुम जु नाँ करौ किहिं चटसार पढ़े रे। झूठे ही परपंच बनावौ कब तुम न्याइ निबेरे ॥ छलि छलि छाक पराई खाई ऐसे कर्म करे रे। धूत सपूत कहावैं यह जग निबलहिं जानि अरे रे ॥ पर कारज में भाँजी डारौ निसिदिन फिरत दरेरे। तनक दई तें डरपौ अब जिन बोलौ वचन तरेरे ॥ मैं कहि कहा बिगारयौ तुम सब गोंहन बहुत परे रे। बृन्दावन हितरूप श्याम सौं फेंट बाँधि झगरे रे ॥

राग कल्यान–पद ६६

घट बढ़ तेरी हम जु सहत हैं। मैया की रुचि जानि श्याम सुनि तेरौ वचन बहत हैं ॥ जो कोउ कहै ब्याह की नाहीं ताकी फेंट गहत है। बढ़िबढ़ि वचन बदन तें भाषत राखे नांहि रहत है ॥ बिनहीं खायें अमल चढ़्यौ है झगरन कौं उमहत है। ब्याह भये पै कैसी होगी बिन जल नद जु बहत है ॥ तोहि नचावनहारी आवै यौं मो सगुन कहत है। बृन्दावन हितरूप श्याम बिनु बनजी लाभ लहत है ॥

राग बिहागरौ–पद ६७

गुनीले ब्याह कौंन बिधि करिहै। तू स्यानौं हम सबै अयानैं कहैं बिनु काज न सरिहै ॥ बिन हीं गाँव सींव कौं झगरत कैसें पूरौ परिहै। देखौ यह अंधेर लला की कहाँ बरात उतरिहै ॥ रूख न गोंदी कहाँ फूल फल क्यों रखवारौ लरिहै। बिना वारि की नदी बूड़ि पैड़ो ही कैसें भरिहै ॥ फूल्यौ फिरत महरि को ढोटा कैसें दुलहिनि बरिहै। ब्याह सँदेसौ सुन्यौ न कबहूँ कासौं कुँवर झगरिहै ॥ मैया दाम न खरचै बाबा लगि नहिं गई खबरि है। यह नचकैया सो नाचत है रह्यौ गुसौं में भरि है ॥ सात साख की संपति

सुनौं रोहिनी में इहि परस्यो ताहि गनत यह वैरी । वृन्दावन हितरूप व्याह की जो कोउ नाँहि करै री ॥

राग देवगंधार–पद ७४

गाय दुहि किंहिं दिन लावैगो । तव गिरिराज प्रसन्न होइ उहि दूध न्हवावैगो ॥ ताही दिन ह्वै है जु सगाई को ऋहुटावैगो । सखा सवै रसवादिन कौं कोउ मुख न लगावैगो ॥ अधिक प्यार करिहैं व्रजपति हलधर मन भावैगो । चित चीते सव काज होंइ हिय सुख उपजावैगो ॥ जाके सुंदर सुता तिलक वह तुरत पठावैगो । वड़े सजन घर मोहन तू अति आदर पावैगो ॥ विनु चाहैं हीं विधना यह संजोग वनावैगो । गिरिवर है कुलदेव हमारो भलौ करावैगो ॥ केते करिहै व्याह तात परताप जितावैगो । भारौ है इक सजन पौरि वह दई दिखावैगो ॥ मैया याको भेद तो विना कौन वतावैगो । कौन धाम को नाम सुनें विनु हिय अकुलावैगो ॥ ठीक भये विनु श्याम कह्यौ कछु काम न आवैगो । वृन्दावन हितरूप चपल तू धूम मचावैगो ॥

राग देवगंधार–पद ७५

मैया अव जिन मोहि वहरावै । भारी पौरि कौन की वरनी काहे न नाम जतावै ॥ विनु नामी राजा के घर की मन न सगाई आवै। रंक सजन तें लाज भीजिये लाइक क्यौं छवि पावै ॥ तू तो गिरिधर अति अरवीलो पैंड़ो कौन छुड़ावै । वन की बुद्धि निपट ही मोटी को तोहि मतो सुनावै ॥ वाही घर की वात सदा रानी मोतें दुवकावै । यह कछु कपट मिल्यो दाऊ को वात न मन कौं भावै ॥ और और ही कहै नित नई यह चरचा न चलावै। हौं न्यारो तुम सवै मिले हौ को संदेह नसावै ॥ यह लै अपनी पाग पिछौरी को वछरानि चरावै । यह लै अपनी लाठी दै ताकौं जो तोहि सिखावै ॥ अव कहिहौं वावा सौं सवकौं भली भाँति समुझावै । ऐसो कपट देखिये सो अन्याई नगर कहावै ॥ मोसो वेटा तासों तू कहा रंचक वात दुरावै । घरी चार में ढूंढ़त फिरिहै मोहिं जिनि दोस लगावै ॥ अव हौं वास करोंगों वन में

भैया बहुत चिरावै। वात वात कौं वरजत नितहीं को अब रार बढ़ावै॥ महरि करत विनती कब विधना मो दृग बधू दिखावै। बृन्दावन हितरूप श्याम मेरौ का दिन हियो सिरावै॥

राग देवगंधार–पद ७६

महरि कौ हीयौ गहवरि आयौ। सुत बानी सुनि प्रेम बली ने अति हीं आइ दबायौ॥ रवकि भुजा भरि लियौ श्याम कौं बार बार हिय लायौ। अब पूजौं नारायण बेटा करिहै तो मन भायौ॥ जो जो कियौ मनोरथ मैं सो सो सब भाँति पुजायौ। बड़ौ दयाल है श्रीपति ताकौं मैं धरि ध्यान मनायौ॥ त्रिभुवन की मणि दुलहिनि आवै यौं मम चित्त चितायौ। गिरिधर करै प्रीति सौं सेवा सादर प्रभु परचायौ॥ वा घर की देउ बधू लाल कौं जा घर उर उरझायौ। बृन्दावन हित रूप श्याम कौं यौं कहि धीर धरायौ॥

राग विलावल–पद ७७

मैया हम झूठे किये सगरे। बसन बगेर तोहि भरमायौ यामें सब गुन अगरे॥ कहा ओप दियें मोल बढ़ैगौ जैसें झूठे नग रे। करौ प्रसंसा सबै जौहरी दृष्टि परयौ न जब लगि रे॥ जो कोउ करै व्याह की नाहीं ताहि गनत यह ठग रे। बातन पंथ कटै नहि मैया जब लगि धरै न पग रे॥ अपने काज साधु ह्वै बैठे ज्यौं जल तीरै बग रे। काकी बेटी कौन सजन करै व्याह बात ही रगरे॥ तू नहिं समुझत याकी माया रचत बहुत विधि भगरे। बृन्दावन हितरूप दान मिस यह लूटत है डगरे॥

राग विलावल–पद ७८

मनसुखा तू जु निपट अन्याई। तेरे हाथ कहा लागत है चुगली करत पराई॥ कहा लियौ तेरे बावा को बैर बिसाहै भाई। फिरत पुकारू सौ घर घर में निपट कुबुद्धि कमाई॥ मेरौ व्याह भये तें सुनि कहा तेरे घर कौ जाई। तजी मित्रता अरि सौ ह्वै कैं खरचत है चतुराई॥ साँचु कहे ते मोहन तोकौं चिर सी बढ़त महाई। मैया पै जु पुकारत पुनि पुनि पाई कहा बड़ाई॥

बोलौ चलौं कहौं हौं तैसें याही भाँति भलाई। गिरिधर तबहीं होंन देहिंगे तेरी ठीक सगाई ॥ जल मैं बसि कैं बैर मगर सौं किन छाती जु सिराई। सुनी होइगी तैं काहू पै सुमति कवनि यौं गाई ॥ छोटे बड़े दृष्टि नहिं लावै किन तोहि सीख सिखाई। गोद बैठि बाबा के भैया अति गरूरता आई ॥ काम परैगो बन में हम सौं नें चलि कुँवर कन्हाई। सब जानत करतूत रावरी जेसी है ठकुराई ॥ अबहूँ छाँड़ि मनसुखा पाछो अधिक न करि लँगराई। विद्या महा कपट की विधना तेरे उर उपजाई ॥ अब यह कहो कौन विधि बुझिहै पानी आग लगाई। विष की बेलि जु तैं कर सींची है सबकों दुखदाई॥ छोटी सी यह बात ताहि तें दिन दिन अधिक बढ़ाई। सज्जन तें दुर्जन सब कीये बलि हूँ कों जु सिखाई॥ बैरी हाथ परें नहिं छूटै जो कोउ हा हा खाई। जैसी तेरी पेट कतरनी तैसी तें दरसाई॥ संग रहे कौ यह फल निकस्यौ डौंड़ी चपरि बजाई। स्वेत दाग मुख पै कौ भैया खोवै सुंदरताई ॥ बहुत करत कवि रचना मोहन उलटी रीति चलाई। छोटे मुख सुनि बात बड़ी सी मैया अधिक सिहाई ॥ अरे मनसुखा बेटा तेरी याकी कहा लराई। बाल बुद्धि दोउन की थोथी कहा उपाधि उठाई ॥ लै किंन जाउ बाछरू बन हौं इन बातनि तें धाई। यह छोटौ तू बड़ौ कोउ दिन खेलो मिलौ सदाई ॥ जा दिन होइ सगाई मेवनि दैहौं गोद भराई। अब न चिराइ मनसुखा याकों मैं तोहिं बाँह गहाई ॥ मैया यह अति धूत बात याकी मो मन न पत्याई। मेरी कूट करैं बिन याकों रंचक नहीं सुहाई॥ तू काहू को भलो न अतिलड़ रहे न मन जु मिलाई। ज्यों झगरति जु खिलौननि कौं त्यौं ब्याह बुद्धि बौराई ॥ सनैं सनैं ही ह्वै है यह नहिं चकरी लेउ मुल्याई। कहि देउ दाम कुम्हारे लावै दुलहिनि बेगि बनाई ॥ लाल हँसे पुनि हस्यौ मनसुखा जननी कछु मुसिकाई। वृन्दावन हितरूप बेगि आवै जु गोप बड़जाई ॥

राग आसावरी–पद ७६

ऊजरे आवत चले बटोई। मोहन आगें जाइ सबनि की बातन बुद्धि

टटोई ॥ वनें ठनें आवत हैं ये वरसाने दिसि के लोई । पहिलें करि प्रनाम अपु मारग कीये ठाड़े सोई ॥ जात कहाँ आये जु कहाँ ते कहो काज जो होई । सज्जन सबै वताय देत हैं वात न राखत गोई ॥ कौन काज बूझत है लाला कहि मन आसा जोई । भान नगर तें आवत कारज करिवे जात भलोई ॥ तू बूझत है किधौं लुटेरो किधौं गाइ वन खोई । दीपत वड़े गोप कौ जायौ किधौं अमल मति भोई ॥ अजहूँ मन यह जानी जात सगाई करन जु कोई । वृन्दावन हितरूप देखि मृग भ्रम्यो मरीचिका तोई ॥

राग आसावरी–पद ८०

फिरति ह्याँ ब्रजपति भानु दुहाई । तैं नहि सुनी वाट घेरत को वली प्रगट भयौ आई ॥ जो तू आयौ चीर हरन तौ बुद्धि वड़ी दौराई । कै तू भूखौ व्याह फिरत है बूझत करि चतुराई ॥ मृग मरीचिका तोइ लला तैं किहिं किहिं भाँति विताई । कै घर लरयौ फिरत वन इकलौ कै उर भरी भुराई ॥ दीखत है तू राज कुँवर सौ दीजे विथा जनाई । हियें दृगनि में गड़ी जाति है तेरी सुंदरताई ॥ पंथ जाइवौ हमकौं भूल्यो लवधि वड़ी सी पाई । कछु मुसिकात कछु सोचत सौ कै कछु बस्तु गमाई ॥ अन्न मना सौ हमैं लगत है कै वन वाट विहाई । लगि चलि संग जहाँ घर तेरो तहँ देहिं तोहि पहुँचाई ॥ बोलौ सत्य बात तुहि बूझौं करि लेहु मित्र जु ताई । को है भूप नगर वसौ तामे रीति देहु समझाई ॥ कैसो चलन प्रताप जु कैसो कैसो सुयश वड़ाई । कैसी संपति संतति कैसी कैसी उर मृदुताई ॥ नृप बृपभानु घरनि श्री कीरति संपति कही न जाई। सुत श्री दामा सुता श्री राधा विधि रचि एक वनाई ॥ नाम सुनत ताँवरो भयौ तन लोचन वारि वहाई । देखि दशा चक्रित भये पंथी लला कला सी खाई ॥ कै छाया भइ देव लयौ कै मिरगी रोग दवाई । वृन्दावन हितरूप श्याम की कै कहूँ बुद्धि बिकाई ॥

राग सारंग–पद ८१

लै आये श्यामहिं संग लगाई । रे भैया यह काकौ वेटा तुम सव देखौ

आई ॥ बुरौ रोग कोउ याके तनमें हमपे कह्यो न जाई । बूझत बात कला सी खाई मिरगी लयौ दवाई ॥ याको जतन वेगि दै कीजै ज्यों न रोग वढ़ जाई । आवति दया देखि यह कमनी विधना रच्यो वनाई ॥ आइ गयौ मधुमंगल तिहिं छिन सैंननि में वतराई । कहा रची वाजीगर माया सव धूतन के राई ॥ कहा इन बूझ्यौ कहा तुम कह्यो मोहूं देहु वताई । इन बूझी हम कही भानु की प्रभुता सव समुझाई ॥ सुनत सुनत ही याने दीनी तन की सुधि विसराई । मारग जान हमें भूल्यौ है कहा सुनावें गाई ॥ रे यह नंद महर कौ ठग है तुम्हे लगी कहा वाई । वृन्दावन हितरूप अगमनें वेगि धरौ किन पाई ॥

राग सारंग—पद ८२

भैया जो वरसाने तें आये । दीजे वड़ी वधाई तौ अव नंद महर के जाये ॥ नाम लेत याके उर सुख के विरवा वढ़त सवाये । याकैं रोग वड़ौ दीरघ है तुम जिनि जाहु ठगाये॥ विना अग्नि पकवान रचित यह समाचार हम पाये । वाही पुर की ओर विलोकत पलक धरन विसराये ॥ सुधि नहिं मात पिता की इनि ठग के से लाड़ू खाये। उततें आवत पथिक ताहि दिखि प्राण जात वौराये॥ याकी ऐसी वानि जाहु तुम मैं नीके समुझाये। वृन्दावन हितरूप श्याम के मै सव गुन दरसाये ॥

राग सारंग—पद ८३

हँसि परे सव वरसाने वासी। धनि रजधानी नंद महर जहाँ ऐसी सुमति प्रकासी ॥ तन जु ऊजरे मन कीं वातें सुनि अति लगत उदासी । विद्या धूत नगर यह पढ़िये काहे जैये कासी ॥ चंचलता कुल वनितै खोवै चोरै खोवै खाँसी । राजा कौ यश वढ़न न देहीं कपटी नर विसवासी ॥ नृप सुत में औगुन काढ़त यह सुंदरता की रासी । श्रवण न तृपित जु होत वचन जाके मुख श्रवत सुधा सी ॥ समता नहीं परस्पर इन दोउन में अरी अरा सी। वृन्दावन हितरूप मित्र के भाषत वचन विलासी ॥

राग सारंग–पद ८४

बटोही जो तैं वेदनि पाई। तौ अब रोग मिटै सब याकौ वेगि कराइ सगाई॥ परखे सुंदर अंग बुद्धि बल घर वर अति सुघराई। घोष नृपति कौ कुँवर लाड़िलौ सुनिलै नाम कन्हाई॥ याकौ दरद यही सो औषधि तुमनें टेरि बताई। हाथ लगैगी सनें सनें ही यह करै आतुरताई॥ तुम्हें ऊजरे देखि आपने मन की विथा सुनाई। बूझतु है यह मिहीं बात कौं तुम जिन गनौ बुराई॥ लागि चल्यौ है पाछैं पाछैं तुमकौं लाज बड़ाई। दोष कहा यह नगर लगावौ तुम्हें दया उपजाई॥ सज्जन कौं उपकार उचित है ऐसें ग्रंथनि गाई। वृन्दावन हितरूप श्याम की समुझौ कहनि सचाई॥

राग विलावल–पद ८५

लला यह निपट यशाला खेरौ। पैंड़ौ ही कें गरैं लगत करि वातनि कौ अरुझेरौ॥ लरकनि की यह समुझि होइगौ कैसौ तुम जु वड़ेरौ। भरे फिरत हौ चाह नगर क्यौं वसिहे डोम ढढेरौ॥ घर में सीखत गूढ़ पहेरी इहि पुर चुगौ घनेरौ। हमनि सुनी याही तें ग्रह ग्रह नित नित कीजतु फेरौ॥ आँव वृच्छ फल लाग्यौ काहे देखौ चपरि वहेरौ। वातनि लखी वड़ाई खरचौ चतुराई वहुतेरौ॥ वरन्यौ न्याइ विवेकिनु देखौ दीपक तरैं अँधेरौ। ठगा वगा से दोऊ मिलि किहिं भाँति वटोहिनु घेरौ॥ रीझि सगाई करिहैं जहाँ तुम ऐसे न्याइ निवेरौ। फिरत विकाऊ सौ मुँह चुपरें कहत व्याह करौ मेरौ॥ कूटक रचिकैं वन मे ल्यायौ वोलत वचन तरेरौ। नगरी मांहि चलेंगे तव निकसैंगे औगुन ढेरौ॥ सेंवर फूल देखि कें सूवा तरु वर लियौ वसेरौ। भयो फल चाखि निरास वापुरौ वहुरि न वैठ्यौ नेरौ॥ गहरी समझ वचन कछु हलकौ क्यौं करि लगै भलेरौ। वृन्दावन हितरूप वैस लघु काहे बुद्धि वगेरौ॥

राग सारंग–पद ८६

चलौ तुम व्रजपति की रजधानी। याकौ अर्थ खोलि कें कहियै लागति मीठी वानी॥ जा नगरी तुम वसत चातुरी जनमी तहँ हम जानी। नीति रूप

है भूप तहाँ कौ दया रूप है रानी ॥ धारिक धर्म वसत है परजा हम नीकें पहिचानी । पर उपकार करन सब लाइक बात नहीं यह छानी ॥ वल्लभ राज सुता सुत शोभा शारद सकहि न गानी। सब काहू मुख सुनियत हम यह तुम मुख बात प्रमानी ॥ पुर वासी नर नारि पिवत हैं जिनपे वारि जु पानी। हम गुन बहुत मानिहैं बरनो तिनकी रूप कहानी॥ मोकों देहु दिखाइ नैंन भरि होहु मेरे अगवानी। मोहन कहत देहु द्वै खेजा गाय तुरत की ब्यानी॥ भली महरि की कूँखि सफल करी तो सुत जाइ सिहानी । भलौ नाम ब्रजराज निकास्यौ बुद्धि कपट में सानी ॥ अब आगें हम जात आइकें कथा कहें सुखदानी । वृन्दावन हितरूप श्याम की हिय आसक्ति बखानी ॥

राग सारंग–पद ८७

मनसुखा सुनी बात ये ढुरि कें। भलौ बाप कौ नाम निकास्यौ कहत श्याम सौं ढुरिकें॥ कौन जाति को गोत लग्यो है पाँइनि जिन घुरि घुरिकें। तारी देहु ग्वाल सब आवो पाछें लागें जुरि कें ॥ कहीं मरम की बात बहुत याहि एक न आई फुरि कें। रहि गये चाटत होठ लला रँग मानौ गयौ निचुरि कें॥ जिती ब्याह उत्कण्ठा सब अभिलाष रहे उर पुरि कें। नाम धाम सुनि घटती तदपि मिले परोजन ढुरिकें॥ आवैं वेगि बहुरिया यौं हिय प्रेम रह्यौ अंकुरि कें। वृन्दावन हितरूप रिझावैं कबहुँ न जाइ बिछुरि कें ॥

राग सारंग–पद ८८

मनसुखा तनक दई तें डरि रे। हा हा ब्याह होंन दै भैया मो घटती जिन करि रे ॥ तेरे बछरा घेरौं तू खेलनि कौं जाइ निकरि रे। मैया पै मेवा दिवाइहौं तेरी गोदी भरि रे ॥ औरनि की मोहि संक न आवत तू ही पूरौ अरि रे। तेरौ कह्यौ करौंगो तू अब कपट देइ परिहरि रे ॥ हाथ मार खा सौंह वचन तें अब जिन कबहूँ टरि रे। आवें करन सगाई तिनसौं मीठे वचन उचरि रे ॥ मेरी चलै बरात दुसाला दैहौं पांइनि परि रे। वागो देहुँ जरी कौ चीरा राख्यौ लै कें धरि रे॥ फिरि न पत्यैहौं कबहूँ जो तो आवै

कपट उघरि रे । पाछैं गई सो जानि दीजिये अब मो ओरी ढरि रे ॥ हौं हौं बेटा नंद महर को कबहुँ न मोहि निदरि रे । जसुमति सी है मैया मोसों प्रीति राखि जिन लरि रे ॥ दुर्जनता करि दूरि रीति सज्जनता अब विस्तरि रे । वृन्दावन हितरूप बाँह बल दै कारज अनुसरि रे ॥

राग सारंग–पद ८९

करै को कारे संग मिताई । कारे के मन कपट बसत है प्रगट पुराननि गाई ॥ अपनी गौं को गरजी पाछैं मानैं नाहिं भलाई । दुलहिनि माँड़ि घरै बैठे जब तब कब बदिहै भाई ॥ जिन मैया पय पालि जिवायौ छिन छिन प्रीति सवाई । ताहू को दधि भाजन फोरयौ खोटौ पेट कन्हाई ॥ पिता द्वार के रूख उखारे उलटी छाँह मिटाई । घर कौ दही न भावै मैया चोरी को दधि खाई ॥ लरकनि की चुटिया बाँधे तन भरै चहुटियाँ जाई । को जानै कारे पन्नग लौं छिन में जाय पलाई ॥ अरे तनक से धूत रौर तें सबही गाँव मचाई । कहौ मित्रता करिकैं तुमसौं किन जु अधिक पति पाई ॥ दुहती बेर बधू सिर ढोरै बछरनि देत चुखाई । कहौ तुम्हें ब्रजराज महरि नें कब यह सीख सिखाई ॥ तेरी छाँह न पत्याऊँ कबहूँ यह मेरे जिय आई । अपनों काम काढ़ि होइ न्यारौ यह तोमें लँगराई ॥ ऐंड़ बड़ी बलिदाऊ हू सौं अरु किहिं बात चलाई । वृन्दावन हितरूप रावरी सुनि लेहु विदित बड़ाई ॥

राग सारंग–पद ९०

यशोदा ऊँचे चढ़ि जु बुलावै । बचन सुनत ये मेरे कान्हर काहे न दौरी आवै ॥ लाल मुरलिया वारो री ताहि कोऊ न मोहिं बतावै । निकसि गयौ भूखो जु भोर को कौन सँदेसो लावै ॥ आउ आउ मनमोहन तो बिनु मो घर छवि नहि पावै। निपट निठुर बलिराम श्याम कौं लाउ कहाँ बहरावै॥ मैया सहित बैठि बाबा ढिंग काहे न आइ जिमावै । बाकें अधिक ब्याह की अरवी तू निसि द्यौस चिरावै ॥ रूठि रह्यौ मो प्राण भाँवतो बेटा क्यों न मनावै । कौंन ओर लै गयो बाछरू अब कहि कहाँ चरावै ॥ हिय अकुलात

अरवरत लोचन कब मोहिं वदन दिखावै। अरी गोप कुल मंडन बिनु मोहिं घर को काज न भावै॥ व्रजपति सुकृत पुंज को फल पीताम्बर धरन कहावै। मो प्राणनि की थाती कहँ सुख व्रपत कोउ समुझावै॥ कौन गोप को नंदन जो याकों रुचि खेल खिलावै। याहि लेहु पुचकारि रोहिनी उनहिं डराय भगावै॥ कर गहि लीजो गाढ़ो करिकैं बातनि वाहि भुरावै। ढीलो रहे छुड़ाय जाइगो बहुरि न हाथ गहावै॥ मैया बड़ी जु आवत देखी मोहन दृष्टि दुरावै। आई सदन सगाई सुनिकें लाल आतुरो धावै॥ जननी लियौ अंक भरि तन उवटन करि नीर न्हवावै। अंग अँगौछि तात कर भोजन करि हरि रुचि जु बढ़ावै॥ परसति है व्रजरानी मोहन स्वाद सराहि मँगावै। वृन्दावन हितरूप जनक जननी उर सुख उपजावै॥

राग सारंग–पद ६१

तात मो नगर दृष्टि इक आयौ। दूरि चरावन गयौ बाछरू ग्वालनि तहाँ बतायौ॥ ऊँचे महल लसत हैं गिरि पै शोभा मन बिरमायौ। कौन भूप को नाम गाँव को याकौ भेद न पायौ॥ व्रजपति हँसे कहत हैं गिरिधर सुनि मो हियौ सिरायौ। पुर बूझनि की समुझि भई अब महिमा भाग्य मनायौ॥ नृप वृपभानु गाँव बरसानौ ताहि देखि तू आयौ। भूलि सींव जिन झाँकै बेटा जैहै तहाँ ठगायौ॥ तेरौ गहनौं सब लै लैहैं मैं तोकों समुझायौ। परम मोहनी भूमि जहाँ लखि मुनि मन हू बौरायौ॥ नृप हू कह्यौ कह्यौ तहाँ ठग हू मो मन भ्रम उपजायौ। जहाँ राजा तहाँ कहाँ चोर ठग नृप किहिं गुननि कहायौ॥ कहि मोहन हौं बलि को चाकर करिहौं तो मन भायौ। मोसौं कहै जु तू लै पारयौ बलि ने सबनि सिखायौ॥ कबहुँ न ह्वैहौं चाकर बाबा जसुमति रानी जायौ। जब जब बात चलै तबहीं तब व्याह इननि बहकायौ॥ बलिदाऊ की जूँठि खाऊ उहि पुर जु व्याह ठहरायौ। नातर कारौ रहे कान्ह तैं चपरि जु बंधु रुठायौ॥ यह सुनि लोटि गये अवनी पीतांवर दूरि बगायौ। भीतर तें दौरीं व्रजरानी कर गहि श्याम उठायौ॥ वदन चूँवि-

ब्रजराज वहुत हित करि गोदी वैठायौ । प्राण भाँवतो लाल ताहि पुनि पुनि भरि अंक लड़ायौ ॥ आँसू पोंछत नंद जसोदा लाड़ गोद भरायौ । वलि नें कही ओर हों तेरी तव मन अधिक सिहायौ ॥ क्रीड़त राम कृष्ण आँगन में यह कौतुक दरसायौ । वृन्दावन हितरूप जनक जननी आनँद निधि पायौ॥

राग सारंग—पद ६२

लाल कौं व्याहों वाही घर की । सुपनें निरख्यौ नगर आजु जो दृष्टि परयौ गिरिधर की ॥ कौन करै न सगाई मो घर मेरे सुंदरवर की । रानी जायौ भूप खिलायौ गोप वंश आगर की ॥ वाही खेत वरात जाइगी मो कुल सुख सागर की । वाही पौरि वाजिहै नौवत गहरी नव नागर की ॥ वाही राज भवन की आवैं नागरि छवि जु निकर की । विधिना रची न जा सम देखत उपमनि छाती दरकी ॥ वरुन नाग नर लोक न कोऊ वारौं अमर नगर की । गौर तेज सवकी जु मुकट मनि भानुवंश यशधर की ॥ महा रूप गरवीली दुलहिनि आवै अपने अर की । मेरे अजिर भीर नित रहिहै वनितन शोभा भर की ॥ वेटा अव जिन झूठ मानि हौं कहें देत अंतर की । ब्रजपति हू वाही असीस अव फलिहै नारी नर की ॥ वलि वलि जाउँ लाड़िले तजि दै वानि जु दान नगर की । वृन्दावन हितरूप वरै जव वेटी वड़े महरि की ॥

राग विहागरौ—पद ६३

मैया दुलहनि वड़ी न चहिये । मैं हीं सुनी सुनाइ न औरहिं ऐसी वात न कहिये ॥ घर कौ ऊँचौ द्वार करावै देखि देखि दुख दहिये । मित्र मंडली सवै हँसैं नित लज्जा भींजत रहिये ॥ सकुचीलौ सुभाव है मेरौ वात परति नहिं सहि ये । कोऊ देहु उरहनौं मन कुचैंन होइ नहि सुख लहियें ॥ तोतें डरत सखा रानी वन क्यों इन संग निवहिये । सवल होइ तौ दंड देइ होइ निवल मौन गहि रहिये ॥ डरतु रहत हौं सवसौं भाँवरि पारनि वेगि उमहिये। वृन्दावन हितरूप लाभ लहि अभिमानिनु मद ढहिये ॥

राग विहागरौ–पद ६४

श्याम कैं चात्रिक कैसी रट है। व्याह काज जसुमति तुम नंदन वचन कहत चट चट है॥ औरनि काज विगारैं वरनत आपु काज सटपट है। कौन भली कहिहै हो ढोटा करी सबसौं खटपट है॥ मैया हू सौं चूकै नाहिंन फोरयौ दधि कौ घट है। लरिकनि के तन भरैं चहुंटिया खाट वाँधि सिर लट है॥ लरिवे कौं सबसौं भयौ सन्मुख कटि कसि पियरौ पट है। अरी तनक सौ दीसत ताछिन लगे भलौ मनु भट है॥ दूध दही ढुरकाय चपेटौ मारि जात दै झट है। वृन्दावन हितरूप नाम इन पायौ नागर नट है॥

राग विहागरौ–पद ६५

अरी मो सन्मुख दई भयौ है। तुम जिन दाँत चढ़ावौ मोहिं गिरिराज कृपालु दयौ है॥ पूरव जनम कौन ब्रजपति ने सुकृत गहकि वयौ है। कै नीकैं पूज्यौ श्रीपति कौं सो सुदृष्टि चितयौ है॥ गोकुल मणि उर व्याह उमाह्यौ अंकुर प्रेम ठयौ है। मैं जानी परजन्य नृपति ने तप करि प्रभु रिझयौ है॥ कै असीस दैवे वड़ भागिनि सुघरी छोर लयौ है। तव लरज्यौ विधिना मो तन नित मंगल वढ़त नयौ है॥ लाड़ चाइ मोहन के हिय अनुराग प्रेम भिजयौ है। ब्रज जन भाग्य वली समूह सुख रहत वितान छयौ है॥ सुर मद भंजन भयौ मुरलीधर विपति सिंधु रितयौ है। वृन्दावन हितरूप निरखि मो उर कौ ताप गयौ है॥

राग केदारौ–पद ६६

मोहन अंग लै चुपराइ। सहज साँवल धूरि लगि दिन परत कारौ जाइ॥ कनौंती लै तेल डारौं मृदुल कर सहराइ। वड़ौ ह्वै है वेगि द लखि तात हियौ सिराइ॥ सवनि कौ सिरमौर करिहौं जब चरावै गाइ। भाग्य तादिन मानि हौं लावै जु दूध दुहाइ॥ कुल वधू धौरी जु गावैं मो भवन में आइ। झगरि वा दिन लेंहिगीं मेवानि गोद भराइ॥ सजन घर कव द्रव्य खर्चै नन्दीश्वर कौ राइ। श्याम की जो दुलहिनी कव लेंहुँ गाइ वजाइ॥

आइ जननी गही ठोड़ी कृष्ण नें लड़काइ । मैया कितनी बड़ी कैसे रूप बधू बताइ ॥ कहत गोपी और बूझत मोहिं देउ समुझाइ । एसी आवै दुलहिनी तुमपै दबावै पाँइ ॥ महरि के पाछें दुरे वा ओर डेल चलाइ । काल्हि मोकौं दै गई गारी जु हाथ नचाइ ॥ प्रात बछरा मेलि मेरी गाइ दई चुखाइ । रात कौ दधि जम्यौ दीनी माथनी ढुरकाइ ॥ कैसें बसिये कहाँ जैये काहू तें न डराइ । बृन्दावन हितरूप लीजे वार वार बलाइ ॥

राग बिलावल—पद ६७

तुरत की जाई बछिया लाये । बालक बृन्द लगे सँग आवत खेलत श्याम सिहाये ॥ उठति नाहिं हरि गोद उठावत अंग स्वेद श्रम आये । तव लगि हूँकत दौरी गैया मोहन जीय डराये ॥ महरि कहति तू छाँड़ि छाँड़ि रे ऐसे वचन सुनाये। डारि पिछौरी बछिया तजि कें मैया ओरी धाये ॥ गैया लागी गोहन तव बलिदाऊ आइ बचाये । ग्वाल देत हैं तारी धन्य बली जसुमति के जाये ॥ यह जाड़े सौं काँपत तव मैं अपने वसन उढ़ाये । आगि तपावन लायौ बछिया गैया सींग चलाये ॥ तरुनी हँसी कहाँ गयौ बल दधि माखन लोंदा खाये । इते जोर पै रानी चाहति गायौ ब्याह बधाये ॥ निवलनि के घर चोरी करि करि लला बहुत इतराये । खुली लगोंटी तन काँपत से कपिला गाइ भगाये ॥ दिन बीतत जु सगाई चाहत नेगी कवहुँ न आये। मतौ करत सब कुटुँब बैठि कैं कान्ह फिरत लड़काये ॥ जग जानत रावरी बड़ाई को जैहै जु ठगाये । बरन त्रिलचण अहा कहा गाढ़ेई रंग रँगाये ॥ मैया यह कौन से नगर की वचन कठोर सुनाये । याके घर के बकुचा बासन कब मै चोरि मँगाये ॥ पर कारज भाँजी मारत इन येई जज्ञ कराये । बिना लराई वचन बान इहि यौंही फेंकि गमाये ॥ घर की दुखिया बर की दुखिया मैं याके गुण पाये । बृन्दावन हितरूप जानि इन नित धन ढुरे पराये ॥

राग बिलावल—पद ६८

हँसति है गोपी सन्मुख ठाढ़ी । महरि तनक सो ढोटा उर तें गुनन को-

थरी काढ़ी ॥ बिन हीं ताल पखावज नाचत लगन व्याह की गाढ़ी । वृन्दा-
वन हितरूप बिना हीं प्यास प्यास है बाढ़ी ॥

राग सारँग–पद ६६

महरि इक दुरि जोतिसी बुलायौ । न्यारे भवन बैठि कें रानी पत्रा हरषि
खुलायौ ॥ मेरे प्रश्न परीक्षा लीजे अबहीं बुद्धि न पायौ । ताकौ ऊतर देहु
करो जो प्रभु मो मन कौ भायौ ॥ पंडित कहत सुनौं ब्रजरानी आगम भलौ
जनायौ । तुम जु विचारौ सिद्ध होइ सो महा शुभ लगन जतायौ॥ जसुमति
दई विप्र बहु दछिना पुनि पद सीस नवायौ। पुनि ग्रह बोलि आपनी ढाढ़िनि
सनै सनै समुझायौ ॥ छानी छानी जाइ भानु पुर भेद न परै लखायौ । थाह
लीजियो सबके मन की कहियौ वचन सुहायौ ॥ दियौ ताहि कोरचा कौ धन
करि प्रसन्न जु पठायौ । भानुवंश के ढाढ़ी के घर वास सभागिनि पायौ ॥ हौं
आई हौं रूठि कंत सौं यौं कहि द्यौस बितायौ । राति भयें गई कीरति मंदिर
नीकें गाई रिझायौ ॥ बसत कौन से नगर नागरी रानी निकट बुलायौ ।
पति सौं फिरत अबोलें ऐसें दूजी भाम चितायौ ॥ कै तू सासु ननद की
दुखिया कै दरिद्र घर आयौ । दीसति है गुनवंती वाला काहे कंत बिहायौ ।
हर हर हँसी गोपिका सबही बहुरि ताहि पहिरायौ । रहि कोऊ दिन निकट
हमारें सादर वचन सुनायौ ॥ गाइ संग रहि मो अतिलड़ि कैं यौं मन धीर
बँधायौ । जा दिन ह्वै है व्याह कुँवरि कौ दैहौं मन कौ भायौ ॥ तन मन
फूली सुनि कैं ढाढ़िनि पुनि पुनि माथौ नायौ । धन्य भई हौं आज लोक में
भाग्य अपार मनायौ ॥ चरन वंदि बतरानी ढाढ़िनि मनु झर अमृत लगायौ।
कौन दिना होइ व्याह कुँवरि को देखनि हिय हुलसायौ॥ लाड़ी सम वर हौं
खोजत विधिना नहिं और बनायौ । कछू कुलच्छण सुनि संकित सम है जसु-
मति कौ जायौ ॥ हौं सर्वज्ञ लली की मैया घर वर भलौ मिलायौ । दई
दाहिनौं जानि परयौ तुम वदन प्रेरि कहवायौ ॥ छोटे मुख हौं कहि न सकति
ही मन जु बहुत ललचायौ। जो बनिहै यह बात जाइ तौ यश बितान जग

छायौ ॥ सुनि ढाढ़िनि के वचन घरनि रावलपति मृदु मुसिकायौ । समझी धरनि तँबूरा वारी हिय कौ हिय जु सिरायौ ॥ वहुरि आइहौं वेगि सीख देहु पति मोहिं आनि मनायौ।राधा शोभा सिंधु माँहिं मन लोचन गोता खायौ॥ आतुर गई महरि पै उर गहिरें आनंद जु छायौ । वृन्दावन हितरूप महरि सौं कह्यौ जु कीरति गायौ ॥

राग विहागरौ—पद १००

जसुमति सुनत श्रवण दै वतियाँ । ढाँढ़िनि वरनत परम प्रेम सौं कीरति कह्यौ जिहिं भँतियाँ ॥ रानी लाग वहुत कीरति मन सोच करति दिन रतियाँ । घर वर तौ इक यही तक्यौ सुत लच्छण धूजति छतियाँ ॥ महरि रहौ निहिचिंत समझि आई उन मन की गतियाँ। देखीं उहि पुर नारि सगाई इहि घर हित सरसतियाँ॥ नाम सगाई सुनि चौंके मोहन आये गहि घतियाँ। वृन्दावन हितरूप लगे जननी उर दमकत दतियाँ ॥

राग विहागरौ—पद १०१

मैया गाइपाल मोहिं करि री । या कृत करि सपूत लागौंगौ विनती मन में धरि री ॥ वछरा पाल नाम यह छोटौ कोऊ देत न दर री । हा हा कान डारि वावा के कहत पाँइ हौं परि री ॥ पहिल सुनाइ न वलि ग्वालनि कौं ये जु चुगल हैं अरि री । हौं वेटा राजा कौ ताकी भयौ चहत सरवरि री ॥ मेरे उर परतीति होइ हँसि मुख तें वचन उचरि री । व्याह होहिगौ तवहीं रानी हौं यह कहत झगरि री ॥ गाइनि संग दूरि जैवे तें तू जिन मन में डरि री । भयौ वली पी दूध गई मोहिं सब की संका टरि री ॥ सुनि भई सुखित महरि गिरिधर ने कही वात वल भरि री । गौ चारन शुभ सुदिन सुधायौ महरि लाड़ अनुसरि री ॥ मोहन मुदित मातु अंचल गहि अव जु सोच परिहरि री । वृन्दावन हितरूप मनोरथ सागर जैहै तरि री ॥

राग आसावरी—पद १०२

जसुमति कहति आजु गोपालक होइ कन्हैया मेरौ री । विप्रनि सुदिन

बतायौ अबहीं धन खरचौं बहुतेरो री॥ कातिक सुदि आठें शुभ वासर सफल मनोरथ मान्यों री। मंगल महा देखियतु सजनी दई दाहिनों जान्यों री॥ छोटे बड़े ग्वाल सँग लै कैं मोहन कानन जैहे री। नाना पाक रचौंगी बन में छाक छबीली खैहे री॥ बूढ़ीं बड़ी सबै घर घर तें मंगल गावति आवौ री। वेदन पढ़ौ मुनीश लकुटिया गिरिधर हाथ गहावौ री॥ आरज गोप सिखावनि दैकें निर्भय दिशा पठावौ री। यह दिन दई दिखायो नैंननि गिरि की कृपा मनावौ री॥ लाल संग जैहें जे तिनकों बोलि बोलि पहिरावौ री। प्रीति करें मेरे अतिलड़ सौं मेवनि गोद भरावौ री॥ मंगल कलश सवासिनि सिर धरि मंगल रीति करावौ री। दधि अच्छत रोरी लै मंगल विधि सौं तिलक बनावौ री॥ निकसौ सबै बजावति गावति गलीं सुगंधि सिंचावौ री। देहु अशीश घोष पति नंदन हरषि कुसुम बरसावौ री॥ श्रीपति पूजि लाल आगें लेहु गउन सीस रुचि नावौ री। वृन्दावन हितरूप श्याम कौं भाग्य भरीं दुलरावौ री॥

राग सारंग–पद १०३

चल्यौ री श्याम गउनि के संग। व्रजपति सुहथ सिंगारयौ नख सिख रूप बढ़्यौ अंग अंग॥ सखनि मंडली मध्य विराजत कहा कहौं उर जु उमंग। वृन्दावन हितरूप लाल पै वारौं निकर अनंग॥

राग सारंग–पद १०४

लिये बड़ड़े ग्वाल बुलाइकैं। मोहन की रच्छा सब कीजो व्रजपति कह्यौ मुसिकाइ कैं॥ ऊँचे तरु जिन चढ़न देहु जल गहिरें न्हाइ न जाइ कैं। क्रूर पसुन के सन्मुख चलते तुम लीजौं अहुटाइ कैं॥ भूख लगें भोजन कराइयौ दिहु पकवान मँगाइ कैं। पाछें तें छकहारी तुम पै दैहों वेगि पठाइ कैं॥ यह बालक तुम स्यानें सबही लेहु गाइ सम्हराइ कैं। हँसि पुचकारि घोषराने नें दीयो कर पकराइ कैं॥ मनौं रवि उदित खिलै वारिज यौं मित्रनि मिलि छवि पाइ कैं। रोंम रोंम आनँद अति बाढ़्यौ लाल रसिक मणि राइ कैं॥ धौरी

गाँग गाइ कौं पूज्यौ थापे पीठ मँड़ाइ कैं । जसुमति नंद दई बहु दछिना विप्रनि पद सिर नाइ कैं ॥ सबहिनु के आधीन होत रानी ग्वालनि कौं पहिराइ कैं । बेटा श्यामहिं तुम सिख दीजौ कहति हौं गोद उचाइ कैं ॥ बहु विधि बाजे बाजत गावत रही नगर धुनि छाइ कैं । गाँव गोइरें आये सब तब देत अशीश सिहाइ कैं ॥ बगर बगर मंगल समूह लखि बाढ़यौ सहज सुभाइ कैं । न्यौछावरि नर नारि करत हैं नंदसुवन पै आइकैं ॥ अहो सुबल मधुमंगल अर्जुन भोज सुनौं चित लाइ कैं। कालीदह वन ताल गउनि कौं जिन लै जाउ बढ़ाइ कैं ॥ आगें टोल चलैं गऊवनि के दीनी वन बगराइ कैं । मनु वसंत फूल्यौ बहु रंगनि कहा सुनाऊँ गाइ कैं ॥ रूप जलद कौ धुरवा मानौं बरसत सुख समुदाइ कैं। आये वट संकेत देखि छवि मोहन रहे ललचाइ कैं ॥ तोरतिं फूल गोप कन्या तहाँ निरखि गये बौराइ कैं । बृन्दावन हितरूप नैंन प्यासेनु दियौ अघवाइ कैं ॥

राग सारंग—पद १०५

भई मोहन मन गति और है । नैंन मीन छवि सुधा सिंधु मिले रही न चित बृत्ति ठौर है ॥ वल्लभ कुल सिरताज सुता जो रूप अवधि तन गौर है । ताहि विलोकि दूरि तें दहले प्रेम करी मति बौर है ॥ काहू न भेद ग्वाल चक्रत बिक्यौ लाल रसिक सिरमौर है । बृन्दावन हितरूप बिवस भये पुनि पुनि उतही दौर है ॥

राग सारंग—पद १०६

कियौ ग्वालन लाल सचेत है । प्यास लगी तौ जल पियौ भैया काहे न ऊतर देत है ॥ घर बैठे ही गाल बजायौ देख्यौ पर न निकेत है । आजु गउनि के पाछें मोहन चकफेरी सी लेत है ॥ वचन सखा कौ नहीं सहि सके जिन नहिं समुझ्यौ हेत है। बृन्दावन हितरूप प्रेम कौ निज मंदिर संकेत है ॥

राग सारंग—पद १०७

चढ़ि वट ऊपर क्रीड़ा करैं । नट से भट से काछें सबही इक एकनि

पाछें परें ॥ श्याम कहत ऊँचे चढि भैया को वे जातिं द्रुमनि तरें। मनु शशि निकर प्रकाश भयो है मृदु धुनि होत हरें हरें ॥ जानि न परी जौहरी कें ये जात जवाहर कों भरें। वढ़ि गई दूरि कहा अव कीजे अति गुमान वे मन धरें ॥ चलो दौरिकें दान लीजिये अकर जाति हें नहिं डरें। वावा को ले नाम राज की भय दिखाइ इन सों अरें ॥ चपरि उपाधि उठावत गिरिधर होलें सुनि भावें खरें। हम फेरीं बहु वार गाइ अव कौन जाइ तेरे वरें ॥ उतरि उतरि भाषत मधुमंगल अरु सव योंहीं उच्चरें। वृन्दावन हितरूप श्याम उत दृष्टि लगी इत ये लरें ॥

राग सारंग—पद १०८

चलि गाइ लेउ वगदाइ कें। अव कें हे ओसरो श्याम को यांही देहु पठाइ कें ॥ वे हें चरति प्रेम सर तीरें दूरि गईं वगराइ कें। वाँधि पिछौरी कटि सों मोहन चले तहाँ कों धाइकें ॥ वोलि सुनाइ गाइ सव फेरीं वरसाने दिशि जाइकें। देख्यौ नगर तुंग तरु चढ़िकें दृष्टि वड़ी दौराइकें ॥ गिरि तरहटी वसत पुर सुंदर रहे उपवन छवि छाइकें। रावलपति कौ सदन तहाँ मनु धरयौ शोभा वपु आइकें ॥ लगी टकटकी वाही ओरी गाइ दई विसराइ कें। कहाँ गयौ वह धूत नंद कौ भैया लेहु वुलाइ कें ॥ ढूँढ़त सखा श्याम पै आये सवै कहत समुझाइ कें। उतरो निपट गुनीले सवही दीनी लाज गमाइ कें ॥ आये हे गाइनु फेरनि कों ह्याँई रहे विकाइ कें। उहि पुर गयें न हाथ आइहो हम जानी सतभाइ कें ॥ समुझि सकुचि नीचे तव उतरे कछुक डरौ सौ पाइ कें। गहि लई वाँह मित्र की तासों मन की कहत सुनाइ कें ॥ गाँव की यह मोहनी मही पै मोचित लियो चुराकें। भीतर जाइ देखिये याकों कैसो भेप वनाइ कें ॥ सिख नहिं सुनी लला वावा नें तादिन कह्यौ डराइ कें। भूलि न पाँउ देहु उहिं ओरी ले जें हें वहकाइ कें ॥ भैया मन लरजत है उतहीं रसना कहीं का गाइ कें। वार वार उपजत चित ऐसी अवहीं जेये धाइ कें ॥ आछी वस्तु वहुत जतननि करि लखिये नेन अघाइ

कैं। संगी सबै कूर हैं मेरे यासौं रह्यौ पछिताइ कैं ॥ गाइ चलीं गोवर्धन सन्मुख गीधीं खरयौ खाइ कैं। वृन्दावन हित रूप रँगीले गिरि पै चढ़े सिहाइ कैं ॥

राग सारंग–पद–१०९

किंयौ गिरि चढ़ि मुरली नाद है। धीर हरयौ सबहिनु के मन कौ तरुनिनु दियौ सवाद है ॥ पाहन द्रवे थकित भईं सरिता पशुनि बढ़यौ अहलाद है। वृन्दावन हितरूप आजु सुख बरष्यौ तजि मर्जाद है ॥

राग सारंग–पद ११०

वन छाक छबीली लै चली। अहो लाल तुम वचन सुनावौ हौं भूली गहवर गली ॥ ऊँचौ कर करि श्याम पुकारति ग्वाल नँद सुत अति बली। आवौ री आवौ तुम सन्मुख भूख लगी हम कौं भली ॥ छाकैं खोलि सखा सब बैठे करी सुविधि रचि मंडली। सब कौ स्वाद लेत हैं मोहन प्रफुलित मुख वारिज कली ॥ काकी मैया कूर पाक विधि काकी है चतुरा बली। सबके कौर आप मुख धरि धरि डहकावत औरनि छली ॥ रुख पायौ पीतांबरधर कौ नैंन कोर सैननि हली। छाक मनसुखा की जु चुराई ता हिय उपजी कलमली ॥ ग्रास ग्रास सब लूटि लै गये कौतूहल भयौ वन थली। तारी दै दै सब नाचत हैं मोहन मन आसा फली ॥ कियौ गुपाल मानि रुचि भोजन हिय जिय बाढ़ी रँग रली। वृन्दावन हितरूप सक्र मद भंजन ब्रजजन प्रणत पली ॥

राग सारंग–पद १११

गिरि पूजन आईं गावतीं। श्याम कहत सुनि रे सुनि मैया बात भई मन भाँवतीं ॥ कौंन गाँव को धाम कहाँ तें आवतिं मन हुलसावतीं। शोभा कौ सागर मनौं उमग्यौ लोचन लहरि सिरावतीं ॥ अगनित सखीं बैस लघु तिन में रूप जोति दरसावतीं। राजति हैं सबकी जु मुकटमणि शशि के निकर लजावतीं ॥ पूजति हैं गिरिराज पाक बहु मेवा भोग धरावतीं। मनहुँ

लोक मणि रची चतुर विधि उर अचिरज उपजावतीं ॥ भैया भेद लाउ तू याकौ गिरि किहिं काज मनावतीं। हैं धन धाम कुटुँव की पूरीं छवि आगरी कहावतीं ॥ अरे मित्र यह हौं जानत नित भानु सुता ह्याँ आवतीं। ताके चरन दासि कौं चाहतिं जे जनमीं अमरावतीं ॥ पूजि गईं वे अपने घर कौं अति आनंद बढ़ावतीं। वृन्दावन हितरूप विछौना अवनी चलीं विछावतीं ॥

राग सारंग—पद ११२

यह शोभा निकर दई सच्यौ। धन्य नगर वह वगर मानिये जहाँ विधना यह वपु रच्यौ ॥ धन्य भयौ कुल गोप ओप देवैं उपमा मति कवि पच्यौ। धनि रस रतन कौंन सुकृती कैं उच्च भाल प्रापति खच्यौ ॥ धन्य परम आनंद अवधि यह आगें सार कहा वच्यौ। पुनि वह कलम हाथ नहिं लागी सम दूजी करत जु हच्यौ ॥ वह विचार वह समयौ भूल्यौ यातें करता उर तच्यौ। वृन्दावन हितरूप विना मित सिंधु पार खोजत लच्यौ ॥

राग सारंग—पद ११३

यमुना जल गउनि पिवाइये। सनैं सनैं लै चलौ चरावति हरे त्रननि अघवाइये ॥ फेरौ गोधन रविजा सन्मुख लै लै नाम बुलाइये। सागर छीर सवल मनु उमग्यौ यौं छवि दृग दरसाइये ॥ कौतिक खेल रचत नाना कानन लखि हियें सिहाइये। सप्त सिंधु वधिनी तीर गये सव सुख संपति पाइये ॥ निर्मल वारि पान करि धापीं हरि कर पीठ फिराइये। पुनि कूदे गोपालक जल अँजुलि भरि भरि जु चलाइये ॥ तरत कमलदल लोचन तिन मधि कहा छवि वरनि सुनाइये। क्रीड़त मनौं मत्त गज सावक अति कौतूहल छाइये ॥ एकनि कौं गोता दै उछरत एकनि गहि उर लाइये। एकनि कैं पाछें देहि तारी एकनि धाइ गहाइये ॥ एकनि तीर पुलिन में लावत ऊँचे तें लटकाइये। करि-छाँड़त नकवानी ताकौं हँसि हँसि वहुरि मनाइये ॥ इक वदि होड़ धुरत वल तौलत पुनि पुनि भुज पटकाइयें। राख्यौ रंग कहत मोहन एकनि कौं सैन वताइये ॥ वेनु विपान लकुटिया चोरी एकनि यौं जु चिराइये। एकनि

की जु पिछौरी रज में गाड़ी खोज न पाइये ॥ माच रह्यौ धमतूरौ नगधर सबके न्याइ चुकाइये । वासर थोरौ रह्यौ गाइ अब गाँव ओर बगदाइये ॥ पट पियरौ फेरनि में सबकौं लै चलै संग लगाइये । बृन्दावन हितरूप आजु की आवनि पै बलि जाइये ॥

राग गौरी ताल चर्चरी–पद ११४

गउवनि पाछैं लसत श्याम सौभग मनी । गोप बालक बृन्द मनौं उड़गन खिले मध्य शशि उदित भयौ संग राकावनी । मुरलिका अधर लगि मधुर धुनि करत हैं अहा वर्षत कहा सुधा रोचक कनी । देत आनंद गौरी ललकि लेत सुर सुनति प्रफुलित तरुनि मनौं ये कुमुदनी ॥ बढ़ी आरति चकोरीं त्रिपित आँखि ये छवि किरण दरस कैं भईं प्रमुदित घनी। ताप तन नसि गयौ हियौ शीतल भयौ देखि आवत कुँवर चलत लोचन अनी॥ वदन श्रम कण दिपैं अलक कुंडल छिपैं मनौं रवि राहु संग्राम कियौ थर्पनी । नासिका डुलत वेसरि सुभग जलज मणि निरखि छवि परम अनुराग सौं मति सनी ॥ वपु जु शोभा निकर अहा नख सिख बन्यौ एक रसना सुवानिक न आवत भनी । बृन्दावन हितरूप वारि देंउ मदन गन लाभ लोचननि कौ सुवन गोकुल धनी ॥

राग गौरी चौतालो–पद ११५

आवतरी लाल गाइनि पाछैं छवि लखि आछैं निकर मदन लोटैं चरन। शोभा धरन धरैं पट पीरौ मुरलीधरन पुनि सबमन आनँद भरन ॥ छवि सौं रुरति अलकावली मुख पै नैंन विसाल त्रपरि उर अरनि । बृन्दावन हितरूप कौ आगर हरि नट नागर बैन अमी मुख झरनि ॥

राग गौरी चौतालो–पद ११६

कोटि कोटि री प्राण यह छवि वारौं अपल निहारौं गौरज मंडित वदन । मित्र मंडली मध्य विराजत कौतिक रचित हँसनि दमक आछे रदन ॥ आइ अलंकृत पुरकौं करिहैं करवट दै चलै लजि मद मदन । बृन्दावन

हितरूप कौ सागर विनमित वढ़िहै नंद महरि के सदन॥

राग गौरी–पद ११७

तू देखि री आली ऊँचे चढ़िकैं गजगति आवनि कैसे मुरत दृग वंक। कैसी ललक सौं गावत गौरी मित्र कंध लगि मुख मनौं उदित मयंक ॥ तरुनिनु हिय कुमुदिनि खुल्यो संपुट नैंन चकोर भये निरसंक। वृन्दावन हितरूप कौ आगर एकै रच्यौ विधि भूल्यौ दूजौ अंक ॥

राग गौरी ताल चर्चरी–पद ११८

निकट पुर आइकैं अधर मुरली धरी। लागि मुख राजिनी सप्तसुर वाजिनी सुखित जन करन कौं अमी मानौ झरी ॥ नाद परसंस सब नारि नर करत हैं निविड़ आनंद रस माधुरी उर भरी। परम कमनीय वपु दृगनि आगें भयौ प्रेम की प्रवलता वढ़ी घट घट खरी ॥ ललित ग्रीवा मुरनि ढुरनि सिर मुकुट की पीत पट चटक की देखि छवि उर अरी। दृगनि की चलनि अरु हलनि कल कुंडलनि गंड मनु मुकर प्रतिविंव गति मति हरी॥ मत्तगज चलनि मुख हलनि अलकावली कसूँभी पाग सौभाग वाँयें ढरी। रूप गर्वित महा वैन वरनौं कहा गोल भृकुटी मनौं परति भृङ्गी लरी॥ तात के भवन कौं गवन संध्या समै मैन की सेन मुसिक्यान लखि धुक परी। द्रव्य मंगल लियें हरपि आई महरि करज चटकाइ कैं साजि आरति करी ॥ नंद दियौ दान सनमान पुर जननि कौं गहकि वाजे वजे मानि अति शुभ घरी। वृन्दावन हितरूप निकर अंगनि सच्यौ न्याइ मोहन विश्व कीर्ति कुल विस्तरी ॥

राग गौरी चौतालौ–पद ११९

वार वार रानी वारि जल पीवत वार वार देखै मुख वार वार कंठ लगाइ। गाइ वजाइ अरघ आगें दै मंदिर लिये आए सुधन लाल पाइ ॥ वार वार वदन अँगोछति अंचल वार वार लाड़न कौं मन सरसाइ। वृन्दावन हितरूप निहारन आवें सब नारीं नर घर के काज विहाइ ॥

राग गौरी–पद १२०

गउवनि सम्हराइ दुहाइ जु लाये। देखि देखि ब्रजराज श्याम गुन हिय में अधिक सिहाये ॥ दुहि दोहनी दई बाबा कौं अरु मृदु बचन सुनाये। बछिया कौं अघवाइ धार काढ़ीं सब ग्वाल रिझाये ॥ ब्रजपति कह्यौ आय जसुमति सौं मंगल हरषि गवाये। दीनी बोलि द्विजन कौं दछिना वेद पुनीत पढ़ाये ॥ वही दूध बाँट्यौ घर घर गिरि कौं भरि कलश पठाये। बृन्दावन हितरूप असीसति वधू महरि के जाये ॥

राग विहागरौ–पद १२१

कहा कहौं बानिक वृन्दावन की। ठौर ठौर तरुवर अरु सरवर देखि बढ़ी रुचि मन की ॥ गोवर्धन की सुभग कंदरा आवनि त्रिविधि पवन की। तहाँ अधिक रुचि मानी जननी झुकनि सु ललित लतन की ॥ हरे हरे तृण शोभित अवनी तहाँ चरन गोधन की। गिरि पूजन आई नृप कन्या सो शोभा त्रिभुवन की॥ मैं जु दूरि तें कौतिक देख्यौ भीर तहाँ अलिगन की। बृन्दावन हितरूप सगाई वह लै बड़े सजन की ॥

राग विहागरौ–पद १२२

मैया कोउ ब्याह सँदेसौ लायौ। जो तैं सुनी बरनि तौ रानी कोऊ होइ जु आयौ ॥ गाइनि पाल कियौ तैं मोकौं अबहुँ न भलौ मनायौ। बाबा आज काल्हि कहि कहि कें यौं हीं नित बहकायौ ॥ अब हौं अपनी आप करौंगौ जो बन जानि गिधायौ। गिरि कौं करि संतुष्ट करौंगौ तेरे मन कौ भायौ ॥ कबहुँ न मेरौ कह्यौ डारती अब मति जात न पायौ। मुख तन चितै महरि मुसिकानी सनैं सनैं समुझायौ ॥ बेटा तेरे तात और मो हीयो अति जु सिरायौ। घोरी एक अमोल मँगाई ब्याह बेगि ठहरायौ॥ यह सुनि रोंम रोंम आनंदे जननी पद सिर नायौ। ब्याह भयौ सौ मान्यौ गिरिधर सब संदेह नसायौ ॥ श्रमित जानि रानी सुत कौं पुचिकार अंक बैठायौ। बृन्दावन हितरूप लाड़ भरि मोहन यौं बतरायौ ॥

राग विहागरौ–पद १२३

मैया चोटी चुपरि भली री । बाबा आगें काल्हि सगाई की सी बात चली री ॥ मेरी बरस गाँठि कौ मिस करि न्यौति विप्र अवली री । चौक पुराइ गवावौ मंगल मिलि दस पाँच अली री ॥ रानी प्रात राखि घर मोकौं वन जैहैं मुसली री । मानि नक्षत्र रोहिनी जैसें करी रीति पिछली री ॥ मंगल में मंगल होइ औरौ बाढ़े रंग रली री । आवै वेगि दुलहिनी दरसै तेरौ भाग बली री ॥ सबै कहत आवै टीकौ हौं ताकत रहत गली री । यौं हीं बीत जात दिन सबही कबहुँ न आस फली री ॥ मेरी सासु पठावै कब पकवाननि डला डली री। मोहिं देहि भरि गोद गनौं तब भाग्य दसा बदली री ॥ हियौ होहि प्रफुलित तब ज्यौं रवि दरसत कमल कली री । महरि कहति पुचकारि लाल कौं ; ब्याहौं भानु लली री ॥ बेटा समाचार लै आई ढाँढ़िनि मो महली री। वृन्दावन हितरूप कृपा गिरि करिहें प्रणतपली री ॥

राग विहागरौ–पद १२४

मोहन मोहिं सौंह है तेरी । जो तैं दुलहिनि देखी सोई ब्याहौं सुनि सिख मेरी ॥ श्रीवृषभानु पिता कीरति जननी सब गुन की ढेरी । बरसानौ है गाम नाम राधा तैं नैननि हेरी ॥ त्रिभुवन कौ गहनौं जु दुलहिनी जाकी अकह पहेरी । तू व्रजपति मंदिर कौ भूषण तासौं परि हैं फेरी॥ मन माहिली बात रानी सुत सौं बरनी जु घनेरी । पूजौंगी गिरिराज बली मो पुजवै आस सवेरी॥ पौरी पग जब धरै बहुरिया नसिहै सदन अँधेरी। मंगल काज वेगि होइ दरसै सगुन समूह बड़ेरी ॥ मोहन कहत सुनौ बलिदाऊ तुमनि बात अरुझेरी। आज ब्याह कौ परयौ ठिकानौं गाम बतायौ नेरी॥ मैया क़ही बात साँची सब मैं सुख रासि सकेरी। वृन्दावन हितरूप आइहै टीके संग बछेरी॥

राग विहागरौ–पद १२५

अंक धरि लाड़ति व्रजपति घरनी। मनौं घन विरवा वयौ थांवरौ रच्यौ कनक मनि धरनी ॥ गाढ़ प्रेम सौं लाड़त रानी सुत उर आनंद भरनी ।

कंचन डवा किधौं सिंगार नग धरयौ दुति जात न वरनी ॥ पय पालति पुचकारति पुनि पुनि जो फल अगह पकरनी। वर्षति दया घटा के ललित तमाल पोप विस्तरनी॥ अतरकि सुकृत उदै भयौ रसना एक न वनै उचरनी । अखिल अंड धारन कौ कारन ताकौं शिक्षा करनी ॥ महिमा महा कृष्ण जननी की महा कविनु मन हरनी। पालक विश्व कहत भूखो मैया पै कर जु पसरनी ॥ डारि कटोरा कर तें ठिनकत लोचन वारि जु झरनी॥ वृन्दावन हितरूप ग्रास मुख दै सुख सागर ढरनी ॥

राग विहागरौ–पद १२६

परम हित भीनी जसुमति मैया । लै लै ग्रास देति अतिलड़ मुखरानी घोप पलैया ॥ तेरी भूख मोहिं कसकत वन जात चरावन गैया । मिश्रीफेनी दूध सनी रुचि जेंवत कुँवर कन्हैया ॥ मणि चौकी लै वैठी इत श्री कृष्ण उतै वलि भैया । वृन्दावन हितरूप मुद भरी लखि मुख लेति वलैया ॥

राग विहागरौ–पद १२७

जिमावति राम श्याम कौं रानीं । दै दै ग्रास आपनें करसौं हियें परम सुख सानी ॥ गाइनि संग फिरे तुम वन में श्रमित भये मैं जानी । नीकी भाँति करौ सुत व्यारू सामा लेहु रुचि मानी ॥ मैया कहि जु व्याह की वातैं यह मुहि रुचित कहानी। जा घर को आवैगो टीकौ कैसी है रजधानी ॥ एक कौर इक व्याह वात कहि अमी रूप यह वानी । वेटा करिहौं तो चितचीत्यौ मेरे रूप गुमानी॥सादर भोजन मातु करावति लाल प्रीति पहिचानी । वृन्दावन हितरूप भूप की व्याहन सुता वखानी ॥

राग विहागरौ चौतालौ–पद १२८

धन्य व्रजपति व्रजरानी जिनकें सुख पलत अखिल भवन सुख-भरन । दुरि खेलत कौतिक रचें नाना ज्यौं शिशु भोरौ शिव उर गहनों चरन ॥ गोपनि सुत लै कंध चढ़ावत छीन खात लगे चोरी करन । वृन्दावन हितरूप व्याह के भरयौ उमाहैं लीला लोक अनुसरन ॥

राग मारू—पद १२६

जसोदा भाग्य सम कहौं कहा। विधि जु थकित शिव चकित प्रसंसित सुर नर मुनि जु अहा॥ शेष सहस द्वै रसना भाषत नित नव-मित न लहा। निगम वापुरौ नेति नेति कहि ह्वै जु रह्यौ मुहचहा॥ ज्ञान ध्यान व्रत तप जु कष्ट करि अगह न गह्यौ गहा। वृन्दावन हितरूप वाँधि उर दाम लड़ायौ महा॥

दोहा

वय पौगंड अलोलता मन उत्कण्ठा व्याह। सुनि सुनि मात सिहात है छिन छिन बढ़त उछाह॥१॥ कछु स्याने कछु तोतरे वचन कहत नँद नन्द। जननी भाग्य मनाइकैं भीजति परमानंद॥२॥ वाल केलि के लाड़ को लियौ महरि सुख जोय। शिव विधि शेष जु शारदा कनिका लह्यौ न सोय॥३॥ इकसत अरु उनतीस पद वरनें कृपा विचार। अति गहरौ पौगंड रस तामें झलक सिंगार॥४॥ श्री हरिवंश कृपा वली कीयौ हियें प्रकाश। वरन्यौं मंगल चरित यह फुरित भयौ अनियास॥५॥ यमन कछू संका दई व्रज जन भये उदास। ता समये चलि तहाँ तें कियौ कृष्णगढ़ वास॥६॥ नृपति वहादुर सिंह सुत वृद्धिसिंह तिन नाम। सादर लाये संग करि दीनौं पुर विश्राम॥७॥ वसैं विवेकी लोग जहाँ हरि हरिजन सौं प्रीति। नृपति वहादुरसिंह तहाँ परजा पालन नीति॥८॥ महाराम मोदी सुमति तिनकौ सुंदर वाग। तहाँ ग्रंथ पूरन भयौ कृष्ण कथा अनुराग॥९॥ वासी वृन्दारन्य कौ श्री राधावल्लभ भृत्य। रसिक प्रेम वर्द्धन सुयश हित वृन्दावन कृत्य॥१०॥ अठारहसे इकतीसयौं वर्ष भयौ परवेश। वदि वैसाखी सप्तमी रविवासर जु सुदेस॥११॥ केलिदास निर्मल सुमति अच्छर अर्थ विचारि। कृपा संत गुरु पाइकें कर वर लिखी सुधारि॥१२॥

॥ इति श्रीकृष्ण वाल विनोद—विवाह उत्कण्ठा॥

श्री कृष्ण सगाई

दोहा

प्रथमहिं मंगल नाम जो बंदौं श्री हरिवंश। कृष्ण सगाई वरनिहौं तिनकी कृपा प्रसंश ॥१॥ हरयौ प्रबल कलि कौ तिमिर रवि उदोत सब काल। व्यासनंद करुणा कुशल तुम पद रज मो भाल ॥२॥ रसिक विवेकी महा मति वानी किरन प्रकास। सुकृत राशि संचित करी तिन प्रसाद अनि-यास ॥३॥ चौंधै दृष्टि उलूक की छिपै तिमिर ही जाइ। देखै वस्तु न चाँदनें तासौं कहा बसाइ ॥४॥ नमामि श्री हित रूप गुरु दीन्यौ भेद लखाइ। कृष्ण सगाई वरनिहौं कृपा रावरी पाइ ॥५॥ कष्ट करत तप ज्ञान करि खोजत तत्व अछेह। तदपि न पावत रंचकौ ब्रज रस कनिका नेह ॥६॥ कीरति सुता ब्रजेश सुत चरन वढ़ै जिन चाह। सूझि परै तब निकट ही ब्रज रस सिंधु अथाह ॥७॥ साखा शशि जु बतावहीं आगम वेद पुराण। रस मय वपु सबतें परें प्रगटी ग्रह बृषभान॥८॥ तिन हित आलय नंद के जो हरि रसिका-नंद। प्रगट भये अवनी उभै रस सागर वित छंद ॥९॥ अस दुराधि शिव विधि मुनिनु वेद पुराननि गूढ़। कीरति जसुमति कैं निरखि गोद रहत आरूढ़ ॥१०॥ अष्टसिद्धि नव निधि जहाँ ठाढ़ीं घर घर पौरि। भेप बदलि कैं देव गन आवत देखन दौरि ॥११॥ महा रमा जहाँ अवतरी अखिल अंड कौ ईश। ता वैभव के लेश कों वरनत थके मुनीश ॥१२॥ सो वैभव लइ ढाँपि कैं ब्रजबासिनु के प्रेम। विनमित प्रीति नई बढ़ति जैसें निवट्यौ हेम ॥१३॥ जब आवत ऐश्वर्य कछु संका मानत देखि। परम अलौकिक लोक-वत रस माधुर्य विशेष ॥१४॥ इतहिं गौर उत साँवरौ विरवा रूप उदोत। ब्रज जन पोप बढ़त सदा नित नव कौतिक होत॥१५॥ गोप गोपिका देखिकें विथकित जिनके रूप। दिन दिन के अगनित चरित कहाँ लगि कहौं अनूप

॥१६॥ कीरति जसुमति के वचन भये सगाई जोग। सुनि सुनि विधिहिं मनावहीं त्यौं हीं ब्रज के लोग ॥१७॥ इहिं ब्रजवास सुकृत दई जो हम कीनों कोइ। तौ ब्रजपति के सुवन की राधा दुलहिनि होइ ॥१८॥

अरिल्ल

लै लै अंचल छोरि मनावैं हैं दई। चली शुभ घरी वात फैलि सब ठाँ गई। सुनत सकल नर नारि हियें अति सुख सनें। हरि हाँ जो विधिना अनुकूल तो जोरी यह वनें॥१९॥ गिरि गोवर्द्धन जाइ जसोमति प्रीति सौं। काचे दूध न्हवावति पूजति रीति सौं। तू साँचौ गिरिराज मोहिं इहि देहि वर। हरि हाँ हमरे सुत कौ व्याह होइ वृषभानु घर ॥२०॥ दादी मोहनलाल वरेयसी मुद भरी। अपनें कर गिरि भोग विविधि मेवा धरी। पाक अनेक सँभारि धरति चित चाइ सौं। हरि हाँ पुनि पुनि विनती करति जिमावति भाइ सौं ॥२१॥ नमो नमो गिरि देव करति जै भारती। शीतल जल अचवाइ उतारति आरती। मम सुत नंद ब्रजेश सुवन अँग साँवरे। हरिहाँ रावलपति की सुता संग परैं भाँवरे ॥२२॥ यह मन अति अभिलाप नैंन भरि देखिहौं। तुव प्रसाद गिरिदेव जनम शुभ लेखिहौं। सीस नाइ पुनि वंदति जननी नंद की। हरि हाँ ओटति सादर गोद भरी आनंद की ॥२३॥ तव यह वानी भई सुगिरि अभिराम की। वड़े सजन घर होइ सगाई श्याम की। भूरि भाग ब्रजरानी वचन प्रतीति करि। हरि हाँ सत्य सत्य वृषभानु नंदिनी वरहिं हरि ॥२४॥ सुनत वरेयसी जसुमति पुलकित प्रेम तन। सफल मनोरथ मानि आपनें मनहिं मन। गिरि परिकरमा दै आनंद वढ़ावतीं। हरि हाँ चलीं आपने भवननि मंगल गावतीं ॥२५॥

दोहा

वनितन सौं जसुमति कहति निपट प्रेम वस वैन। दई धन्य दिन कौंन वह राधा देखौं नैन ॥२६॥ गिरि की कृपा विचारिकैं कछुक धरति मन धीर। श्री राधा के रूप गुन सुनि दृग ढारति नीर ॥२७॥ रानी

श्री उपनंद की समुझावति चित लाइ। अहो महरि सुनि देव गिरि वानी साँची आइ ॥२८॥ श्री कीरति की अतिलड़ी ब्याहै सुंदर श्याम। अब चलि नीकें पूजिहैं नारायण हम धाम ॥२६॥ मोहन जननी ये वचन सुनि वंदति तिहिं पाँइ। तन मन फूली कहति पुनि वे मम सदा सहाँइ ॥३०॥ वरसानौं दै दाहिनौं गई दोहनी कुंड। गह्वर खेलति लाड़िली लियें सखिन के झुंड ॥३१॥ अति रोचक झिरना झिरत सघन द्रुमनि की छाँह। तहाँ करन विश्राम कछु सब चाहतिं मन माँह॥३२॥ वन कुसुमित मारुत त्रिविधि झिरना नाद गँभीर। शुक सारौ मैंना मुनी वरहिनु की अति भीर ॥३३॥ हरि जननी वैठी तहाँ आरज गोपिन संग। परसंसति वन द्रुम लतनि जे उलहीं नव रंग ॥३४॥ वरसानें तें आवती देखी कोऊ वाम। निकट सवै वैठारिकैं वूझतिं ताकौ नाम ॥३५॥ नगर नृपति वृषभानु कैं वसत सदा वड़ भाग। गोप वंश की कुशल तुम कहौ सहित अनुराग ॥३६॥ सदा वसत आनंद में जिहिं पुर गोपी गोप। अचल राज वृषभानु को मही भानु कुल ओप ॥३७॥ रागकला मम नाम सुनि ढाँढ़िनि सूरज वंश। निर्मल यश कुल गोप को दिन दिन करति प्रसंश ॥३८॥ निर्त्त गान वाजे विविध हौं उघटति संगीत। महारानी कीरति भलें समझति मेरी रीति ॥३६॥ हौं नित उठि रावर वड़े जाति सवेरे साँझ। रानी दत संपति भरी मेरे मंदिर माँझ ॥४०॥ तव अंचल मुख ओट दै नंद घरनि मुसिकात। वूझन लागी और पुनि निपट भेद की वात ॥४१॥ आजु काल्हि कीरति कहौ कहा धौं करति विचार। कौन वस्तु अति प्रीति सौं सचित अधिक आगार ॥४२॥ कहा नृपति वृषभानु जू अनुगन अज्ञा देत। दूर देश उतपति भई कहा वस्तु पुनि लेत॥४३॥ नौ नंदन महिभानु के जव मिलि वैठत साथ। तव धौं वात कहा चलत सत्य कहौ यह गाथ ॥४४॥ कौन दान राजा भवन दैवे मन उत्साह। कौन रीति सौं देहिंगे हमैं मुननि की चाह ॥४५॥ कहा नगर चरचा चलति प्रगट भई यह काल। ज्यौं की त्यौं सवही कहौ अहो विचक्षण वाल ॥४६॥

समाचार ढाँढ़िनि कहत मन में निपट निसंक। जसुमति कों ऐसें रुचति ज्यों निधि प्रापति रंक ॥४७॥ गहनें रतन जराइ के गढ़ियत राज दुवार। नित नौतन कीरति तिन्हें सचि सचि धरति भँडार ॥४८॥ आवत देश विदेश तें जो व्योपारिनु संग। पाट वसन पुनि जरकसी औरो नाना रंग ॥४९॥ लोक लोक उतपति भये जे जे रतन अमोल। ते भुवपति के भवन में लै लै धरत अतोल ॥५०॥ हय गय वड़े सुजाति के रीझि भानु जू लेत। तिनकें साज सिंगार कों अनुगन आज्ञा देत ॥५१॥ रावलपति वंधुन सहित वात कहत समुझाइ। व्याह कुँवरि को कीजिये वड़े सजन घर जाइ ॥५२॥ राधा जनक उदार अति संपति देइ अनेक। शोभा सींवाँ लाड़िली अखिल लोक मणि एक ॥५३॥ ठोर ठोर चरचा यही श्री वरसानें गाम। नंदीश्वर व्रजराज कें ढोटा सुंदर श्याम ॥५४॥ तामें कछु औगुन सुनें कहियत माखन चोर। यह लच्छण नहिं राज को अति संसै मन मोर ॥५५॥ कछु संकित कछु हरषि मन जसुमति रही निहारि। नृप की नेगिनि जानि कें वहुत करति मनुहारि ॥५६॥ एकनि मणि मुँदरी दई एकनि दुलरी चारु। जसुमति अपने अंक तें दियौ मणिनु कौ हार ॥५७॥ हँसि वूझति ढाँढ़िनि अहो रानी किहिं पुर वास। कहाँ गमन कहाँ तें कियौ कीजे वचन प्रकाश ॥५८॥ और सखी उत्तर दियौ जसुमति धरि रही मौन। गवनीं हीं गिरि तरहटी जात आपने भौन ॥५९॥ वास वसत हम नंद के जो या व्रज को भूप। जिन घर ढोटा साँवरो त्रिभुवन मोहन रूप ॥६०॥ एक नंद ही की फिरत सव व्रज घर घर आन। तिनके कुल थंभन भयौ कृष्ण महा वलवान ॥६१॥ धरि गिरि गरुवौ अग्र नख सव व्रज लियौ उवारि। तामें अव औगुन कहे साँचि कहति तुम नारि ॥६२॥ देश भयानौ भानु कौ सुनौ कान किन खोलि। अपु समान कियौ नंद कों वाँह वसायौ वोलि ॥६३॥ विलग न मानौं भामिनी मन में करो न रोस। नृप कौ सुत चोरी करै वड़ौ जगत में दोस ॥६४॥ गिरि न उचायौ एक ही सवहिनु करी सहाइ। जन चौरासी कोस के सव एकत भयेआइ ॥६५॥

अपनी अपनी बात कौं सब कोउ कहत बनाय। तुम यह यश माथे धरौ कहा हमारो जाय ॥६६॥ उपमा कारे रूप कौं तुमहीं देहु निसंक। तौ जग वृथा बतावहीं शशि के माहिं कलंक ॥६७॥ गुन औगुन सब होत हैं कहाँ लगि कहौं बनाइ। तदपि नृप ही नृपनि सों करत सगाई जाइ ॥६८॥ श्री कीरति मोसौं कह्यो करौ सगाई देखि। ताही कारज में फिरति चिंता मोहिं विशेष ॥६६॥ ब्रजरानी सौं तुम सबै यौंही कहियौं जाइ। अबहूँ मोहन लाल की चोरी देहु छुड़ाइ ॥७०॥ मेरौ पा लागन बहुत कहियौं सीस नवाइ। वे समझति सब बात में कान्ह कुंवर की माइ ॥७१॥ होइ बिधाता दाहिनो बहुरि रमा को नाथ। बेटी रावल ईश की श्याम गहै तब हाथ ॥७२॥ सुकृत पुन्य परजन्य कौ नन्द भाग समुदाइ। तौ रानी वृषभानु कैं तुव सुत बरयौ जु जाइ ॥७३॥ प्रथम वचन कीरति कहे ते जु वज्र की लीक। अपने खोटे दाम कौं तुमहूँ कीजौं ठीक ॥७४॥ इतने हीं इक गोपिका गहवर निकसी जाइ। कुँवरि सखिनु सँग खेलतीं देखि सुनाई आइ ॥७५॥ विदा माँगि ढाँढ़िनि गई उलटि आपनें धाम। ये सब मिलि गहवर चलीं सुनि राधा कौ नाम ॥७६॥ वन को तिमिर विदारिकैं फैली मुख शशि जोत। किधौं कि नव वन घन उदित दामिनि कोटिक होत ॥७७॥ चौंधति छवि के चाँदने कानन निकर विहंग। देखि छकीं कौतिक अवधि सबकी मति भइ पंग ॥७८॥ प्रेम विवश जसुमति भई पुनि पुनि करति बखान। धन्य कूखि कीरति महरि धन्य जनक वृषभान ॥७६॥ भूरि भाग अपनौं गनति मन अति मानति मोद। रवकि चली आतुर अधिक भरी लड़ैती गोद ॥८०॥ सीस प्रीति सौं कर धरयौ भूरि बलैया लेत। ब्रजपति रानी आपनें भूषण वारति देत ॥८१॥ सिमिटि सखीं एकत भईं श्री राधा के पास। महरि कुँवरि की गोद में मेवा भरति हुलास ॥८२॥ प्रफुलित मुख कीरति लली उपमा राखी रोकि। पुनि पुनि जननी श्याम की ता दिशि रहत विलोकि ॥८३॥ हिय आनंद उमड़ि चलत राखत दै दै आड़। नंद घरनि बहु भाँति सौं करति कुवरि कौ लाड़ ॥८४॥

केशनि शुभग फुलेल दै पाटी रची बनाइ। दई कुँवरि के भाल पर रोरी वेंदी लाइ ॥८५॥ पुनि कजरौटी खोलि कैं अंजन दीनों नैंन। ललिता सौं हँसि हँसि महरि बोली मधुरे बैंन ॥८६॥ श्री कीरति सौं बीनती कीजो मेरी जाइ। करौ सगाई श्याम की निपट उचित जो आइ ॥८७॥ तव ललिता चौंकी अधिक तुम धौं कहियत कौन। नाम धाम अरु गाँम को अब लगि जानत हौं न॥८८॥ देखत कीं बूढ़ी बड़ीं अरु सब विधि करि जोग। वन में ये बातैं कहौ सुनि सुनि हँसिहें लोग ॥८९॥ श्याम अहो कासौं कहत भली वस्तु है कोइ। जाकें आगें हम कहें सो अति चकित होइ ॥९०॥ गोप सुता विकसीं सबै वन में करतिं कलोल। तव घरनी उपनंद की लई विशाखा बोल॥९१॥ नाम कृष्ण गोविंद सुनि गिरिधर गोकुल चंद। ता जननी यह जसोमति पटरानी श्री नंद ॥९२॥ जानी जू जानी हमनि विदित चोर की माइ। वे तौ नित नित फिरत ह्याँ वन वन चारत गाइ ॥९३॥ झूठौ दान लगावहीं वेटा कपटी धूत। अहो महरि तुमहीं जगत जन्यौ अनोंखो पूत ॥९४॥ हँसीं सकल ब्रज गोपिका तरुनि वृद्ध अरु बाल। हरि के चरित महरि सुनत मानत भाग विशाल॥९५॥ पुनि आई चित्रा चतुर अधिक करति सनमान। रानी वरसाने चलौ भवन भूप वृपभान ॥९६॥ वासर थोरौ दूरि घर श्रमित होंइगे गात। यह वह जानौ एक घर अपनाइत की वात॥९७॥ लाइ लड़ैती अंक सौं कोटिनु देति असीस। प्रभु मो मन भायौ करौ सिंधुसुता के ईस ॥९८॥ करज चटक लै वारनें चली आपनें ग्रेह। राधा राधा नाम रटि जसुमति भींजी नेह ॥९९॥ जरी किनारी ओढ़नी सादर सखिनु उढ़ाइ। भानु कुँवरि सों विदा ह्वै प्रेम सिंधु में न्हाइ ॥१००॥ ज्यों ज्यों पग आगें धरति परत पछमनें जाँइ। देखत राधा रूप कों महरि गई बौराइ ॥१०१॥ वनदेवी संकेत में आगें जोरे पानि। जो मन भायौ होहि तो पूजों विविधि विधान ॥१०२॥ वट लट कर जूरी दई श्रीफल धरि कें मूल। दूध न्हवाऊँ ता दिना व्याह वधायें फूल ॥१०३॥ पुनि अपने मंदिर गई सुत विवाह हिय

लाग। गिरि गहवर वन की कथा कहति सहित अनुराग ॥१०४॥ व्रजपति मदन गुपाल अरु सुनत सकल परिवार। राधा शोभा सिंधु कौ महरि न पावत पार ॥१०५॥ कुँवरि नाम गुन रूप सुनि उँमग्यौ आवतु हीय। त्यौं त्यौं मोहन लाड़िले सकुचत अतिहीं जीय ॥१०६॥ निपट सयानप तब कियौ कृष्ण कमल दल नैंन। अज्ञा लै कैं तात सौं गवने मंदिर सैंन ॥१०७॥ नंद कही रानी सुनौ भानु सुता परताप। नाम करन कियौ श्याम कौ गरग कही तब आप ॥१०८॥ राधा माधव राधिका प्राण रवन सुख दान। राधा पर-वश प्रीति के राधा रसिक सुजान ॥१०९॥ नाम धरे तो सुवन के राधा नाम मिलाइ। सादर मैं पूछी तबहिं वंदि गरग के पाँइ ॥११०॥ सुनि रानी वे महा मुनि जानत सब कछु आइ। काढ़े मन संदेह मो कथा पुरातन गाइ ॥१११॥ और बात सब विधि मिली यह पुनि लखी न जाइ। होइ सगाई भानु घर सुत मम करौ उपाइ ॥११२॥ लाल निकट जसुमति गई यह सोचति मन माहिं। सोय गयौ सुत श्याम ने व्यारू कीनी नाहिं ॥११३॥ मन में तौ नित रहत ही राधा दरस उमाह। पुनि मैया के वचन सुनि बढ़ि गयौ सागर चाह ॥११४॥ निद्रा ता आवेश में झुकी दृगनि में आइ। राधा राधा वदन तें नाम कहत बर्राइ ॥११५॥ बहुरि सखा सौं कहत हैं सोवत ही में टेरि। मैया गाइनु लै चलौ बरसाने दिसि फेरि ॥११६॥ अहो रोहिनी बलि गई तुमहीं लेहु जगाइ। खिजिहै मोसौं नींद बस व्यारू देहु कराइ ॥११७॥ हौं बलि मेरे लाड़िले उठि तन नींद निवारि। दूध भात मिश्री सन्यौ लै कछु मुख में डारि ॥११८॥ मोहन उठि व्यारू करी मन की वृत्ति न ठौर। गिरि प्रसाद मेवा बहुरि जसुमति लाई और ॥११९॥ कमलनैंन मुख में धरत बाढ़्यौ उर अहलाद। मैया लाई कहाँ तें लागत अधिक सवाद ॥१२०॥ बेटा मैं गिरिराज कौं भोग धरयौ हिय हेत। ताही तें मेरे श्याम घन स्वाद नई विधि देत ॥१२१॥ और कृष्ण बातैं घनों हौं सुनि आई आज। तोहीं सब समुझाइ हौं ज्यों न भुनें व्रजराज ॥१२२॥ अब बीरी

लै पौढ़ि रहि उठौ प्रात जब काल। तब तोसौं सब ही कथा कहिहौं मोहन लाल ॥१२३॥ जननी की ठोड़ी गहें श्याम कहत लड़काइ। कौन बात ऐसी नई अबहीं मोहिं सुनाइ ॥१२४॥ ढाँढ़िनि कीरति महल की लखी कहूँ कों जात। ताकों निकट बुलाइकैं लही भेद की बात ॥१२५॥ हौं आई गिरि पूजिकैं कुंड दोहनी तीर। धूप देखि बिरमी तहाँ शीतल बहत समीर ॥१२६॥ अपनौं नाम न मैं कह्यौ उनहूँ लखी न मोहिं। राजनीति की सब कही रीति सिखावनि तोहि ॥१२७॥ तेरौ माखन चोरिबौ परचौ जु कीरति कान। घर घर घेरा नगर में और सुन्यौ बृपभान ॥१२८॥ ये सब मेरी साथ कीं सुनि आई तो साख। बेटा अब कुल रीति चलि नाम बाप कौ राख ॥१२९॥ मैया ऊतर देउगौ श्रवन सुनौंगो प्रात। साखि भरैंगे ग्वाल सब अरु मेरे बलि भ्रात ॥१३०॥ पौढ़ सज्या जाइकैं सुख में रैन बिहाइ। उठि हरि बदन प्रछालि कैं माखन मिश्री खाइ ॥१३१ मैया सबकों जोरि कैं करिलै मोकों साहु। झूठ मोहि ऐसें ग्रह्यौ ज्यौं चंदा कौं राहु ॥१३२॥ बाल वृद्ध अरु तरुनि जुरि आई जसुमति ग्रेह। बैठौ सादर मुदित मन कीनौं परम सनेह ॥१३३॥ लला बात सुनि काल्हि की हम न बनावति फेरि। ढाँढ़िनि रावल भूप की औगुन बरने ढेरि ॥१३४॥ ढाँढ़िनि कह्यौ कि और कोउ हम काहू न डरात। बकुचा काढ़्यौ काँख तें कहि कौने लै जात ॥१३५॥ एक दिना ढाँढ़िनि कहूँ मिली साँकरी खोरि। मोतिनु की लरि ग्रीव तें ग्वालनि लीनी तोरि॥१३६॥ ता दिन तें उन घरबसी मन में धरी मरोर। कहति फिरति सब घोप में मैया मोसौं चोर ॥१३७॥ समध्याने की जानि कैं ग्वालनि कीनी कूट। झटकत गिरचौ जु काँख तैं गयौ तँबूरा फूट ॥१३८॥ तब तें वह बहुतै चिरी देखत गारी देइ। लरै बावरी और सों मेरौ नाम जु लेइ ॥१३९॥ हौं बैठ्यौ गिरि शिखर पर जदपि बरजे ग्वार। तदपि लाग्यौ चपरि कैं वृथा मोहिं जंजार ॥१४०॥ पाती में लिखि भेजिये भलौ मनुप लै जाइ। बातें श्री बृपभानु कौं आवैं सब समुझाइ ॥१४१॥

राज काज में चुकत हैं वड़े वड़े सव न्याइ। हाँसी की वातें कहूँ मानत हैं सत भाइ ॥१४२॥ का कैं हम चोरी गये हरे कौन के दाम। राजा हू के कुँवर कौ लेत न संकत नाम ॥१४३॥ काकें दीनौं ओँहड़ौ कहा विगारयौ काम। घर घर आवौ वूझिकैं जेते व्रज में गाम॥१४४॥ व्रज रानौं मेरौ पिता रानी मेरी माइ। वकति घर गई झूठ सव चोरी करै वलाइ ॥१४५॥ गोपनि के नंदन जिते तिनमें हौं अति साधु। कहा करौं जो चपरि कैं मानि लेहिं अपराधु ॥१४६॥ सुनि सुनि कैं तरुनीं हँसतिं दै मुख अंचल ओट। लला चतुर वातनि वड़े ढाहत खाई कोट ॥१४७॥ राजनीति के वहुरि सुनि हौं समुझत सव अंग। घाट वाट कर लीजियत या में कहा कुढंग ॥१४८॥ पूत सपूत महरि लख्यौ अति मति चतुर सुजान। भयौ भरोसौ व्याह कौ देत द्विजनि कौं दान ॥१४९॥ गाइ चरावनि वन गये हरि लै ग्वालन संग। जसुमति नारायन चरन पूजति भरी उमंग ॥१५०॥ व्याहौं सोनें सहेरे श्री वरसाने खेत। तौ इनि चरननि नित नयौ वाढ़ैगौ मम हेत ॥१५१॥ अरु नाना विधि पाक रचि अर्पौं कोट वनाइ। सेवा गिरिधर लाल कौं सिखऊँ गाइ वजाइ ॥१५२॥ व्याह भये पै सजन सौं वहुरि रहै रस रंग। कीरति सौं मेरौ सदा रहै सनेह अभंग ॥१५३॥ निकसी श्रीपति भवन तें जसुमति अति आनंद। वहुरि गई गोधन खिरक सीस नाइ रज वंदि ॥१५४॥ हे सुरभी के वंश गौ तुम आलय जु पुनीत। हौं वंदति हौं प्रीति सौं करियो मो चित चीत ॥१५५॥ जो तुम सेवा प्रीति सौं करी गोप परजन्य। तौ मोकौं वर देहु यह भाग्य मानिहौं धन्य ॥१५६॥ अनुजा श्रीदामा सखा जनमी कीरति कूख। व्याहै व्रजपति लाड़िलौ जाके वचन पियूष ॥१५७॥ पिता भवन पुनि ससुर कैं तुमहीं पूज्य अनादि। जजियत तुम पय घृत्त सौं सुर नर मुनि ब्रह्मादि ॥१५८॥ माँगति गोदी ओटिकैं मन क्रम वच कहि टेरि। तव गोसाला पूजिहौं आवै भाँवरि फेरि ॥१५९॥ चारि वदन को ज्योतिसी आयौ नंद निकेत। वर्तमान अरु ह्वै गई होनहार कहि देत ॥१६०॥ ऊँचे चढ़िकैं

रोहिनी टेरति लै लै नाम । अहो महरि चलि वेगि दै कौतिक आयौ धाम ॥१६१॥ नर नारी एकत भये गुनी विप्र कौं देखि । सबके लच्छण कहत है जैसी माथें रेखि ॥१६२॥ मन प्रतीति सवकैं भई देख्यौ प्रगट प्रताप । धाई आई तुरत ही जसुमति रानी आप ॥१६३॥ अरघ दियौ पूजन कियौ वहुत करति सनमान । रतन थार श्रीफल सहित आगें राख्यौ आन ॥१६४॥ अहो मुनिनु के शिखामणि वसत कौंन से देश । मैं अव लगि देख्यौ नहीं कोऊ रिषि यहि भेष ॥१६५॥ दै असीस द्विज वर कही डोलौं लोक अनेक। भागवंत तोसी तुही रानी त्रिभुवन एक ॥१६६॥ कै भूपति वृषभानु कैं कीरति परम उदार । उभै सुकृत के सिंधु कौ काहु न पायौ पार ॥१६७॥ वोली जननी कृष्ण की वचन सुधा समतूल । उन्हें हमें सनबंध सुख विधि कृत है अनुकूल ॥१६८॥ व्याहन गोकुल चंद कौं यतन करत वहुतेर । उलटी सी कछु वनति है दिन दिन होत अवेर ॥१६९॥ हौं चाहति वेऊ चहत चाहत व्रज नर नारि । कौंन वात जो वनत नहिं हो मुनि कहौ विचारि ॥१७०॥ सत्य सत्य दोऊ कहति सत्य कहैं व्रज लोग । विसे वीस यह सत्य ही रानी वनिहै जोग ॥१७१॥ महा भाग्य गोविंद सुत तैं पोष्यौ सुख भूरि। कीरति पय पाली लली निरवधि मंगल पूरि॥१७२॥ तुम कृपाल गोपाल कौ जनम पत्र अव वाँच । शुभ लच्छण जे जे परे मोहिं सुनावौ साँच ॥१७३॥ जे वरने हैं गरग रिषि तिनतें अधिकै जान । रानी लागै दृष्टि जिन पुनि पुनि कियें वखान ॥१७४॥ हौलें हीं कहि देहु वलि समझि वात की गंस । कछु गोप कुल कौ सुयश करिहै जग परसंस ॥१७५॥ व्रज आनंद उदधि वहे तुव अतिलड़ परसाद। सुयश लोक पावन करै चरितामृत रस स्वाद ॥१७६॥ जसुमति दृष्टि वचाइ कैं लई चरण तल धूरि । मोकौं अज्ञा दीजिये रानी जैवो दूरि ॥१७७॥ आवन देहु व्रजराज कौं पुनि सुत मोहन लाल । भली भाँति करिहौं विदा सुनि रिषि देव कृपाल ॥१७८॥ महरि वेगि ही आइ हों मो मन विपुल उमाँह । हौं हीं करिहौं आइकैं निहचै

तुव सुत व्याह ॥१७६॥ वहुत दान सनमान अति कियौ कृष्ण की मात। प्रेम वचन सुनि द्दगनि तें आनंद वारि चुचात॥१८०॥ राधा हरि पद चिन्ह करि व्रज धर गहनौं सोभ। जहाँ तहाँ वंदन करन विधि मन वाढ़्यौ लोभ ॥१८१॥ सवही के देखत चले पुनि आवत नहिं द्दष्टि। लागी होंन अकास तें वहु कुसुमनि की वृष्टि ॥१८२॥ ढाँढ़िनि गोकुल ईश की लीनी महरि वुलाइ। तू वरसाने जाइकें कीरति कौं समुझाइ ॥१८३॥ कहियौ मेरी ओर तें वातैं वहुत प्रवीन। हाथ जोरि पद वंदि कें सव सौं हूजो दीन ॥१८४॥ रानी गहर न कीजिये माँगत गोदी ओट। मुहिं दीसत विधि रचित यह राधा मोहन जोट॥१८५॥ हमनि तुमनि तौ परस्पर प्रथम वदी ही होड़। दई कियौ मन भाँवतो अव क्यौं दीजे छोड़ ॥१८६॥ पुनि सवही कौ रुख लियें कहियौ मधुरी रीति। जिन वातनि जानी परै अतिहीं भारी प्रीति ॥१८७॥

सोरठा

नंदीश्वर तें नारि आई श्री वृषभानुपुर। आदर दियौ विचारि कीरति अपने वोलि ढिंग ॥१८८॥ कुसल छेम सव वूझि भोजन ताहि कराइ पुनि। वात परी है सूझि उत्कंठा सुनि महरि की ॥१८९॥ रहति वड़े रनिवास किहिं विधि ह्याँ आवन भयौ। कोधौं वड़ौ हुलास जसुमति मन उपज्यौ नयौ ॥१९०॥ महरि महा मणि पास तुम निसि दिन वैठति उठत। तेरौ मोहिं विस्वास रानी के जिय की कहो ॥१९१॥

अरिल

अज्ञा दीनी मोहिं तिहारे धाम की। अरु कहि दीनी वात आपनें काम की। कीरति जू सौं मेरी विनती कीजियौ। हरि हाँ प्रथम वचन की जाइ उन्हें सुधि दीजियौ ॥१९२॥ वहुत दीन ह्वै कही सो ओली ओटि करि। कीरति होउ कृपाल अधिक आतुर महरि। हमैं तुम्हैं सनवंध आदि तें वनि रह्यौ। हरि हाँ प्रभु तुमकौं यश देहिं मानि लीजे कह्यौ॥१९३॥ जसुमति जो कछु कहति हमैं हू रुचित है। राजभवन की कन्या उनकौं उचित है। जो

कोउ वन में जाइ श्याम की देखि गति । हरि हाँ सुनि सुनि रीति अनीति सवनि की भ्रमति मति ॥१६४॥ सब विधि लायक ब्रज में जसुमति को लला । देखत जाकौ वदन घटत शशि की कला । कोऊ कहे जु आइ सु गुन नहिं लाइये । हरि हाँ ऐसौ सजन सगारथ भागनि पाइये ॥१६५॥ सुंदर परम सुशील सकल गुन खान है । वंशी ललित वजावनि कौन समान है । गोधन पालक निपुन नहीं जग में वियौ । हरि हाँ रानी मेरे जान एक ही विधि कियौ ॥१६६॥ आई गोपीं हँसति दियें पट ओट है । ढाँढ़िनि मनहिं विचारि महरि में खोट है । गोरी कारौ जनै जगत उपहास है । हरि हाँ समधिनु कौं नहिं लाज हमें अति त्रास है॥१६७॥हँसि हँसि धुकि धुकि परति गोप वाला सवै । भट्ट भेद की वात हमनि समभी अवै । लखि पाई मन मोहन रीति मरोर की । हरि हाँ ढाढ़िनि कहा सुधारैं विगरी ओर की ॥१६८॥ अरी और कहि वात नई सी आनिकैं । ब्रजरानी के कौतिक गोप्य वखानिकैं । निपट मिलनियाँ उनकी देखी परखि कैं । हरि हाँ तू जिन विमनी होइ वात कहि हरषि कैं ॥१६९॥ अजू कोटि वात की वात एक मोपै सुनौ । महरि वचन लेहु मानि होहि यश सत गुनौ । श्री राधा के नाम रूप वलि हौं गई । हरि हाँ भूतल भूषण लली-कूखि कीरति भई ॥२००॥ उत श्री जसुमति जायौ मोहन मदन है । पशु पंछी हू थकित देखि तिहिं वदन है । जुग जुग अविचल होहु लड़ैती श्याम घन । हरि हाँ दिन दिन कीरति महरि लाड़ रहु मगन मन ॥२०१॥

दोहा

भस्म लपेटें सिर जटा शशि की रेखा माथ । वाघंवर काँधे धरें आयौ वावा नाथ ॥२०२॥ पूरत सींगीं नाद कौं वोलत पुरुष अलेखि । नर नारी सव नगर के धाये ताकौं देखि ॥२०३॥ कुँवरि जनम आयौ पहिल श्री कीरति पहिचानि । वहुत भाँति आदर करयौ वैठारयौ हित मानि॥२०४॥ वहुत वर्ष में नाथ तुम मो घर आये फेरि । एक वड़ो संदेह मन तुमहीं जाहु निवेरि

॥२०५॥ परिचय पायौ कछु तैं माता मेरौ कोइ। ता दिन तें तेरी सुता फिर जो डरपी होइ ॥२०६॥ बोलि आपनी नंदिनी माथें चरन धराइ। बड़ौ जंत्र मो सीस यह बहुरि न कुँवरि डराइ ॥२०७॥ और जंत्र कछु कीजिये सुनि योगिनु के राइ। गोप सुता कैसें धरैं तुम माथे पर पाइ ॥२०८॥ माता मेरे वचन कौं जो न लेइगी मानि। तौ डरपैगी आज ही सत्य सत्य यह जानि ॥२०९॥ सुनत वचन रानी डरी हठ कीनौं योगीस। निकट बोलि तब लाड़िली चरन धरायौ सीस ॥२१०॥ अजर अमर कन्या भई अब असीस सुनि लेहु। पुनि रानी अपनो कहौ जो मन में संदेहु ॥२११॥ होंनहार अरु ह्वै गई वर्तमान हू जोइ। तीन काल की तुम लखत यामें संस न कोइ ॥२१२॥ तुम हमकों ऐसे मिले वरनि सुनाऊँ बैन। ज्यौं दृग हीनों विकट वन भूल्यौ पावै नैंन ॥२१३॥ नाथ नंदीश्वर नंद कौ ढ़ोटा लौनो आइ। कुँवरिहिं गोदी ओटिकैं माँगत ताकी माइ ॥२१४॥ कछु कछु लच्छण चोर के सीखत नंदकुमार। तातें तुम आगम वरनि नाथ कहौ निरधार॥२१५॥ प्रथम वचन मैं तो कहे उनसौं सहज सुभाइ। वे मन में खटकत सदा और न वनत उपाइ ॥२१६॥ अरु जसुमति के चाह कौ सागर वढ़्यौ अपार। कुँवरि सगाई हित करत विविधि भाँति उपचार ॥२१७॥ जैसें खेवट विन भ्रमैं भरी नाव जल-धार। मो मन गति ऐसी भई नाथ लगावौ पार ॥२१८॥ सत्य वचन मेरौ रहै जसुमति भायौ होइ। बहुरि नंद के सुवन में औगुन लखै न कोइ ॥२१९॥ वर कन्या के भाग की महिमा देहु सुनाइ। जैसें अति संदेह यह मेरे मन कौ जाइ ॥२२०॥ स्वामी कौ माधुर्य सुनि प्रेम विलोवत हीय। रावल जद्दपि आपनौं मन अति गाढ़ौं कीय ॥२२१॥ जैसें उमँगैं सिंधु जब रुकत न वारू भीत। भक्तराज वेपथ भये प्रेम प्रवल लये जीत ॥२२२॥ वृन्दारन्य विहार जहाँ कल्प गनत पल हानि। सो गोपिन के प्रेम वस इत उत भये अजान ॥२२३॥ सुधि करि नाथ विवस भये भेद न काहू देत। यौं बीता कैऊ घरी तव पुनि भये सचेत ॥२२४॥ रानी अति अचिरज छकी

दई चरित यह कौन । झूमत घूमत रंग में नाथ रहे धरि मौन ॥२२५॥ समझि समझि बोले मधुर जब चित आयौ ठौर । बात दुराई माहिली कहत और की ओर ॥२२६॥ माता मैं लघु वैस तें जो सेयौ सब काल । महाबली वह देव है मोपै बहुत कृपाल ॥२२७॥ ताकौ आराधन करौं मन धरि गाढ़ी प्रीति । उन तेरे संदेह की मोहिं चिताई रीति ॥२२८॥ श्री कीरति वृषभानु कौ नंद जसोदा आदि । वर कन्या परताप तें जग जश चलै अनादि ॥२२९॥ श्रीराधा सौभाग कौं वरनत वनत न मोहिं । रसना होंहिं अनंत जो कछुक सुनाऊँ तोहि ॥२३०॥ उत व्रजपति कौ लाड़िलौ शुभ लच्छण कौ मूल । वना वनी में नित वढ़ै रानी सुख समतूल ॥२३१॥ यह व्रज अविचल होहिगो इन दोउनि कौ राज । सत्य वचन कीरति सुनौं मन दै कीजै काज ॥२३२॥ करौ सगाई नंद घर देव वतायौ भेद । चोरी हू छुटि जाइगी रानी छौंड़ौ खेद ॥२३३॥ राधा जननी भाँति इहि वचन आपनौ राख । व्रजपति रानी को सकल कीजै मन अभिलाष ॥२३४॥ माता अज्ञा दीजिये आसन अपनें जाउँ । वसन उतीरन कुँवरि को माँगत जीय डराउँ ॥२३५॥ नाथ न ऐसी वात कहि कौन हमारे टोट । पाट वसन अरु जरकसी वाँधि देंउगी पोट ॥२३६॥ रानी मेरे देव की ऐसी अज्ञा नांहि । जो हौं कहौं सोई करौ समझि आप मन माहिं ॥२३७॥ सारी उपरैनी दई लीनी सीस चढ़ाइ । थार भरयौ पकवान वहु दियौ लड़ैती लाइ॥२३८॥ सींगी गहकि वजाइकैं गावत प्रेम वढ़ाइ । मो मन की आसा पुजी धनि कीरतिदा माइ ॥२३९॥ निकसे राज दुआर तें लाड़त राधा नाम । फिरे नगर दै दाहिनौं पुनि पुनि करत प्रनाम ॥२४०॥ प्रेम वचन रानी कहे निपट मधुर सुख कंद । सुधि करि करि मारग चलत भींजत परमानंद ॥२४१॥ परम रम्य रविजा तटी वंशीवट के तीर । वैठे शीतल छाँह जहाँ सखनि संग वलिवीर ॥२४२॥ देखि कुंज की ओट तें वंदे सीस नवाइ । कीनौं सींगी नाद पुनि सुनत औदरी गाइ ॥२४३॥ आये वालक संग मिलि गहें लकुट सब हाँथ । गाइनु विझकावत

फिरत को तू सींगीनाथ ॥२४४॥ जाइ न माँगै गाँव में वन में क्यौं मँड़राइ। भैया याके भाल कछु चंदा सौ चमकाइ ॥२४५॥ सुवल कहत सुनि रे सखा यह जानत वहु जंत्र। यासौं कीजे प्रीति जो हमैं सिखावै मंत्र ॥२४६॥ यह योगी है दूर को घर आंगन को नाहिं। भैया मोकों वहुत गुन दीसत हैं या माहिं ॥२४७॥ हँसि कैं मधुमंगल कही कहा वजावतु गाल। ऐसे में देखे वहुत सुनि भैया गोपाल ॥२४८॥ तव उठि वोल्यौ मनसुखा एकौ मोहिं वताइ। ऐसौ काके भाल पर चंदा परत लखाइ ॥२४९॥ रैंता पैंता कृष्ण के काननि लागे आइ। भैया याके हाथ की सींगी मोहिं दिखाइ ॥२५०॥ निकट जाइ गोविंद सों वोल्यौ सखा सुवाहु। रावल सौं वातैं करैं यह मन वढ़्यौ उमाहु ॥२५१॥ अरे वकत हौ वावरे वोल्यौ अर्जुन भोज। वातैं करिहो कौन सौं जानत खूँट न खोज ॥२५२॥ मना कहत तुम कूर सव वृथा करत अरुझेर। सींगी सुनिवे की भई मो मन श्रद्धा फेरि ॥२५३॥ श्री नगधर सुनि सखनि कीं वातैं अति मुसिकात। श्रीदामा ने तव कही आनि मते की वात ॥२५४॥ मोहन चलिकैं वूझिये वसत कौन से देस। मुद्रा तौ साँची धरैं लगत वड़ौ योगेस ॥२५५॥ नाथ निकट सवही गये वैठे आसन मोरि। मधुमंगल वूझत प्रथम दोऊ हाथनि जोरि ॥२५६॥ किततें आवन जात कित कहाँ वसौगे साँझ। किहिं कारन रावल कहो भूलि परे वन माँझ ॥२५७॥ आये उत्रा खंड तें दक्षिण कियौ पयान। देखन कौं कानन ललित भूलि परे यह जान ॥२५८॥ सुवल कहै वावा कछू पढ़्यौ गुनौं जो आइ। जंत्र मंत्र अरु औषधी हम कौं देहु सिखाइ ॥२५९॥ तव हँसि कैं रावल कही जानत विविधि उपाइ। ग्वाल साँवरो वूझिहै तव सव देहुँ वताइ ॥२६०॥ यह मोकौं जानत नहीं हौं पै जानत याइ। जनम होत गंडा गरैं वाँध्यौ जसुमति माइ ॥२६१॥ अमल छके लोचन अरुण रहे श्याम तन देखि। वहुरि अमल हरि रूप कौ रावल चढ़्यौ विशेषि ॥२६२॥ सुनि व्रजपति के लाड़िले मुरली नेंकु वजाइ। ऐसी वूटी देउ तव वहुत वढ़ैं घर गाइ ॥२६३॥ मगन भयौ सुनि मनसुखा

सब विधि सुधरयौ काज । भैया बिन श्रम भाग्य बल वैद्य मिलि गयौ आज ॥२६४॥ रावल आगें नेक चलि हाथ राखिदै पीठ । मेरी धूमर गाइ कौं कबहूँ लगै न दीठ ॥२६५॥ अरे बैठि तू बात मो पहिलें सुनिलै नाथ। गाँग बुलाई कौं तुरत गंडा रचिदै माथ ॥२६६॥ रे भैया या गाम में उलटौ ही कछु न्याउ । पहिलें बूझयौ नाथ सौं में हीं जंत्र उपाउ ॥२६७॥ आगें हौं लै लेउँगौ बूटी जड़ी भभूत । ता पाछें कछु लेहिगौ नंद महर कौ पूत ॥२६८॥ यह तौ भैया उचित है कहें देत हौं टेरि। नातर बाबा नाथ कौं घर लै चलिहौं घेरि ॥२६९॥ झगरें कोलाहल करें मिले परस्पर ग्वार । दूर भये ठाढ़े हँसत नागर नंद कुमार ॥२७०॥ हँसि बाघंबर झारिकें रावल चल्यौ पलाइ । परम ललित लीला निरखि प्रेम न हृदय समाइ ॥२७१॥ जबहिं बजाई बाँसुरी भये त्रिभंगी लाल । सुनत नाथ उनमत्त ह्वै नाचत दै करताल ॥२७२॥ कहुँ बटुवा सींगी कहूँ कहुँ बाघंबर डारि । बूड़े बेहद नाद सुख तन की दशा बिसारि ॥२७३॥ वन वीथिनु लोटत फिरत दीरघ लेत उसास । देखि गोप-नंदन सबै गये श्याम के पास ॥२७४॥ भैया मिरगी रोग ने योगी लयौ दवाइ । अब याकौ उलटौ हमें करनौं परयौ उपाइ ॥२७५॥ श्याम कहत भैया सुनौ दूरि गईं सब गाइ । हम चलि ल्यावैं फेरि कैं तब देखैंगे आइ ॥२७६॥ मित्र मंडली संग लै चले बढ़ावत सोभ । गाइ अखैबट वन गईं हरे तृननि के लोभ ॥२७७॥ अरे मित्र तैं तो कही बात भली समुझाइ । लगते रावल यतन जो तो खोईं हीं गाइ ॥२७८॥

अरिल्ल

रावल कीनौं विदा हरषि कीरति जबै । छोटे बड़े बुलाइ किये एकत्र सबै । सिद्ध परम अवधूत पुरातन जानिये । हरि हाँ तिन जो कहे सुबचन सत्य करि-मानिये ॥२७९॥ महा बली कोउ देव आनि तासौं कही । ताके मुख की बात भाग्य बल में लही । कुँवरि सगाई जाइ नंद घर कीजिये । हरि हाँ यह बानी मम सत्य कही सुनि लीजिये ॥२८०॥ वर कन्या के भाग

वताये भूरि अति । यह व्रज अविचल राज कह्यौ है देवपति । सुख संपति अरु सुयश लोक लोकनि वढ़ै । हरिहाँ जो यह रचौ विवाह ओप दुहुँ कुल चढ़ै ॥२८१॥ भलैं भलैं सव कहत वात सुनि कान जू । वैठे अग्रज अनुज सहित वृपभान जू । पुनि सुनि सुखदा जननी रावल भूप की । हरिहाँ वोली करहु सगाई हरि हित रूप की ॥२८२॥ यह निश्चै करि उठे सु लागत अति भले । मंगल वानीं पढ़त आपने घर चले । सौंधे कैसी महकि गई पुर पूरि कैं । हरिहाँ सवके मन संदेह सो डारे चूरि कैं ॥२८३॥ वगर वगर भई खवर वात निश्चै परी । कहा कहौं आनंद जलद लागी झरी । व्रज गोपीं सुख ओपीं सरसीं रंग में । हरिहाँ घर घर मंगल गावति भरीं उमंग में ॥२८४॥ प्रथम वदी ही वदन वधुनि जिन विप्र सौं । वोलि वोलि सो देतिं सभागिनि छिप्र सौं । यूथनि यूथनि जुरि मिलि कैं रावल चलीं । हरिहाँ कौतूहल अति वढ़यौ सकल पुर की गलीं ॥२८५॥ श्री कीरति ढिंग जाइ कहति धनि धनि घरी । कुँवरि सगाई हेतु आज तुम हाँ करी । धनि जसुमति कौ भाग मनोरथ कर फली । हरि हाँ जाकें व्याही जाइ भवन भूपण लली ॥२८६॥

दोहा

तव लगि गवनी शारदा गोपी भेप वनाइ । पहुँची मंदिर महरि के खवरि दई तिन जाइ ॥२८७॥ श्री जसुमति आदर दियौ चौकी पर वैठाइ । देवि अधिक प्रफुलित वदन वूझति चित्त लगाइ ॥२८८॥ रूपवंत वनिता नई देखी जसुमति धाम । उमहि रह्यौ हो गाम सव सुनि धाईं व्रजवाम ॥२८९॥ महा भाग्य किहिं पुर वसति परम निपुन तुम वाल। समाचार देखे सुने हमसौं कहौ कृपाल ॥२९०॥ रानी हौं वृपभानु पुर रात वसी ही जाइ । सुमति नगर हौं रहति नित सुख जु निरंतर पाइ ॥२९१॥ श्री वरसाने ह्वै रह्यौ घर घर मंगल चार। तेरे सुत के व्याह कौ निश्चै पर्‌यौ विचार॥२९२॥ भाग भली वैठी कहा देहि वधाई मोहिं । जो वाँछित वहु काल तें सो दिन प्रापति तोहि ॥२९३॥ श्री राधा जननी जनक जोरि सकल परिवार । वात

प्रगट यह कहि दई घर घर भई प्रचार ॥२९४॥ आज काल्हि हीं लाल कौ तिलक वेगि दै होइ। भयौ विरंचि जु दाहिनौं रानी संसै खोइ ॥२९५॥ चट दै उठी जु गाइ कैं घूँमि झूँमि सुख नारि। कहा देहुँ या भाम कौं जसुमति रही विचारि ॥२९६॥ इतहिं सोच उत प्रेम ने लीनों अधिक दवाइ। उभै सिंधु आनंद में पुनि पुनि गोता खाइ ॥२९७॥ तव उठि वोली रोहिनी अहो महरि चित चेत। मंगल साज सँभारि सव टीकौ आवन हेत ॥२९८॥ कीनें जतन अनेक विधि जा मंगल के काज। देखि कृपा गिरिराज की सुवन वन्यौ सव आज ॥२९९॥ सावधान रानी भई सुनत रोहिनी वोल। पहिरावत वा भाम कौं पट भूषण जु अमोल ॥३००॥ छला अँगूठी आरसी चौकी दुलरी हार। व्रज वनितनि इतनौं दियौ सिमटै कैऊ भार ॥३०१॥ दै असीस मारग चली सो सव दियौ लुटाइ। लखि गोपिनु कौ प्रेम रही सारद सुमति विकाइ ॥३०२॥

सोरठा

निर्मल सुदिन सुधाइ पंडितराज वुलाइ कैं। वरसाने कौ राइ प्रथम पठावत रोपना ॥३०३॥ वैठे सभा वनाइ पुरजन गुरुजन वोलि कैं। कहत सवनि समुझाइ कहा प्रथम दैवे उचित ॥३०४॥ वसन रतन निर्मोल दीने सकट भराइ कैं। पुनि गोधन के टोल हय गय साजि सिंगार वहु ॥३०५॥ मागद चारन भाट नाई वंदी जन चले। कीनें मंगल ठाट वेद विप्र उचरत भले ॥३०६॥ जहाँ तहाँ मंगल गान पंच शब्द वाजे वजत। छाये गगन विमान जय धुनि पूरित देव गन ॥३०७॥ भये शुभ सगुन अनंत जव मिलि निकसे नगर तें। सुर सुमनन वर्षत नंदग्राम सन्मुख चलत ॥३०८॥

दोहा

उच्च अथाई गोप मिलि वैठे नंद व्रजेश। राज सभा में शुभ घरी नेगिनु कियौ प्रवेश ॥३०९॥ विप्रनि दीनी आसिषा कीनी नंद प्रनाम। आये पुर वृषभान तें करन सगाई स्याम ॥३१०॥ नंद द्वार नौवत गहकि

वाजी ताही वार । धाये आये दूरि तें सुनि सुनि कैं सब ग्वार ॥३११॥ नंद प्रेम की भीर में सम्हरि सकत नहिं गात । भीजि भीजि आनंद में कहत विप्र सौं वात ॥३१२॥द्विजवर रावल भूप ने हमैं लियौ अपनाइ । उनके गुन गरुवे अधिक कहा सुनाऊँ गाइ ॥३१३॥ देखि शुभ घरी चौक रचि जसुमति वधुनि बुलाइ । कृष्ण कमलदल नैंन कौ कियौ सिंगार बनाइ ॥३१४॥ नगर बुलावौ फिरत हे महत वड़ाई देत । वात सुनत ही सबनि उर उभिल्यौ आवत हेत ॥३१५॥ गाँव गाँव तें गोप गन आवतिं गोपी गैन । घोरी मोहन लाल की गावतिं मधुरें वैन ॥३१६॥ सोभा सागर नंद गृह चहुँदिसि छवि अस आइ । मनु सावन सरिता सुभग उमगि मिलत हैं धाइ॥३१७॥ वाल वृद्ध अरु तरुन मिलि आये मंदिर राज । बाजेनु धुनि अरु गान धुनि मनु नव घन की गाज ॥३१८॥ केसर अजिर लिपाइ कैं मोंतिनु चौक पुराइ । मणि चौकी पर श्याम कौं तव वैठारयौ आइ ॥३१९॥ नेगी श्रीवृषभानु के भीतर लिये बुलाइ । तिननि आसिका श्याम कौं निकट सुनाई आइ ॥३२०॥ टीकौ कीनौं वेद विधि नंद सुवन के सीस । दीनौं साज गिनाइ कैं प्रोहित रावल ईस ॥३२१॥

कवित्त

झूँमि झूँमि गावति हैं जारी औ किवारिनु में, कोऊ राजभवन कोऊ ठाढ़ीं पौरि तीर में । कोऊ छकि प्रेम दुलरावति लड़ैंते लाल, कोऊ सुर लीन कोऊ घोरी अति गँभीर में । वृन्दावन हितरूप कोऊ पुर वीथिनु वर, थार धरें भेंट कर रुकीं महाभीर में । मानहु आनंद नंद द्वार आजु पौरिया जू, लाल ढिंग पठाईं जे रहीं हैं न सरीर में ॥३२२॥ गावति हैं गारीं व्रजनारीं महा मोद भरीं, आजु कौ सौ द्यौस दई आजु हीं वनायौ है । धन्य व्रजरानी जिन जतन अनेक किये, ताकौ फल दृग अवहीं दरसायौ है । वृन्दावन हितरूप कीरति वृपभानु जू कैं, महा पुन्य उदौ नंद औ जसोदा पायौ है । ऐसे कारे कान्हर कौं वैसी सत चंदमुखी, दीनी है दया करि तीनौं लोक यश छायौ है ॥३२३॥ हुलसीं सबै गाव छवि पावैं उरझावैं नैंन, मैंन कैसे वैन फूल मुख तें झरति हैं । कोऊ

महा लोनो निहारति मुख मोहन को, कोऊ चढ़ि ऊँचे कुसुम वरषा करति हैं। वृन्दावन हितरूप श्याम कौ तिलक भयें, वारि वारि भूषण घर याचक भरति हैं।देखौ वृषभानु की लड़ैती परताप आजु, गोकुल में सुख की उलेंड़ें अति परति हैं ॥३२४॥ देति हैं द्विजनि दान वधुनि वहु सनमान, राजत हैं व्रज-राज ठाड़े गोप गन में । पहिरें नौतन दुकूल वदन पै वाढ़ी फूल, कंचन की दुति देह नेह भरे मन में । नैंननि में फूल्यो रंग उत्सव की अति उमंग, थोरी थोरी मुसकनि रमी है अधरन में । वृन्दावन हितरूप कृष्ण के जनक की आजु हीये की हुलसनि समात नाहिं तन में ॥३२५॥

दोहा

नभ जे जे वानी भई व्रज अवनी त्यों जान । इत उत वाजे परस्पर गहकि गहकि नीसान ॥ ३२६ ॥ कियौ लाल कौ आरतौ व्रजपति अनुजा आइ । वहुरि अरघ दै कें लये मंदिर जसुमति माइ ॥३२७॥ वारि वारि कें जल पियौ न्यौछावर किये प्रान । नंद महामनि हुलसि कें दये महा निधि दान ॥३२८॥ पुनि पुरजन परिवार सव समध्याने के लोग । नंद रची ज्योनार तव नाना विधि के भोग ॥३२९॥ गारीं दै दै नव वधू गावतिं भरीं हुलास । महरि मनावति गिरि कृपा जिन पुजई मन आस ॥३३०॥ जवहिं जिवाँइ विदा करत नंद होत आधीन । मोल लये वृषभानु हम कीनी प्रीति नवीन ॥३३१॥ वैठि अथाई नंद जू वकुचा दीने खोलि । पहिरावत कर आपने एक एक कौं वोलि ॥३३२॥ रतन जटित टोडर दये पहुँची अरु मणि माल । अंगद नगनि जराइ के मोती कान विशाल ॥३३३॥ दर्वि दियौ वहु भार भरि अरु वड़रासि तुरंग । विदा करे हित मानि कें वहुत रह्यौ रस रंग ॥३३४॥ फूलि फूलि कें ग्वाल सव मिलत कृष्ण कौं धाइ । भैया तेरी वनि गई हम पै कही न जाइ ॥३३५॥ भई सगाई नृपति घर अव तू वदिहै काहि । चोरी हू सव छिप गई मैया डरपति जाहि ॥३३६॥ वरजति रानी नंद की यों न कहौ अव भूल। वेटा ज्यौं त्यौं भयौ है दई हमें अनुकूल॥३३७॥

सुनि कोउ कहिहै सजन घर चोर नाम तजि देहु। जो भावै सो ग्वार सब मोपै तें लै लेहु ॥३३८॥ बोलि ग्वार सब ग्राम के पट भूषण पहिराइ। झगरि लेत सब महरि सौं मेवनि गोद भराइ ॥३३९॥ बहुत भये मंगल उदै ता दिन तें व्रज माहिं। जसुमत्ति मन की फूल कौं वाट तौल सम नाहिं ॥३४०॥ बहु मोली लै ओढ़िनी जसुमति पठई मोद। श्री वृषभानु कुमारि कौं लाड़ भरीखु गोद ॥३४१॥ इत उत बहु मंगल भये कहाँ लगि बरन्यौ जाइ। वृन्दावन हितरूप बलि दिन दिन सुख अधिकाइ ॥३४२॥ श्री राधा ब्रजपति सुवन दुहुँ दिसि लाड़ अछेह। जिन पर गोपी गोप सब बरपत हित कौ मेह ॥३४३॥ हौंड़ी डाली परस्पर जाति तीज त्यौहार। छिप्यौ अलौकिक प्रगट लखि लोक रीति व्यौहार ॥३४४॥ करी सगाई कृष्ण की कीरति रावल बूझि। अभिलापा जसुमति फली सबै परी जग सूझि ॥३४५॥ वृन्दावन हितरूप बलि दुहुँ दिसि बारिधि नेह। शिव विरंचि हू चिंतवत अति दुर्ल्लभ सुख येह ॥३४६॥ ठारहसैं बारह वरस रस मय फागुन मास। शुक्ल पक्ष एकादशी वेली भई प्रकास ॥३४७॥ ब्रजरानी अभिलाप यह कृष्ण सगाई हेत। वृन्दावन हितरूप बलि कहत सुनत सुख देत ॥३४८॥ श्री वृन्दावन धाम मधि तीरे सेवाकुंज। श्री हरिवंश कृपा कथ्यौ महरि मनोरथ पुंज ॥३४९॥ निपट नवीन चरित कह्यौ गुरुदत कृपा विचार। वृन्दावन हितरूप बलि रसिकनि कौ सुखसार ॥३५०॥ इति श्री कृष्ण सगाई।

श्रीकृष्ण प्रति जसुमति सिक्षा

दोहा

श्री हरिवंश कृपा सुदत जो उपजी उर आइ। महरि लाड़ के वचन जे वरनों चित्त लगाइ ॥१॥ बेटा गिरिधर लाड़िले यह शिक्षा लै मानि। हौं समझावति प्रीति सौं सत्य वचन कै जानि ॥२॥ करी सगाई भूप घर सुनि श्रवणनि दै पूत। अब गहि लक्षण साधुता तजि असाधुता धूत ॥३॥ कितिक यतन करि करि थकी तो ब्याहन संजोग। तनक दई सन्मुख भयौ जानत ब्रज के लोग ॥४॥ सबसों मीठी बोलिये सबसौं कीजै नेह। सबसौं मिलि चलिये कुँवर सीख भली सुनि लेह ॥५॥ हौं अति डरति उराहिनें जो मोसौं कहि जात। कान परै जिन सजन के घर आँगन की बात ॥६॥ बेटा तातें समझि चलि मेरे मदन गुपाल। चोर नाम तें हौं डरति तजि अनीति की चाल ॥७॥ ये बातें हलधर सुनत आये मैया पास। बैठे सनमुख श्याम के तन मन भरे हुलास ॥८॥ मैया तू कहि कोटि विधि यह न मानिहै एक। पुनि पुनि वन में जाइकें करै उपाधि अनेक ॥९॥ कबहूँ गहवर वन छिपै लख्यौ न परै शरीर। कबहूँ चढ़ै कदंब पर कबहूँ कूदै नीर ॥१०॥ सुनि बेटा बलिराम तू क्यों न सिखावनि देइ। बड़े बंधु की बात तू गिरिधर मानि न लेइ ॥११॥ पिछली गई सुजानि दै अबहूँ बुद्धि सुधारि। कह्यौ बड़े कौ मानिये कबहुँ न दीजै डारि ॥१२॥ इतने ही आयौ सुबल लखी आपनी घात। मैया सुनि लै काल्हि की अति अनीति की बात ॥१३॥ श्री बरसाने के निकट गये चरावन गाइ। वन बीनत हीं फूल कोउ तिनसौं निपट धिंघाइ ॥१४॥ दान दान पुनि पुनि कहे वे सुनि चौंकीं कान। ढोटा काहू विप्र कौ माँगि न जानत दान ॥१५॥ वितीपात संक्रांति नहिं मावस पून्यौं कोइ। छला मूँदरी देहिं तुहि जो पै परवी होइ ॥१६॥ बाबा कही न मैं कही कही

न काहू और । ये बातैं कहि श्यामघन सीखे हो किहिं ठौर ॥१७॥ झूठी रार बढ़ावही वन वीथिनु के काज । यदपि यह राजा कुँवर तदपि न रंचक लाज ॥१८॥ अधिक भूख वन में लगी काल्हि सवेरी आइ । भले घरनि कीं भाँम लखि मैं कछु माँग्यौ जाइ ॥१९॥ ऐसे तौ माँगि न सक्यौ लियौ दान कौ नाम । मैया तामें दोष मोहिं देत सुवल बलिराम ॥२०॥ काल्हि छाक जो लै गई भूलि परी वन माँझ । नीठ नीठ हमकौं मिली तब लगि परि गई साँझ ॥२१॥ मैया मोकौं भूख ने लीनौं अधिक दबाइ । तब मैं माँग्यौ दान मिस यामें दोष बताइ ॥२२॥ सुवल और बलिराम सौं फूटि मिले सब ग्वार। मैया पै चलि श्याम कौं आज दिवावैं गारि ॥२३॥ कूटक रचिकैं पैज बदि तोहि सुनायौ आइ । ये बोलत हैं झूठ सब सुनिलै जसुमति माइ ॥२४॥ बेटा बोलत साँच तू रचौं विविधि विधि पाक । काल्हि पठाऊँ तुरत हीं तोकौं वन में छाक ॥२५॥ भई सगाई भूप घर ताही पुर की भाम । तिनपै भूलि न माँगिये कौन टोट तो धाम ॥२६॥ हम न विप्र याँचक कुँवर जो पर दानहिं लेत। बेटा ये वातैं सुनत घटै सजन हिय हेत॥२७॥ तू बालक समुझत नहीं इन बातनि के भेद । बलिदाऊ समझत अधिक तब पावत मन खेद॥२८॥ वैश्य जाति पुनि घोषपति हम नहिं माँगैं भूलि । छाँड़ि देहि मिस दान कौ कुल कौं है प्रतिकूल ॥२९॥ पुनि बरसाने गाम कीं तिनहीं सौं ये बात। जहाँ सेहरो बाँधिकैं जैहो लला बरात ॥३०॥ भली भई जो उननि हूँ समझ्यौ विप्र अजान । नातर हौं ब्रजराज कैं बात डारती कान ॥३१॥ सुवल और बलिराम जो झूठी कहत बनाइ । तौ अपनें मुख कही तू माँग्यौ है मैं जाइ ॥३२॥ उत्तर दै या बात कौ तब छूटोगे लाल । नातर बाँधे दाम ज्यौं ह्वैहै वैसो हाल ॥३३॥ उक्ति जुक्ति सोचत अधिक गिरिधर जीय सकात। टेढ़े देखत सुवल दिसि सैननि डाटत जात ॥३४॥ उत तें बलिदाऊ कहत बोलौ क्यौं नहिं श्याम । मेरो कह्यौ न मानही तब जु बिगारत काम ॥३५॥ तब उठि बोल्यौ मनसुखा मैया हाथ लगाइ। जैसैं चोरी दानकी सब कुटेव छुटि जाइ

॥३६॥ वात फुरी तव श्याम कों कहत कछु तुतराइ । दोस होइ तौ मारिये सुनि जननी चित लाइ ॥३७॥ जव मोकों ब्रजराज जू लै वैठत हैं गोद । राजनीति की वात सव सिखवत भरि मन मोद ॥३८॥ वेटा अपने देश में अकर न दीजे जान । माल देखि कें लीजिये जहाँ तहाँ तें दान ॥३६॥ जो मन दै सीखौं नहीं राजनीति की रीति । मैया तौ ब्रजराज जू मोसों करैं न प्रीति ॥४०॥ वावा नित ऐसें कहत तू डाटत दिन रैंन । दुहुँ विधि मोहूँ कों कठिन चित नहिं पावत चैंन ॥४१॥ कछु कछु फिर धोखौ परयौ लखी गई नहिं वात । मैं जानी कोउ जौहरी रतन लदायें जात ॥४२॥ गहने कई करोर के लदे वधुनि के अंग । हम जानी कछु दान पुनि लागत इनके संग ॥४३॥ यही जानि टोकीं सवै वे लागीं सतरान । मोहिं कही यह विप्र सुत माँगि न जानत दान ॥४४॥ मैं खाई गम वहुत है कहि समझाऊँ तोहि । वहुरि न देउ उराहनों अव सुधि आई मोहिं ॥४५॥ मैं सींचे संकेत में तरु वेली सव मूल । तिनमें नाना भाँति के झूलत फल दल फूल ॥४६॥ वहुत भाँति रच्छा करों कोऊ धरै न पाउ । जा वन देखनि कौं रहै नित प्रति मो मन चाउ ॥४७॥ भरि भरि गोदिनि लै गईं सव फल फूलनि तोर । ताहू पै जिय सोचि कैं मैं सव दीनीं छोर ॥४८॥ यह अनीति हलधर सुवल रंचक समुझत नाहिं । उलटी वातैं करत सव तू विचारि मन माहिं ॥४६॥ राज काज उठि जाइगो मैया मानत रोस । कोउ न वदिहै देस में मोहिं न दीजै दोस ॥५०॥

अरिल्ल

मैया जिहिं तिहिं भाँति माँगि कर लीजिये । वढ़ै राज परताप सोई विधि कीजिये । जो कीजैगी कानि तौ पुनि पछिताइगी । हरि हाँ राज दंड की भय जग में उठि जाइगी ॥५१॥ न्याइ नीति जैसी विधि ग्रंथनि भाषिये। राज धर्म जो उचित रीति दृढ़ राखिये। सजन सगारथ प्रीति सदा जैसें फलै। हरि हाँ घटै न अपनौं तेज चाल ऐसी चलै ॥५२॥ ब्रजपति मोसों कही वात

मन धरी । ग्वार सवै अति क्रूर आनि चुगली करी । जननी लेहु विचारि चन घनश्याम कौ । हरि हाँ अक्रूर वसै जो देस राज किहिं काम कौ ॥५३॥ वेटा तेरौ वचन मोहिं नीकौ लग्यौ। मन में अति संदेह आज सवही भग्यौ । पढ़्यौ गुनौं तैं वहुत आपने तात सौं । हरि हाँ हौं सुनि भई संतुष्ट राज की वात सौं ॥५४॥ मोहन राज कुमार लाल पै वलि गई । मो मन की अभिलाष आज पूरन भई । अपने अतिलड़ गिरिधर कवहुँ न डाटिहौं । हरि हाँ सात साखि कौ दर्वि व्याह में वाँटिहौं॥५५॥ साँची तेरी वात झूठि ग्वालनि कही । अव पायौ मैं भेद समझि तेरी सही । कोउ कहि वहुरि जु आइ ताहि नहिं मानिहौं । हरि हाँ व्रजपति कहैं सो करौ भाग्य फल जानिहौं ॥५६॥ वरसाने की सींव भूलि नहिं चाँपिये । घटै सजन सौं नेह वात तिहिं काँपिये । प्रीति परस्पर रहे वहुत दिन में गये । हरि हाँ अति आदर घटि जाइ सदा एकत भये॥५७॥ खोरि साँकरी पीरी पोखरि जहाँ है । वावा मोकौं सींव वताई तहाँ है । उहाँ चराऊँ गाइ सदा वगराइ कैं। हरि हाँ ताते आगें कवहुँ न देखौं जाइ कैं ॥५८॥ वेटा यह तौ वात उपाई तैं नई। कवहिं साँकरी खोरि सीम वावा दई। व्रढ़ि जिन बोलै बोल मोहिं जानी परी। हरि हाँ यह नहिं मन कौं रुचित वात झगरे भरी ॥५६॥ यह नहिं वावा कही मिलावत गाँठ की । मैं नहिं अव लगि सुनी वर्ष भई साठ की । वेटा कहिये साँचि लड़ैते साँवरे । हरि हाँ झगरत वढ़ै न ओप लेहु जहाँ भाँवरे ॥६०॥

दोहा

तवहीं वोल्यौ मनसुखा मैया वातहिं वूझि। वेटा की साँची कथा कछुक परी तुहि सूझि ॥६१॥ हमहीं कौं झूठौ कहत याकी राखति कान। हौं जानत याके गुननि नाहिंन सकत वखान ॥६२॥ मैया याकी जिन सुनौ यह झूठौ सव अंग । झूठ कहन हलधर सुवल सीखे याके संग ॥६३॥ तव मोहन तिरछे चितै वोले वाँके वैन । रे रे झूठे मनसुखा महा कपट कौ ऐन ॥६४॥ मैया यह वृषभानु पुर निकट वढ़ावै रारि। उन सव नर नारीन पै हमैं दिवावै

गारि ॥६५॥ मोसों कछु होलें कहै उनसों कहै पुकारि । तव में याके संग तें गाइ लई निरवारि ॥६६॥

अरिल्ल

तोहि सिखावति हारी व्रजपति अतिलड़े । सुनि सुनि तेरे चरित लाज चहले गड़े । क्यों वरसाने जाइ धरावतु नाम है । हरि हाँ घटै सजन सों प्रीति करत सो काम है ॥६७॥ कवहिं तुम्हारे वाप विसे लये मोल जू । जाइ पराई सींव कहत वड़ वोल जू । ज्यों त्यों भई सगाई तू अनरस करै । हरि हाँ मेरे मन को ताप दई किहिं विधि हरै ॥६८॥ मिथ्याचारी सखा वहुरि तू सत गुनो । इन वातनि पति नाहिं लाल नीकें सुनो । कीजे सजन सनेह अधिक उपमा वढ़ै । हरि हाँ खोटी वातनि पूत कहा रचि रचि गढ़ै ॥६९॥ तव आयो मधुमंगल हरि की ओर कौ । जानी विगरत वात मिलनियाँ चोर कौ । तुम जिन विमनी होहु महरि सुनि लीजिये । हरि हाँ जो हौं विनती करौं सत्य सो कीजिये ॥७०॥ प्राणनि प्यारो लाल सुनो ता मुख कथा । जो रहिहै संदेह कहौं तो हौं जथा । चोर नाम तें रानी तुम अति डरति हौ । हरि हाँ अव इक झूठो नाम दूसरो धरति हो ॥७१॥ ए अन्याई ग्वार देहिंगे पार चिर । मुख तें निकसी वात न रानी मिलत फिर । तातें समझि विचारि गुसाँ जिन मन धरौ । हरि हाँ मीठी मीठी वात श्याम सों अव करौ ॥७२॥ मोहन अति हीं निपुन लेहु पुचिकारि कैं । जे मुख निकसे वचन सु कहौ सुधारि कैं । कुटिल जगत की रीति वहुरि तुम हूँ कहौ । हरि हाँ रानी वढ़िहै वात मौन अव गहि रहौ ॥७३॥ तव जसुमति मुसिकात सुनत हित वात कौं । समझि अंक भरि लेत सजल घन गात कौं । गिरिधर तू अति चतुर वात भोरी करै । हरि हाँ हौं तोहि सिच्छा देत कुटेव न ज्यौं परै ॥७४॥ मधुमंगल की गोद महरि मेवा भरी । ढोटा तैं यह वात वड़े हित की करी । जो पुनि जाती फैलि वात दस वीस मुख । हरि हाँ निस्चै सुनते सजन विपुल तव मोहिं दुख ॥७५॥ व्रजपति पुन्य प्रताप वान सव वनि

रह्यौ । काहे अधिक डरात मानि लीजै कह्यौ । है सहाइ गिरि देव न अज्ञा टारिये । हरि हाँ मैया पुनि पुनि किहिं विधि हिम्मत हारिये ॥७६॥ बेटा मैं अति कष्ट सगाई हित कियौ। साँचौ अति गिरिराज मोहिं तव वर दियौ। सो तू चपरि विगारत काची मति महा। हरि हाँ अपने मन की विथा सुनाऊँ हौं कहा ॥७७॥ तातें हौं अति डरति संक नहि अन्य की । पीरी पोखर सुनी गोप परजन्य की । तहाँ लगि गाइ चराऊँ वावा नंद की । हरि हाँ जननी मानि न रोस वात आनंद की ॥७८॥ हँसि पुचिकारति महरि पुत्र जान्यौ वली । सुनि आरज कौ सुयश वात लागी भली । इनकी आसै दुरी न कोऊ पावही । हरि हाँ जा घर उरभ्यौ नेह सोई घर भावही । ७६॥

दोहा

तहाँ एक व्रज सुंदरी वैठी जसुमति धाम । तिन ता छिन ऊतर दियौ सुनौ कुँवर घनश्याम ॥८०॥ पीरी पोखर तीर कव दादा वये जु धान । घर वैठे वातैं करत लला वड़े वलवान ॥८१॥ कवहिं गोप परजन्य ने गहरी खोदी नींव । कवहूँ वावा नंद ने भगरि निकासी सींव ॥८२॥ समझि परैगी वेगि दै वे सुनिहैं जिहिं काल । अव तुम मौंगे ही रहौ कहा वजावत गाल ॥८३॥ मैयहिं बूझौ सौंह दै वसती जमुना पार । काल्हि नंदीश्वर पुर वसी जानत सव संसार ॥८४॥ अव लगि मैं सोची वहुत तुम वढ़ि कियौ वखान। लोपत हौ गुन समुझि कैं जे कीने वृषभान ॥८५॥ चलि आई तुम कुल कछू निपट अनोखी रीति । भलौ तुम्हारौ जो करै तहाँ करौ विपरीति ॥८६॥ जो कोउ काहू वड़े कौ तनक गुन करै कोइ। वा कुल होइ सपूत जो समझि रिनी नित होइ ॥८७॥ हौं वरसाने गाम तें आई कारज और । सुनि सुनि तुम मुख के वचन मेरी मति भई वौर ॥८८॥ वरसाने तुम वसति जो एक वात सुनि लेहु । भली भाँति मन समुझि तव हमकौं ऊतर देहु ॥८६॥ काल्हि नंदीश्वर हम वसे गाम नंद के नाम । साँची कहौ को नाम हो पहिल वस्यौ जव गाम ॥६०॥ यह जु वात देखी सुनी कहिये वेगि विचारि । महा निपुन

तुम सत्य ही करि दीजे निरधार ॥९१॥ लला सत्य तौ तुम कहत पहिल नाम जो लेहुँ । नंद ग्राम कोऊ न कहि सुनि साँची कहि देहुँ ॥९२॥ होड़ वदौ सबके सुनत कहा देहुगे हारि । हमें तुमें वह सींव कों सहज चुकैगी रारि ॥९३॥ हाँ जू हाँ मानी हमनि जो पे कहिहौ ठीक । सब कोउ करें प्रमाण तो होहि वज्र की लीक ॥९४॥ छोटे वड़े बुलाइकें बैठौ सभा वनाइ। सबनि वात के अर्थ कौं दैहौं प्रगट दिखाइ ॥९५॥ कहा काम हे सबनि सौं मोहीं देहु सुनाइ । होड़ परस्पर दुहुनि की ओर काज किहिं आइ ॥९६॥ लला तनक में नाटिहौ तव धौं साची कोइ । वात आपने गाँठि की सोऊ वैठीं खोइ ॥९७॥ तुम्हे न डर लज्या बहुरि काहू की परतीति । झूठी झूठी वात कहि लयौ जगत सव जीति ॥९८॥ ए जू काहू सूम कौ वदन लख्यौ तुम भोर । बूझत रंचक वात कौं वहुत करति हौ सोर ॥९९॥ वहरावति हौ मोहिं कत वात न देहु वताइ । महारानी सव घोप की साची जसुमति माइ ॥१००॥ अव सव मन दैकें सुनौं कहें देति हौं टेरि । तुम्हें महरि साची वदति नाटें वनै न फेरि ॥१०१॥ तुम तें रानी पहिल ही नाम धरयौ वृपभान । कहियत हो आनंदपुर सुनौ खोलि कैं कान ॥१०२॥ गोधन श्री वृपभानु के यहाँ छवत हे आइ । चार मास वर्षा लगें वैठत हे सुख पाइ ॥१०३॥ एक संग सवही हँसे कहा वड़े कहा छोटि । मोहन जननी गोद में हँसत हँसत गये लोटि ॥१०४॥ जसुमति अति कौतुक छकी भाम चतुरई चोज । कछु मुसिकनि कछु सोच मन समझि वात कौ खोज ॥१०५॥ वरसाने की भामिनी वातनि जीती होड़ । महरि कहत मेरे लला अवहू अरवी छोड़ ॥१०६॥ उठि भामिनि घर कौं चली जीती वातनि जोर । लला न कवहूँ आज तें मन में धरौ मरोर ॥१०७॥ अजू तुम्हारी वात में हम कौं सूझत गाँस । वहुरि कहें यौं कसकिहै जैसें नख में फाँस ॥१०८॥ पावन सर परजन्य कौ गाँव निकट ही आइ । याके पहिले नाम कौं सोऊ जाहु सुनाइ ॥१०९॥ पावनसर तीरथ लला नहिं खोयौ परजन्य । वात कहौ कै दिन भरौ मात पिता कौ धन्य

॥११०॥ पीरी पावन कौ मिलत अच्छर दादे नाम । मैया मैं सोची बहुत यह झगरति बिन काम ॥१११॥

सोरठा

लला न रंचक लाज होड़ हारि हू कैं नटे ।
साची सकल समाज बोलि बोल पाछैं हटे ॥११२॥

दोहा

दीजे काहि उराहनौं कासौं कहिये जाइ । ब्रजरानी हू तें न जो ढोटा ढीठ डराइ ॥११३॥ ठोड़ी गहिकैं महरि तब समुझावति ता भाम । ये वातैं कहियौ न बलि कीरति जू के धाम ॥११४॥ यह बालक समझत नहीं घटि बढ़ि बात बिचार । तुम अति करुना कुशल हो कीजौ मो उपकार ॥११५॥ श्री राधा की माइ सौं कहियौ बारंबार । कृपा बहुत बिधि राखियौ अपनी ओर निहार ॥११६॥ सुन जसुमति कौ हाथ गहि लै गई न्यारे भौंन। रानी अतिहीं सुचित रहि तुम मन संसै कौन ॥११७॥ ढोटा अति मति चतुर है मैं परखे सब अंग । द्वै चंचल जु अमोल जग बेटा और तुरंग ॥११८॥ बुद्धि मिहीं तीच्छण खरी मैं देखी टकटोरि । मिहीं बात के मरम कौं लावत खोज बहोरि ॥ ११६॥ लखे बहुत बालक नगर अपनी बुद्धि प्रमान । या ढोटा की समझ सम हौं न बिचारत आन ॥१२०॥ प्रबल पुत्र कोउ घोपपति नंदन गुननि गरिष्ट । पै झगरे की बात कछु लगत लला कौं मिष्ट १२१॥ झगरारू अति होइगौ ऐसौ परति लखाइ । गाँठ बाँधि लेहु बात यह रानी करहु उपाइ ॥१२२॥ जसुमति ता चरननि नवत ए जू कहौ न फेरि । बात हँसनि कौं बहुत हैं याकौं धरौ सकेरि ॥१२३॥ झगरि न जानत श्यामघन देखौ अति हीं साधु । आजु लड़यौ है सखा सौं कीनौं तिन अपराध ॥१२४॥ ता छिन तें अलबल कछु बकत गुसाँ भरि लाल । रंचक सत्य न मानिये अहो बिचच्छण बाल ॥१२५॥ साँचि कहौ कीरति कछु जो कहि पठई तोहि । भूलि गई बूझी नहीं अब सुधि आई मोहिं ॥ १२६॥ तब हँसि बोली गोपिका

समझि महरि की लाग। वहुत वचन कीरति कहे भरे निपट अनुराग॥१२७॥

अरिल्ल

पुनि पुनि चरननिं लगनि जोरि कह्यौ हाथ जू। अरु कछु कह्यौ सँदेसौ मेरे साथ जू। हौलें कहियौ जाइ महरि लगि कान जू। हरि हाँ वेटा कौं सिख देहु लेहु यह मान जू॥१२८॥ झूठ साँचि को जानैं हम ऐसी सुनी। जहँ तहँ व्रज में वात फैलि रही चौगुनी। घर घर माखन काज जाइ चोरी करै। हरि हाँ एक पूत घर महरि कहा पेट न भरै॥१२९॥ जो कछु थोरी गाइ तौ देहु जताइ जू। एक लच्छ द्वै चार देहुँ पठवाइ जू। अरु जो माखन कढ़े न पय के माँहिं जू। हरि हाँ तौ पठऊँ नित माट भरे उहि ठाँहिं जू॥१३०॥ कीजौ जिन संकोच एक घर जानियौ। सत्य सत्य ये वात महरि तुम मानियौ। अरु ये वातैं नाहिं सत्य तौ भाषिहौ। हरि हाँ अतिलड़ स्यानौ भयौ वरजि अव राखिहौ॥१३१॥ करी वीनती और श्रवन सुनि लेहु जू। कालीदह वनताल जान जिन देहु जू। काली धेनुक दोऊ कहियत अति वली। हरि हाँ लरकनि राखौ वरजि वात यह अति भली॥१३२॥ मैं अपने श्री दामा कौं सिच्छा दई। तुम गिरिधर कौं डाटौ रानी वलि गई। दोऊ राज कुमार सखा वहु संग जू। हरि हाँ रच्छा सव विधि करौ सिखावौ ढंग जू॥१३३॥ और कही पुर वनितन कथा अनूप जू। जननी जनक न मिलत श्याम कौ रूप जू। रानी राजा साधु कुँवर चंचल महा। हरि हाँ यह सवके संदेह वात कहिये कहा॥१३४॥ व्रजरानी मुसिकानी वात हियें फुरी। अजू रहो अनवोलि कछू नाहिंन दुरी। कहति उघरि ही जाइ ढकी ही भली है। हरि हाँ घर घर मटिहा चूल्हे आई चली है॥१३५॥

दोहा

तव उठि वोली रोहिनी झरत वदन सुख वीज।
रानी सुनि लै काल्हि ही सावन सुदी सु तीज॥१३६॥

अरिल्ल

आनंदित ब्रजरानी सुनि यह बात है। अस कछु बाढ़ी फूल हियें न समात है। बरसाने की भाम तासु कौ कर गह्यौ। हरि हाँ लिये सौहगी जाउ हरपि जसुमति कह्यौ ॥१३७॥ नाना रंग खिलौना विविधि बनाइ कैं। लहट्ट चकरी काढ़े रतन जराइ कैं। मेवा चुनि चुनि राखी विविधि विधान कीं। हरि हाँ हाँड़ी डाली धरीं विविधि पकवान कीं ॥१३८॥ सुभग राचिनी मेहँदी मोरी रुचि धरी। बागे विविधि अमोल तागरी रुचि करी। सुभग बादले छोर विविधि रंग ओढ़नीं। हरि हाँ जसुमति धरीं सँभारि जाति कापै गनीं ॥१३९॥ रीति भाँति की सौंज और सब गनि दई। नाना वस्तु रसाल महरि पठई नई। श्री दामा हित बागौ न्यारी रीति सौं। हरि हाँ कुँवरिहिं हित नग बटुवा दीनौं प्रीति सौं ॥१४०॥ जानि बड़ौ परिवार साज सकटनि भरे। नेगी विप्र बुलाइ विदा ता छिन करे। श्री कीरति सौं भामिनि तुम कहि दीजियौ। हरि हाँ जो कछु चूकी होंहुँ छमा तौ कीजियौ ॥१४१॥

दोहा

नेगी श्री ब्रजराज के पहुँचे पुर वृपभान। होत घमर के दधि मथन मृदु धुनि सुनियत कान ॥१४२॥ सभा विराजी गोप गन बैठे रावल ईश। विप्रनि दीनी आसिका भूप नवायौ सीस ॥१४३॥ महाराज गोकुल धनी तुमकौं कही प्रणाम। हम लाये हैं सौहगी बसत नंद के ग्राम ॥१४४॥ यह सुनि बहु आदर दियौ बूझत सब कुसलात। कहौ महा मंगल उहाँ ब्रजपति नीके गात ॥१४५॥ रवि कुल तिलक प्रसाद तुम इहाँ उहाँ आनंद। भीतर देउ पठाइ कैं जो कछु भेज्यौ नंद ॥१४६॥ देखि देखि सब वस्तु कौं सादर पठवत भौन। भैया घरनी नंद की ता सम लाइक कौन ॥१४७॥ सुनि मुसिकाने गोप सब लखि नेगिनु की ओर। मुदित भये वृपभानु जू लें सुख सिंधु हिलोर ॥१४८॥ अति सुख सब गहके रहत कीरति महल सुभाइ। तामें उत्सव तीज कौ कुँवरि अतिलड़ी चाइ ॥१४९॥ पुनि घर आई

सौहगी ता आनंद न अंत। देति नगर में बाइनौ श्री कीरति गुनवंत ॥१५०॥ घर घर तें सिमटीं सबै नेगी बोले धाम। तिन्हें जिवांवति प्रीति सों गारीं गावतिं भाम॥१५१॥ पाक रचे बहु भाँति के परसत राज कुमार। वीर सहोदर कुँवरि कौ करत सवनि मनुहार ॥१५२॥ सुरँग पाग सिर लट-पटी कुंडल झलकत कान। रतन जटित चूरा करनि छाप छवीली पान ॥१५३॥ कंठी चौकी धुकधुकी फवी जलज मणि माल। वाजूबंद सुदेस भुज नख सिख सोभा जाल ॥१५४॥ पीत उपरना कटि वँध्यौ वेटा रावल भूप। वीर लड़ैंती कुँवरि कौ कहा कहौं तिहिं रूप॥१५५॥ हाथ लिये भाजन कनक भरे विविधि पक्वान। सादर विप्रनि सौं कहत जैंवो जू रुचि मान ॥१५६॥ अचवन करि वीरी लई गये अथाई राज। विनय करत वृषभान सौं विदा कीजिये आज ॥१५७॥ वागे नाना रंग के भूषण नगनि जराइ। पहि-राये अति प्रीति सौं दीनौ दर्वि अघाइ ॥१५८॥ कृष्ण जनक सौं वीनती कीजौ विप्र सुजान। हम सव वैठे करत नित तुमहीं जस कौ गान॥१५६॥ मोंठ वाजरी फूल फल भानोखर कौ वारि। साहौ सूझै जा दिना आवौ कृपा विचारि ॥१६०॥ तुम प्रसाद ही घोषपति सुधरैगो सब काज। इहाँ उहाँ की महामति तुमहीं कौं सव लाज ॥१६१॥

अरिल्ल

इत तीयर वहु सजीं लली की माइ तव। मेवा अरु पक्वान भरे लै भार जव। देस देस की वस्तु विविधि पठई नई। हरिहाँ वही विचक्षण भाम संग लैकैं गई ॥१६२॥

कवित्त

गहरे रंग रची है लड़ैंती दोऊ हाथनि में, मेहँदी महा नेह की जसोदा जू पठाई है। वार वार परखति है सखी अहा अचिरज है,ऐसी हम आज लगि लखी न ललाई है। वृन्दावन हितरूप नैंननि छवि जात गड़ी, कौन शुभ घरी धरी सरसी अरुनाई है। मेरे जानि नंद घरनि हिय कौ अनुराग मिल्यौ,

सोई ऊगि उठ्यौ ताकी ऐसी सुच्छताई है ॥१६३॥ कीरति पुचकारि तब गोद लै कैं बैठी लली, वेटी तैं तो सास दया मूरति ही पाई है। पुनि पुनि कैं गोदी ओटि माँगी मेरी प्रान प्यारी, अति हित मानि ताके करी मैं सगाई है। वृन्दावन हितरूप व्रजपति की मेरे जानि, भाँति भाँति कोई पूरी पाछिली कमाई है। भूरि भाग जसुमति को गन्यौ मैं लड़ैंती राधा, जाके कुल जाइ अधिक ओप तैं वढ़ाई है ॥१६४॥ धाई आई सुनिकैं घरनि महाभान जू की, चंपा जाकौ नाम जिन लड़ैंती गोद भरी है। महा मोद सानी सो जिठानी रानी कीरति जू की, ताई है लली की लाड़ सागर सुख ढरी है। कृष्ण जनक भयौ है अधीन जा सगाई हेत, धन्य धन्य तेरे सुभ जनम की घरी है। वृंन्दावन हित हेरि कहे रानी फेरि फेरि, वेटी तेरे ब्याह कौं तपस्या महरि करी है ॥१६५॥ सुनिकैं अति हरषी है जननी इंदुलेखा की, रामा जू नाम सो तौ कीरति घर आई है। मुदित है महाई सोभा देखि देखि राधा मुख, रीझि कैं लड़ैंती ताने अंक सौं लगाई है। रानी बरभान जू की वृन्दावन हितरूप, भींजी है सनेह हियें प्रेम ने दवाई है। भई है महामणि हमारे कुल वेटी तू, भूषण भवन कौ महरि पूरे पुन्न पाई है ॥१६६॥ सुभ घरी बूझी है वुलाइ विप्र कीरति जू, महरि जो पठाई सो लै ओढ़नी उढ़ाई है। राधा छवि वाढ़ी नई जै जै नभ बानी भई, वानिक है अभूत मोपै कैसें जात गाई है। चहलि दहलि रहे नैंन वृन्दावन हितरूप, डारति त्रन तोरि डीठ संका उर आई है। कोऊ वारि पीवत जल कोऊ वारि देत प्राण, कोऊ रहीं देखि प्रेम हाथ जो विकाई है॥१६७॥ आई व्रज गोपी सुख ओपीं महा भाग्य भरीं, देति हैं वधाई रानी कीरति कौं धाइ कैं। देखतिं लली को मुख बाढ़ी है अभूत सोभा, गावतिं वधाई रंग सागर में न्हाइकैं। कोऊ मणि थार धरें कोऊ मणि भूषण लैं, वारतिं वधूजन प्रेम डारीं वौराइकैं। वृन्दावन हितरूप भानु भौन गहराई, तामें धसीं फसीं प्रेम गोता खाइ खाइकैं ॥१६८॥ झनक झनक फिरत लली कीरति महल माँझ, ओढ़नी के छोर मोरि सीस पर धरें

हैं। रूप की सी घटा झूमि आवति अटा पै तें, खेलति है पतंग कुँवरि सबके मन हरे हैं। वृन्दावन हितरूप चौंधि चौंधि नैन रहे, दामिनी निकर वर मनु एकत करे हैं। देखिवे की महरि साध ऐपै कछु कही न जाइ, जादू कैसे वीज याही ओढ़नी में भरे हैं ॥१६६॥ जाति कछ और दशा आवैं प्रेम बावरी सी, राधा रूप मादिक महा सबही कौं चढ़ी है। महरि पठाई जो तैं ओढ़नी धरी है सीस, तातें देखौ सोभा कछू भाँति भाँति वढ़ी है। सोचत उपाइ दाइ उपमा हू न दई जाइ, वृन्दावन हितरूप गोभा सी कढ़ी है। नंद की घरनि मन मोहन की मैया जू, मैं तौ जानी कहूँ बहुत जादू सी पढ़ी है ॥१७०॥ महरि कौ नाम आली लेति हौ विचारे विना, यह तौ रानी कीरति उढ़ाई घरी भली है। सोई परताप आजु दरस परचौ नीकी भाँति, सबही की दृष्टि महा कौतुक इन छली है। वृन्दावन हितरूप निधि बाढ़े छिन ही छिन, जादू की तौ बात नहिंन झूठी ही सी चली है। अबकें ब्रज तीज कछू भलें वार आई सखी, भूपति वृषभानु की लड़ैंती जू कौं फली है ॥१७१॥ काहे कौं करत अरुझेर एतौ आली ठाली, मोकौं तौ भलीविधि कछु और दरसत है। (जातें) वृषभान कुल मणि राधा गुन भरी जू कौ, वृन्दावन हितरूप निधि सरसत है। एक बात भीतरी सो कहिवे में आवत नाहिं, कहे बिनु काहू के न मन परसत है। ब्रज चौरासी कोस सुनी यह सगाई भई, सबही कौ लाड़ लाड़ी अंगनि बरसत है ॥१७२॥ अरी एक जोगी कोऊ एक दिना आयौ यहाँ, तिनहीं तौ ऐसौ कछ जंत्र मंत्र करचौ है। ताके सीस माँहिं कछू चंदा सौ चमकत हो, हठि कैं उन माथें लड़ैंती चरन धरचौ है। वाकी कछू लटा माहिं अचिरज अनोखौ हो, तब ही तें राधा रूप अंगनि विस्तरचौ है। वृन्दावन हितरूप वारी हौं समझनि पै, कारन वही है भाँति भाँति मन हरचौ है ॥१७३॥ हाँ री हाँ साँची कही तू ही तौ चतुर महा, छिपी एक बात पुनि सो मैं हीं पहिचानी है। कहति हौ घनेरी ऐपै एक सुनौ मेरी हू, बुद्धि कैं विचारत जो मन में ठहरानी है। वृन्दावन हितरूप ढाँपे हैं लली के अंग, सब ही के डीठि भार

भई परी जानी है। ज्योंतैं खुलि परीं यह सोभा विनमित माई, तो तैं रानी कीरति जू वारि पियौ पानी है ॥१७४॥ जो तैं रानी कीरति पठायो तिलक मोहन कौं, मंगल समूह आय तो तैं व्रज छायो है। गाइनि थननि तैं श्रवत दूध खिरकनि में, दिसनि तौ उदोत कछू देखिये नयौ है। वाढ़ी है समीत कछू औरैं नर नारिनु में, घर घर उत्साह राग रंग पूरि गयौ है। वृन्दावन हितरूप कुँवरि के अंग अंग, नंद सुवन कौ मानौं भाग्य उदै भयौ है ॥१७५॥

दोहा

राधा वेहद रूप कौ वहुविधि करत वखान। ससि समूह तें सतगुनौ मुख सोभा कौ पान ॥१७६॥ घर घर रंग हिंडोरना घर घर मंगल गान। घर घर राधा रूप कौं वरनत चतुर सुजान ॥१७७॥ घर घर रानी महरि की कीरति सुनियत कान। जाकौं गिरि पूजन फल्यौ भाग्य प्रवल वड़ जान ॥१७८॥ व्रज चौरासी कोस में याचत हे सव कोइ। श्री जसुमति परसाद तें सहज वनि गई सोइ ॥१७९॥ अरी वंदि कीरति चरन धरी वचन जिन टेक। करी सगाई श्याम की औगुन जदपि अनेक॥१८०॥ कीरति जसुमति कौं सखी हम असीस नित देत। जिन हिय में प्रगटित भयौ सव व्रज जन कौ हेत ॥१८१॥ राधा हरि जननीं महा छकीं रहतिं उत्साह। नित उठि वूझतिं जोतसी गनतिं रहतिं दिन व्याह ॥१८२॥दुहुँ दिसि वारिधि नेह कौ नित नव नव सरसात। नाना वस्तु रसाल जो इत उत आवत जात॥१८३॥ नित अतिलड़ दोऊ कुलन घर घर करत प्रसंस। जोरी नख सिख सोहनी जीवन श्री हरिवंश ॥१८४॥ जसुमति सिच्छा कृष्ण प्रति प्रेम पहेरी येह। प्रेमी जन ही समझिहैं यह रस वेली नेह ॥१८५॥ ठारहमैं पर तेरहौं वर्ष जु भयौ प्रवेस। चैत्र सुदी द्वितिया सुदिन कथ्यौ प्रवंध सुदेस ॥१८६॥ श्रवण कथन वेली ललित उपजै उर अनुराग। वृन्दावन हितरूप वलि भक्ति जग-मगै भाग ॥१८७॥ नंदीश्वर वृषभानु पुर वरन्यौ कौतुक रंग। वृन्दावन

हितरूप वलि जामें सुख जु अभंग ॥१८८॥ सूधे अच्छर प्रेम के उक्ति जुक्ति कछु नाहिं। नेही लेहु विचारि कैं जो संपति या माहिं ॥१८९॥ कीरति जसुमति कौ मिल्यौ मधुर अलोकिक प्रेम। सर्वोपरि पुनि लखि परत लोक रीति मनु नेम ॥१९०॥ श्री हितरूप कृपाल गुरु दीनी सुमति जगाइ। वृन्दावन हित प्रीति सौं वरनें चरित अघाइ ॥१९१॥ निकट कुंज सेवा जहाँ श्री वृन्दावन धाम। तहाँ ग्रंथ पूरन कियौ रसिकनि मन विश्राम ॥१९२॥ इति श्री कृष्ण प्रति जसुमति सिच्छा।

विवाह मंगल

लगन मंगल

मंगल छंद राग सूहौ विलावल–पद १

वंदौं श्री हरिवंश चरन पुनि पुनि अंहा। वलि वलि श्री हितरूप सुमति दायक महा ॥ वरनौं मंगल व्याह सकल सुख साधिका। दिन दूलह नंद नंदन दुलहिनि राधिका॥ राधिका दिन दुलहिनि सुहागिनि भानु कुल सो अवतरी। अखिल सोभा सार वपु इत कुँवरि उत मोहन हरी ॥ वृपभानु कीरति नंद जसुमति भूरि सुख लाड़त लयौ। क़ीनी सगाई चौंप सौं सुनि सकल व्रज मंगल भयौ ॥१॥ कीनौं लगन विचार नृपति वृपभान जू। नौ भ्राता मिलि वैठे विप्र सुजान जू ॥ आये जहाँ कुल वृद्ध मित्र गुरु जन जिते। सादर वूझत सवनि भरे आनंद तिते॥ भरे अति आनंद जैहै लगन अतिलड़िकी सुनी। वोलत जु वंदी विरद गावत भानु कुल कौ यश गुनी॥ ह्वै रही गहमह धाम वहु गज वाजि करहा साजियौ। इत भये मंगल शब्द भुव उत व्योम दुंदुभि वाजियौ ॥२॥ पाट वसन नव रंग कनक वहु भार हैं। नाना रतन अमोल धरे तिहिं वार हैं ॥ गोधन वृन्द सिंगारे राधा जनक जू। वहु दूधी सव तरुनि ढपीं पट कनक जू ॥ कनक वसननि ढाँपि दीनी वाजि गज करिहा घने।

लगि रही जगमग जोत गहने कनक नग सबके बने ॥ बहु ग्वाल संग सिंगार हाटक दोहनी तिन हाथ हैं। नव रतन गिरिधर सीस कौ बहु साज दीने साथ हैं ॥३॥ घर घर तें व्रज सुंदरि निकसीं गावतीं। बीथिनु अति छवि देति भानु घर आवतीं ॥ दुलरावति नव कुँवरि हरषि रस रीति सौं। बैठीं कीरति भवन भरीं उर प्रीति सौं ॥ प्रीति सौं उर भरीं गोपीं गोप सब एकत जहाँ। जो तत्व खोजत निगम राधा हरि लगन लिखियत तहाँ॥ छोटे कनक मणि आभरन अँग अंग कुँवरि बिराजहीं। बृन्दावन हित अंक जननी मुदित अतिलड़ि भ्राजहीं ॥४॥

राग सूहौ विलावल—पद २

लगन लिखाई सुभ दिन रावल भूप जू। सोधि मुहूरत ता छिन परम अनूप जू ॥ पुर बनिता जुरि आई सब छोटीं बड़ीं। मणि चौकी पर बैठी नृप कुल अतिलड़ी ॥ अतिलड़ी कौं बैठारि चौकी रीति भाँति जु सब करी। ब्याह बिरियाँ लिखी निर्मल वेद पढ़ि गोदी धरी ॥ बृन्दावन हित निरखि निरवधि आज राधा रूप जू। लगन लिखाई सुभ दिन रावल भूप जू॥१॥ नौ ग्रह अति अनुकूल नृपति सुनि देखिये। रितु वसंत सुभ मास महा फल लेखिये ॥ वर दायक तिथि लगन भूरि मंगल रचौ। अखिल भाँति आनंद विविधि सामा सचौ ॥ सचौ सामा विविधि मन दै महा मुनि ऐसें कह्यौ। कन्या प्रवल परताप सुख कौ सिंधु व्रज फिरिहै बह्यौ ॥ बृन्दाबन हितरूप इत उत अलभ लाभ विसेपिये। नौ ग्रह अति अनुकूल नृपति सुनि देखिये ॥२॥ कीरति यह सुनि हरषि द्विजनि दियौ दान कौं। बदन चौगुनी फूलनि भई बृषभान कौं ॥ नौ भ्राता मिलि बैठे सुत महीभान के। विप्र असीसन लेत दायक सनमान के॥ सनमान दायक सबही लायक सुमति अति सुकृति फली। हिय द्रवत पुनि अनुराग जिन घर निगम गथ राधा लली ॥ बृन्दावन हित-रूप प्रमुदित व्रज वधू गुन गान कौं। कीरति यह सुनि हरषि द्विजनि दियौ दान कौं॥३॥ अंक लड़ैती कुवरि लेत अति मद भरी। निरखि पियत जल वारि

गोद विधि तन करी ॥ गहकि असीसनि देति घोप कीं नागरी । कुल मणि श्री वृषभानु होहु गुन आगरी ॥ आगरी गुन होहु राधा नंद सुत सौभग मनी । चिरजियौ वर कन्या अलौकिक प्रगट भुव जोरी वनी ॥ वृन्दावन हित धन्य वल्लभ कुल जहाँ यह अवतरी । अंक लड़ैती कुँवरि लेत अति मुद भरी ॥४॥ कहियो विप्र महामति यों समुभाइ जू । तुम लाइक कछू नाहिं घोप के राइ जू ॥ दियो नारियर पठै प्रीति सों लीजिये । एजू गिरिधर जनक ओप हमें दीजिये ॥ दीजिये हमकों ओप वहु परनाम श्रवन सुनाइयौ । कृपा करि कैं वाँचि पत्री जानि सुभ दिन आइयौ ॥ वृन्दावन हितरूप वलि वलि लीजिये अपनाइ जू । कहियो विप्र महा मति यों समझाइ जू ॥५॥

राग गोधनी गौरी ताल आड़—पद ३

अहो लाड़ी लगन लिखाई है सुभ घरी में तो वड़े मुनीसन वोलि हो । लाड़ी वहुत दियौ रावलधनी रथ हय गय रतन अमोल हो॥ राधा भई यश वर्द्धन भान कुल अरु रूप अवधि गुनवंत हो । राधा भई यस वर्द्धन भान कुल ॥टेक॥ अहो लाड़ी सगुन भये भुव नभ वहुत यह मंगल रचित विधान हो । लाड़ी देखि मुदित पुरजन सवै भये मुदित महा मुनि जान हो॥ लाड़ी मोहिं दई भयौ दाहिनो अव यह दिन देख्यौ नैन हो । लाड़ी सजन भवन भरि वैठिहैं मुख मधुरे सुनिहों वैन हो ॥ लाड़ी तात वदन फूलनि वढ़ी धन खरचन हियहिं उमंग हो । लाड़ी याचत हे मन क्रम वचन सो लहे अभिलाप अभंग हो ॥ लाड़ी मंगल काज सवै किये अरु वेद कही ज्यों रीति हो । लाड़ी कन्या दान उमाह मन अव तैं कीयो चित चीति हो ॥ लाड़ी वंस सुफल सुत जनम सौं ग्रह सुफल सु कन्या दान हो । लाड़ी सुकृत किये नर तन सुफल यह सुनियत वेद पुरान हो ॥ लाड़ी लोक सुफल सुनि श्रवण यस परलोक सुफल प्रभु सेइ हो । लाड़ी पात्र दान होइ धन सुफल जग जीवन यह फल लेइ हो ॥ लाड़ी जनक भयाने भूप कैं वहु निधि सिधि संचित ग्रेह हो । लाड़ी यह दिन खरचन कौं भयौ हिय सरसत सुता सनेह हो ॥ लाड़ी

द्विज मागध वंदी चले नापित जन अनुग समाज हो । लाड़ी लागत सब अतिहीं भले सँग लिये लगन कौ साज हो ॥ लाड़ी ब्रजपति आदर देहिंगे जसुमति मानैं धनि भाग हो । लाड़ी वृन्दावन हितरूप बलि पुरजन लखि भरैं अनुराग हो ॥

राग सारंग ताल चर्चरी—पद ४

कहा कहौं दुहूँ नृप भवन आनंद जो, लगन लै चले तव सगुन सुभ ये भये । वचन वृषभान के सुनत सब मुदित ह्वै, आज नर नारि सब महा रंग में रये ॥ पंच विधि नाद मिलि गान जुवतीं करैं, वेद धुनि सकल पुर और मंगल नये । विरद वंदी पढ़ैं भाट कवितन कहैं, विप्र दै आसिका हरप हिय में ठये ॥ जरकसी वसन गज वाजि करहा ठये, विविधि सिंगार मणि भूषणनि तिन दये । निकसि जब नंद के ग्राम सन्मुख भये, शब्द जै जै दसों दिसनि में निर्मये ॥ मृगनि के यूथ दक्षिण भाग देखियत, सुर विमाननि कुसुम वरसि नभ में छये । देखि नृप साज मुनि देव कौतिक छके, भान की पौरि उत नंद घर लौं गये ॥ गाइ वन छाँड़ि सब ग्वाल आये उँमगि, कृष्ण कौ व्याह सुनि बीज उर सुख बये । प्रेम के गहर सुनि भींजि ब्रजपति गये, वृन्दावन हित सजन भवन सादर लये ॥

राग सारंग ताल चर्चरी—पद ५

लगन कौ साज सब देखि पुरजन छके, कहत धनि धन्य वृषभानु रावल धनी । ठाठ गोधन दई भीर हय गय भई, जीन नग जटित गज रतन झालर वनी ॥ आय एकत भये नगर के गोइरैं, इन्द्र की विभौ तिहिं सम न आवत गनी । रूप की माल नंदग्राम पहिरी मनौं, छाइ गये चहूँ दिसि जोति वाढ़ी घनी ॥ करत परसंस नर नारि महलनि चढ़े, अहा कहा कहौं कौतिक न आवत भनी । कनक पट ढपें पसु परम सोभा वढ़ी, सवनि हिय हार दमकत अमोलक मनी ॥ उच्च मंदिर सिखर नंदनंदन खरे, परम विहँसत भये चलत लोचन अनी । वृन्दावन हितरूप राधिका लगन दत, देखि मुनि देव सुधि

विसरि गये आपनी ॥

राग पंचम–पद ६

कौन सुरपति सभा देंउ पटतर जाहि, वंदिये आज व्रजपति अथाँई। गौर तन पुष्ट अति तोंद कमनी महा, गोप गन ओप वैठे तहाँई ॥ मध्य नव नंद तिन वीच गोकुल धनी, गोद श्री कृष्ण लिये मुदित मन में। तहाँ रिषि आसिका आइ गौतम दई, अरघ दे पूजि कहैं धन्य जन में ॥ पत्रिका हाथ दै विविधि परनाम कहि, राइ रावल वचन कहे पुनि कैं। सुनो भुव देव रवि-वंस लाइक महा, नंद भये मुदित वहु विनै सुनि कैं ॥ द्विजनि की वेद धुनि नंदनंदन सुनत, पुनि असीसनि सुनत हिये हरषे। सहज दृग कोर सव मुनितु तन चितै कैं, सुखित जन करन कौं अमी वरपे ॥ कुसल वृषभानु की वूझि व्रजराज जू, सवनि कौं सुविधि सनमान दीयौ। वृन्दावन हितरूप वंधु गुरु-जन वोलि, नंद ने लगन विधि लैन कीयौ ॥

राग सारंग ताल चर्चरी–पद ७

ओटि अंचल मुदित वंदि गिरिराज कौं, विनामित आज आनंद जसु-मति भरी। सम्हरि नहिं सकत ग्रह काज एकौ जवहिं, लाल की लगन आई सुनी जिहिं घरी ॥ अहो सुनि महरि यौं कहति हँसि रोहिनी, सवहि मन-भाँवती धन्य विधिना करी। चारु चंदन लीप चौक मोतिनु रचित, सोधि सुभ घरी मणि आनि चौकी धरी ॥ उमँगि आये सवै नारि नर घोप के, कृष्ण की लगन आई जु श्रवणनि परी। वृन्दावन हित नंद धाम मंगल महा, नगर अरु वगर रस रंग लागी झरी ॥

राग गौरी–पद ८

मेरे मोहन की लगन आज घर आइये। भूरि भाग्य कौ उद्धव हरपि लड़ाइये ॥ सवके घर घर आजु वुलावौ दीजिये। आवौ नवसत साजि गहर नहिं कीजिये ॥ मोतें वाँछित लेहु वड़ो भयौ काज है। यह दिन मोहिं दिखायौ कृपा गिरिराज है ॥ यह मंगल हित वधुनि मान दीजै घनौं। तुम

आवौ मो धाम भाग्य फल तव गनौं ॥ तुम मुख फली असीस मोहिं जानी परी । वड़े सजन हित मानि सगाई तव करी ॥ अरी नाइन ठकुराइन साँची अव भई । लाल लगन कौं नगर बुलायें तू गई ॥ अहा कहा यह द्यौस भयौ है आज कौ । फल्यौ मनोरथ वाग तो मम व्रजराज कौ ॥ धन्य घरी सुख भरी सुरंग ररी अरी । वृन्दावन हितरूप महरि यौं उच्चरी ॥

छंद राग परज-पद ६

अजिर लिपायौ री हेली चौक सुविधि धरे । रंग विछौना री हेली नाना विधि करे ॥ करे नाना विधि विछौना रचित मणिन वितान हैं । धरे रचि सचि साज मंगल होत विविधि विधान हैं ॥ मान दै गोपीं बुलाईं ते सुनत गवनीं भलीं । अंग नव सत करि अलंकृत नंद आलय वनि चलीं ॥१॥ विपुल उमाहौ री हेली गोपिनु मन उदित । मंगल गावतिं री हेली सव आईं मुदित ॥ आईं मुदित सव भवन बैठीं विविधि रचना देखिये । आज व्रजपति धाम सोभा रमा पुर जु विशेषिये ॥ गहरे घुरैं नीसान पौरिनु और वाजे को गनै । गुनी गावत भाट विरदनि पढ़त फिरत वनें ठनें ॥२॥ उवटि न्हवायौ री हेली अतिलड़ लाल कौं । सुभग सिंगारयौ री हेली मदन गुपाल कौं ॥ सिंगारि मदन गुपाल गुरुजन संग लै गोकुल धनी । राज मंदिर गोप गन आये तहाँ सोभा घनी ॥ पट्टा कनक मणि खचित पर व्रजराज सुत बैठे हरी । धरि लगन गोदी लाल कैं मुनि देव जै जै धुनि करी ॥३॥ साज गनावत री हेली पठये भानु जे । देखि प्रसंसित री हेली बैठे गोप ते ॥ बैठे जहाँ सव गोप निर्मल लगन वाँचि सुनाइयौ । इत घोष उत नीसान नभ दुहुँ ओर हरषि वजाइयौ ॥ आरतौ करि श्याम कौ ग्रह लिये अरघ वढ़ाइ कैं । गज वाजि करहा रतन प्रोहित भान दिये गनाइ कैं ॥४॥ मंगल धुनि भई री हेली मंदिर महरि कैं । क्रीड़त सव जन री हेली अति सुख गहरि कैं ॥ गहरि कैं सुख सिंधु पैरत आजु नर नारी सवै । यौं थकित व्योम विमान कौतिक कृष्ण तिलक भयौ जवै ॥ वृन्दावन हितरूप जसुमति विपुल अभिलाषा फली ।

मेवा विविधि परिवार पुर बाँटति महा भागिनु वली ॥

छंद राग परज—पद १०

कहा कहों मंगल री हेली व्रज घर घर वढ़यौ । गोपीं गोपनि री हेली रंग वदन चढ़यौ ॥ चढ़यौ वदननि रंग सजनी कृष्ण व्याह उमाह कौ । नंद जसुमति हियें सागर वहत आज अथाह कौ ॥ परिवार पुर ज्यौनार श्रीवृषभानु मंत्रिनु हित रची । पाक मधुरी रीति सौं व्रजराज-वहु सामा सची ॥१॥ वोलें हित सौं री हेली नंद जिमावहीं । नवल वधू मिलि री हेली गारीं गावहीं ॥ गावहीं मिलि वधू गारीं सुनि सजन हरष्यौ हियौ । वैठीं झरोखनि मुदित पुनि पुनि नाम रावल पति लियौ ॥ तात कौ कर गहें गिरिधर कहें जेंवौ और जू । वदन विधु तन चितै सवके हाथ रहि गयौ कौर जू ॥२॥ विरद वखानत री हेली वंदी जन खरे । भाट कवित्त कहें री हेली सकल गुननि भरे ॥ भरे सव गुन गुनी गावत सुजस गोकुल भूप कौ । मन भाँवतौ पावत सवै दृग लाभ गिरिधर रूप कौ ॥ भोजन सुविधि करवाइ व्रजपति सुनि वड़ाई वंस जू । वृषभानु कौ दत देखि अपने मुख जु करत प्रसंस जू ॥३॥ घोरी गावतिं री हेली हुलसीं भामिनीं । चढ़ीं अटारिनु में री हेली मनु दुति दामिनी ॥ दामिनी दुति देह अतिलड़-व्याह घोरी गावहीं । महरि ओलिनु भरति मेवा ते असीस सुनावहीं ॥ वृन्दावन हितरूप तुव सुत न्हात वार न धर परौ । मिलै दुलहिनि रूप आगरि सकल व्रज मंगल करौ ॥४॥ अव हरि चढ़िहै री हेली चपल तुरंग जव । जननी वारै री हेली रतननि मूठ तव ॥ वारि जननी मूठ रतननि सुत रचै सिर सेहरौ । महा मंगल होंहिं घर घर व्रज वढ़े नव नेहरौ ॥ चतुरंगिनी सेना सजे दूलह अधिक छवि पावहीं । वृन्दावन हितरूप वलि सुरपति समाज लज्यावहीं ॥

घोरी मंगल । राग धनाश्री टेर—पद ११

घोरी नंदीश्वर एक आई सुवन वनी अमोल है । देखन सकल पुर लोग आये करत परम कलोल है ॥ तुम लेहु व्रजपति मोल ऐसें कहत श्री उपनंद

जू । जिहिं चढ़ि चलैगो श्याम सुँदर होहि अति आनंद जू ॥ घोरी न ऐसी लोक देखी परम कौतिक रंग जू । किन धौं विधाता रची जाके परम कमनी अंग जू ॥ पुनि धरानंद निहारि घोरी नंद कौ हँसि कर गह्यौ । तुम लेहु अतिलड़ चढनि कारन वचन वहु हित कौ कह्यौ ॥ आये हरपि ध्रुवनंद सुनि कैं नगर कोलाहल भयौ । अभिनंद के ढिंग कहत घोरी देखियत अचिरज नयौ ॥ तिन गोद मचले लाल मोहन निपट अरवी मन धरी । लै देउ घोरी मोल मोकौं नंद सौं विनती करी ॥ नौ नंद हँसि हँसि कहत घोरी चपल है गिरिधर महा । कोउ और सूधी लैंहिंगे करिहै अलोलहि तू कहा ॥ ठोड़ी गही व्रजराज की लड़काइ सुंदर श्याम है । लैंहौं वछेरी यही वावा और मो किहिं काम है ॥ व्रजईस दीनौं द्रव्य वहु वहि रीझि कैं घोरी लई । सब कहत परखत अंग धनि वह देस जहँ उतपति भई ॥ चढ़ि कैं नचाई श्याम कौतिक सकल पुरजन आइयौ । वहु दान दीनें नंद ताछिन द्विज असीस सुनाइयौ ॥ मुदित जसुमति माइ अरघ बढ़ाइकैं भीतर लियौ । घोरी वँधी घुरसाल पुनि पुनि वारि जल सुत पै पियौ ॥ आईं वधाई देन गोपीं भीर अति मन्दिर भई । नौ नन्द रानिन हरपि रतनन मूठि न्यौछावर दई ॥ चढ़यौ घोरी आज मोहन महरि भाग्य मनाइयौ । बृन्दावन हितरूप वलि वलि हरपि मंगल गाइयौ ॥

मंगल छंद राग सूहो विलावल–पद १२

वाजे वाजत गहकि महरि के धाम हैं । फूलीं मंगल गावतिं सव व्रज भाम हैं । घोरी चढ़ि मेरे अतिलड़ हौं वलि वलि गई । नवल वछेरी मोल नंदवावा लई । लई वावा मोल घोरी देस किहिं उतपति भई । जाहि देखन घोप उमह्यौ कौन विधि जिहिं निर्मई ॥ कहत न वनें कौतिक महा घोरी परम अभिराम है । वाजे वाजत गहकि महरि के धाम हैं॥१॥ पीत सुभग सकलात जीन जा हित रच्यौ । व्रजपति सुत अनुराग हेत मणि नग खच्यौ ॥ चुन्नी जटित लगाम लसत मुहरी मनी । ललित रतन जगमगत सीस कलंगी वनी ॥

वनी कलंगी सीस राचे केस रंग मजीठ हैं। ' अँग अंग रंग विचित्र राजत जहाँ रपटत डीठ हैं ॥ पवन के सम गमन घोरी सकल गुन तिहिं तन सच्यौ। पीत सुभग सकलात जीन जा हित रच्यौ ॥२॥ चढ़ि मेरे मदन गुपाल सिंगारी है घोरियां। हौं लखि लेंउ वलाइ देंउ तृण तोरियां ॥ कनक झवा नग जटित भरे मखतूल हैं। पट्टे नाना रंग रचे मणि फूल हैं ॥ फूल अरु मखतूल फोंदा परम कमनी कान हैं। व्रजईश नंदन देखि हरषे वंधी घोरी थान हैं ॥ मेहँदी रचे अति चरण पचरँग पाट गूथीं डोरियाँ। चढ़ि मेरे मदन गुपाल सिंगारी है घोरियाँ ॥३॥ वड़े हो सजन घर जाइ वढ़ाओ ओप कौं। वरसाने के खेत देहु यश गोप कौं। इहि विधिना नहिं रचित दुलहिनी लाइहौ। वनितनि लोचन लाभ कवहिं दरसाइहौ ॥ दरसाइहौ कव भवन भूषण कुँवरि श्री वृपभानु की। वृन्दावन हितरूप त्रिभुवन को जु नखहि समान की ॥ सोभा कलपतरु रूख कीरति भई उपमा लोप कौं। वड़े हो सजन घर जाइ वढ़ावो ओप कौं ॥४॥

व्रजवासिनीजु की टेर। ताल आड़–पद १३

अव चढि हो मेरे सुंदर हो मेरे सुंदर श्याम यह निर्मोलक घोरियां। नग मणि हो खच्यौ जीन अहो खच्यौ जीन लगाम पाट गुहीं जाकीं डोरियां॥ राचे हो गहिरे रँग हो गहिरे रँग केस दृष्टिहिं लेत चुराइ कैं। कीने हो तन चित्र अहो तन चित्र सुदेस नाना रंगनि लाइ कैं॥ कलँगी हो सिर सुभग अहो सिर सुभग वनाइ वहु विधि नगनि जराइ कैं। चरननि हो मेहँदी सु अहो मेहँदी सु रचाइ पुनि नख नाल सलाइ कैं ॥ झालरि हो वहु जलज अहो वहु जलज लगाइ पीत दरयाई वँद लसे। फोंदा हो सोभित वहु हो सोभित वहु भाइ रतन अमोलक मधि गसे ॥ हींसति हो व्रजपति के अहो व्रज-पति के धाम दिन दूलह लै चलन कौं। चंचल हो अति हीं अभिराम हो अति हीं अभिराम गुण दरसावन ललन कौं ॥ निकसै हो चढ़ि राज अहो चढ़ि राज दुवार नंद सुवन मन भाँवतौ। सोभित हो सिरमौर अहो सिरमौर सुढार तरल तुरंग नचावतौ ॥ पीवैं हो जननी जल हो जननी जल वारि हौं

असीस देउँ मुद भरी । वलि वलि हो हितरूप अहो हितरूप निहारि बृन्दावन हित धनि घरी ॥

छंद राग परज–पद १४

चंचल घोरी री हेली सुंदर श्याम की । सुभग वनी है री हेली गुन अभिराम की ॥ अभिराम अतिहीं रंग चीती चढ़न दूलह साँवरे । चलिहै जवहिं बृपभानु पुर कौं लेन सुभ दिन भाँवरे ॥ हींसत वँधी घुरसाल मणिमय भवन गोकुल ईस है। वहु नगनि जटित अमोल कलंगी वनी जाके सीस है ॥१॥ चारु चरन में री हेली रंग सुदेस हैं । मेहँदी राचे री हेली सुंदर केस हैं ॥ सुंदर रचे जिहिं केस मेहँदी जीन वहु रतननि खच्यौ । विधिना चितेरे करी रचि पचि सकल गुन यामें सच्यौ ॥ किधौं चंचलता धरयौ तन कौन उपमा दीजिये । घोरी तौ ब्रजपति सुवन की दृग सदा देख्यौ कीजिये ॥२॥ जव चढ़ि चलिहै री हेली अतिलड़ नंद कौ । तव मित ना है री हेली तिहिं आनंद कौ ॥ आनंद कौ मित नाहिं गवनैं सजन मंदिर जा दिना । दूलह नचावै घोरियाँ जल वारि पीऊँ ता छिना ॥ राज भवन दुवार निकसत सींक सोने वारिहौं । गोकुल गलिनु के वीच भरि भरि रतन भोरिनु डारिहौं ॥३॥ जव सिर रचिहै री हेली अतिलड़ सेहरौ । तव लखि वढ़िहै री हेली सव मन नेहरौ ॥ नेहरौ अति वढ़ै घोरी पाइरें जव पग धरैं । गोप गन के मध्य चपल तुरंग अति कौतिक करैं ॥ गज वाजि वहु विधि साजि जहाँ उपनंद नंद विराजहीं । उमड़े महा दल गोप गन जन मैन सुरपति लाजहीं ॥४॥ गज अंवारी री हेली जव अतिलड़ चढ़ै । छिन छिन नई नई री हेली तव सोभा वढ़ै ॥ वढ़ै सोभा उमँगि सजनी हियें हुलसनि हेत की । देखें वनै वानिक भली बृपभान पुर के खेत की ॥ अँग अंग अतिलड़ रूप वरसै जव वरातहिं साजिहैं । बृन्दावन हितरूप वलि जहाँ अमित वाजे वाजिहैं ॥५॥

छंद राग परज–पद १५

घोप नृपति घर री हेली लखि उतसव महा। आनंद वरपत री हेली हौं

वरनौं कहा ॥ वरनौं कहा आनंद वरपत जहाँ दूलह अतिलड़ौ । हरषि घोरी वधू गावतिं ह्वै रह्यौ गहगड़ वड़ौ ॥ भरति मेवा गोद देति तँवोल जननी श्याम की । परम कौतूहल तहाँ छवि वढ़ी व्रजपति धाम की ॥१॥ नंदसुवन कौं री हेली मिलि दुलरावहीं । यूथनि यूथनि री हेली वनिता गावहीं ॥ गावतिं सुभग अनुराग पूरित कोकिला कूजतिं मनौं । गहकीं महा सुख नाद नागरिं भाग्य कहा महिमा गनौं ॥ तिन निकट निकसे आइ खेलत कुँवर मदन गुपाल जू । कोउ कहति दुलहिनि रूप आगरि तुम त्रिभंगी लाल जू ॥२॥ तिन मधि वैठे री हेली जननी गोद में। निपट छकी है री हेली जसुमति मोद में ॥ मोद में अति छकी जसुमति वदन कर वर फेरिकैं । तिहुँ लोक सौभग सींव रानी रही मुख दिसि हेरि कैं ॥ अपने कुँवर कौं व्याहिहौं अव कुँवरि रावल भूप की । जो है अखिल सिर लोक मणि गुन गहर गरुवे रूप की ॥३॥ दुलहिनि गोरी री हेली वरपति रंग है । ये हरि कारे री हेली नाहिंन ढंग है ॥ नहिं ढंग यह सुनि श्याम चौंके कूट कीनी भाम है । कछु सकुच बूझत और सौं यह वसति किहिं धौं गाम है ॥ मोहन वसति वृपभानु पुर यह सखी वृंदा अति गुनी । मुसिकाइ ता दिस चले आगें वात जव ऐसी सुनी ॥४॥ दिन दिन वढ़िहै री हेली गोकुल रंग अति। घोरी चढ़िहै री हेली जव सुत घोपपति ॥ घोरी चढ़ै जव घोपपति सुत व्रज महा सुख वगरिहै । वह घरी अति ही धन्य भूवा वाग गहि जव झगरिहै ॥ मन भाँवतौ दैहैं महरि फूली समात न गात है। वृन्दावन हित-रूप वलिवलि चलात गोप वरात है ॥५॥

छंद राग परज–पद १६

करी है सगाई री हेली मैं वड़ भूप घर । घोरी गावौ री हेली मिलि आवौ सुघर ॥ आवौ सुघर मिलि धाम मेरे हरषि घोरी गाइये । व्रजराज-नंदन लाड़िले कौं विपुल विधि दुलराइये ॥ दैहौं सवनि मन भाँवतौ इहि व्याह मंगल मोद में । सादर जसोमति कहति यौं पुनि भरति मेवा गोद में

॥१॥ प्रथम बखानत री हेली नृप परजन्य कौं। पुनि नव नंदन री हेली ब्रजपति धन्य कौं ॥ धनि धन्य श्री ब्रजराज हेली जासु यस भुव तल छयौ। निसि दिन प्रकासक चंद गोकुल कृष्ण जा कुल में भयौ ॥ धनि वंश सूरज तिलक श्री वृषभान नृप कुल नंदिनी। जहाँ लेहि भाँवरि श्याम सुन्दर धनि घरी वह वंदिनी ॥२॥ धनि वह वासर री हेली जो मन रमि रह्यौ। धनि छिन सोई री हेली कीरति हाँ कह्यौ ॥ कह्यौ कीरति हाँ सगाई हेत गोकुल चंद की। पाछिली पूरन में कमाई गनी कोऊ नंद की ॥ बड़राज मंदिर सजन पूरौ सुता गुन छवि आगरी। सो ओटि ओली महरि माँगी फर्‍यौ सुकृत भाग री ॥३॥ ब्रज सुख सरसै री हेली ब्रजपति कौ लला। नित नव बाढ़ै री हेली मुख ससि छवि कला ॥ छवि कला मुख ससि नित बढ़ै नित गान सुख भींजति महा। नित बढ़त राज कुमार नख सिख बरनिये बानिक कहा ॥ नित रहत कौतूहल भवन जहाँ भाँति भाँतिनु ओप है। वृन्दावन हितरूप बलि कोउ महामणि कुल गोप है ॥४॥

श्री ब्रजराज जू की पत्रिका श्री वृषभानु जू प्रति

राग पंचम चर्चरी–पद १७

स्वस्ति श्रीसहित उपमा सकल जोग्य तुम;एक मुख कौन कीजे बड़ाई। जयति रविकुल मनी नगर रावल धनी; नेह कौ सिंधु पूरन सदाई ॥ गुननि कौ निकर महीभान वर्द्धन सुयस; यह अपूरब कृपा करि दिखाई। धन्य तें धन्य भयौ जन्म नर लोक में; हमें उपमा अधिक तुम बढ़ाई ॥ भयाने भूप तुम चरित नित सुमिरिये;लोक में बिसद कीरति जु छाई। ललक तुम मिलन की रहत निसि दिन हियें; चित चढ़ी रहत तुम मित्रताई ॥ हेत पर कुशल वपु रावरौ निर्मयौ;सुभग लच्छण अमित उर निकाई। मुख कमल रह्यौ आनंद मकरंद भरि; प्रणत जन अलिनु लियौ चित चुराई ॥ महकि महिमा रही साधु मंडलि महा; मननि की वृत्ति सबकी बुमाई। जनक श्रीदाम सुख धाम लाइक अहा; बहुत परसंस कीनी न जाई ॥ परम सज्जन सदा सुधि

करत रहौगे; गोप कुल ओप तुम तें जु पाई। वारहू वार परनाम मम वाँचियौ; माहिली प्रीति नहिं परत गाई ॥ इहाँ नित परम मंगल जु परसाद तुम; उहाँ तुम रूप मंगल महाई। दई लिखि पत्रिका नंद कर विप्र कैं; जोरि कर करी आधीनताई ॥ सुख समाचार सदा देत लेत जु रहौ; मुख वचन विप्र कहियौं सुनाई। वृन्दावन हितरूप वाँह वल आप कैं, भाग्य फल लब्धि तुम मिलि मनाई ॥

राग पंचम–पद १८

नंद नेगी विदा किये वृषभान कें; जरकसी वसन मणि पेच भूषण दये। नगनि के जटित कर कनक टोडर वने; सवहिं सोभित मनौ रूप वदले नये ॥ अस्व सिंगार वहु द्रव्य तिनकौं दियौ; वहुरि कर जोरि आधीन आपुन भये। वृन्दावन हितरूप प्रेम के वचन सुनि; मुदित सव होत वृषभानु के पुर गये ॥

राग पंचम–पद १६

मुदित रावलधनी देखि विप्रनि भये; नंद की प्रीति रसरीति सव श्रवण सुनि। पत्रिका वाँचकरि प्रेम पूरित भये; सजन की सुहृदता हियें राखी जु चुनि ॥ भैया हो नेह कौ उदधि गोकुल धनी; अधिक आधीनता लिखी अपुकर जु उनि। अव न कीजे गहरु विविधि सामा सचौ; कछुक दिन वीच ऐसें कही महामुनि ॥ अष्ट सव-सिद्धि नव निद्धि भई टहलनीं; कुँवरि सर्वेश्वरी व्याह मंगल जु पुनि। देव वाजंतरी वेदवा विधि भयौ; वृन्दावन हित वदलि भेप भये जन सुगुनि ॥

राग पंचम–पद २०

भानु कुल नंदिनी जयति जग वंदिनी; व्याह मंगल सुनत लोक मंगल भयौ। सर सरित उमँगि सव दिसा निर्मल भईं; ब्रज जननि सूल निर्मूल उर कौ गयौ ॥ सुरनि कीं दुंदुभीं व्योम वाजन लगीं; शब्द जै जै नभहिं सवनि सुख निर्मयौ। सुरभि कुल श्रवत पय मुदित मन वछरुवा; वेलि तरु फूल फल निरखि विनु रितु ठयौ ॥ नेह वारिधि वढ़्यौ घोप विनमित अहा; हरप

अवनी बढ़त देखि री नित नयौ । वृन्दावन हितरूप बढ़ी नव निद्धि सिद्धि, व्याह उत्साह सब विस्व तन मन दयौ ॥

श्री कीरति जू के वचन श्री वृषभानु जू प्रति

राग विहागरौ–पद २१

आज उमाहौ अतिलड़ि व्याह कौ श्री बरसाने ग्राम॥टेक॥ श्री कीरति ऐसें कह्यौ सुनि हो लाड़ी तात । दिन थोरे रहे व्याह के समझौ मन दै बात ॥ हय गय रथ सजौ पालकी करिहा विविधि सिंगार । कुंवरि व्याह मंगल महा यह जग यस की वार ॥ पाक रचौ हित सजन के अति उदार नर नाथ । भूप बराती आइहैं गोकुल पति के साथ ॥ ब्रज चौरासी कोस के जन सिमटैं तुम धाम । कुँवरि राधिका अतिलड़ी खरचौ ताहित दाम ॥ बरनी रवि कुल मंडनी वर भूषण ससि वंस । तुम धन खरचौ गोप पति दुहुँ दिसि होइ प्रसंस॥ तब बोले वृषभानु जू रानी नैननि जोइ। हय गय रथ टोलनि सजे करिहनि गनत न कोइ ॥ कोसनि लगि सामा सची सचे पट भूषण जु अपार । कहत कुँवरि कौं गोद लै भरे हैं विविधि भंडार ॥ करयौ अलंकृत भानुपुर डगर वगर इहि भाँति । जा रचना कौं देखिकैं विधि रचना जु लजाति ॥ लाड़ी गावतिं नववधू अपने अपने ग्रेह । लली प्रान सम सबनि कैं भीजीं परम सनेह ॥ कीरति न्यौतनि भातइनु जोरयौ जुवति समाज । गलिनु गलिनु तें आवहीं सोभित मंदिर राज ॥ एकत ह्वै निकसीं सबै पूरि गई धुनि गान । बृन्दावन हितरूप बलि गहकि घुरे नीसान ॥

श्री कीरति जू कौ भात न्यौतनौ

राग पंचम ताल चर्चरी–पद २२

प्राण तें कोटि प्यारी कुँवरि राधिका; व्याह बिरियाँ मात भात न्यौतन चली । बृन्द गोपी बनीं मध्य सौभगमणी; आज सोभित भई भाँति कीरति भली ॥ चरित गिरिराज के विमल गावतिं सबै; बधू सकटनि चढ़ीं रंग रस में ढली । नमो गिरि देव सब ब्रज जननि सुख भरन; कहति अस वचन सिर

नाइ मानति रली ॥ मिली ग्रह जाइ सोदर पिता माइ सौं देखि; अति छवि वढ़ी सकल पुर की गली । भात न्योतौ दियौ सुनत सरस्यौ हियौ; गोद भरि मोद मुखरा सु लीनी लली ॥ व्याह मंगल गान पूरि इत उत रह्यौ; जनक जननी विपुल आस मन की फली । विविधि भूपण वसन सुविधि पहिराइ कैं; पुनि असीसनि देति प्रेम के भर हली ॥ सुता दुहिता परम मुदित ऐसें भई; उदित रवि मनहुँ प्रफुलित जु वारिज कली । अतिलड़ी कुँवरि के भात सामा सचित; कहा कहौं लोक में भाग्य मुखरा वली ॥ पिता करि प्रीति पुनि वीर आवन कह्यौ; भावजनि आनि वंदन करी पग तली । लोग परिवार पुरजन उमाहैं भरे; व्याह देखनि भई सवनि मन कलमली ॥ भेंटि सादर विदा जवहिं कीरति भई; नेह सुरभत नहीं दूध जिनकें पली । ओढ़ि ननसार की जरी पट ओढ़नी; कुँवरि अँग अंग छवि अधिक उफली अली ॥ गिरिनु के मुकट मणि दाहिनें दै चली;प्रेम पुलकित भई जनम लखि भुव थली। वृन्दा-वन हितरूप आइ अपने भवन; तेल मंगल रच्यौ मिलि जुवति मंडली ॥

राग पंचम—पद २३

वदन छवि सदन मनु खिली वारिज कली; गौर तन प्रभा कमनीय कोमल चरन । मणिनु के घूँघरू लसति छवि पैंजनी; भुव अलंकृत महा होत ठुमुकि जु धरन ॥ तात अरु मात के लाड़ ऐसें वढ़ति; सुकल पछि चंद ज्यौं कला दिन दिन भरन । सखिनु के वृन्द में मुदित खेलति कुँवरि; जनक के सुकृत कौ फल जु अनुपम वरन ॥ अजिर के मध्य सोभा निकर कौं धरें; लटकि कें चलनि मुख वैंन अमृत झरन । वादले छोर की खिसी सिर ओढ़िनी;कहा कहौं दामिनी दलनि तन वल हरन ॥ रवकि जननी लई अंक पुचकारि कैं; पोंछि श्रम स्वेद मुख वहुरि चूँवति करन । भान के प्राण कीरति दृगनि पूतरी; राधिका नाम जीवन जु नारी नरन ॥ घोप सौभाग्य अनुराग मूरति ललित; कौन विधि रची कहत न वनैं आचरन । नित नई अंग सोभा निकाई वढ़ति; भई उपमा जु रद लगीं सव पग परन ॥ गोप कन्यानि की

मुकटमणि नागरी, रच्यौ तिहिं व्याह जग जनक यस विस्तरन। आज मंगल महा हरद यह हाथ को, वृन्दावन हित फिरति नाइनियाँ घर घरन ॥

सोरठा—राग परज की अलापचारी—पद २४

राति जगावनि काज; कीरति महल वधावनो । सजियत मंगल साज; मंगल दिन प्रापति भयौ ॥ गनति रहति छिन जाम; जवतें कुँवरि जनम लयौ । व्याह समैं अभिराम भूरि; भाग्य द्रग लखि परयौ ॥ घर घर हुलसीं वाल; वाट वुलावनि की चहति । सुकृत भलमल्यौ भाल; भयौ दाहिनो विधि कहति ॥ सजि सजि सुभग सिंगार; उँमहिं रहीं छोटीं वड़ीं । अतिलड़ि प्राण अधार; दुलरावतिं हर्षित भईं ॥ लेति रहतिं कनहेरि;मदरा वाजे कौन छिन। घर के काम निवेरि; तकतिं भान के भवन दिसि ॥ सव मन ऐसौ प्रेम; दुर्ल्लभ सुर मुनि नरनि कौं । विसरति सुधि करि नेम; भान वंस सोभा अवधि ॥ मंदिर रावल भूप;सवनि प्राण थाती धरी । वृन्दावन हितरूप;श्रीराधा भागनि भरी ॥

हरद हाथ तथा तेल मङ्गल

दोहा—राग परजे—पद २५

हरद हाथ मंगल रच्यौ विप्रनि सुदिन सुधाइ । रीति भाँति सव करति है फूली कीरति माइ ॥ मंगल निकर उदै भये दरसि परे इहिं काल। श्रीराधा भागनि भरी कहतिं सवै व्रज वाल ॥ उभलि परी सवके हियें परम अलौकिक प्रीति । नौ भाननि कीं घरनिं मिलि करतिं वेद विधि रीति ॥ मणि मंदिर वेठीं सवै श्रीराधे लै गोद । वाजे सहित विनाइकै पूजि मनावतिं मोद ॥

छंद राग परज—पद २६

आज कुँवरि कौ हरद हाथ है राति जगावौ माई । रंग भरी यह रजनी सजनी भाग वड़े है आई॥ घर घर तें नव वाला कीरति दै वहु मान वुलाईं । ते भीनीं नव नेह लली के सुनि अति आतुर धाईं । सुनि अति आतुर धाईं आईं रंग वधाये गावैं । कीरति भान नाम कौं लै लै लाड़ी कौं दुलरावैं ॥ होत परम कौतूहल मंदिर कहत कह्यौ नहिं जाई । वृन्दावन हितरूप प्रेम सौं

रात जगावौ माई ॥ देव पितर पुंजवाइ प्रथम हीं गनपति गौर मनाये। चंदन वंदन अच्छत रोरी सवकौं हरपि चढ़ाये ॥ सकल सुहागिनि आगें लैकें मंगल रीति करावैं। वन देवी संकेत पूजि कें नवग्रह थापि धरावैं ॥ नवग्रह थापि धरावैं गावैं भामिनि फूलीं डोलैं। मधुरितु चाखि मंजरी मानौ गहकि कोकिला बोलैं॥ सदा सुहागिनि होहु लाड़िली जिन घर सजन बुलाये। बृन्दावन हितरूप प्रीति युत गनपति गवरि मनाये ॥२॥ घर घर मंगल आज भानपुर पाक रचित नर नारी। फिरति बुलावति नाइनि दौरी तेल चढ़ावन वारी ॥ यूथ यूथ मिलि आवतिं भामिनि सोभित घोप गली हैं। मानौ तेज पुंज मिलिवे कौं दामिनि उमँगि चलीं हैं ॥ उमगि चलीं भामिनि मनो दामिनि अँग अँग रूप गहेली। मानौ प्रेम पवन वस हालत कोमल कंचन वेली ॥ चित्रित पौरि अलंकृत मंदिर वीथिनु सोभा भारी। घर घर मंगल आज भानपुर पाक रचित नर नारी ॥३॥ गली गली की आवनि चावनि कीरति भवन धसीं हैं। राधा पूरन ससि मुख देखत मनु कुमुदिनि विकसीं हैं ॥ कोउ चौकी कोऊ मणि पटली वैठन सवकौं दीयौ। वहुत भाँति सनमान सवनि कौ कीरति रानी कीयौ ॥ कीरति दै सनमान सवनिकौ वोली मधुरी वानी। वरनी तेल चढ़ावौ विधि सौं एहो घौर जिठानी॥ प्रेम गहगहीं वदन डहडहीं हियें सुनति हुलसीं हैं। बृन्दावन हितरूप जाउँ वलि कीरति भवन धसीं हैं ॥४॥ वैठि सुहागिनि तेल चढ़ावैं सवै त्रिनाइक पूजें। लाड़ी कौं दुलरावैं गावैं कल कोकिल सी कूजें ॥ विपुल सुहाग भाग की पूरीं चहुँ-दिसि सोहतिं गोपीं। मृदु कर परसतिं अंग कुँवरि के परम प्रेम सौं ओपीं ॥ परम प्रेम सौं ओपीं गोपीं जिन घर वीधि वधाई। तेल उवटनौं करति लली कौ फूल न हियें समाई ॥ निगम गूढ़ गथ जीवनि राधा उपमा वनत न दूजें। वृन्दावन हितरूप लोक विधि ते जु त्रिनाइक पूजें ॥५॥

राग सोरठ ताल आड़–पद २७

अरी हेली कीरति महल वधावनो वरनी तेल चढ़ाइ। ऐसी वनी न

लोक में हेली अपने सुहथ लड़ाइ ॥ अरी-हेली कीरति महल वधावनौ॥टेक॥ कौतिक श्री वृषभान घर हेली है रह्यौ विविधि विधान। मणि पट्टा वैठी लली हेली कहा कहौं रूप बखान॥ उझलि उझलि छवि परति है हेली आज अतिलड़ी अंग। चेटक तन कैं धाम उहि हेली मो मति गति भई पंग॥ सावधान आवतिं सबै हेली ह्याँ बौरी सी होति। जैसें दिनमणि के उदै हेली मुरझति दीपक जोति॥ गावतिं लाड़ी लाड सौं हेली त्यौं उमगत हिय हेत। लली कलपतरु रूप कौ हेली भई बरसाने खेत॥ दृष्टि परत राधा कुँवरि हेली प्रेम विलोवत हीय। घर जैवो भूलीं सबै हेली बँध्यौ नेह गुन जीय॥ मंगल कौं मंगल करन हेली भयौ वृषभान निकेत। जामें अस रचना रची हेली विधिहिं चिनौती देत॥ प्रथम तेल दिन यह दसा हेली आगे को छवि ओर। लोचन वाही ठौं रहे हेली कछु न चल्यौ मो जोर॥ लेति फिरति हैं भाँवरे हेली याही मंदिर पास। वसीकरन सुख भरन दिन हेली आज भयौ इहिं वास॥ सोभा निधि मंगल निकर हेली वढ़िहै चरित पियूप। वृन्दावन हितरूप त्यौं हेली मो दृग वढ़िहै भूख॥

राग सोरठ-पद २८

मेरें सब मिलि मंगल गावौ। अतिलड़ि तन तेल चढ़ावौ॥ गिरिराज दाहिनौ मोकौं। मन फूल सुनाऊँ तोकौं॥ यह दिन मोहिं दई दिखायौ। राधा विवाह दिन आयौ॥ मेरे बहुत हुती अभिलाखा। सु तौ फली है कलपतरु साखा॥ तुम सुनहु घोप कीं वाला। मंगल विधिर चहु रसाला॥ मेरें कुल मणि श्रीराधा। दिन व्याह पुजैहै साधा॥ उत्साह भली विधि कीजे। मेरे नैननि कौं सुख दीजे॥ मिलि आवौ द्यौर जिठानी। सुनि विनती मधुरी बानी॥ बरनी कौं मिलि दुलरावौ। पूजा मिलि सुविधि करावौ॥ लाड़ी कीरतिमती जु मौसी। यह बात सुनत हिय हौसी॥ जाकौ भानमुद्रिका नामा। लाड़ी भूवा अति अभिरामा॥ ताके प्रेम सरस उर आयौ। भाभी कौ वचन मन भायौ॥ चाची ताई अनुरागीं। लाड़ी तेल चढ़ावन लागीं॥ सब

जुरीं हैं घोप कीं नारी। भयो भवन कुलाहल भारी ॥ गोपनि के कुलहिं मल्हावैं । आरज नामनि लै गावैं ॥ मंगल निधि कीरति ग्रेहा । जहाँ वरषत सुख कौ मेहा॥ वधू रीति भाँति करैं कमनी। सुर कहत धन्य व्रज अवनी ॥ जहाँ श्रीराधा सी वरनी । धनि जननी जनक सुभ करनी॥ धनि वरना भाग विशेषौ । अस दुलहिनि पाई देखौ ॥ प्रमुदित सुनि कीरति रानी । विधि व्याह रचित सुखसानी ॥ वलि वलि हितरूप समाजै । वृन्दावन हित धनि आजै ॥

राग सोरठ—पद २६

मेरी लाड़िलरी वनी तेल चढ़ावौ री आज। नगर बुलावौ फिरत है कीरति घर मंगल काज ।।मेरी।।टेक।। घर घर तें आई सबै सुनि लीयें मंगल साज । मणि पट्टा वैठी लली देखि सोभित मंदिर राज ।। करतिं सुहागिनि उवटनौ मिलि पंच सब्द भई गाज।वृन्दावन हितरूप वलि दुलरावति जुवति समाज॥

राग व्रजवासिनि की टेर—पद ३०

कीरति रानी व्याह वधायो राधा कुँवरि कौ तेल चढ़ावतिं नारि । वर-साने घन ऊनयौ जहाँ वर्षत सोभा वारि ॥ कीरति रानी व्याह वधायो राधा कुँवरि कौ ।।टेक।। गरज मधुर वाजे मनौ मारुत घुमड़्यौ उर प्रेम ।।कीरति रानी।। हिय उमाह वढ़े नद नदी कूल विदारत नेम ।।कीरति रानी।। कनक वसन धुज जहँ तहाँ भवन भवन फहराति ।।कीरति रानी।। मानों ओपीं दामिनीं कौंधति हैं वहु भाँति ।।कीरति रानी।। हरित भूमि नर नारि हिय वोलैं वंदी मागध मोर ।।कीरति रानी।। तरु वल्ली उलहे मनौ याचक मुदित न थोर ।। कीरति रानी।। इंद्रवधू सी फिरति हैं तरुनी सजे सिंगार ।।कीरति रानी।। पावस रितु वृपभानु पुर आई कौतिक हार ।।कीरति रानी।। को आयौ को आइवैं काकौ करत विचार ।।कीरति रानी।। कहा साज्यौ कहा साजिवै कहा भरियत भंडार ।।कीरति रानी।। विधि से आये मेरें जोतिसी सुरपति से वाजे-दार । सजनी मेरी व्याह वधायो राधा कुँवरि कौ ॥ लाड़ी गावति सारदा

सजन जु आवनहार॥ सजनी मेरी॥ हय गय साजे पाक बहु सजियति मंगल-चार ॥सजनी मेरी॥ लोग कुटुँब आयौ सबै मा कौ जायौ आवै किहिं वार ॥ सजनी मेरी॥ कहा देख्यौ कहा देखिबै कहा देखन की चाह ॥सजनी मेरी॥ कहा पायौ कहा पाइबै काकौ अधिक उमाह ॥सजनी मेरी॥ लगन चलत देखी अतिलड़ी तेल चढ़ति पुनि देखि ॥सजनी मेरी॥ भाँवरि परन उमाह मन होइ को छिन धन्य विशेषि ॥सजनी मेरी॥ लाड़ रतन पायौ कुँवरि वर पायौ तिहिं समतूल ॥सजनी मेरी॥ ये दोऊ अविचल रहौ मोहिं दई भयौ अनुकूल ॥सजनी मेरी॥ कौन दान जो दै चुकी को दैवे जु हुलास ॥सजनी मेरी॥ को ग्रह में उत्सव सज्यौ किहिं करिवे की आस ॥सजनी मेरी॥ वड़ौ जनम उत्सव कियौ अरु बहु वेद विधान ॥सजनी मेरी॥ आश्रम दान सबै दिये अब दैहौं कन्या दान ॥सजनी मेरी॥ मुदित वछरुवा गाइ मन मुदित सकल ब्रज लोग ॥कीरति रानी॥ सब दिसि निर्मल देखिये कुँवरि व्याह संजोग ॥कीरति रानी॥ धनि कीरति वृषभानु जू धनि बरसानौ गाम ॥कीरति रानी॥ सर्वेश्वरी जहाँ अवतरी व्याह विदित रच्यौ धाम ॥कीरति रानी॥ सखी वचन सुनि सुनि मुदित होत लली की माइ ॥कीरति रानी॥ तेल चढ़न मंगल सुदिन भीर न भवन समाइ ॥कीरति रानी॥ नगर वगर फिरै वाइनौ सबै महत दै मान ॥ कीरति रानी॥ वृन्दावन हितरूप वलि सरसत पुर वृषभान । कीरति रानी व्याह वधायौ राधा कुँवरि कौ ॥

राग परज—पद ३१

वरनी तेरे वारने कुल मणि श्री वृषभान । मरुवट वदन आज मनु पूज्यौ इंदु इंदिरा पानि ॥वरनी तेरे॥टेक॥ गोप सुता तन करतिं उवटनौ अप अपनी रुचि मान। मनु सिसु तड़ित तड़ित सौं उरझीं वनत न उपमा आन॥ हरदी रुचिर अलंकृत लाड़ी तामें मृदु मुसिकान । मनु मुख कमल पराग भरि परयौ किधौं छवि सदन निधान ॥ वाँध्यौ ललित डोरना कर वर ताकौ करौं वखान । वृन्दावन हित दूलह मन कौं वाँधन अति बलवान ॥

बान मंगल

राग परज–पद ३२

ताऊ बड़े बान पुनि न्यौतौ सामा बिविधि बनाई । स्यों परिवार लड़ैती जेंवन महाभाँन घर आई ॥ लाड़ी कों दुलरावैं गावैं ताई तेल चढ़ावैं । चंपा-रानी कौ मणि मन्दिर आज महा छवि पावै ॥ आज महा छवि पावै सजनी जेंवत कुटुँब सनेही। योगिनु और महामुनि दुर्ल्लभ सो सुख बिलसत ग्रेही॥ आगम निगम पंथ जिहिं खोजत सो निधि गोपनि पाई । ललिता सहित लाड़िली जेंवत सामा बिविधि बनाई ॥१॥ सत्यभानके बान कुँवरि कौ न्यौतौ मंगल गावैं । लाड़ी कों आगे लै निकसीं बीथिनु रंग बढ़ावैं । रमकीं झमकीं फिरैं महल में नव सत साजैं गोपीं । तेल उवटनौं करतिं लली कौ मनौ दामिनि सिसु ओपीं ॥ मनु दामिनि सिसु ओपीं सजनीं दियें हाथ हथलेवा । मनौं बहु कला अखंडित ससि की करतिं चहूँ दिसि सेवा ॥ नवयौवनी नाम काकी जो सबकों हरपि जिमावैं । बरनी संग बिसाखा जेंवत बनिता मंगल गावैं ॥२॥ पुनि गुनभानराइ की रानी समिता न्यौतौ दीयौ । पुरजन सब परिवार बोलिकैं उत्सव अतिसै कीयौ ॥ अजिर लिपाइ चौक रचि पट्टा धरयौ परम छवि पावैं । बरनी कों बैठारि बेद बिधि हरपीं तेल चढ़ावैं ॥ हरपी तेल चढ़ावैं गावैं परम प्राण सम राधा । चंपकलता सहित कियौ भोजन पूजी मन की साधा ॥ जेंवत श्री वृपभानु बंधु जुत निरखि सिरानौ हीयौ । न्यौछावर किये रतन लली पै सबकों सादर दीयौ ॥३॥ धर्मभान की सुभगा घरनी चाची अति मन फूली । लाड़ी न्यौत भवन बरनी कों परम प्रीति अनु-फूली ॥ रीति भाँति सब करति सभागिनि मंगल गावतिं बाला । तेल चढ़ाइ जिमावतिं सबकों रचि रचि पाक रसाला ॥ रचि रचि पाक रसाला बाला परसतिं हैं ज्यौंनारी । चित्रा सखी कुँवरि श्रीराधा स्वाद सराहत भारी ॥ बरपत अतिरस रंग प्रेम सौं बचन कहत सुख मूली । वृन्दावनहित धन खर-चनि कों चाची अति मन फूली ॥४॥ न्यौतौ दै रुचिभान और दिन पाक

अनेक बनाये। पुरजन गुरुजन संग सबनि लै रावलपति तहाँ आये॥ गोपुर उच्च दुंदुभी तापै गहकि गहकि कैं बाजैं॥ किधौं कमलासन किधौं सुरासन जहाँ मधुर घन गाजैं॥ जहाँ मधुर घन गाजैं बाजैं मदनभेरि सहनाई। तहाँ चढ़ावति तेल कुँवरि कौं भामा लली जिमाई॥ तुँगविद्या भोजन वरनी सँग करि पुनि गोप सिहाये। वृन्दावन हितरूप प्रीति सौं पाक अनेक बनाये॥५॥ घर वरभान बान पुनि न्यौतौ हरषी रामा रानी। अतिलड़ि तेल चढ़ावैं गावैं सिमिटीं द्यौर जिठानी॥ मंगत जन भई भीर भवन में मंगल हरषि गवायौ। करि न्यौछावर भान लली पै दियौ सवनि मन भायौ॥ दियौ सवनि मन भायौ काकी अति उदार अनुरागी। जननी सखी इंदुलेखा की को ता सम बड़ भागी॥ ग्रास देति बरनी मुख पुनि पुनि बोलत मधुरी बानी। अपनी कुँवरि संग लै बैठी हरषी रामा रानी॥६॥ आज सुभान भवन महा मंगल गावति हैं ब्रज नारी। तेल चढ़त कीरति की जाई होत कुलाहल भारी॥ धन्य मोलिका छवि सुजालिका श्रीराधा की काकी। ता कर पाक बने सब ऐसे को सम देउँ सुधा की॥ को सम देउँ सुधा की जेंवत महीभान परिवारा। देवीरंग संग कियौ भोजन कीरति प्राण अधारा॥ सामा सचत व्याह की घर घर कुँवरि सवनि कौं प्यारी। वृन्दावन हितरूप जाँऊ बलि मंगल गावतिं नारी॥७॥ श्री रतिभान सवनि तें छोटे कीरति सब जग छाई। अतिलड़ि बान न्यौति कैं लाये फूल न हियें समाई॥ झालर रतन चँदोवा ताने सुभग विछौना कीये। विप्र बंधु अरु मित्र बोलिकैं सवहिं बैठना दीये॥ दिये बैठना सवनि महामति घरनी रची रसोई। तेल चढ़ाइ अतिलड़ी के तन भोजन करे सब कोई॥ बुद्धिमती की सुता सुदेवी राधा संग जिमाई। वृन्दावन हित रतन वारि दिये कीरति सब जग छाई॥

राग गौरी—पद ३३

तू अति भाग भरी मेरी बरनी तू अति भाग भरी री। ताई चाची तेल चढ़ावति गावति रंग ढरी री॥ मेरी बरनी तू अति भाग भरी री॥टेक॥

भाभी करति उवटनों रचि रचि मरुवट वदन करी री। रानी कीरति मेवा बाँटति सुख निधि गहर परी री॥ आवें सजन गोइँ लाड़ी धनि वह कौन घरी री। घोप नृपति को अतिलड़ मोहन पूरन भाग वरी री॥ गावतिं मंगल सवै सुहागिनि लागी रंग भरी री। कीरति श्री वृपभान नृपति की वेली सुफल फरी री॥ मंडप दिन होइ काल्हि जाइगी चौरी सुभग धरी री। वृन्दावन हितरूप कुँवरि तें उपमा सव निदरी री॥

राग व्रजवासिनीनु की टेर–पद ३४

जननी हो तन तेल अहो तन तेल चढ़ाइ अव लाड़ी भई सजन की। वावुल हो रचि मंडप अहो रचि मंडप छाय लाज राज कुल भवन की॥ रोपौ हो मेरे वावुल अहो मेरे वावुल वितान तिनमें मोतिनु झालरी। चौरी हो धरि सुभग अहो धरि सुभग विधान देखि महूरत सुभ घरी॥ हरे हरे हो रचि वाँस अहो रचि वाँस मँगाइ सुनि वावुल रावलधनी। तोरन हो पट पीत अहो पट पीत धराइ धुजा पताकनि छवि घनी॥ चलिहैं हो लाड़ी सजन अहो लाड़ी सजन सुदेस ओप वढ़ावनि महरि घर। भरुसह हो वावुल गोप अहो वावुल गोप नरेस जगलाइक मन धीर धर॥ माइल हो धन खोलि अहो धन खोलि भंडार अव खरचन विरियाँ भई। दीजै हो रानी पट वहु अहो रानी पट वहु भार जग कीरति वढ़िहै नई॥ सुनियौ हो लाड़ी जनक अहो लाड़ी जनक उदार हय गय साजि सु जाति के। ओरौ हो रथ सकट अहो रथ सकट सिंगार भाजन कनक सुधात के॥ अति लड़ हो श्रीदामा अहो श्रीदामा वीर सजननि मान वढ़ाइहो। दिनमणि हो कुल गुननि अहो कुल गुननि गँभीर उपमा विपुल चढ़ाइहो॥ चढ़िकैं हो अति तरल अहो अति तरल तुरंग व्रजपति आग्यौ लेहुगे। वरपै हो तव कौतिक अहो तव कौतिक रंग जव वहु आदर देहुगे॥ आयो हो लाड़ी ववुल अहो लाड़ी ववुल वजार घर घर पुर रचना रची। वृन्दावन हितरूप अहो हितरूप निहारि सजननि हित निधि सिधि सची॥

राग गौरी—पद २५

भान वंश उद्योत आज रँग वरपत वरनी। वदन चंद सत जोत गोप कुल मंडनि वरनी ॥ हरदी मंडित अंग आज रँग वरपत वरनी। फिरति सखिन के संग गोप कुल मंडनि वरनी ॥ तेल चढ़ावति भाम आज रँग वरपत वरनी। ह्वै रही गहमह धाम गोप कुल मंडनि वरनी ॥ लटकि लटकि पग धरति आज रँग वरपत वरनी। जननी उर सुख भरति गोप कुल मंडनि वरनी ॥ पैंजनि रुनझुन बाज आज रँग वरपत वरनी। सजैं तन मंगल साज गोप कुल मंडनि वरनी ॥ जहाँ तहाँ मंगल गान आज रँग वरपत वरनी। गहरे घुरे हैं निसान गोप कुल मंडनि वरनी ॥ सुनी परत नहिं कान आज रँग वरपत वरनी। सोभित पुर वृषभान गोप कुल मंडनि वरनी ॥ मरुवट मुख पर रची आज रँग वरपत वरनी। लै त्रिभुवन छवि सची गोप कुल मंडनि वरनी ॥ मात जिमावत हाथ आज रँग वरपत वरनी। मिलि ललितादिक साथ गोप कुल मंडनि वरनी ॥ संग वनि गये वीर आज रंग वरपत वरनी। भई जेंवत सोभा भीर गोप कुल मंडनि वरनी ॥ वटत हथौना नगर आज रँग वरपत वरनी। गाँव गाँव अरु वगर गोप कुल मंडनि वरनी ॥ वरजति कीरति माइ आज रँग वरपत वरनी। अनत खेलन जिनि जाइ गोप कुल मंडनि वरनी ॥ कंकण बाँध्यौ पानि आज रँग वरपत वरनी। अँग अँग रूप निधान गोप कुल मंडनि वरनी ॥ कौन सुकृत मो फली आज रँग वरपत वरनी। भइ सजन बुलावनि लली गोप कुल मंडनि वरनी ॥ धनि धनि तेरौ तात आज रँग वरपत वरनी। धन्य कूख भई मात गोप कुल मंडनि वरनी ॥ धन्य सजन सुत नंद आज रँग वरपत वरनी। देहै दृग आनंद गोप कुल मंडनि वरनी ॥ लावैं सजि गन गोप आज रँग वरपत वरनी। वढ़ै दुहूँ कुल ओप गोप कुल मंडनि वरनी ॥ धनि अग्रज श्रीदाम आज रँग वरपत वरनी। धनि तो राधा नाम गोप कुल मंडनि वरनी ॥ धनि वरसानौ गाम आज रँग वरपत वरनी। जह रचना सब धाम गोप कुल

मंडनि वरनी ॥ धनि यह मंगल व्याह आज रँग वरषत वरनी । सब मन विपुल उमाह गोप कुल मंडनि वरनी ॥ धनि तुव भाग अनूप आज रँग वरषत वरनी । वृन्दावन हितरूत गोप कुल मंडनि वरनी ॥

मंडप मंगल—वरनी प्रति सखी वचन

राग गौरी—पद ३६

अहो लाड़ी सब लाइक रावलधनी आज मंडप छावत धाम हो। लाड़ी विधि रचना इहि सम कहा लखि नैन परम अभिराम हो ॥ लाड़ी काल्हि सजन घर आवने आवें कीरति सोदर आज हो । लाड़ी काल्हि सजन घर ॥टेक॥ अहो लाड़ी बैठे गुरु जन विप्र मिलि अरु निगम महा धुनि होति हो । लाड़ी अजिर अलंकृत भाँति यह मनों भयो भुव भाग्य उदोत हो ॥ लाड़ी मणिमय खंभ रुचिर बने छायो अंबर पीत पुनीत हो । लाड़ी हरे हरे बाँस सुहावने चौरी चित्रित वहु रीति हो॥ लाड़ी जलज मणिनु के झूमका पुनि लसत बादले कोर हो । लाड़ी मंगल सौंज किते गनों सोभा वरनत नहिं ओर हो ॥ लाड़ी तापर सुरँग वितान रचि अरु विपुल बढ़ाई ओप हो । लाड़ी महिमा उमड़ी लोक में तैं तो धन्य कियो कुल गोप हो ॥ लाड़ी तोरन रतन जु जगमगें वहु कुसुमनि वंदनवार हो । लाड़ी आज पौरि वृषभानु की छवि मुरझत कोटिक मार हो ॥ लाड़ी सुता सनेह जु अवधि यह तो तात भयाने भूप हो । लाड़ी लोक अवधि कौतिक रच्यो यह मंगल व्याह अनूप हो ॥ लाड़ी नौ नंदन महीभान के हिय यों हुलसे तुव व्याह हो । लाड़ी सावन सरिता ज्यों चलति अरु सन्मुख सिंधु प्रवाह हो ॥ लाड़ी फूलनि आज कहा कहों सब नगर वगर परिवार हो । लाड़ी लोकनि ओकनि संपदा तो पर कीजत वलिहार हो ॥ लाड़ी यह मंडप हों वलि गई वानिक अति परम अभूत हो। लाड़ी वृन्दावन हितरूप लखि विस्मित विधि सुरनि सँजूत हो ॥

मंगल छंद—राग परज तथा विलावल—पद ३७

तेल चढ़ावौ री हेली मेरी अतिलड़ी। भान वंस दई री हेली जिन उपमा वड़ी॥ दई उपमा भान कुल कौं भवन मो भूषण भई। पुर होत मंगल गान घर घर लगन जा दिन तें गई॥ निरखि वदन प्रकास घर वहु कला-धर मनु उदित हैं। जिहिं लाड़ भीने गोप गोपीं रहत निसि दिन मुदित हैं ॥१॥ मंगल गावौ री हेली तन उवटन करौ। चौक पुरावौ री हेली मणि पटुली धरौ॥ धरौ पटुली जटित नग मणि कुँवरि कौं वैठारि कें। करौ मंगल रीति विधिसौं विप्र वूझि विचारि कें॥ सरसत महा उत्साह दिन दिन लली मंगल व्याह कौ। सव गनत हैं दिन छिन घरी हिय वढ़त सागर चाह कौ ॥२॥ भाग्य अवधि फल री हेली अपनौ मैं गन्यौ। वड़े सजन घर री हेली यह वानिक वन्यौ॥ वन्यौ वानिक भलौ अव धन खरचिहै रावलधनी। वरसिहै रस रंग समधी सम जु यह जोरी वनी॥ जैसी दई विधि सुता सुत ऐसौ जु गोकुल भूप कौ। इत जु निरवधि वढ़त छिन छिन सिंधु राधा रूप कौ ॥३॥ मंडप निरखत री हेली विधि रचना छिपै। छवि जु अलौकिक री हेली भान अजिर दिपै॥ दिपत लाड़ी तात मंदिर विविधि रचना देखिये। ईश्वर्य्य कमलापुर जु ढाँप्यौ और कहा विशेपिये॥ वृन्दावन हितरूप वलि वलि जाउँ राधा नाम की। परिहैं जु सुभ घरी भाँवरी अव कुँवर सुंदर श्याम की ॥४

राग गौरी—पद ३८

आवैं सजन वराती व्याहन अतिलड़ी। वरसाने के खेत होहि सोभा वड़ी॥ हींसैं चपल तुरंग नचत वहु भाँति हैं। अस उड़िहै खुर रेनु भई मनो राति है॥ फहर फहर फहरात जहाँ झंडा घने। नाना रंग वितान विविधि तंवू तने॥ झूमैंगे गजराज जलज झालर परी। घंटनि की झनकार चिंघारन सुखभरी॥ धौंसनि की धँधकार वंव गहरीं घुरैं। इत उत करत सँभार वाग करहनि मुरैं॥ सहनाइनु की टेर रागिनी राग सौं। वंदी वोलत विरद भरे अनुराग सौं॥ देखि जनक कौ नगर विविधि रचना नई। दृष्टि

नहीं ठहराति रमा विस्मित भई ॥ अंचल वदन अँगोछि अंक लै धरति है। निगम दुरयौ फल निरखि सिंधु सुख तरति है ॥ करुणा सौं अरवरति ग्रास मुख देति है। चलन द्यौस सुधि करति हियौ भरि लेति है ॥ विरमि विरमि मुख कौर देति पुचकारि कैं। भई प्रेम उर भीर न सकति सम्हारि कैं ॥ ह्वै रही गहमह धाम जुवति जन भीर है। कीरति आनँद हिय भरि अधिक अधीर है ॥ नौ भाननि की भामिनि चहुँदिसि राजहीं। मध्य लली की माइ अधिक छवि छाजहीं ॥ मंडप दिन की रीति भाँति सव करति हैं। लाड़ी कौं दुलरावतिं चित्रनि धरतिं हैं ॥ आज भान की पुरी प्रेम सरसात है। अखिल लोक की संपति जहाँ दरसात है॥ कहत सजन कौ नाम गाम मानतिं रली। सुनि सुनि मुसिकति कुँवरि मनौं वारिज कली ॥ वृन्दावन हितरूप कहौं वानिक कहा। जा वैभव कौं निरखि थकित शिव विधि अहा ॥

मंगल छंद–राग सूहौ विलावल–पद ३६

सुनि मेरी राज़ कुँमारि यही नँदगाँवरौ। वड़े हो सजन कौ अतिलड़ नंदन साँवरौ ॥ त्रिभुवन सुंदर एक न विधि दूजौ करयौ। को मोहन कौ भाग सुहागिनि वर वरयौ ॥ वरयौ वर नव रंग मोहन परम कमनी गात है। देखिहौं भरि नैंन सुंदर आवति सजन वरात है ॥ वदन रुरकैं लरीं मोतिनु नग जटित सिर सेहरौ। गोप गन के मध्य दूलहु नहिं तहाँ छवि छेहरौ ॥१॥ सुभदिन मंडप आज छवावत छवि वढ़ी। रचना नाना भाँति वेद विधि द्विज पढ़ी ॥ राजत रावलईस संग भ्राता सवै। गावत वनिता वृन्द परम सोभा तवै ॥ सोभा परम सव पुर अलंकृत करी रचि गोपनपती। मूरति धरें छवि आज सेवति अनत नाहिं वची रती ॥ चौरी परम कमनीय राजति मध्य रचि वेदी धरी। होत मंगल गान ललना फिरतिं जहाँ भागिनु भरीं ॥२॥ वाजत गहक निसान धुजा अस फरहरैं। पीत अरुण पट कनक तेजमय थरहरैं ॥ सदन सदन की पौरिं माल मोतिनु वनीं। फल दल फूल नवीन गलिनु सौरभ घनीं ॥ घनीं सौरभ वारि सींचीं उठत भुव उदगार हैं। नाना वसन वहु रंग

छायौ जरी पटनि वजार हैं॥ ललितादि कीरति महल राधा संग अति फूली फिरैं। कहत अतिलड़ि वात आनँद वीज मनो मुख तें भरैं ॥३॥ जननी मंडप आज रच्यौ मो तात है। कितियक दूरि वरात कही यौं वात है॥ अरी मेरी प्राणनि प्यारी रहि चित चेत में। प्रातहिं सजन वरात आइहै खेत में॥ खेत में जव सजन आवैं निकट सो दिन आइयौ। व्याह हित तेरे कुँवरि तुव पिता मंडप छाइयौ॥ रचकि लाड़ी लई अंकनि प्रेम अति तन मन भरी। सीस कर अधान चूँवति वदन सुख वारिधि परी॥४॥ देस देस के भुवपति न्यौतौ लाइयौ। घोष सिमटि सव गोपराज घर आइयौ॥ रावल रानौं हरषि करत सनमान है। भवन भँडार वताये विविधि विधान है॥ विधान विधि गुरु वंधु सजननि मित्रजन आदर दियौ। जो भई इच्छा जासु मन ताकौं तहाँ पूरन कियौ॥ सुरतरु महा निधि सिद्धि आई कामधेनु महा मनी। कैउक कोस वजार छाये संपदा न परति गनी॥५॥ कुल के देव पुजावनि वाला सँग चलीं। मांगति गोदी ओटि सुहागिनु होहु लली॥ वनदेवी संकेत पूजि मधुपक धरयौ। वरनी ने कर जोरि विनय सादर करयौ॥ विनय सादर करत वरनी तहाँ वानी यह भई। सदा विपुल सुहाग राधा प्रीति दूलहु नित नई॥ यह सुनत सव अति हियें हरषीं लै भवन अतिलड़ि गईं। बृन्दावन हितरूप कीरति दै अरघ भीतर लई॥६॥

राग परज—पद ४०

त्रिभुवन गहनौ एक अतिलड़ी सो वर पायौ है। ता गहने कौ गहनौ लाड़ी रूप सवायौ है॥ अतिलड़ी सो वर पायौ है॥टेक॥ जिन गिरि धारि वली सुरपति कौं चरन नवायौ है। तिन वरनी देखी ता दिन तें हाथ विकायौ है॥ जाकौ सुजस आदि कवि विधिना शिव मुख गायौ है। अति कमनी गोपाल ताहि तेरौ जस भायौ है॥ जननी जनक कृष्ण के कोधौं पुन्न कमायौ है। तोसी वनी श्याम वर तव विधि जोग वनायौ है॥ महरि सगाई हेत कुवरि तो कौन मनायौ है। दूलह भाग वली जिन व्रज में रंग वढ़ायौ है॥

जाकी घोरी गावति जसुमति इतौ लुटायौ है। दैहै कहा व्याह में कमला मन डर आयौ है॥ ऐसी सजी वरात गोप लखि इंद्र लजायौ है। भाँवरि विरियाँ काल्हि होहि-कव मन हुलसायौ है॥ श्री वरसाने आज गोप ग्रह अस दरसायौ है। अखिल लोक की सोभा सचि मनु मंडप छायौ है॥ यह विधि रच्यौ वितान महल पर भान तनायौ है। मनौ अनुराग रूप धरि लाड़ी व्याह दिखायौ है॥ गीत वाद्य धुनि वेद घोप आनँद भर लायौ है। वृन्दावन हितरूप भानपुर विसद वधायौ है॥

राग गौरी—पद ४१

पिता सँजोयौ व्याह अतिलड़ी विरमि लै। ह्वै रह्यौ विपुल उमाह कुँवरि मेरी विरमि लै॥ विरमि मातुकी गोद अतिलड़ी विरमि लै। तात सुजस दै कोद कुँवरि मेरी विरमि लै॥ रूपवंत गुनवंत अतिलड़ी विरमि लै। सोभा सिंधु न अंत कुँवरि मेरी विरमि लै॥ धन्य कूख उत्पन्य अतिलड़ी विरमि लै। भयौ गोप कुल धन्य कुँवरि मेरी विरमि लै॥ मंगल रच्यौ है अनूप अतिलड़ी विरमि लै। जनक भयाने भूप कुँवरि मेरी विरमि लै॥ मंडप छायौ है तात अतिलड़ी विरमि लै। आवै प्रात वरात कुँवरि मेरी विरमि लै॥ कंकन वाँध्यौ हाथ अतिलडी विरमि लै। वरने गोकुलनाथ कुँवरि मेरी विरमि लै॥ वैठि तात की गोद अतिलड़ी विरमि लै। दे गोपनि कुल मोद कुँवरि मेरी विरमि लै॥ भान भवन आभरन अतिलड़ी विरमि लै। अवनी गहनौ चरन कुँवरि मेरी विरमि लै॥ वरपति व्रज आनंद अतिलड़ी विरमि लै। प्राण सुधन नँदनंद कुँवरि मेरी विरमि लै॥ क्यों धीरज धरै माइ अतिलड़ी विरमि लै। जवहिं सजन घर जाइ कुँवरि मेरी विरमि लै॥ द्रवत सदा अनुराग अतिलड़ी विरमि लै। दूलहु कौ वड़ भाग कुवरि मेरी विरमि लै॥ जग लोचन विश्राम अतिलड़ी विरमि लै। वर पायौ घनश्याम कुँवरि मेरी विरमि लै॥ साजी है वडी जनेत अतिलड़ी विरमि लै। गोप ओप अति देत कुँवरि मेरी विरमि लै॥ पूरित व्रज सुख अमित अतिलड़ी विरमि लै।

आज विश्व पद नमित कुँवरि मेरी विरमि लै ॥ कौतिक घोप अनूप अति-लड़ी विरमि लै । बृन्दावन हितरूप कुँवरि मेरी विरमि लै ॥

श्री वृषभानपुर कौ भात मंगल

राग धनाश्री–पद ४२

जो आवै आज भातई तू तौ उड़ि रे सुभ लच्छण काग । रानी कीरति सगुन मनावई अरु पूरयौ हिय अति अनुराग ॥ जो आवै आज भातई ॥टेक॥ तेरी रतननि चोंच मढ़ाइहौं अरु करिहौं वहु सुखित जु तोहि । वीरन मिलन उमाह मन तू तौ दीजै साँची सुधि मोहिं ॥ मंडप अतिलड़ि कुँवरि कौ मोहिं यातें हिय अधिक हुलास । सोदर महत वढ़ाइहै अरु पहिरैंगीं वंस सवास ॥ तू तौ चढ़ि परवत किन देखई अरु जिनके सँग गोधन ठाट। अधिक उड़े खुर रेनु तहाँ वहु सोभा वरसै उहिं वाट॥ झूमैं गज करिहा फिरैं जहाँ नाचैं गति तरल तुरंग । रथ अनेक वहु पालकी अरु सकटनि भरे भार सुसंग ॥ धन्य घरी सो मानिहौं जव दरसै वीरन मो ग्रेह । पट भूपण यौं बाँटिहै अरु वरपै ज्यौं भादौं मेह ॥ धनि मेरी वरनी राधिका जाकौ सागर सम भाग गँभीर । तिहिं मंडप दिन पहिरिहौं वीरन कर नव रँग चीर ॥ वचन सुनत कागा उड़यौ रानी फूली वहु सगुन मनाइ । बृन्दावन हितरूप वलि अरु ता छिन उठी मंगल गाइ ॥

राग व्रजवासिनीनु की टेर–पद ४३

सव कोउ आये आज राधा वरनी एक न आयौ जायौ माइ कौ । कै कहुँ भावज वरजियौ कै जोरत वहु साज ॥ राधा वरनी एक न आयौ जायौ माइ कौ ॥टेक॥ लाड़ी कै दिन गनत वने नहीं कै कहुँ थकि रहे भार ॥राधा वरनी॥ कै कहुँ वाट विरमि रहे कै कहुँ परी है अवार ॥राधा वरनी ॥ लाड़ी परम दया मूरति मनौ मेरी मुखरा माइ ॥राधा वरनी ॥ तिनहुँ न सुधि मेरी लई कुवरि लाड़िलरी चाइ ॥राधा वरनी ॥ लाड़ी इन्द्रसेन मेरौ पिता वीरन सव सुखदान ॥राधा वरनी॥ परम प्रीति मो वहिन सौं क्यौं न दियौ मो मान

॥राधा वरनी॥ भद्रकीर्ति महाकीर्ति पुनि कीरतिचंद सुनाम ॥राधा वरनी॥ व्याह वधायें राधा कुँवरि के कव देखौं यह धाम ॥राधा वरनी॥ लाड़ी तीन वीर जननी जने सकल गुननि कौ ग्रेह ॥राधा वरनी ॥ भावी मौना मेनका पंष्टी भरी हैं सनेह ॥राधा वरनी॥ आज भात पहिरन घरी कित विरमें मो वीर ॥राधा वरनी॥ अव उपमा हौं पावती पहिरि सहोदर चीर ॥राधा वरनी॥ रानी छिन में बूझति सखिनु सौं छिन अकुलाति निराट ॥राधा वरनी॥ छिन में रवकि अटा चढ़ति छिन में हेरत वाट ॥राधा वरनी॥ छिन में बूझति जोतिसिनु ठाड़ी मंदिर पौरि ॥राधा वरनी॥ छिन में बोलि लगाइतन कहत खवर लेहु दौरि ॥राधा वरनी॥ माइल जायौ वीर मो जो न उलिड़िहै भात ॥राधा वरनी॥ जग सूनौ सोदर विना ज्यौं चंदा विन रात ॥राधा वरनी॥ सूरज रथ पश्चिम चल्यौ आवत विप सम साँझ ॥राधा वरनी॥ वीरन पट विनु क्यों भली लागौं जुवतिनु माँझ ॥राधा वरनी॥ वीर हाथ पट मौंड़ये पहिरै जो अनुराग ॥राधा वरनी॥ विपुल वधायौ तिन सदन अरु गनिये धनि भाग ॥राधा वरनी॥ वोलौ सगुनी नगर के एक परिछा लेहु ॥राधा वरनी॥ कौन घरी आवै वीरन यह साँची सुधि देहु ॥राधा वरनी॥ गिरि गोवर्धन तरहटी निकट सहोदर गाम ॥राधा वरनी॥ मैं न्यौतौ आवन कह्यौ गहर कियौ किहिं काम ॥राधा वरनी॥ मेरें व्याह अतिलड़ी कुँवरि कौ सुर नर मुनि कौतिक हार ॥राधा वरनी॥ वीर निठुर किहिं विधि भयौ होत न वुद्धि विचार ॥राधा वरनी॥ कै पासे खेलत रह्यौ वैठ्यौ गोप समाज ॥राधा वरनी॥ पाटांवर लादत रह्यौ कै साजत गज वाज ॥राधा वरनी॥ राजकाज के चौंतरा न्याइ चुकावन नीति ॥राधा वरनी॥ भावी वरज्यौऊ ना रहै अधिक वहिन सौं प्रीति ॥राधा वरनी॥ अरी मेरी सखी सहेलरी वेगि पौरि लगि जाइ॥राधा वरनी॥ वीरन विहँसत आवतौ जो कहुँ परै लखाइ ॥राधा वरनी॥ महत वढ़ावै कौन मो विनु पीहर परिवार ॥राधा वरनी॥ पल पल जुग सम जात हैं सुनि मेरी राज कुंवारि ॥राधा वरनी॥ रावलपति गोपनि सभा वैठे विपुल उमाह ॥राधा

वरनी।। मंडप रचि तिन आगमन पुनि पुनि हेरत राह ।।राधा वरनी।। गोपी तन धरि सारदा आइ कहे अस बैन । कीरति रानी नियरें तो आये तेरे भातई । गाँव गोइरें वीर तुव आये देखो नैन ।।कीरति रानी।। जीन जराव लगाम हैं आवत तरल तुरंग ।।कीरति रानी।। अम्बारिनु झालर झुकीं घूमत गजवर संग ।।कीरति रानी।। विविधि वसन सकटनि भरे गहने रतन जगइ ।।कीरत रानी।। वहु डोला वहु पालकी सेना गनिय न जाइ ।।कीरति रानी।। रानी महल चढ़ी कीरति कहै फूली अंग न माइ ।.राधा वरनी ये देखि आये मेरे भातई । लाड़ी धन्य सुदिन भयो आज को वीरन पहुँचे आइ ।।राधा वरनी ।। भुज भरि भरि भुवपति मिले पुनि पुनि आदर देत।।राधा वरनी।। मुखरा गोपिनु बृन्द सँग कीरति गवर लेत ।।राधा वरनी।। जननी उर कीरति लगी कंठ भुजा वर मेलि ।।राधा वरनी।। गाढ़ प्रेम लपटी मनौ कोमल कंचन वेलि ।।राधा वरनी।। मंगल गावतिं नव वधू सोभित मंदिर गोप ।।राधा वरनी।। भात पहिर मेरी कुलमणी वीर वढ़ावौ ओप ।।राधा वरनी।। प्रेम सहित भावज मिलीं मिले सहोदर वीर ।।राधा वरनी।। मंडप तर वैठे सबै खोले नव रँग चीर ।।राधा वरनी।। पट भूषण कीरति पहिरि परम मुदित मन माँहिं ।।राधा वरनी।। राधा जननी फूल जो सारद कहति लजाहिं।।राधा वरनी।। मुखरा परम उदार अति वीर वहुत दै मान ।।राधा वरनी।। पुरजन गुरुजन वंधु जुत पहिरे श्री वृषभान ।।राधा वरनी।। पौन छतीसौं नगर में वरसाने जो वास।।राधा वरनी।। वांछित पट भूषण दिये जो जा हियहिं हुलास ।।राधा वरनी।। वहु करिहा गज वाज वहु भूषण वसन अनेक।।राधा वरनी।। इन्द्रसेन नृप को सुजस जगमगात जग एक ।।राधा वरनी।। विरद वखानत वाँकुरो मागध चारन सूत ।।राधा वरनी।। सुर नर मुनि जे जै कहें मंगल अवनि अभूत ।।राधा वरनी।। कीरति महल वधावनो वीर दियो अस भात ।।राधा वरनी।। देव विमाननि में चढ़े जा सुख कों पछितात ।।राधा वरनी।। मंगल सब मूरति धरें ठाढ़े कुँवरि विवाह ।।राधा वरनी।। वृन्दावन हितरूप

वलि यह कौतिक उत्साह ॥राधा वरनी ये देखि आये मेरे भातई ॥

राग सोरठ–पद ४४

सजन मेरे आवने धन्य सुदिन भयौ आजु ॥ कुँवरि अतिलड़ी व्याह वधाये साजौ मंगल साजु ॥ सजन मेरे आवने ॥टेक॥ उझिलत उर अनुराग आगमन गोपी गोप समाजु । असन वसन वहु भाँति सँवारत परम हितुन के काजु॥वरनी राधा सम नहीं वरु सम नहिं व्रजराजु । जोरी विधि एकै रची जहाँ एक प्रेम प्रभुता जु ॥ लाड़ अवधि घन ऊनयौ जाकी इत उत मधुरी गाजु । बृन्दावन हितरूप वलि सुख वर्षत भींजि सदा जु ॥

सोरठा–राग परज की अलापचारी–पद ४५

मंडप दिन की रीति; करी नृपति वृषभानु जू । लोक वेद विधि नीति; वंधु विप्र गन संग लै ॥ आये वड़े वड़े भूप; जहाँ तहाँ तंवू छये । लाड़ी भाग अनूप; मंगल दरसत नित नये ॥ नानां पाक विधान; अगनित भरे भंडार रचि । अति उदार वृषभान;मारग हेरत सजन कौ॥ राजत पुर अभि-राम;वनें ठनें फिरैं नारि नर।संपति पूरित धाम; निद्धि सिद्धि जहाँ टहलनी॥

श्री नन्दराय जू के घर के मंगल

सोरठा–राग परज की अलापचारी–पद ४६

अव वरनौं पुर नंद; जहाँ दिन दूलह अतिलड़ौ । वरपत परमानंद है जु रह्यौ गहगड़ वड़ौ ॥ तहाँ जसोदा माइ; व्याह उमाहैं पुत्र के । दिन छिन गनतें जाँइ; सो मंगल दिन आइयौ॥ व्रजपति सरसत प्रेम; लाड़ भरे गोविन्द कें । करत वेद विधि नेम; हरद हाथ दिन वूझिकें ॥ वर वरनी के रूप इत उत सरसत लाड़ नित । रावल गोकुल भूप; भरे विना मित हियें हित ॥

भात न्यौतन मंगल

छंद राग परज–पद ४७

गिरिधर व्याह निकट दिन आये फूली जसुमति मैया । लै वैठी निज अंक लाल कौं मन मन लेति वलैया ॥ अव जिन तू वन जाइ लाड़िले मेरे

कुँवर कन्हैया। दैहौं संग ग्वाल वहु गाइनु लै जैहै वलि भैया॥ लै जैहै वलि राम गाइ घर रहि मेरे राज कुमारा। न्यौतौ आज भात दै आऊँ लै चलौं तोहि ननसारा॥ वहुरि चढ़ैगो तेल कहति यौं रानी घोप पलैया। पुर परिवार मिलन देखन कौं फूली जसुमति मैया॥१॥ इतहिं तेल मंगल उत न्यौतन भात निकट दिन आयौ। संग वनीं गोपी गन यह दिन महरि पुन्न फल पायौ॥ महराने सन्मुख ह्वै निकसी नंदमहर की रानी। सुंदर श्याम संग वालक गन छवि नहिं परत वखानी॥ छवि नहिं परत वखानी गावैं घोरी भात वधाये। दुलरावतिं ब्रजराज लाड़िले करति रंग मन भाये॥ पिता नगर के तरुवर सरवर देखि प्रेम सरसायौ। वीर नाम लै गावति न्यौतन भात निकट दिन आयौ॥२॥ पटुला श्री जसुमति की मैया जव ऐसी सुधि पाई। गाँव गोंइरें निकसि अगमनी लैंन सुता कौं आई॥ मंगल साज लियें जुवती जन दुहुँ दिसि सोभा पावैं। इत ददसार उतहिं ननसारा गिरिधर कौं दुलरावैं॥ गिरिधर कौं दुलरावतिं गवनी सुमुख गोप ग्रह माहीं। जो आनंद वढ़्यौ जसुमति मन वरनत आवत नाहीं॥ उम्ह्यौ प्रेम सवनि के हीयें वरपत रंग महाई। वृन्दावन हित पटुला रानी जव ऐसी सुधि पाई॥३॥

राग धनाश्री—पद ४८

न्यौतनि सुभ दिन आई जसुमति भातई। तात मात मिलि वंधुनि परम सुखित भई॥ पिता सुमुख पति गोप वहुत आदर दियौ। पटुला जननी कंठ लागि उमग्यौ हियौ॥ जसधर पुनि जसवंत जसा मिलि वीर सौं। इत उत कहि आनंद भरति दृग नीर सौं॥ पिता मात सुनि वंधु श्याम कौ व्याह है। न्यौतन आई भात परम उत्साह है॥ फूल उठे नर नारि सुनत यह वात है। मंगल गावतिं वधू सँजोवति भात है॥ न्यौतौ पुर परिवार हरपि सव लेत हैं। मंडप व्याह सुदिन वूझत वहु हेत हैं॥ कृष्ण व्याह ननसार सुनत प्रमुदित महा। मनौ निधि पाई रंक और वरनौं कहा॥ जसुमति कौं पहिराइ विदा घर कौं करी। वृन्दावन हितरूप चलति आनँद भरी॥

राग मारू की अलापचारी दोहा–पद ४६

हरद हाथ मंगल रच्यौ विप्रनि बूझि विचारि। महा मोद जसुमति भरी विधि तन गोद पसारि ॥१॥ मंगल रचना धाम बहु कहा कहौं मन उत्साह। मंगल निकरनि मूल जो ता अतिलड़ कौ व्याह ॥२॥ सजें रहतिं सिंगार नित गोपीं मंगल काज। हरद हाथ ह्वै किहिं घरीं अतिलड़ श्री ब्रजराज ॥३॥ सो दिन पुन्ननि पाइयौ चहति बुलावन बाट। वृन्दावन हित महरि घर ह्वै रह्यौ मंगल ठाट ॥४॥

हरद हाथ मंगल

छंद राग मारू–पद ५०

न्याइन न्याइन नगर नँदीश्वर सबके घर घर डोलै। नाइन कै ठकुराइनि रति कै बधुनि मान दै बोलै ॥ तुम सब चलौ भवन ब्रजपति के मोकों महरि पठाई। हरद हाथ की राति जगावौ भाग्य बड़े हे आई॥ भाग्य बड़े हे आई माई सुनि मो वचन भलौ री। नव सत साजौ अंग अलंकृत करिकें वेगि चलौ री ॥ नंदनंदन की घोरी गावौ मंगल राति जगावौ। भयौ विधाता महरि दाहिनौ गवरि गणेस मनावौ ॥१॥ ग्रह ग्रह तें निकसीं सब गोपीं नंद भवन कौं आवैं। जूथ जूथ बीथिनु वर बनिता सोभा सिंधु बढ़ावैं॥ हार हमेल उरनि मणि चौकी छवि दामिनि सी कौंधैं। नख सिख सुभग बनीं ऐसी लखि मनमथ के दृग चौंधैं॥ मनमथ के दृग चौंधैं कौंधैं छवि दामिनि सीं बाला। उमग्यौ मनौ रूप निधि आवत दुलरावतिं नंद लाला॥ अतिलड़ व्याह उमाहैं निकसीं कोऊ न भवन रहीं हैं। ऐसौ प्रेम बढ़्यौ सब ब्रज में रीति न परत कही हे ॥२॥ मुरझत मैन बैन मीठे सुनि गान गहर नँद भारी। आदरु दै लीनीं ब्रजरानी इहिं विधि आईं नारी ॥ चढ़ि मेरे गिरिधर लाल रँगीले नंद मुल्याई घोरी। सब अँग सुभग बनी अति चंचल गुही पाट की डोरी॥ डोरी पाट गुही मेरे अतिलड़ जीन जराइ बिसेषी। मनु चंचलता धर्यौ अस्व वपु ऐसी नाहिंन देखी ॥ देहु परम आनंद सजन घर चढ़िकें जाइ नचावौ। महरि

भाग को फल तव मानैं व्याह दुलहिनी लावौ ॥३॥ मंगल गावैं रात जगावैं जुवती जुरीं न थोरीं। गढ़ मुल्तान भई यह उतपति लाल रँगीली घोरी॥ जा घोरी कौं देखें उपमा और नहीं मन मेरे। मनौ कलम अपने कर गहिकैं विधिना रची चितेरे॥ विधिना रची चितेरे मोहन ऐसी अलल वछेरी। व्रज-पति वहुत जतन कर लीनी कौतिक घोरी तेरी॥ मूरति धरें मोहनी मानौ सवके मन कौं मोहै। वृन्दावन हितरूप अलौकिक गुन वरनन कौं को है॥४॥

राग गौरी–पद ५१

घोरी अद्भुत वेसा लाल। उतपति भइ किहिं देसा लाल॥ उतपति भइ किहिं देस रँगीली लाल वनैं सुख देनी। अहा कहा सव अंग निकाई सकल गुननि की श्रेनी॥ श्री वृषभान भूप ने पठई कान छवीले केसा। वृन्दावन हितरूप जाउँ वलि घोरी अद्भुत वेसा॥१॥ विधिना रचित जु नाहीं लाल। अस कौतिक या माहीं लाल॥ अस कौतिक या माहीं दरसत पवन वेगि जु विसेषी। आरज गोप मुनीस कहत सव या सम यही जु देखी॥ अद्भुत लीला रूप मनोहर सुर देखन पछिताहीं। वृन्दावन हितरूप जाउँ वलि विधिना रचित जु नाहीं॥२॥ कौन चितेरे चीती लाल। इन त्रिभुवन छवि जीती लाल॥ इन त्रिभुवन छवि जीती चीती दृष्टि नहीं ठहराई। किधौं चंचलता ही वपु धरिकैं अस्व रूप वनि आई॥ वरनौं कहा अचिरजमय नख सिख वनहिं वढ़ावत प्रीती। वृन्दावन हितरूप जाउँ वलि कौन चितेरे चीती॥३॥ मन-मथ मनहुँ सिंगारी लाल। किधौं छवि साँचे ढारी लाल॥ किधौं छवि साँचे ढारी जाकें वजतिं घूघरू ग्रीवा। पग पैंजनी लगे नग मुहरी रची मनु सोभा सींवा॥ करत परम कौतूहल निकसत भरति चौकरी भारी। वृन्दावन हित-रूप जाउँ वलि मनमथ मनहुँ सिंगारी॥४॥

राग गौरी–पद ५२

चंचल घोरी है तेरी लाल। यह अति अलल वछेरी लाल॥ यह अति अलल वछेरी मोहन श्री वृषभान पठाई। लखि नव रंग अंग सव कमनी

सकल घोष मन भाई ॥ जातिवंत गुनवंत छवीली सुघर पारखुनि हेरी। वृन्दावन हितरूप जाउँ बलि चंचल घोरी तेरी ॥१॥ चढ़ि दृग आनँद दीजे लाल। अस्व सिंगार जु कीजे लाल॥ अस्व सिंगार जु कीजे वरना सब काहू जिय भावै। चकित थकित नर नारि होंहिं तब जब गहि डोर नचावै॥ सजन खेत रँग बरसै ता दिन जब आगौनी लीजे। वृन्दावन हितरूप जाउँ बलि चढ़ि दृग आनंद दीजे ॥२॥ चित्र विचित्र करी है लाल। हींसत नेह भरी है लाल ॥ हींसत नेह भरी तुव दरसत ऐसी सुविधि सधाई। व्रजपति सुख सरसत ता दिन तें कौन सुभ घरी आई ॥ सोभा किधौं किधौं चंचलता मूरति यह जु धरी है। वृन्दावन हितरूप जाउँ बलि चित्र विचित्र करी है ॥३॥ जीन जराव जु सोहे लाल। अमरनि के मन मोहे लाल ॥ अमरनि के मन मोहें अबलक ऐसी सुबन बनी है। चौंधति मैन सैन नैननि लखि रचि विधि लोक मनी है॥ नव दूलह गिरिधर मन हरनी और सु उपमा को है। वृन्दावन हितरूप जाउँ बलि जीन जराव जु सोहे ॥४॥

तेल मंगल

छंद राग परज—पद ५३

रजनी गई भयो वर वासर हरषी जसुमति रानी। गिरिधर तेल चढ़ावो आवो बोली मधुरी बानी॥ चंदन अजिर लिपाइ छवीलो मोतिनु चौक पुरायो। मणि नग जटित धर्यो जहँ पट्टा अतिलड़ टेरि बुलायो ॥ टेरि बुलाइ लियो गिरिधर कों पूजि विनाइक आछें। पहिल प्रणाम करी श्रीपति कों तेल चढ़ावति पाछें ॥ लगन नचत्र सुभ घरी सजनी बरनें तेल चढ़ावें। पंचसब्द धुनि वेद पढ़त द्विज जुवती मंगल गावें ॥१॥ सात सुहागिनि कमलनैन के अंग जु उबटन कीनों। मंगल दर्वि मंगाइ महामुनि मंगल विधि करि दीनों॥ बहु विधि पाक रचे व्रजपति घर अतिलड़ तेल उछाहें। घर घर पुर पुर बाँटति जसुमति भरि भरि डला उमाहें ॥ भरि भरि डला उमाहें बाँटति हरि बरना की मैया। भूवा अनि आरतो कीनों जननी लेत बलैया॥ हरदी मंडित स्याम

सुभग तन देखेंहीं बनि आवैं। नैननि कें रसना नहिं रसना नैंन विना कहा गावैं ॥२॥ वरनी वड़े गोप की जाई वरना राज कुमारा। मौर बाँधि चढ़ि अतिलड़ि व्याहन रावलपति दरवारा॥ ताऊ श्री उपनंद वड़े सौं कहि सजि होंहिं वराती। धरानंद ध्रुवनंद और अभिनंद सजें वहु भाँती॥ सजि वहु भाँति वरात नंद सुत चढ़ि गज की अंवारी। सुवल सखा सिर चँवर ढुरावें वरषे सोभा भारी॥ मधुमंगल रुचि पान खवावें कहे हाँसि की वातें। मना मनसुखा रैंता पैंता चलें प्रेम सरसातें॥३॥ धूप विरमि कें चलिवे वरना कमल कोमले अंगा। मेघ उडंवर आवे ताछिन वरसे अति रस रंगा॥ देव-मीढ़ परजन्य नृपति कौ ब्रजपति जस सरसावें। तेरे व्याह खेत वरसाने जोरयौ द्रव्य लुटावें॥ द्रव्य लुटावें सोभा पावें व्याह वधाये माहीं। जीति चल्यौ गोकुल कौ राजा यह सुनि श्रवण सिराहीं॥ इहिं विधि व्याह वहुरि आवें घर तव वाँटिहौं वधाई। बृन्दावन हितरूप सजन घर ऐसें रहे वड़ाई॥४

राग धनाश्री–पद ५४

वना मेरौ लाड़िलौ रजवंसी तेल चढ़ावौ री वेगि ॥टेक॥ अव जिन गहरु करौ मेरी सजनी धूप अधिक चढ़ि आई। निपट भूख कौ काचौ अति-लड़ वदन कमल मुरझाई ॥वना॥ राज अथाई बैठ्यौ अतिलड़ ताकौं टेरि बुलावौ। सवै सुहागिनि करहु उवटनौं हुलसि हुलसि दुलरावौ॥ ब्रजराने की गोद विराजत गोपनि बृन्द जहाँ है। सवके दृग थाती मेरौ गिरिधर ह्वै रही भीर तहाँ है॥ तात कर गहें आयौ अतिलड़ मणि पट्टा बैठायौ। जननी महा भाग्य फल दरस्यौ रुचि रुचि तेल चढ़ायौ॥ मंगल गान होत विधि मंगल मंगल द्रव्य धरे हैं। मंगल मूरतिवंत आइकें व्रजपति पौरि खरे हैं॥ काढ़ति मरुवट रचित सेहरौ होत कुलाहल भारी। वटतु वांइनौं नगर वगर में आनंदित नर नारी॥ अपने हाथ जिमावति जननी परम मुदित मन माहीं। कौर कौर प्रति ठिनकत मोहन मातु भाग्य मित नाहीं॥ अव चलिहौ व्याहन मेरे अतिलड़ अरवी वहुत न कीजे। ये सव सखा कूट तो करिहैं

कह्यौ मान मो लीजे ॥ आये गुनी विवाह सुनत यह वांछित सबकौं दीयौ।
वृन्दावन हितरूप श्याम कौं लाड़ति सरसत हीयौ ॥

राग गौरी–पद ५५

लाल बनें दुलरावौ मेरी सजनी लाल बनें दुलरावौ। नंद जसोदा के घर चलिकैं फूलीं मंगल गावौ ।।मेरी सजनी।।टेक।। झगरि झगरि कें आज महरि पै मेवनि गोद भरावौ।खाये बहुत बाइनें सबके सो अब कसर भजावौ।। जो हम मागतिं हीं विधिना पै वह दिन दृग दरसावौ। सो भयौ दई दाहिनौ चलिकैं जसुमति नाच नचावौ।। अबै मोहन के व्याह बधाये अधिक मानसब पावौ। वा लंगर ढोटा कौं करतब हँसि हँसि सब समुझावौ ।। चलौ रँगीली घोरी गावति फिरत है नगर बुलावौ। गुलचौ वचन कान में कहि कहि अरु तन तेल चढ़ावौ ।। हमें कियौ नकबानी जैसें ऐसेहिं याहि रिझावौ। बूढ़ी बड़िनु भेद नहिं दीजै बाही सुविधि चितावौ ।। बैठो भवन करौ तन उबटन प्रेम हियौ सरसावौ। वृन्दावन हितरूप अतिलड़े वे दिन सुधि जु करावौ ।।

राग धनाश्री ताल दीपचंदी–पद ५६

रँगीली गावतीं घोरी आई मिलि ब्रजबाल। निकसीं नगर बगर से जूथनि छवि बरषत तिंहिं काल ।। रँगीली गाँवतीं घोरी ।।टेक।। लाल बना कौं करति उबटनौं लै पट्टा बैठायौ। एक कहति कछु वचन श्रवण लगि लालहिं अधिक हँसायौ ।। इक काढ़ति मरवट मुख ऊपर रोरी बिंदु सुहायौ। एकनि परसि कपोल मिसहिं मिस गुलगुलाय गुलचायौ ।। इक सुख सरसति इक मुख दरसति इक परसति मृदु अंगा। एक प्रेम पूरित भई तन मन बरपति अति रस रंगा ।। एक कहै खायौ दधि माखन चोरी करि जु कन्हैया। करतिं परम कौतूहल बनिता हँसति जसोमति मैया ।। छुटे न अजहूँ लच्छन जानत सखा सबै बलि भैया। निकसै पोल सजन घर कछु रस रीति न जानत दैया ।। तेल चढ़ाइ सुहार बधुनि कों बाँटति जसुमति रानी। वृन्दावन हित-रूप मान दै बोलति मधुरी बानी ।।

वरना की बाल लीला संदेह माता प्रति वचन

राग गौरी—पद ५७

होत कौन विधि ब्याह रीति कहि मोसौं मैया। मो मन सुननि उमाह घोष की रानी मैया॥ सदा रहति ही कहति रीति कहि मोसौं मैया। अब क्यौं चुप ह्वै रहति घोष की रानी मैया॥ ठोड़ी गहि लई श्याम रीति कहि मोसौं मैया। ज्यौं न सुनैं बलिराम घोष की रानी मैया॥ जो न कहैगी आज रीति कहि मोसौं मैया। तोहीं आवै लाज घोष की रानी मैया॥ सब मुख सुनियत बात रीति कहि मोसौं मैया। ब्याहो गयौ न बरात घोष की रानी मैया॥ ग्वाल चिरावत मोहिं रीति कहि मोसौं मैया। व्हाँ चलि समझै तोहि घोष की रानी मैया॥ चतुर भानपुर बसत रीति कहि मोसौं मैया। बहुरि संग के हँसत घोष की रानी मैया॥ बलिदाऊ उनि संग रीति कहि मोसौं मैया। डोलत भरे उमंग घोष की रानी मैया॥ बरसाने जब चलैं रीति कहि मोसौं मैया। मोहिं समुझनि कहैं भलैं घोष की रानी मैया॥ सिख दैहैं व्हाँ नारि रीति कहि मोसौं मैया। मोहिं दैहैं गुलचा गारि घोष की रानी मैया॥ अब चलिबे घर सजन रीति कहि मोसौं मैया। कहा करिबैं तहाँ जतन घोष की रानी मैया॥ जो कछु हम कुलचार रीति कहि मोसौं मैया। लीजै समझि बिचार घोष की रानी मैया॥ हौं करिहौं विधि और रीति कहि मोसौं मैया। कूट करैं सब ठौर घोष की रानी मैया॥ हरदी मंडित गात रीति कहि मोसौं मैया। बात कहत तुतरात घोष की रानी मैया॥ सुनि सुनि भोरी बात रीति कहि मोसौं मैया। मुदित होत हिय मात घोष की रानी मैया॥ पुचकारति है माइ रीति कहि मोसौं मैया। लीनें कंठ लगाइ घोष की रानी मैया॥ समुझनि पै बलि जाऊँ रीति कहि मोसौं मैया। हितू बसत उहि गाउँ घोष की रानी मैया॥ ते कहि बचन अनूप रीति कहि मोसौं मैया। वृन्दाबन हितरूप घोष की रानी मैया॥

माता के वचन वरना प्रति

राग गौरी–पद ५८

अब सुनि लै रस रीति वलि गई मोहन वरना । व्याह आइहौ जीति घोषपति नंदन वरना ॥ ग्वाल चवाई धूत वलि गई मोहन वरना । तू जिनि सकुचै पूत घोषपति नंदन वरना ॥ इनकों मेवा देंहु वलि गई मोहन वरना । करिहैं परम सनेहु घोषपति नंदन वरना॥ वागे देहुँ व्योंताइ वलि गई मोहन वरना । हित करि चित जु लगाइ घोषपति नंदन वरना॥ देंहु रतन आभरन वलि गई मोहन वरना । सबै लगें हित करन घोषपति नंदन वरना ॥ इनकी इतनी वात वलि गई मोहन वरना । सँग वनि चलैं वरात घोषपति नंदन वरना ॥ वलिदाऊ सों प्रीति वलि गई मोहन वरना। करिलेहु सहज समीति घोषपति नंदन वरना ॥ संग चलैं ब्रजराज वलिगई मोहन वरना । अरु पुर सकल समाज घोपपति नंदन वरना ॥ नाना सुमुख उदार वलिगई मोहन वरना । रहै अतिलड़े लार घोपपति नंदन वरना ॥ जसधर अरु जसवंत वलिगई मोहन वरना । जसा वहुरि गुणवंत घोषपति नंदन वरना॥ ये मामा लेहु संग वलिगई मोहन वरना । वहुत रहै रस रंग घोपपति नंदन वरना ॥ सजन धाम जव जाइ वलिगई मोहन वरना । लाल रसिक मणिराइ घोप-पति नंदन वरना ॥ वैठौ वधुनि समाज वलिगई मोहन वरना । समझि करौ तव काज घोपपति नंदन वरना॥ वे देहिं गुलचा गारि वलिगई मोहन वरना। तुम मानों हँसि हारि घोपपति नंदन वरना ॥ वूझि संगकेनि उचित वलि-गई मोहन वरना । कीजो सव विधि रुचित घोपपति नंदन वरना ॥ मचल भान की गोद वलिगई मोहन वरना । देहु नैन मन मोद घोपपति नंदन वरना ॥ वे जव करहिं निहोर वलिगई मोहन वरना । मंडप वँद तव छोर घोपपति नंदन वरना ॥ लेहु वहु गोधन ग्राम वलि गई मोहन वरना । तव वँद छोरौ श्याम घोपपति नंदन वरना ॥ जिहिं पुर श्री जु निवास वलिगई मोहन वरना । लाड़ करै वहु सास घोप पति नंदन वरना ॥ देंहि दाइजेनु

भार बलि गई मोहन बरना । सुनि मेरे राज कुमार घोषपति नंदन बरना॥ सुनि फूले नँदलाल बलि गई मोहन बरना । हँसीं सकल ब्रजबाल घोषपति नंदन बरना ॥ जननी धरयौ कर सीस बलि गई मोहन बरना । हरषी देत असीस घोषपति नंदन बरना॥ सुनि यह रीति अनूप बलिगई मोहन बरना। वृन्दावन हितरूप घोष पति नंदन बरना ॥

ढाँढ़िनि के बचन

राग परज—पद ५६

फल्यौ मनोरथ बाग जसोदा आज आँगन भीर। मेरी फली असीस बेगि दै तेल चढ़त बलवीर ॥ जसोदा आज आँगन भीर ॥टेक॥ यह दिन बहुत जतनि करि पायौ प्रभु मेंटी हिय पीर । घोरी गावति भामिनि हुलसीं उबटतिं श्याम सरीर ॥ अभिलाषनि कौ सागर तरिकैं नाव लगी अब तीर । ब्रज-पति तुव पाछिलौ दत लह्यौ यह मंगल सुख सीर ॥ कीरति भान नंद तुव रानी जस निधि बढ़्यौ है गँभीर । फैलि गई गरजनि त्रिभुवनि में बरनत मुनि मति धीर ॥ ब्याह बधायें दोउ नृपति मिलि बरसैंगे नग हीर । मेरौ घर भरिहै इहि दिन करि लैहौं अनगिन चीर ॥ अहा कहा ब्रज सगुन होत सुभ सुरभी श्रवत जु छीर । निर्मल दिसा धातु गिरि दरसति रुचि लै बहत समीर ॥ हौं ढाँढ़िनि नित यहै मनाऊँ उद्भव वंस अहीर । राधा श्याम ब्याह संपति लहि कटै दरिद्र जँजीर॥ दुलहिनि सकल घोषकी ओभा दूलह भाग्य बलीर । वृन्दावन हित भाँवरि विरियाँ वारि पिऊँगी नीर ॥

बान मंगल

राग गौरी—पद ६०

ताऊ न्यौतौ बान विविधि सामा करी । जेंवत स्यौं परिवार लाल नग-धर हरी ॥ बरना संग फिरत अरु बालक वृन्द हैं। गोकुल पति ग्रह उडुगन जुत मनु इंदु हैं ॥ हरदी मंडित बदन देहुँ उपमा कहा । पूरित मनौ पराग पीत अंबुज अहा ॥ हरदी तेल उबटनौं भामिनि लावहीं । हँसि हँसि अंग

लगावतिं मंगल गावहीं ॥ सरसि सरसि तन परसतिं भरि अनुराग है। नव तरुनीं अँग दरसि मुदित वड़ भाग है॥ घर घर मंगल आज नँदीश्वर गाँवरे। अखिल लोक मणि जहाँ दिन दूलह साँवरे॥ राँई लोंन उतारि आरती करति हैं। वृन्दावन हितरूप हियें सुख भरतिं हैं॥

छंद राग परज—पद ६१

धरानंद घर वान प्रथम ही सो तौ वरनि सुनायौ। अब ध्रुवनंद भवन महा मंगल वरना जेंवन आयौ॥ ब्रजपति सहित नंद नौ आये और सकल पुरवासी। मंगल वाजे वाजत मंगल गावत श्रवत सुधा सी। गावत श्रवत सुधा सी वैठे अजिर मध्य नँद लाला॥ सखा मंडिली चहुँदिसि राजत छवि वरषत तिहिं काला॥ नारी ताई मूठि उठावतिं आरज विरद वुलायौ। कहा कहौं आनंद नँदीश्वर जात न वरन सुनायौ॥१॥ पुनि उपनंद प्रीति मन भारी रची वान ज्यौंनारा। अतिलड़ के रँग सरसत दिन दिन घर घर प्रेम अपारा॥ ताई तेल चढ़ावतिं गावतिं ह्वै रही भीर घनेरी। जेंवत पुर परिवार लोग सव गिरिधर ब्रजपति नेरी॥ गिरिधर ब्रजपति नेरी वैठे ऐसी उपमा पाई। मनु कंचन गिरि सुभग कन्दरा श्याम घटा झुकि आई॥ सुभग वदन पर मरुवट मंडित इन्द्र धनुप विस्तारा। मागध चारन सूत कहत जस वनी वान ज्यौंनारा॥२॥ चौथें श्री अभिनंद और दिन मंगल रच्यौ महाई। नगर वुलौवा फिरत भोरहीं वेगि चलो रे भाई॥ न्यौतो वान वना गिरिधर कौ घर घर तें सव आवें। नँदीश्वर की ललित गलिनु में वनिता मंगल गावें॥ वनिता मंगल गावें आवें नंदनँदन तिन आगें। तेल चढ़त अभिनंद भवन में श्याम अति भले लागें॥ भोजन भूरि प्रीति सों कीनों ताई मूठि उठाई। लाल वना पर रतन वारिनें मंगल रच्यौ महाई॥३॥ सुठि सुनंद के वान और दिन मोहन न्यौत वुलाये। नगर परम कौतूहल घर घर वंधु सिमिटि सव आये॥ सव विधि करी वान की त्यौंहीं निर्मल नंद उदारा। विनाईकी फिरत अतिलड़ की ह्वै रह्यौ मंगल चारा॥ ह्वै रह्यौ मंगलचार

छुटैं फुलभरीं अनूप हवाई। नौऊँ नंद अतिलड़े पाछें रतन मूठि वरसाई ॥ करमा धरमा नंद न्यौति कें काकिनि वना लड़ाये। वृन्दावन हितरूप वलि गई इहिं विधि न्यौत चुलाये ॥

बान के दिन की विन्नाइकी

राग मारू—पद ६२

गूँदि सेहरौ आज ऐ मालिनियाँ सवेरी। जो माँगै सो देहौं भामिनि मेरे व्याह कौ काजु ॥ ए मालनियाँ सवेरी गूँदि सेहरौ आजु ॥टेक॥ रहसी फूली आव महल में लै सब मंगल साजु। भरि देहौं धन सौं तो मंदिर जैहे दारिद भाजु ॥ मन दै अधिक सँवार लाल हित ज्यौं रीझैं व्रजराजु। सीस धरैं वरना जब तब तो जगे भाग प्रभुता जु ॥ आई व्याह वधायें गावति लीयें जुवति समाजु। वृन्दावन हित वना सेहरौ देखि मुदित प्रमदा जु ॥

राग गौरी—पद ६३

गुहि ल्याई मलिनियाँ सेहरौ फिरै नगर विन्नाइकी आज हो। अव रतननि मूँठ उठाइहै धनि भाग मानि ब्रजराज हो ॥गुहि ल्याई॥टेक॥ मेरे कुलमणि घोरी पग धरयौ वड़ि वीथिनु वाढ़ी ओप हो। जाके सखा मंडली संग वनी सजैं अभरन गोपी गोप हो ॥ नौं नंदन परजन्य के अतिलड़ के सरसत रंग हो। मेरौ नव दूलह घोरी चढ़यौ सबके मन विपुल उमंग हो॥ अगनित वाजे वाजहीं होइ जहाँ तहाँ मंगल गान हो। सुख देखन नँद गाँवरे नभ छाये अमर विमान हो ॥ लाल निकसत जिहिं जिहिं पौरि ह्वै नव वरना अद्भुत वेस हो। ते नग न्योछावर करत वहु पुहुपांजुलि वरप सुदेस हो ॥ देखि छुटति हवाई फुलभरीं भोंचप्पा कौतिक रूप हो। आज कनक फूल अवनी मनौं वरपावति गति जु अनूप हो ॥ जहाँ नीर सुगंधनि सौं सचीं रचीं वीथी पुर अभिराम हो। रंभा वंदनवार जुत दीपावलि ठामैं ठाम हो ॥ धन ज्यौं धन वरपै सवै करैं गोप छवीली रीति हो। वृन्दावन हितरूप वलि हियसनें अपूरव प्राति हो ॥

मंडप मंगल

मंगल छंद राग सूहौ विलावल–पद ६४

व्रज चौरासी कोस सुविप्र पठाइयौ। पुर पुर घर घर सवकों न्यौति वुलाइयौ ॥ देस देस के भूप सनेही मित्र जे। व्रजपति दै सनमान वुलाये न्यौत ते ॥ न्यौत कैं सव भूप वोले व्याह दिन एकत भये। सकल व्रज के गोप सिमटे नंदपुर चहुंदिसि छये ॥ नंद करि सनमान वहुविधि असन वसन सवनि दये। ठौर ठौर वजार छाये भूप घन लौं ऊनये ॥१॥ सुविधि रची रचना जु आज गोकुल धनी। कापै वरनी जाइ जितीं सामा वनी ॥ निधि सिधि सेवति रमा कला जुत चातुरी। पौरि निरादर फिरति मुक्ति जहाँ वापुरी ॥ वापुरी मुक्ति निरादरी व्रजराज पौरी परि रही। निरखति वदन हरि माधुरी दृग धरे कौ फल यह सही ॥ तहँ पाक नाना विधि सँवारे भरे वहु भंडार हैं। कौतिक अतिलड़ व्याह व्रजपति रचे साज अपार हैं ॥२॥ मंडप कौ मंगल दिन सजनी आइयौ। विप्रनि वेद पढ़ाइ सुथंभ धराइयौ ॥ रतन दान गौ दान नंद सादर दियौ। वेद विहित जो काज वूझि विप्रनि कियौ ॥ कियौ विप्रनि वूझि दूलह ढिंग जनक जननी खरे। हियें नाहिं समात आनँद धाव नीसाननि परे ॥ करतिं जुवतीं गान मेवा भरति जसुमति गोद है। करि सँभार तंवोल वाँटति भरी तन मन मोद है ॥३॥ आये वड़े हो मुनीस नंद पद वंदहीं। सुनत असीसनि कान परम आनंदहीं ॥ सादर आसन देत वहुत पूजन कियौ। कृष्ण कमल दल नैंन निरखि हरपित हियौ ॥ हियौ हरपित होत सकल मुनीस लोचन फल लह्यौ। व्याह तुव सुत देखिहैं यों नंद सौं रिपि जन कह्यौ ॥ यह सुनत प्रमुदित भये व्रजपति हेत सवकौ जानिकैं। वृन्दावन हितरूप अतिसै भाग्य अपनौं मानिकैं ॥

छंद राग परज–पद ६५

नंद भवन सोभा कहा वरनौं अहा महा उजराई। लखि कन्दर्प होत नित छोभा सुरपति देखि लजाई ॥१॥ रतन कलस उद्योत महामणि सुरँग

वितान तने हैं। कंचन सूत झालरी झमकें मुक्ता कोर घने हैं ॥२॥ मुक्ता कोर घने मणि लागे चित्र विचित्र अपारा। तोरन रतन जगमगें तिनमें कुसुमनि वंदनवारा ॥३॥ रचना भवन भवन प्रति इहिं विधि धुजा पताक लसैं हैं। कृष्ण विवाह महा मंगल दिन मानौं सदन हँसैं हैं॥ जरी तार चिक द्वारे परदा ऊँचे अटा अटारी। तिनमें झमकि झरोखन झाँकतिं मंगल गावतिं नारी ॥५॥ अजिर अरगजा चंदन मंडित मोतिनु चौक धरे हैं। जहाँ तहाँ रतननि के दीपक घर घर द्वार वरे हैं ॥६॥ कदली कलस अलंकृत मंदिर फल दल फूल घनेरे। चारयौं वेद महामुनि उचरत अतिलड़ वैठे नेरे ॥७॥ गवरि गणेस नवग्रह थापे भाँति भली पुजवावैं। वृन्दावन हितरूप जगत गुरु अच्छत हरषि चढ़ावैं ॥८॥

छंद राग परज–पद ६६

अच्छत हरषि चढ़ावैं मोहन-चरित कहत नहिं आवैं। नेति नेति कहि वेद प्रसंसित मुनि जन गूढ़ बतावैं॥ गोप ओप कुलदेव प्रेम करि सबके चितहिं चुरावैं। जिहिं विधि विप्र बतावत गिरिधर भोरे त्यौं कर लावैं॥ भोरे त्यौं कर लावैं गिरिधर चंदन बंदन रोरी। तेल चढ़ाइ सवेरौ मुखपर मरुवट छवि नहिं थोरी॥ लगुना सगुना करत बहुत विधि विप्र वधूजन जेते। लोक रीति अरु वेदनि भाषे जसुमति कीनें तेते॥ बनी ठनीं मंदिर में बाला रमकीं झमकीं डोलैं। मनु हरि घन अभिषेक होत है दामिनि निकर कलोलैं॥ झनक झनक मणि नूपुर बिछुवा भाँति छवीली बाजैं। मनु मनमथ कीं पढ़तिं मुनीं कै गुनी बीन कर राजैं॥ गावतिं गहकि गहकि मीठे सुर चढ़ीं अटनि मृगनैनी। जारिनु बारिनु और झरोखनि चहुँदिसि यौं छवि दैनीं॥ वृन्दावन हित आवत मनमें यह उपमा तिहिं काला। नंद भवन पहिराई मानौं रचि सोभा की माला॥

छंद राग परज–पद ६७

सोभा माल मनो पहिराई यौं राजतिं ब्रजबाला। गावतिं घोरीं गोप

किशोरी सुनि रीझत नँदलाला ॥ तवहिं नंद ज्यौंनार सुधि करी सादर मुनि जु बुलाये । भूप और सव लोग कुटुँव के विहँसत मंदिर आये ॥ आये लोग कुटुँव के मंदिर हरषि सवै वैठाये। धोये चरन दिये रुचि आसन जतन अनेक वनाये ॥ कोसनि कई विछे पनवारे भूमि सुगंधि सिंचाई । सामा विविधि चले परसन कौं कहा कहौं सुघराई ॥ पवन वेगि सम गवनें सवही परसि वहुत परकारा । जेंवत सवै नंद अज्ञा लै प्रमुदित गोप कुमारा ॥ पाक अनेक वने विधि नीके कहाँ लगि वरनि सुनाऊँ । भोजन करत सराहत सवही स्वाद कहा कहि गाऊँ ॥ परसनहार सवनि के आगें लियें पाक वहु ठाढ़े । रुचि सौं जेंवत भूप गोप गन ग्रास ग्रास रुचि वाढ़े ।। वृन्दावन हितरूप कहत सव लेहु लेहु यह वानी । एक एक के आगें भाजन भरे खरे मनमानी॥

छंद राग परज–पद ६८

जेंवत हैं रुचिमान आज सव गुरु जन वंधु सनेही । परम प्रीति सौं वोलत सादर लेहु लेहु पुनि लेंहीं ॥ परम चतुर सुचि अंग अलंकृत मधुरी वानी वोलैं । पीतांवर धोती उपरैंना पहिरें व्रजपति डोलैं ॥ जहाँ तहाँ डोलत व्रजपति जू करत सवनि सनमानैं । जेंवौ जू नीकी विधि सवही हरि कर गहें वरवानैं ॥ सामा उज्वल वहुत रसीली रसना सुख सरसी है। स्वाद स्वाद कहि भूप विनानी माँगत पुनि परसी है।। तिनमें सजन सनेहिनु मीठी अवला गारि सुनावैं । वीच वीच मृदु हासि परस्पर अति रस स्वादिनु भावैं ॥ भोजन तें कोटिक विधि प्यारी लगति हितुनि कीं गारीं। गिरिधर के अनुराग भींजि रहे मुदित सवै नर नारी ॥ भोजन करि आचवन लेत जव वीरी देत सँवारी। व्रजपति दछिना देत द्विजनि कौं होत कुलाहल भारी।। ढोल वजाय अरे ढोलिनियाँ सफल भये सव काजा । वृन्दावन हितरूप पाँति दै जीत्यौ गोकुलराजा।।

श्री नंदगांव की भात मंगल

राग सोरठा–पद ६९

अरी हेली आज लाल कौ माँड़यौ कव आवै मो वीर । कौन घरी

आयौ सुनौं हेली भई प्रेम उर भीर ॥ हेली आज लाल कौ माँड़यौ कब आवै मो वीर ॥टेक॥ यद्यपि मंदिर सुख अवधि हेली इहि छिन रुचित न और। वीर आगमन मिलन के हेली होत महा मति बौर ॥ भूपनि दल अरु गोप गन हेली सब सुनि आये धाइ। कित विरमें मेरे भातई हेली ऊत्तर समझि सुनाइ ॥ जो आयौ मोसौं कहै हेली बहुत बधाई देंउ। पहिराऊँ भूषण वसन हेली भूरि बलैयाँ लेंउ ॥ मंडप सोभा होहि तब हेली बैठें बकुचा खोलि। तात मात यस तब बढ़ै हेली पहिराऊँ सब बोलि ॥ चाह मनौ पावस नदी हेली रुकत न प्रबल प्रवाह। मो कुल मंडन बीधि दिन हेली सोदर मिलन उमाह ॥ प्रबल भाग्य बरना अहा हेली मैं परखी यह रीति। देखि सगुन सुभ होत हैं हेली प्रभु करिहैं चित चीत ॥ यौं मग हेरति भातइनु हेली ब्रजरानी बड़ भाग। वृन्दावन हितरूप बलि हेली लाड़ति सुत अनुराग ॥

राग ब्रजवासिननु की टेर—पद ७०

विरमौं हो कत सोदर हो कत सोदर आज सब जग फीकौ वीर बिनु। कै कहुँ हो जोरत रह्यौ हो जोरत रह्यौ साज कब आवै धनि सो जु छिनु ॥ मेरौ हो पहिरन दिन हो पहिरन दिन इहि माइलजायौ कित रह्यौ। वीरन हो अरु बहिन अहो अरु बहिन सनेह विधिकत मोहि परै न कह्यौ ॥ आये हो सब देस अहो सब देस नरेस अरु ब्रज मंडल गोप गन। हेरत हो मग प्रेम अहो मग प्रेम अवेश सोदर मिलन उमाह मन ॥ बूझति हो मेरी ननद अहो मेरी ननद सवासि कितिक दूर तुव भातई। बैठीं हो गोपीगन अहो गोपीगन पास कोउ ऐसें बरनत भई ॥ हय गय हो पट भूषण हो पट भूषण भार विरमि विरमि मारग चलें। आवै हो रानी अब इहि हो रानी अब इहि बार वचन मान मेरौ भलें ॥ यह सुनि हो रानी सरसति हो रानी सरसति हीय सत्य सत्य मुख तें कही। मंगल हो गावतिं ब्रज हो गावतिं ब्रज तीय मंदिर गहमह ह्वै रही ॥ हींसत हो बड़ रासि अहो बड़ रासि तुरंग नगर नँदीस्वर गोइरें। घूमत हो गजवर तिन हो गजवर तिन संग वे दल नैननि जोड़ रे ॥ आयौ

हो रानी जसधर हो रानी जसधर वीर जसा और जसवंत पुनि। पटुला हो रानी गुननि हो रानी गुननि गँभीर सुमुख पिता आयौ जु सुनि ॥ दुगुनौं हो मंगल उठीं हो मंगल उठीं गाइ आगें ह्वै मंदिर लिये। भेंटत हो रानी कंठ अहो रानी कंठ लगाइ सादर पुनि बैठन दिये॥ बीरन हो बकुचा वहु हो बकुचा वहु खोलि पट अमोल बरनौं कहा। पहिले हो कुल वनितन हो कुल वनितन बोलि, पहिराई सोभित महा॥ पहिरीं हो सब वंस अहो सब वंस सवासिं गोप वंस उपमा दई। जसुमति हो मन भरी है अहो मन भरी है हुलास पहिरि वीर भेंटत भई॥ एकत हो नौंहूँ भये हो नौंहूँ भये नंद तिन संग पहिरे गोप सब। वाढ़यौ हो घर घर मिलि हो घर घर मिलि आनंद पहिर छतीसौ पौंन तव॥ कीनौ हो जस जगत अहो जस जगत वितान जसुमति सोदर भात दै। जहाँ तहाँ हो कीजतु गुन हो कीजतु गुन गान सुमुख गोप कौ नाम लै॥ पटुला हो खरच्यौ धन हो खरच्यौ धन आइ कृष्ण विवाह हरष वढ़ी। कहाँ लगि हो गुन कहहुँ अहो गुन कहहुँ बनाइ जसुमति कुल उपमा चढ़ी॥ धनि धनि हो रानी पीहर हो रानी पीहर परिवार हरि जननी भागिनु भरी। गावत हो गुन निगम अहो गुन निगम अपार मुनि दुर्ल्लभ निधि उर धरी॥ जाको हो विधिना पुनि हो विधिना त्रिपुरारि कष्ट करत तप ध्यान धरि। ताकौं हो लाड़ति नित हो लाड़ति पुचकारि व्याह रच्यौ ऐसौ जु हरि॥ यज्ञनु हो भोगता हो भोगता निहारि आराधन योगेस मुनि। ठिनकत हो भूखे मन हो भूखे निरधार कंकण बाँधत गोप सुनि॥ चलि चलि हो हितरूप अहो हितरूप व्रजेस लीला ललित किती कहौं। वृन्दा-वन हित चरित अहो हित चरित सुदेस समझि समझि मौंगो रहौं॥

दोहा राग परज की अलाप चारी—पद ७१

भूपनि गन अरु भातइनु गोप वनत नहिं गंत। व्याह अतिलड़े कृष्ण के जुरे दल आनि अनंत॥ देवनि रिषि अरु ब्रह्मरिषि जुरे राजरिषि आइ। योग ज्ञान गति गूढ़ जो सो दृग लख्यौ अघाइ॥ जहाँ तहाँ परसंस सब

करत बना लखि रूप । अहा कहा ब्रजराज कौ सुकृत फल्यौ अनूप ॥ नैननि कौ फल लेत मुनि विसरे नित कृत नेम । बृन्दावन हितरूप बलि भरे कृष्ण के प्रेम ॥ साझलरी गावतिं वधूँ दीपक जोति मल्हाइ । सो दीपक ब्रजराज घर छिन छिन प्रति अधिकाइ ॥

न्यतौ परिवौ तथा विन्नाइ की

छंद राग परज—पद ७२

पहिरयौ भात भई अब सजनी न्यौतौ परिवे वारी । जहँ तहँ बरें दीप रजनी मुख बरपत सोभा भारी ॥ नंद लिये बैठे गिरिधर बनि गोप छबीले आये । न्यौतौ देंन भूप दल उमड़े जुवतिनु मंगल गाये ॥ जुवतिनु मंगल गाये आये आँगन गोप छबीले । न्यौतौ डारि नंद ढिंग बैठे अति सुख हिय सरसीले ॥ हय गय रतन पालिकी आईं रजित रकम. मित नाहीं । न्यौतौ परयौ नंद घर एतौ विधि बरनत सकुचाहीं ॥ भवन भीर अति भई रँगीली वीथिनु माँहि महाई । धुरहिं निसान और बहु बाजे बिलि परवत की झाँई॥ घोरी चढ़ि निकस्यौ नव बरना छुटैं फुलझरीं हवाई । नगर नँदीश्वर की वर वीथिनु बिन्नाइकी फिराई ॥ सौरभ सींचीं महकतिं अतिहीं गलीं भलीं छवि पावैं । तिनमें बरैं मणिनु के दीपक अतिलड़ रंग बढ़ावैं ॥ गोप भूपगन मध्य सखी री बरना लटकत आवैं । बृन्दावन हितरूप घोप पति रतन मूँठ बरसावैं ॥

श्री नन्दगांव कौ विवाह दिन कौ मंगल

राग परज—पद ७३

देखि बरनैं मुदित अधिक अनुराग भरि नइनियाँ भाग्य बरन्यौ न जाई। डारि सौगंधि बहु सुविधि उबटन घोरि लाल कौं चौक बैठारि माई ॥ ललित गति श्याम मज्जन जु करवाइ अब लैं उतीरन वसन नेग गनिकैं । धन्य इहि दिन घरी दरसि तो कौं परी महत मंगल सुदिन मानि धनिकैं ॥ नगर सब बगर तें वधुनि लैं बोलिकैं जाइ वेगी न अब गहरु कीजे । बाल अरु

वृद्ध तरुनी सबै आइकैं लाल दुलराइ आनंद दीजे ॥ सजौ सिंगार अरु थार कर वर धरौ घटि गई रैन पह भई पीरी । बड़ौ उत्साह घर सबनि कों खबर करि तू सयानी कहा फिरत धीरी ॥ भवन भंडार पुनि भरै धन वा दिना जा दिना दुलहिनी ब्याहि लावै । जीतकैं खेत अरु सजन सों राखि रस घोष कौ ईस बंबै घुरावै ॥ हरपि कैं चरण जावक जु भरिहे जबहिं होंहिंगे सफल कर नैंन एरी । और घर जाइबौ भूल जैहे सखी कहा कहों अकथ है यह पहेरी॥ हों जु कुल ढाढ़िनी तू जु कुल नइनियाँ बनी अरु बना हम भाग्य लहनों । लोक में विधि न सुनी जोट ऐसी रची जसोमति नंद कौ भवन गहनों ॥ झगरि तव लीजिये आप मन भाँवतौ बड़ी अभिलाप करि वा घरी की । कुँवरि वृपभानुजा रूप गुन की अवधि सुकृत निधि महरि भागनि भरी की॥ वचन मंगल कहति छोर अंचल गहति नित बधावौ रहौ नंद पौरी। वृन्दावन हितरूप रीति सब भाँति करि ब्याह दिन जहाँ तहाँ फिरति दौरी ॥

मंगल छंद राग सूहो बिलावल–पद ७४

उठि सखि अजिर लिपाइ बहुत देखि काज है। ब्याह महा मंगल दिन आयौ आज है॥ मोतिनु चौक पुराइ साजि मंगल धरो । जो कछु मंगल रीति सबहि मन दै करो ॥करो मंगल रीति मन दै लाल उबटि न्हवाइये। परम मंगल सुभ घरी यह पुन्य पूरन पाइये॥ चौकी बिछाई नग खचित बैठारि तापर अतिलड़े । सब मिलि सुहागिनि करति उबटन चोज चाइनि रचि बड़े ॥१॥ मिश्रित सकल सुगंधि श्याम अन्हवाइकें । अंग अँगोछति महरि मिहीं पट लाइकें ॥ पूजन विधि करवाइ वधूजन विप्रगन। अपने हाथ जिमावति जसुमति मुदित मन ॥ मुदित मन जननी जिमावति भूख जिन मारग लगै। रची मरुवट वदन पूरित पान आनन जगमगै ॥ अंजन रच्यौ दृग कोर पैनी केस चुपर फुलेल है । महिंदी रचे जुगपानि चोटी गुही सौरभ-रेल है ॥२॥ ब्रजपति अनुजा बोली नाम सुनंदिनी । बसन आइ पहिराइ परम आनंदिनी ॥ माँगति अपनी लीक महरि हँसि देति है । झगर झगरि

कुल मान महत सौं लेति है ॥ लेति वहु सनमान सौं अतिलड़ वसन पहिरावहीं। निगम धुनि मुनि करत जुवतीं हरपि मंगल गावहीं॥ सिर जरी तारनं रचित चीरा पीत सुभग इजार है। कंचुक वन्यौ सव अंग गस पटुका फव्यौ जरी तार है ॥३॥ चित्र विचित्र बिराजत चूरा चरन है। नूपुर मणिमय पदिक विश्व मन हरन है ॥ कटि छीनी पर किंकिणि अति छवि राजहीं। उर पर मोतिनु माल विचित्र विराजहीं ॥ विराजहीं उर रतन चौकी सुभग कुंदन में खची। लसत कंठी कंठ सोभा सींव मनु सुख की रची ॥ अंगद भुजा टोडर करनि मुँदरी मणिनु अँगुरिनु वनी। नख पांति नग पहुँचिनि सखी री फैलि रहि सोभा घनी ॥४॥ मणि कुंडल गंडनि मधि झाँई झलमलैं। मनु जुग रवि जमुना जल'क्रीडत कलमलैं ॥ वेसरि लसत नासिका मोती छवि भरयौ। अधर विंव प्रतिविंव ओप अतिसै करयौ ॥ करयौ अतिसैं ओप अधरनि चुवत मनु अनुराग है। मुख किधौं अंबुज नील प्रफुलित भरयौ विपुल पराग है ॥ दृग वंक भृकुटीं छवि भरीं पुनि चिवुक चारु सुदेस हैं। अलि माल लुब्धे मुख कमल अस भ्रमत कुंचित केस हैं ॥५॥ कुसुम दाम वैजंती उर वर सोहई। इन्द्र धनुप छवि वारौं अरु सम कोहई ॥ पीत वसन चटकीलो काँधि विराजही। मनमथ मन कौं वाँधत अस छवि छाजही ॥ वाँधि मनमथ मन जु वरवस सुभग नख सिख छवि धरैं। कौन उपमा देहुँ तिहिं छिन निकर मनसिज पग परैं ॥ पट मिहीं रँग कुसुम रंजित सुभग लखा कर सखी। बृन्दावन हित वेस अद्भुत सीम सोभा मनु नखी ॥६॥

राग सोरठ—पद ७५

मेरौ लाड़िलरौ वरना आज वन्यौ नवरंग। छवि सागर सरस्यौ अधिक जाके चरननि लुठत अनंग ॥ मेरौ लाड़िलरौ वरना ॥टेक॥ त्रिभुवन मोहन प्रथम ही री अतिसै कमनी अंग। तापै नव दूलह वन्यौ री लखि दृग गति भई पंग ॥ लोचन फल ते लेंहिगे जे चलहिं अतिलड़े संग। या सोभा के चौंदने री डोलत भरे उमंग॥ चित्त वृत्ति उररी परत जैसें दीपक माहिं पतंग।

नेह डोर वरना गही री मन गति चकरी ढंग ॥ सीसी रंग मजीठ की ज्यों झलकत भरी अभंग । वृन्दावन हितरूप की यों छिन छिन उठत तरंग ॥

राग व्रजवासिनु की टेर—पद ७६

मोहन वरना हौं वारी दिन आजुके बाँधि सेहरौ सीस । मोहन वरना लै मोतिनु लर रचित कौं बोल घोष के ईस ।।मोहन वरना।।टेक।। बैठ्यौ गोप सभा मुदित नगर नँदीश्वर राइ ।।मोहन वरना।। वेगि सजैं गज बाज़ बहु कहहु तात समुझाइ ।।मोहन वरना।। वना मोहिं फल्यौ गिरि पूजिवौ यह सुख देख्यौ नैंन ।।मोहन वरना।। व्याह वधावौ मो सदन सुख वरनत वनत न बैन ।।मोहन वरना।। जिहिं विधि हौं वांछित हुती तिहिं विधि पूजी आस।।मोहन वरना।। सुख वरसत नर नारि मिलि नगर नँदीश्वर वास ।।मोहन वरना।। मंगल निकर उदित भये जहाँ तहाँ छवि देत ।।मोहन वरना।। निरवधि आनँद को उदधि उमग्यौ लहरिनु लेत ।।मोहन वरना ।। अतिलड़ माँगत सेहरौ सुनहु घोष के नाथ ।।मोहन वरना।। अब न गहरु कीये बनै सजहु वराती साथ ।।मोहन वरना।। वहिन तुम्हारी नंदिनी ताहि मनावौ आइ ।। मोहन वरना।। करहि कुँवर कौ आरतौ मंगल हरषि गवाइ ।।मोहन वरना।। पुनि सुनियौ गोकुल धनी कुल मणि मचल्यौ आज ।।मोहन वरना।। संग सखा जिनके जिते देहु सिंगारनि साज ।।मोहन वरना।। रतन पेच सिर जग मगें लस दुसालनि छोर ।।मोहन वरना।। संग बना के वनि चलैं तिन मधि नंदकिसोर ।।मोहन वरना।। श्रीपतिदेव मनाइकैं देहु तुरंगनि पाउँ ।।मोहन वरना।। मागध सूत सुयस कहैं धन्य नँदीश्वर राउ ।।मोहन वरना।। घोष नृपति भूषन वसन व्रज वरषनि सुख अभिराम ।।मोहन वरना।। जो धन जोरयो पाछिलौ तुम खरचौ सजन के धाम।।मोहन वरना।। अमल गगन नँद गाँवरो जहाँ कृष्ण उदित राकेस ।।मोहन वरना।। वरषत है विनमित सुधा वन्यौ मनोहर वेस ।।मोहन वरना।। सजहु वागवारी विविधि यह अतिलड़ मन चाह।।मोहन वरना।। व्रजपति नंदन कौतुकी याचत भरयौ उमाह।।मोहन

वरना॥ बाजे जेतिक लोक में साजौ सहित विधान ॥मोहन वरना॥ यह अतिलड़ पुनि पुनि कहै सुनहु तात दै कान ॥मोहन वरना॥ मुदित भये ब्रजपति महा समझि अतिलड़े प्रीति॥मोहन वरना॥ वृन्दावन हितरूप चलि करत सबै विधि रीति ॥मोहन वरना॥

मंगल छंद राग सूहो बिलावल–पद ७७

बैठे अजिर गोप मुनि राई । सोधि सुभ घरी तिननि बताई॥ मौर धरौ घोरी लै आवौ । विप्र वचन सुनि गहरु न लावौ ॥ लावौ गहरु जिनि राव गोकुल मान दै कह्यो गरग है। लाये छबीली तहाँ घोरी दियौ जसुमति अरघ है ॥ लीला स्वरूपी विस्व मोहनि अहा कमनी घोरियां । कंदर्प रूपी अस्व पालक गहैं ठाढो डोरियां ॥१॥ मौर धरत भई जै जै बानी । वारति रतन मूठि ब्रजरानी॥ तिहिं छिन दुंदुभि देव बजावैं। गोप वधू मिलि मंगल गावैं॥ गावैं वधू मिलि मुदित मंगल सेहरौ रचि सीस सौं । अतिलड़हिं घोरी चढ़ावैं कहो ब्रज के ईस सौं ॥ पदपीठ कंचन सूत निर्मित आनि कैं आगें धरी । घोरी चढ़यौ सुभ घरी मोहन विप्र जै जै धुनि करी ॥२॥ अंचल ढांपि सुतहिं उर लावैं । जननी अस्तन पान करावैं ॥ राई लोन उतारि सिहानी । पुनि पुनि वारि पिवति है पानी ॥ वारि सिहानी पिवति पानी अंग सोभा निधि वढ़ी । सकत नाहिं निहारि आपुन वदन अस पानिप चढ़ी ॥ अधरनि रमी मुसिकान फबि बागौ सहानौ अंग है । देखें बनै गोविन्द बानिक कहत भई मति पंग है॥३॥ कुसुम सेहरौ मालिन लाई। पुनि पुनि महरहिं देति बधाई॥ बहु न्यौछावर ताकौं दीनी। ह्वै रही भवन भीर रँगभीनी ॥ भवन भीर अपार वीथिनु नारि नर जै जै करैं । चढ़त मदन गुपाल घोरी दरस कौं सब अर वरैं ॥ चँवर सुवल सुवाहु ढोरत छत्र मधुमंगल लयौ । वृन्दावन हितरूप घोरी चढ़नि कौ समयौ भयौ ॥४॥

राग विहागरौ–पद ७८

आज फव्यौ सिर सेहरौ॥गोकुल विधु वरना॥ न्यौछावर प्राण जु देउं री॥

नवरंगी वरना ॥ धनि वड़ भागिनि मलिनिया ॥गो०॥ रच्यौ सुविधि वलैया लँउरी ॥नव०॥ साँवल वदन विलोकि री ॥गो०॥ कुसुम कलीं तापै रुरत री ॥नव०॥ मनो किरनि ससि की वढ़ी ॥गो०॥ दृग चपल कोर तहाँ मुरत री ॥नव०॥ लखा रंग कसूम पट ॥गो०॥ रह्यौ अधर धरि पान री ॥नव०॥ मनु मयंक अरु कमल सौं ॥गो०॥ भई प्रीति अपूरव जान री ॥नव०॥ दुहूँ वीच अनुराग कौ ॥गो०॥ दरस्यौ आजु स्वरूप री ॥नव०॥ अद्भुत अवसर यह भयौ ॥गो०॥ चिर जियहु कुँवर व्रजभूप री ॥नव०॥ रतन जटित मोतिनु लरैं ॥गो०॥ तापै रचि वाँध्यौ व्रजराज री ॥नव०॥ एक राज भयौ प्रेम कौ ॥गो०॥ सुर नर मुनि थकित समाज री ॥नव०॥ मनु जीत्यौ गज छावरो ॥गो०॥ यौं मुख मरुवट रंग री ॥नव०॥ मौर जरकसी अतिलसै ॥गो०॥ लखि दृग गति भई पंगु री ॥नव०॥ धनि अतिलड़ कौ तात री ॥गो०॥ धन्य कूख भई माइ री ॥नव०॥ धन्य किये व्रजजन सवै ॥गो०॥ मंगल व्याह दिखाइ री ॥नव०॥ परम धन्य अव होंहिगे ॥गो०॥ दुलहिनि त्रिभुवन मणि देखरी ॥नव०॥ वृन्दावन हितरूप वलि ॥गो०॥ वढ़ै दिन दिन सुख जु विशेष री ॥नव०॥

राग गौरी—पद ७६

मरुवट मंडित वदन॥ अंग छवि वरषत वरना ॥ नवत चरण गन मदन॥ नंद कुल भूषण वरना ॥ सव मन दियौ है उमाह ॥अंग०॥ देखनि कौतिक व्याह ॥नंद०॥ भवन भई छवि भीर ॥अंग०॥ आज वनें वलवीर ॥नंद०॥ लोक मुकुट मणि राइ ॥अंग०॥ डीठ लगनि डरैं माइ ॥नंद०॥ गोधन पूजनि मो फल्यौ ॥अंग०॥ वाँधि सेहरौ चल्यौ ॥नंद०॥ वारति सौंनें सींक ॥अंग०॥ या आगैं छवि लीक ॥नंद०॥ मनौ छवि धुरवा श्याम ॥अंग०॥ नख सिख अति अभिराम ॥नंद०॥ धनि कुल गोप कुमार ॥अंग०॥ भये सुर मुनि कौतिक हार ॥नंद०॥ दिन दूलह भये रहत ॥अंग०॥ आज परे कहा कहत ॥नंद०॥ कंकण वाँध्यौ पनि ॥अंग०॥ देति महरि वहु दान ॥नंद०॥ वोल्यौ श्री व्रजराज ॥अंग०॥ धन खरत्रनि दिन आज।नन्द०। विधि अनुकूल निधान।अंग०। परनें ग्रह वृषभान।नंद०॥

सुकृत फल्यौ ॥परजन्य अंग०॥ सोमवंस भयौ ॥धन्य नंद०॥ विरद बुलायौ नंद ॥अंग०॥ चढ़यौ ब्याहन व्रजचंद॥नंद०॥ वरनी रवि वर वंस ॥अंग०॥ जदु कुल जगत प्रसंस॥नंद०॥ इत उत निर्मल ओप॥अंग०॥ हौं ढाढ़िनि कुल गोप ॥नंद०॥ वलि हितरूप व्रजेश ॥अंग०॥ वरनि थक्यौ गुण शेष ॥नंद०॥सुमति जथा मति पाइ ॥अंग०॥ वृन्दावन हित गाइ ॥नंद कुल भूपन वरना॥

राग गौरी—पद ८०

जैहौ घर व्रपभान ॥चतुर चूड़ा-मनि वरना ॥ कीजौ निपट सयान ॥मेरे लाड़िलरे वरना ॥ सवही कौं सुखदैंन ॥चतुर०॥ कहियौ मीठे वैंन ॥मेरे०॥ देव पुजे हैं नारि ॥चतुर०॥ लीजौ छलहिं निहारि ॥मेरे०॥ चेटक है उहि गाम ॥चतुर०॥ तुम वालक घनश्याम ॥मेरे०॥ वरसाने जिहिं नाम ॥चतुर०॥ वे गुनवती॥ भाम ॥मेरे०॥ कीजौ सवसौं प्रीति ॥चतुर०॥ तजि चोरी को रीति ॥मेरे०॥ जननी वलि वलि जाइ ॥चतुर०॥ आवौ सुयस वढ़ाइ ॥मेरे०॥ भूवा यह सिख देत ॥चतुर०॥ भूरि वलैया लेत ॥मेरे०॥ जग होइ विरद वरवान ॥चतुर०॥ दीजो इहि विधि दान ॥मेरे०॥ सुनौं वड़ाई कान ॥चतुर०॥ सजन देहिंगे मान ॥मेरे०॥ उत लाइक रवि वंस ॥चतुर०॥ तुम कुल सोम प्रसंस ॥मेरे०॥ चले महा दल साज ॥चतुर०॥ श्री पति राखै लाज ॥मेरे०॥ निकसत नगर वरात ॥चतुर०॥ मुदित होत हिय तात ॥मेरे०॥ पिता सुकृत फल पाइ ॥चतुर०॥ वाजे गहक वजाइ॥मेरे०॥ खरचत धन व्रजराज ॥चतुर०॥ दई दाहिनों आज ॥मेरे०॥ चिंघारत गजवाज ॥चतुर०॥ लखि लाजत सुरराज ॥मेरे०॥ उड़ी रेनु खुर गगन ॥चतुर०॥ देखि देव भये मगन ॥मेरे०॥ सँग वने गोप कुमार ॥चतुर०॥ मोहित कोटिक मार ॥मेरे०॥ दिपत नंद कौ ग्राम ॥चतुर०॥ सम नहिं श्रीपति धाम ॥मेरे०॥ रतननि वारति मात ॥चतुर०॥ आनँद भीजत तात ॥मेरे०॥ मुदित नंद की घरनि ॥चतुर०॥ छकी भाग्य फल वरनि॥ मेरे०॥ रच्यौ है अधर तँवोल ॥चतुर०॥ अमी श्रवत मृदु वोल ॥मेरे०॥ मंद मंद मुख हँसनि ॥चतुर०॥ दसनावलि अति लसनि ॥मेरे०॥ गंडनि रुरकत अलक

॥चतुर०॥ परति अंग छवि झलक॥मेरे०॥ दिपत जलज मणि पाँति ॥चतुर०॥ वदन सतगुनी काँति ॥मेरे०॥ मरुवट मंडित भाल ॥चतुर०॥ गज सिसु सुरभतु चाल ॥मेरे०॥ सोभित मौर जराइ ॥चतुर०॥ लुठत मदन गन पाँइ ॥मेरे०॥ डरति डीठ के भार ॥चतुर०॥ निरखि पिवति जलवारि ॥मेरे०॥ व्रज वनितनि की भीर ॥चतुर०॥ मंगल गान गँभीर॥मेरे०॥ नख सिख वन्यौ अनूप ॥चतुर०॥ वृन्दावन हितरूप मेरे लाड़िलरे वरना ॥

राग गौरी–पद ८१

नवल वना गिरधरनु मुदित है। गोकुल पति कुल चंद उदित है॥टेक॥ सिर पर फव्यौ मुकेसी चीरा। रतन पेंच दुति दमकत हीरा॥ अहा कहा सेहरौ जगमगै। संकित जननी डीठि जिन लगै॥ दसनावलि ऐसी छवि दीनी। कुंद कली उपमा रद कीनी॥ रचे तँवोल अधर अरुनाई। पाक विंव की दुति जु चुराई॥ ललित कपोल अलक घुँघरारी। कुंडल छवि रवि उपमा टारी॥ दृग दीरघ छवि भरे लजौने। लोल महामपि वलित सुकौने॥ त्रिभुवन गहनौं तापै वरना। मनसिज सैना लोटत चरना॥ मुखपर सोभा सरसति ऐसें। पून्यौ उमगत सागर जैसें॥ श्री व्रजराज अजिर के माहीं। यूथनि वनिता आवैं जाहीं॥ नैंन धरे कौ फल सव पावैं। हुलसि हुलसि वरनै दुलरावैं॥ लेति वारने आरज गोपीं। कृष्ण विवाह महा सुख ओपीं॥ कहतिं धन्य दिन भाग्यनु पायौ। यह सुख विधिना नैंन दिखायौ॥ इक करि तिलक चिवुक कर लावैं। चोरी के दिन सुधि जु करावैं॥ लला कुटेव छाँड़ि अव दैहौ। वड़े सजन घर व्याहनि जैहौ॥ हर हर हँसीं सुनत व्रजवाला॥ सकुचि कछुक मुसिक्याने लाला। जसुमति भाग्य मनावति हरपी॥ रतन मूँठ जाचक पै वरपी॥ भींजत व्रज जन परम सनेहा। हरिपुर तें गरुवौ सुख एहा॥ जहाँ दूलह हरि दुलहिनि राधा। वृन्दावन हितरूप अगाधा॥

राग झँझौटी तथा गौरी–पद ८२

आज वन्यौ नवरंग वरना श्याम सलोनौं। अलक रुरत मुखपर जु

छवीली सौरभ मंडित अंग ॥ वरना श्याम सलोनौं ॥टेक॥ मरुवट वदन विलोकि सखी री अद्भुत अवसर जान। उत्सव बड़ौ मानि मनु पूज्यौ इंदु इंदिरा पनि ॥ श्याम कपोलनि में अस झाँई सुंदर कुंडल कान। दुहुँ तट मनौ भोर रविजा जल जुग रवि बैठे न्हान ॥ कज्जल वलित नैन रचि रेखा इहि छवि उपमा नाहिं। मानौ तम सूक्ष्म जु रूप धरि छिप्यौ चंद के माँहि॥ भौंह गरूर गोल सुठि नासा भरयौ छैल छवि ऐंड़। सरसत विपुल उमाह व्याह मन भरत झुकौ है पैंड़॥ कर वर वन्यौ मखतूल डोरना अहा कहा यह सोभा। कमल कंठ मनु मधुपनि पाँती बैठी सौरभ लोभा ॥ गोप कुँवर नछत्र नभ मानौं उदित कृष्ण राकेस। समयौ सरद व्याह भयौ अवसर दिपत मनोहर वेस ॥ वरनी भान भवन भूपण त्यौं वरना व्रजपति ग्रेह। वृन्दावन हितरूप दुहूँ के व्रजजन सरसत नेह ॥

राग मारू—पद ८३

सवकौ जिन चित्त चुरायौ साँवलरौ वरना रूरौ। श्रीराधा सुहाग सम सागर जिनि पायौ वर पूरौ ॥ साँवलरौ वरना रूरौ ॥टेक॥ ढरकी वाँयें भाग कसूँभी पगिया पेंच छवीले॥ यह छवि विथकित मनसिज सैना मंत्रनि मानौं कीले ॥ रतन पेंच कलंगी की ओभा सोभा एसी दीनीं। मनौ राकापति सीस बैठिकैं ओप भूमि सुत कीनी ॥ पीत इजार सहानों कंचुक तनसुख कौ अति झीनों। छनि छनि निकसत अंग काँति तरुनिनु कौ मन हरलीनों॥ कनक तार सिर फव्यौ सेहरौ लरी ढरकि मुख आई। मनु कंचन के जाल परयौ ससि ऐसी उपमा पाई ॥ पट कसूँभ लरुवा कर राजत अधरनि ओर उचायौ। मानौ कमल मयंक मिलन अनुराग वीच दै लायौ ॥ कटि खीनी पर केहरि वारौं लटकि चलनि गज छौना। राधा सम वरनी वर हरिसम है न भयौ अरु होंना ॥ धनि जसुमति व्रजपति आँगन में मच्यौ प्रेम धमतूरौ। वृन्दावन हितरूप धन्य श्रीराधा अविचल चूरौ ॥

राग सोरठ तथा ख्याल की तरह–पद ८४

वरना परम रँग भीनौं। सब कौ जु मन हरलीनौं॥ भृकुटी जुटीं छवि भारी। पगिया झुकनि पर वारी॥ कुंडल कपोलनि भ्राजें। केसरि कौ तिलक विराजें॥ अधरनि रचि रह्यौ वीरा। कलगी जग मगत हीरा॥ अलकैं रुरनि यौं सोभा। मुख कमल मनौं अलि लोभा॥ मरवट वदन रुचि काढ़ी। छवि आज अहा कहा वाढ़ी॥ वेसर वन्यौ अस मोती। सोभा फवी अनहोती॥ कंठी धुकधुकी ग्रीवा। मानौं दई छवि सींवा॥ वरना जु परम सभागौ। पहिरें सहानौं वागौ॥ लसै पानि डोरना रूरौ। अङ्गद भुजनि कर चूरौ॥ किंकिणि वनी छवि जाला। चौकी जलज मणि माला॥ महिंदी रचे कर चरना। वन्यौ त्रिभुवन मोहन वरना॥ चूरा कनक मणि जरिया। नूपुर धुनि सब मन हरिया॥ दुलरावति हैं व्रज वाला। नव दूलह नंद कौ लाला॥ छवि वरपत साँवल अङ्गा। लखि लाजत निकर अनंगा॥ वरना वनी कौ प्यारौ। व्रज कौ मणि राज दुलारौ॥ मेरौ लाल वना सुख दानी। लखि महरि वारि पियौ पानी॥ महा मंगल व्रजपति धामा। त्रण तोरतिं हैं सब भाँमा॥ धनि तात मात सुभ करनी। हितरूप अवधि वरी वरनी॥ जब व्याह दुलहिनी लावै। तब जसुमति भाग्य मनावै॥ दुहुँ दासि लीक लिखि पावै। हित वृन्दावन जस गावै॥

राग गौरी आमेज ख्याल–पद ८५

री मेरौ लाड़िलरौ वरना। सब व्रज जन मन सुख भरना॥ जाके हाथ वँध्यौ है डोरना। रची महिंदी छवि चित चोरना॥ अब नख सिख सुभग सिंगारयौ। मैं तौ निरखि अपनपौ वारयौ॥ मोपै मन वहुरि न आयौ। मोहन के हाथ विकायौ॥ यह वना परम मिठवोलना। वरनी कौ भूषण ढोलना॥ व्रज घर घर पूरि रह्यौ है। सुख सिंधु अथाह वह्यौ है॥ अति रँग भीनौं नँदगावरौ। दूलह वन निकस्यौ साँवरौ॥ भूवा विधि विधित करावै। हिय हुलसी मूठ उठावै॥ मन हरनी जसुमति मैया। धन खरचति लेति

वलैया ॥ भागनि किहिं भाँति वखानौं । अति मुदित घोष कौ रानौं ॥ कहा व्रज जन फूल सुनाऊँ । उपमा जग में नहिं पाऊँ॥ वरना मन आनँद सरसै। श्री वदन सत गुनी वरसै॥ गोपनि कुल सजें हैं वराती। भइ सवकी सीतल छाती ॥ सोभा घन ऊनै आयौ । सवनैं दृग वांछित पायौ ॥ यह अमल गगन ग्रह नँद री। जहाँ उदित कृष्ण छवि चँद री॥ हितरूप वना दुलरायौ। बृन्दावन हित जस गायौ ॥

राग मारू–पद ८६

जग मोहन वरना एरी चलि देखि सौंह मोहिं तेरी । आज लाल सोभा मित नाहीं भटू मान सिख मेरी ॥ जव साजे तन वसन सहाने हौं ठाड़ी भई नेरी । ऐसी गति मो मन जु ह्वै गई मनु कर चकरी फेरी॥ भूवा दियौ वहुत धन जसुमति मोतिनु मूठ वगेरी । व्रज वनितनि वारे मणि भूषण नेगिनु रासि सकेरी ॥ अन होती अरु होती सव विधि जननी करी घनेरी । ऐसौ अङ्ग रूप निधि उमड्यौ सनमुख सकत नहेरी ॥ सूधी चलि वाही घर वेगी छाँड़ि दाहिनी डेरी । अवसर भलौ गहरु तजि सवही घर के काज निवेरी ॥ अव घोरी चढ़िहै जु अतिलड़ौ कहति नइनियाँ टेरी । पटहिं निसान और वहु वाजे वरपत हैं सुख ढेरी॥ मोहिं कल परति न तनक लाल की सोभा दृग उरभेरी। अहा कहा उहि वदन माधुरी वरवस यह मति घेरी॥ दूलह ब्याह दुलहिनी लावै हौं तव ह्वै हौं चेरी। बृन्दावन हितरूप दुहुँन की वरनौंगी प्रेम पहेरी॥

राग गौरी–पद ८७

लाल वना पै री वारनें विधि रचि काढ़ी लीक । जननी भागिनु हो सजनी मित नहीं वारति सोने सींक ॥ भूवा भगरति हो अपनी लीक कौं गहि रही घोरी वाग । तन मन फूलत हो रानौ घोष कौ उमग्यौ है सागर भाग ॥ आनन कमनी हो अमित अमी भरयौ नाहिंन जाको पार । यह दिन दूलह हो सजनी न्याइ अव मोहित कोटिक मार ॥ मोती वगरे हो व्रजपति पौरि पै घोरी चढ़त गुपाल । मनु भर लाग्यौ हो पावस रितु सखी वरपत

घन यह काल॥ नगर नँदीश्वर हो सजनी गोइरे राजत गोपनि टोल। कहत चलौ मिलि हो वेगिहिं सजन घर लागत मीठे वोल॥ द्वार पहारू हो भये मुनि देव नर या अतिलड़ के व्याह। वृन्दावन वलि हो इहि हितरूप पै सव मन विपुल उमाह॥

मंगल छंद राग विलावल—पद ८८

भूवा आनि आरतौ कीयौ। घोरी चढ़न नेग लै लीयौ॥ सोनें सींक सवासिनि वारैं। मंगल गावति वनितनि लारैं॥ लार वनिता वृन्द मंगल पौरि पौरिनु गावहीं। रोहिनी हरि जननी जसोमति वारि द्रव्य लुटावहीं॥ चाचीरु ताई पुर वधू मणि मूँदरी नग देति हैं। घोरी चढ़यौ व्रजराज सुत लखि वारनें सव लेति हैं॥१॥ गज अम्वारी चढ़े वलिदाऊ। तिन आगें उपनंद सु ताऊ॥ धरानंद ध्रु वनंद चले हैं। झूमत कुंजर संग भले हैं॥ झुमैं सु कुंजर टोल पुनि सुठिनंद इक दिस भ्राजहीं। अभिनंद गुनि गनि धरत थैली सकल सामा साजहीं॥ नाना सुमुख पुर पौरि ठाढ़े वाट हेरत रावरी। वाहन वड़ौ मनु इन्द्रवाहन विविधि गज रचना करी॥२॥ करमा धरमा नंद उजागर। पुनि जसनंद सकल गुन नागर॥ ये चाचा गिरिधर के प्यारे। चढ़ि सुखपालन सँग सिधारे॥ पालकी चढ़िकैं संग गवने सचे सकटनि भार हैं। जसवंत जसधर जसा मामा रथनि में असवार हैं॥ मना अरु मनसुखा चपल तुरंग चढ़ि आगें भये। तोप अर्जुन भोज ताजी कच्छ के लीये नये॥३॥ रैंता पैंता भये हैं वराती। अस्व कुदावत ते वहु भाँती॥ सुवल सुवाहु निकट गिरिधारी। चंचल अस्व नचावत भारी॥ अस्व चंचल नचत भारी देखि अतिलड़ हँसत है। मनहुँ अद्भुत मदन वपु धर कृष्ण के सँग लसत है॥ वृन्दावन हितरूप वलि हरि नंद पौरी आइयौ। परे हैं निसाननि धाइ वाजे सवनि हरषि वजाइयौ॥

राग गौरी—पद ८९

यह दल सजे हैं वरात॥ श्याम नवरंगी वरना॥ खरचैंगो धन तात

गोप रज वंसी वरना ॥ सज्यौ है सेहरौ सीस ॥श्याम०॥ लेहु संग ब्रज ईस ॥गोप०॥ सकल घोप कौ राउ ॥श्याम०॥ पुत्र ब्याह मन चाउ ॥गोप०॥ ताऊ श्री उपनंद ॥श्याम०॥ देहु द्रगनि आनंद ॥गोप०॥ ठाढ़े ब्रजपति पौरि ॥श्याम०॥ जननी लखि तृण तोरि ॥गोप०॥ संग गोप गन भीर ॥श्याम०॥ सखनि सहित वलवीर॥गोप०॥ मुख विधु निरखत ओर॥श्याम०॥ सबके नैंन चकोर ॥गोप०॥ मौर फव्यौ जरी तार ॥श्याम०॥ मोहित कोटिक मार ॥गोप०॥ सुभग सेहरौ सीस॥श्याम०॥ देखत थकित मुनीस॥गोप०॥ नख सिख अद्भुत वेस ॥श्याम०॥ रुरत छवि भरे केस ॥गोप०॥ पान भरयौ मुख रंग ॥श्याम०॥ सोभा वरषत अंग ॥गोप०॥ वनें हैं वराती भूप ॥श्याम०॥ सेना सजी है अनूप ॥गोप०॥ अगनित घुरहिं निसान ॥श्याम०॥ जहाँ तहाँ मंगल गान ॥गोप०॥ गहरी वंब घुराइ ॥श्याम०॥ मदन भेरि सहनाइ ॥गोप०॥ चलहु बिरमि लखि भूप ॥श्याम०॥ बृन्दावन हितरूप ॥गोप०॥

राग मारू—पद ६०

ए वरना रँगभीनौ ठाढ़ौ नंद दुवार ॥ इक मोहन पुनि ब्याह मोहनी दरसि परी यह वार ॥ए वरना॥टेक॥ नैननि नान्ही ओक सखी री यह छवि सिंधु अपार । गोता खाइ खाइ द्रग उछरत दवत लहरि पुनि भार ॥ सीस सेहरौ वसन सहाने मौर फव्यौ जरी तार । मुनि मन ठगे देव मन चक्रित अस वपु सौभग सार ॥ तृण टूटत वलिवीर पै आज डीठ डरनि के भार । बृन्दावन हितरूप की अङ्ग अङ्ग परत वौछार ॥

राग मल्हार तथा मारू—पद ६१

पावस रितु ह्वै प्रेम वधायें नंद घर आयौ । चौबाई सनेह वहु घुमड़नि गगन हियें छायौ ॥टेक॥ भूपनिं दल वादल मनु धावत इहिं विधि दरसायौ । पंचनाद गरजनि मनौं जहाँ तहाँ श्रवणनि अति भायौ ॥ रतन पेंच कलँगी जु वादले कंचुक ओप वढ़ायौ । मनु वदरी वदरी प्रति दामिनि कौंधि चौंधि द्रग लायौ ॥ मागध चारन अरु वंदीजन पढ़त हैं विरद सुहायौ । सुक पिक

मोर मुदित मन चातिक वांछित सब पायौ ।। दादुर नाद जननि रव झिल्ली हय हींसनि सरसायौ । वन उपवन भये हरित नारि नर उर धर मोद सिरायौ।। सर सरिता जाचकनि मनोरथ भरि धन वारि छकायौ । कियौ सुकाल सुजस जग पूरित सुमति जननि गायौ ।। गोप इन्द्र हरि जनक विनामित यह सुख वरपायौ । निरखि अपूरव विधि चोमासौ मुनि मन विरमायौ ।। कृष्ण विवाह आज नभ वासिनु अचिरज उपजायौ। वृन्दावन हितरूप भीजि वरना मिलि दुलरायौ ।।

राग गौरी–पद ६२

राह लगै जिन धूप।। वना मेरे विरमि लै ।।तुम नन्दन व्रजभूप। अति-लड़े विरमि लै।। कदमनि सीतल छाँह ।।वना०।। जल सरवर वन माँह ।।अति०।। जसुमति प्राण अधार ।।वना०।। अति कमनीय सुकमार ।।अति०।।तुम भूषण कुल गोप ।।वना०।। दुलहिनि सब व्रज ओप ।।अति०।। निज मंदिर संकेत ।।वना०।। कुँज पुँज सुख खेत ।।अति०।। भूपनि दल रहे छाय ।।वना०।। चलहु वरात बनाय ।।अति०।। खरचि सजन के द्वार ।।वना०।। लेहु द्रव्य बहु भार ।।अति०।। विरद सोमकुल राखि ।।वना०।। लायक ग्रंथनि भाखि ।।अति०।। मारग हेरत सजन ।।वना०।। वेगि करहु मिलि भजन।।अति०।। विरियाँ चलन अनूप ।। वना मेरे विरमि लै ।। वृन्दावन हितरूप ।। अतिलड़े विरमि लै ।।

बरात श्री वृष्भानुपुर कौं चलवे की सोभा

छंद राग सोरठा–पद ६३

जहाँ ठाढ़े मदन गुपाला । तहाँ आये व्रज भुव पाला ।। द्विज वर बहु लारैं आये । गौ रतन दान करवाये ।। रतन अरु गोदान करिकैं नंद सुत व्याहन चढ़े । करतिं मंगल गान वनिता वेद हरषि द्विजनि पढ़े ।। नालिकी मैं व्रजराज वैठे साज अगनित सजत हैं । उत व्योम इत व्रज ईस आगे विविधि वाजे बजत हैं ।।१।। बनें आजु गोप महरानें । तिन छवि कवि को जु बखाने ।। चुनि धरे हैं कमोरिनु वागे । तिन पहिर अति भले लागे ।।

लगें अति हीं भले एकत कोस चौरासी भये । बहुत दै सनमान सबकौं संग व्रजपति नें लये ॥ लटपटी सिर पाग तिनपै रचि पिछौरा पुनि कसे । देखि गोप समाज गिरिधर अधिक मनहीं मन हँसे ॥२॥ कोउ सकटनि पै छवि पावैं । कोउ रथनि चढ़े दौरावैं ॥ कोउ वैठि चले चौंडोला । कोउ कूदत करत कलोला ॥ कूदि करत कलोल व्रजजन हाँसि कूटक रचत हैं । आज ब्याह गुपाल कौ कोउ मुदित ह्वै ह्वै नचत हैं ॥ कोऊ करहनि पै फिरत सव करत वातैं रस भरी । चलत गहरु न करहु मारग सजन हेरत नगधरी ॥ कोऊ सोहत गज असवारी । कोऊ अस्व कुँदावत भारी । कोउ हरि निकट विविधि गोपाला । कोउ कौतूहल करत रसाला ॥ कौतिक नचावत अस्व कोऊ पालिकीं अगनित चलीं । हय गयनि कौ को अंत पावै रथनि की पंकति भली ॥ वहिल पैदल चंद जित कित गनत नहिं करहा वनैं । भये पुर वृषभान सनमुख घुरे सहदानैं घनैं ॥ कैऊ जोजन चले हैं वराती । उड़ी जु रेनु भई मनु राती ॥ वन आवत कोउ रन जोरैं । उमड़े मनु घन हर घोरैं ॥ घोरैं मनौं घन पाँति सुख कौ आज अंवुद ऊनयौ । वरषहै रस रंग निरवधि वर विमाननि नभ छयौ ॥ आये उडंवर मेघ मंद सुगंध सीतल पवन है ॥ वृन्दावन हितरूप अतिलड़ मंद मंद सु गवन है ॥

वरात की सोभा व्रजवधुन के वचन

राग विहागरौ—पद ६४

चल्यौ री निसान वजाइकैं ॥ मेरौ लाइक वरना ॥ गोपन दल छवि देत री ॥साँवलरौ वरना॥ सजनी देखौ दूरि तैं ॥मेरौ०॥ रँग वरषै सजन के खेत री ॥साँ०॥ हरि हलधर इक संग हैं ॥मेरौ०॥ जहाँ झुके हैं गजनि के वृन्द री ॥साँ०॥ छत्र फिरत है सीस पै ॥मेरौ०॥ उदित घोप कौ चंद री ॥साँ०॥ विरमि विरमि व्रजपति चलैं ॥मेरौ०॥ सुत की करत सँभार री ॥साँ०॥ कुंवर कमल तें कोमलौ ॥मेरौ०॥ पोपत वारहु वार री ॥साँ०॥ वे देखि तरु वर पाँति जहाँ ॥मेरौ०॥ तहाँ ठाँढ़ो कुंवर व्रजेस री ॥साँ०॥ तिन

आगें उपनंद जू ॥मेरौ०॥ मन मुदित प्रेम आवेस री ॥साँ०॥ सुवल ढुरावत चँवर है ॥मेरौ०॥ मधुमंगल देत तँवोल री ॥साँ०॥ आज सगुन उहि पुर भलें ॥मेरौ०॥ चलत लाल जिहिं ओर री ॥साँ०॥ पैंड़े में जो जो मिलें ॥मेरौ०॥ दै हैं मोद अपार री ॥साँ०॥ गोकुल पति कुलदीप के ॥मेरौ०॥ सुकृती जन कौतिक हार री ॥साँ०॥ निरवधि आनँद वरषि है ॥मेरौ०॥ नगर भयानें भूप री ॥साँ०॥ अटनि चढ़ी जहाँ भामिनी ॥मेरौ०॥ निरखैं वदन अनूप री ॥साँ०॥ नैंननि फल ते पाइ हैं ॥मेरौ०॥ हम जानी यह नीक री ॥साँ०॥ जसुमति उर कौ रतन रचि ॥मेरौ०॥ विधि काढ़ी छवि लीक री ॥साँ०॥ सूरज मुखी झुकी जहाँ ॥मेरौ०॥ ज्यों न लगे तन धूप री ॥साँ०॥ वृन्दावन हित वारनें मेरौ लाड़िक वरना ॥ अंग अंग उझलत रूप री साँव-लरौ वरना ॥

छंद राग परज—पद ६५

कुसमनि वृष्टि होत मारग में प्रमुदित गोप विहारी । नवल छैल वरना के इत उत मनों रूप फुलवारी॥ विरमि विरमि कैं चलैं रम्य वन देखि देखि हुलसाहीं । नाना भाँति खगनि सुनि वानी कौतिक सखा कराहीं ॥ कौतिक सखा करत मारग में कूटक विविधि वनावैं । वातें वहुत मरम की कहि कहि श्यामहिं अधिक हँसावैं ॥ पुनि नियरे आये वरसानें हुलसे सजन सनेही। प्रेम सरोवर विरमि वराती सजन पोंछि मुख देही ॥ इततें राज कुँवर श्रीदामा सजे भूप दल भारी । लेंन चले आगोंनी सनमुख चढ़ि गज की असवारी ॥ इत उत तें आवनि अति हित की सवके चितहिं चुरावें । उमड़े उभै सिंधु सोभा के वरनत कापै आवैं ॥ लहरिं धुजा फहरात मंद गति वाजत वहुत निसाना । कुंजर मत्त जहाज फिरत मनों फैन जु वरछी वाना ॥ अद्भुत अव-सर आज सखी री प्रगट रतन दरसावैं । वृन्दावन हितरूप दुहूँ दल आवत यों छवि पावैं ॥

करखा राग पंचम—पद ६६

आज गोविंद ब्याहन चढ़यौ घोप पति कुँवर रावल धनी लैंन आयौ। उतहि त्रैलोक मणि श्याम सौभग सींव इतहिं श्रीदाम किहिं विधिव नायौ ॥ फवि रह्यौ सीस चीरा मुकेसी सुभग नव रतन पेंच तापै सुहायौ। श्रवण कुंडल महामणिनु के जगमगें भोर रवि जुगल जिहिं छवि छिपायौ ॥ तिलक मृग मद वन्यौ उच्च अतिभाल पर कुटिल अलकनि मदन चित चुरायौ। चिवुक अतिचारु ग्रीवा ललित सींव छवि वाहु आजानु गुन परै न गायौ ॥ करनि चूरा मणिनु खचित बाजूबंद पीन उर देखि सब हगनि भायौ। जलज मणिमाल चौकी नगनि हिय लसी नाभि सर अधिक सोभा वढ़ायौ ॥ खीन कटि किंकिनी नाद रोचक महा जंघ रंभा कनक द्युति लजायौ। चारु चूरा चरण मनहुँ वारिज खिले गौर तन तेज अँग अंग छायौ ॥ विविधि नग खचित कलंगी वनी सीस पर उदित मुख चंद सो यौं दिखायौ। कुँवरि श्रीराधिका वीर अचिरज कहा जासु की पौरि सिर रमानायौ ॥ रूप नख सिख परत अंग उभक्यौ मनौं सजल दृग वंक हरि लैन धायौ। मनहुँ खेलत कला सुभग नटुवा वन्यौ अस्व गहि डोरि इहि विधि नचायौ ॥ कृष्ण दृग दृग मिले मान वहु विधि दियौ और सब भूप गन सीस नायौ। वृन्दावन हितरूप अगमनौं जाइकैं मुदित वृषभान सुत सजन लायौ ॥

छप्पै—पद ६७

हय हंकारनि खुरी करत छूटत जु अलोलनि। विहँसत गोप कुमार करावत विविधि कलोलनि ॥ तुर्रा कलंगी रतन पेंच जगमगत भुकनि में। दपटि करावत निर्त्त चलत चढ़ि भीर रुकनि में ॥ मनहुँ आज नटुवा मदन करत कला वहु तन धरैं। राजत वरात व्रजपति निरखि अस गोपनि सुत कौतिक करैं ॥

छप्पै—पद ६८

करहनि की भलि मुरनि दुरनि वाजीनु लसी है। जीन जराव लगाम

नगनि कलंगी जु गसी है ॥ मुहरी रतननि जुटी छुटी तिनतैं जु जोति है। पीत दरयाई वंद हलनि मति पंगु होति है ॥ वहु रंगनि चित्रित अंग अँग गुण जात अस्व कमनीय सव । भनि वृन्दावन हितरूप वलि गहि डोरि नचावत छैल नव ॥

छप्पै–पद ६६

तिन मधि मदन गुपाल लाल दिन दूलहु आवत । मीनध्वज निकरनि में मनु वसंत छवि पावत ॥ किधौं मेघ मंजुल धुरुवा गिरि सिखर उदित है। इहि विधि सोभित गज असवारी कृष्ण मुदित है ॥ संग वनी मित्र जन मंडली अरु वचननि वरपत रंग अति । भनि वृन्दावन हितरूप वलि आवनि वरसानें ललित गति ॥

छप्पै–पद १००

नवल छैल चढ़ि चलत तुरंगनि गति सौं फेरनि। संख झालरी भेरि उच सहनाईनु टेरनि ॥ धौंसनि की धँधकार वंव गहरे सुर घोरनि । घंटनि की झनकार चलत कुंजर वन कोरनि ॥ फरहर निशान घरहर रथनि वृन्दावन हित कहि परै न मुख। छवि अंवुद आवत ऊनयौ यह वरसानें वर्षत जु सुख॥

छंद राग परज–पद १०१

कहा कहौं सोभा जव आये सजन खेत जन माहीं । घूँमत गज अस्वन की हींसन जन फूलनि मित नाहीं ॥ सुभग सवाँरी भूमि जहाँ नवरंग विछौंना कीये । आप आपनी रुचि गोपनि विश्राम उतर तहाँ लीये ॥ लिये तहाँ विश्राम उतरकैं तंवू तनें अपारा । अगनित वाजे वजे एक सँग मंगल वहु विस्तारा ॥ कोसनि छई वरात जहाँ तहाँ भूपनि दीनें डेरा। श्री वृषभान पहिल कइ जोजन सचि धरे साज घनेरा ॥ भान सरोवर तीर घोपपति कमनी ठौर विचारी । रंग विरंग वितान छये जहाँ भूमि सुगंध समारी ॥ दुग्ध फेन सम विछे विछौंना वैठे गोप नरेसा । कोटि कोटि मनमथ कौ मनमथ दूलहु अद्भुत वेसा ॥ सुवल सुवाहु मना जु मनसुखा मधुमंगल वहु ग्वाला ।

चहुँदिस उडुगन मध्य उदै भयौ हरि ससि पून्यौ काला ॥ अगनित गोप मध्य वृजरानौं वृन्दावन हित राजै । देव सभा हू बैठ्यौ सुरपति पग लागत मन लाजै ॥

छंद राग परज—पद १०२

उमहि रहे पुरवासी सबही दूलह देखन धाये । भूषण बसन अलंकृत अङ्गनि गोप कुँवर बनि आये ॥ पूरित प्रेम भये जब नैंननि निरख्यौ गोकुल चंदा । मोहन वदन माधुरी पी भयौ रोम रोम आनंदा ॥ रोम रोम आनंद भयौ अति चितै रहे मुख ओरी । पीवत भरि भरि नैंन माधुरी जैसें त्रिपित चकोरी ॥ हरि हलधर आगें ब्रजपति कै बैठे मुदित महाई । मौर सेहरौ सीस विराजत कौतिक रूप निकाई॥एक कहैं दूलह पर वारौं रतिपति यूथ अनेकैं। एक कहैं दुलहिनि छवि आगरि रची विधि जोरी एकैं ॥ एक कहैं लाड़ी अति गोरी कारौ कुँवर कन्हाई। कौन पुन्न कौ फल यह वरना एसी दुलहिनि पाई ॥ एक कहैं पट नील धरें तन यह हरि बलिदाऊ । एक कहैं यह गौर पुष्ट तन नँदनंदन कौ ताऊ॥ एक कहैं मुख मधुरी मुरली यह साँवरो बजावै। वृन्दावन हित एक कहैं यह झूँठौ दान लगावै ॥

राग धनाश्री—पद १०३

दूलहु साँवरौ बनि आयौ । साज बरातहिं लायौ ॥टेक॥ बैठ्यौ गिलम बिछाई रे सजना आज भयौ मन भायौ । यूथनि यूथनि ठाढ़ी वनिता सब मिलि मंगल गायौ ॥ घूँमत गज हींसत बहु धुरला तंबू सुभग तनायौ । भाग सुहाग भरी मेरी लाड़ी एसौ सजन बुलायौ ॥ अगनित धुरहिं निसान खेत मधि देखि बड़ौ दल छायौ । एसौ बना न ऐसी बरनी गोप सुकृत फल पायौ ॥ पिता भयानें भूप अतिलड़ी ताकौ विरद बढ़ायौ । गोकुल रानौं आज खेत यह नट बेड़िया कहायौ ॥ सुनियौ सजन बराती जसुमति सुत अन मिल सो जायौ । जानि परी सब जग चतुराई श्याम रंग दरसायौ ॥ सुनि कौतिक इक औरौं सजनी प्रगट ही परत लखायौ । वृन्दावन हितरूप

साधु प्रति यह चंचल मुनि गायौ ॥

श्री वृषभानपुर की सोभा

राग परज–पद १०४

गिरितरहटी मध्य ब्रज सोहे गोप नृपति बरसानों। किधौं अवनि सौभाग्य धरयौ वपु दिन दिन सुख सरसानौं ॥ को कवि वरनसकै रसना जिहिं संपति की मित नाहीं। रमा उमापति मन करि ध्यावत सुर देखनि पछिताहीं ॥ देखन कौं पछितात देव गन कमलापुर जु विसेषौ। परगट भ्राजमान भुवतल में सो जु बरातिनु देखौ ॥ सरवर अमी स्वाद जल पूरित मणिनु खचित चहुँ ओरैं। नाना रंग कमल जहाँ फूले बहु जल भरे हिलोरैं॥ मर्कत मणि विद्रुम हीरनि की हाटक सिढ़ी खची हैं। तिन में विविधि भाँति चतुराई कारीगरनि रची है ॥ मधुप वृन्द लुब्धे सौरभ रस नाद महा रुचिकारी। सारस हंस रीति कल बोलें होत कुलाहल भारी ॥ खेलत मीन रुचिर मुरगाई वतक विहंगम बोलैं। कनक घूँघरू चरणनि वाजत झुनक झुनक मग डोलैं ॥ गुटकत सुभग परेवा जहाँ तहाँ देवनि भवन बनें हैं। वृन्दावन हितरूप भानपुर वापी कूप घनें हैं ॥

छंद राग परज–पद १०५

नाना पहुप वाटिकां जहाँ वन उपवन लसत भले हैं। कोकिल कुहक सिपंडी निर्त्तत फूले कहूँ फले हैं ॥ वेली ललित वलित कंटनि बहु तरु जातिन की पाँती। हरे भरे पट रितु नवीन ते सोभित नाना भाँती ॥ नाना भाँति पाँति राजत तरु आवति सौरभ रेलें। उड़त पराग फाग वन मानों विटप खिलारी खेलें ॥ जाति अनेक विहंग और पसु विचरहिं जिहिं वन-माहीं। भान प्रताप रहत निर्भय पुनि पुनि निर्वैर रहाहीं ॥ झिरना झरत विविधि गिरि सोभित पुनि कंदरा सुहाई। ठौर ठौर मणि धातु नगनि मधि उपजत नाना झांई ॥ जहाँ तहाँ फुलवारि फूलरही विविधि फलनि की बारी। मणिमय कोटि रचित जहाँ कंचन गोख कँगूरा जारी ॥ गोपुर कनक खचित

बहु रतननि चौक चोंतरा आगें। मणि मालनि सब पौरि अलंकृत तिमिर गलिनु के भागें॥ श्री वृषभानुराय कौ जग में जंगमगात वरसानौं। वृन्दावन हितरूप निरखि कैं सजन हियौं सरसानौं॥

खेत कौ दाइजौ

छंद राग परज—पद १०६

मंगल द्रव्य लियें आये कुल वृद्ध और मुनि साथा। सरवत कलस आनिकें राखे वैठे जहाँ व्रजनाथा॥ खेत दाइजौ लाये बहुविधि रिषिनु आसिषा दीनी। दै सनमान सुविधि विप्रनि कौं व्रजपति वंदन कीनी॥ वंदन कर जब वैठे इत उत कलस गणेस पुजायौ। वागौ पट अमोल लै श्रुति पढ़ि दूलह कौं पहिरायौ॥ कंचन कलस जटित मणि झारी जापै चित्र वनाये। दिये गज वाज लच्च कइ मुहरैं अरु वहु साज गनाये॥ भये अति मुदित परस्पर सवही वहुत करत मनुहारी। उठे मुनीस नंद अज्ञा लै राज-भवन पगु धारी॥ चले जगावन मंडप पाछें बाजे गहक वजावैं। नंदराइ कल मानि वरौनी लिये राज घर आवैं॥ रचना देखि विविधि मंदिर की सवके लोचन फूले। मंडप वन्यौ अलौकिक जाकौं निरखि देव गन भूले॥ मंगल सब्द भये व्रजवाला गावतिं विविधि वधाये। वृन्दावन हित दै वरौ-निया वहुरि नंद पै आये॥

श्री लाड़ी जू प्रति माता के तथा सखी के वचन

राग गौरी—पद १०७

अहो लाड़ी आज विरमि इहि देसरा और कालिह चलैंगी वाट हो। लाड़ी मैं जानी कुल गोप तुव मणि सुकृत उदित ललाट हो॥ मेरी वरनी दिन द्वै विरमि लै अरु विरमि तात के धाम हो॥मेरी॥ ॥टेक॥ अहो लाड़ी ये दल घन ज्यौं ऊनयौ आज नँदीश्वर राइ हो। लाड़ी गरज गहर बाजे वजें धुरा तंबू तनें आइहो॥ अहो लाड़ी रतन कनक पट जग मगैं मनु कौंधत तड़ित सुभाइ हो। लाड़ी भिच्छक जन सरवर भरन धन वरपत चित

साधु प्रति यह चंचल मुनि गायौ ॥

श्री वृषभानपुर की सोभा

राग परज–पद १०४

गिरितरहटी मध्य ब्रज सोहे गोप नृपति वरसानौं। किधौं अवनि सौभाग्य धरयौ वपु दिन दिन सुख सरसानौं ॥ को कवि वरनसकै रसना जिहिं संपति की मित नाहीं। रमा उमापति मन करि ध्यावत सुर देखनि पछिताहीं ॥ देखन कौं पछितात देव गन कमलापुर जु विसेषौ। परगट भ्राजमान भुवतल में सो जु वरातिनु देखौ ॥ सरवर अमी स्वाद जल पूरित मणिनु खचित चहुँ ओरैं। नाना रंग कमल जहाँ फूले वहु जल भरे हिलोरैं॥ मर्कत मणि विद्रुम हीरनि की हाटक सिढ़ी खची हैं। तिन में विविधि भाँति चतुराई कारीगरनि रची है ॥ मधुप वृन्द लुब्धे सौरभ रस नाद महा रुचिकारी। सारस हंस रीति कल वोलें होत कुलाहल भारी ॥ खेलत मीन रुचिर मुरगाई वतक विहंगम वोलैं। कनक घूँघरू चरणनि वाजत भुनक भुनक मग डोलैं ॥ गुटकत सुभग परेवा जहाँ तहाँ देवनि भवन वनें हैं। वृन्दावन हितरूप भानपुर वापी कूप घनें हैं ॥

छंद राग परज–पद १०५

नाना पहुप वाटिका जहाँ वन उपवन लसत भले हैं। कोकिल कुहक सिपंडी निर्त्तत फूले कहूँ फले हैं ॥ वेली ललित वलित कंठनि वहु तरु जातिन की पाँती। हरे भरे पट रितु नवीन ते सोभित नाना भाँती ॥ नाना भाँति पाँति राजत तरु आवति सौरभ रेलें। उड़त पराग फाग वन मानौं विटप खिलारी खेलें ॥ जाति अनेक विहंग और पसु विचरहिं जिहिं वनमाहीं। भान प्रताप रहत निर्भय पुनि पुनि निर्वैर रहाहीं ॥ झिरना झरत विविधि गिरि सोभित पुनि कंदरा सुहाई। ठौर ठौर मणि धातु नगनि मधि उपजंत नाना झांई ॥ जहाँ तहाँ फुलवारि फूलरही विविधि फलनि की वारी। मणिमय कोटि रचित जहाँ कंचन गोख कँगूरा जारी ॥ गोपुर कनक खचित

बहु रतननि चौक चोंतरा आगें । मणि मालनि सब पौरि अलंकृत तिमिर गलिनु के भागें ॥ श्री वृषभानुराय कौ जग में जंगमगात बरसानौं । वृन्दावन हितरूप निरखि कैं सजन हियौ सरसानौं ॥

खेत कौ दाइजौ

छंद राग परज–पद १०६

मंगल द्रव्य लियें आये कुल वृद्ध और मुनि साथा । सरबत कलस आनिकैं राखे बैठे जहाँ व्रजनाथा ॥ खेत दाइजौ लाये बहुविधि रिषिनु आसिषा दीनी । दै सनमान सुविधि विप्रनि कौं व्रजपति वंदन कीनी ॥ वंदन कर जब बैठे इत उत कलस गणेस पुजायौ । बागौ पट अमोल लै श्रुति पढ़ि दूलह कौं पहिरायौ ॥ कंचन कलस जटित मणि झारी जापै चित्र बनाये । दिये गज बाज लच्छ कइ मुहरैं अरु बहु साज गनाये ॥ भये अति मुदित परस्पर सबही बहुत करत मनुहारी । उठे मुनीस नंद अज्ञा लै राज-भवन पगु धारी ॥ चले जगावन मंडप पाछें बाजे गहक बजावें । नंदराइ कल मानि बरौनी लिये राज घर आवें ॥ रचना देखि विविधि मंदिर की सबके लोचन फूले । मंडप बन्यौ अलौकिक जाकों निरखि देव गन भूले ॥ मंगल सब्द भये व्रजबाला गावतिं विविधि बधाये । वृन्दावन हित दै बरौनिया बहुरि नंद पै आये ॥

श्री लाड़ी जू प्रति माता के तथा सखी के बचन

राग गौरी–पद १०७

अहो लाड़ी आज विरमि इहि देसरा और काल्हि चलैगी बाट हो । लाड़ी मैं जानी कुल गोप तुव मणि सुकृत उदित ललाट हो ॥ मेरी बरनी दिन द्वै विरमि लै अरु विरमि तात के धाम हो ॥मेरी॥ ॥टेक॥ अहो लाड़ी ये दल घन ज्यौं ऊनयौ आज नंदीश्वर राइ हो । लाड़ी गरज गहर बाजे बजें धुरा तंबू तनें आइहो ॥ अहो लाड़ी रतन कनक पट जग मगें मनु कौंधत तड़ित सुभाइ हो । लाड़ी भिच्छक जन सरवर भरन धन बरषत नित

केचाइ हो ॥ अहो लाड़ी ब्रजरानौं सब जग विदित तुव पिता भयानें भूप हो। लाड़ी सजन सजन रस ज्यों रहे वर कन्या भाग अनूप हो ॥ अहो लाड़ी जहाँ तहाँ छाये गोप गन तिन मध्य घोप कौ ईस हो । लाड़ी तिन आगें वरना निरखि जगमगत सेहरौ सीस हो ॥ अहो लाड़ी खरचैगौ धन तात वहु जाकें भरे हैं विविधि भंडार हो। लाड़ी हय गय रथ दै दाइजौ भरि कनक रतन वहु भार हो ॥ अहो लाड़ी गोधन ग्राम अनेक पुनि तव दै हैं सुत महि-भान हो । लाड़ी भाँवरि विरियाँ प्रथम हीं जव लैहै कन्या दान हो ॥ अहो लाड़ी वारौठी विरियाँ भई वरना कियौ सुभग सिंगार हो । लाड़ी वाजे वाजत गह गहे आवत ब्रजराज कुमार हो ॥ अहो लाड़ी गोप ओप अव दैहिंगे इत उत वहु मंगलचार हो । लाड़ी पहिराऊँगी श्याम कौं कर तिलक रतन भरि थार हो ॥ अहो लाड़ी कौतिक देखौ महल चढ़ि पुर वीथिनु वर-पत रंग हो । लाड़ी हथियनि अंवारीं झुकीं अरु हींसत चपल तुरंग हो ॥ अहो लाड़ी वे ब्रजपति वंधुनि सहित तिन आगें सुंदर श्याम हो । लाड़ी चँवर ढुरत दुहुँ ओरतें सिर छत्र फ़िरत अभिराम हो ॥ अहो लाड़ी भूरि भाग्य जाके मणि दिपत परनै मेरी राज कुमारि हो । लाड़ी इत उत छवि-अविलोकिहौं गइ वलि वलि वारहुँवार हो ॥ अहो लाड़ी वरनी तो सम जग नहीं वर ब्रजपति सुत सम नाहिं हो । लाड़ी रावलपति गोकुलधनी सम सजन नहीं जगमाहिं हो ॥ अहो लाड़ी छुटत हवाई फुलझरी गावैं जहाँ तहाँ मंगल भाम हो। लाड़ी वृन्दावन हितरूप वलि गहमह वरसाने ग्राम हो॥

राग गौरी—पद १०८

रूप अवधि विधि रची ॥ प्राण जीवन लली ॥ लै त्रिभुवन छवि सची ॥भुवन भूपण लली॥ छये सजन दल आय ॥प्राण०॥ देखि महल चढ़ि जाय ॥ भुवन०॥ सुनत चढ़ि गई अटा ॥ प्राण०॥ उठी रूप मनौ घटा ॥ भुवन०॥ सखी वतावति जात ॥प्राण०॥ ये नग गोप वरात ॥भुवन०॥ जलज वितानिनि साथ ॥प्राण०॥ ये तंबू ब्रजनाथ ॥भुवन०॥ जहाँ पीत धुजा फहरात॥प्राण०॥

तहाँ दूलह साँवल गात ॥भुवन०॥ बिनु मित सैना गोप ॥प्राण०॥ देहैं मंडप ओप ॥भुवन०॥ नृप दल बादल साज ॥प्राण०॥ जाहि लखि दहलत सुर-राज ॥भुवन०॥ नव नव छवि सरसात ॥प्राण०॥ लै उतरौ दल प्रात ॥भुवन०॥ नख सिख ललित अनूप ॥प्राण०॥ वृन्दावन हितरूप ॥भुवन०॥ नित्य जु श्री हितरूप ॥प्राण०॥

बारौठी की आइबौ तथा बरात की सोभा

छंद राग परज-पद १०६

गहकि बजे सहदाने जब दूलहि चढ़ि अस्व विराज्यौ । संग सिंगारे गोप कुँवर बारौठी कौ दल साज्यौ ॥ लसें दुकूल आभरन मणि सैना मित वरनौं केती । मदननि निकर परत पग लाजें ऐसे बने जनेती ॥ ऐसे बने जनेती सब मिलि चले सजन दरबारा । सजी बागबारी देखन सुर नर मुनि कौतिक हारा ॥ छुटें फुलझरी और हवाई मोंचण्या बहु भाँती । निर्तत नटीं सुघर जन गावत प्रमुदित गोप बराती ॥ गज सौं गज हय सौं हय अरि अरि पैदर दल सुख पाला । आगें नंदनँदन दिन दूलहु संग गोप ब्रजबाला॥ अमरपुरी कैधौं कमलापुर किधौं विसेषी सोऊ । श्री वृषभान नगर कौं देखत चकित भये सब कोऊ ॥ तिन बीथिनु में आवत छवि सौं नंद गोप ब्रजरानौं । अतिलड़ व्याह वदन पर लखियत फूल सतगुनी मानौं ॥ भीर जानि असवारी गज की ब्रजपति श्याम कराये । बृन्दावन हित चँवर ढुरत ब्रज मोहन इहि विधि आये ॥

छंद राग परज-पद ११०

चेटक रूप सखी री इह ब्रज मोहन कुँवर कन्हाई । छवि सागर दृग मीन उरझि परे लीनें चित्त चुराई ॥ धनि विधिना जिहिं रचित आज श्री चढ़ी सकल अँग अंगा । धन्य सुवन ब्रजराज सखी छवि वरषत रूप अभंगा ॥ वरषत रूप अभंग सखी री धनि जसुमति जिनि जायौ । धन्य धन्य कीरति की जाई जिनि एसौ वर पायौ ॥ हरषि हरषि नर देव दुंदुभीं इत उत गहकि

बजावैं। मंद मंद गज की असवारी हरि वारौठी आवैं ॥ चढ़ी अटनि तें कुसुमनि बरपतिं जित तित तें नव बाला। चौंकत कृष्ण निहारि रहत पुनि परम रसिक नँदलाला ॥ बढ़ि बढ़ि छुटति हवाई अगनित परसत जाइ अकासा। कोटिनु जहाँ मसाल दुसाखा लोकनि भयौ प्रकासा ॥ देखि बजार चौक चौपर को चित्र विचित्र महाई। नीर गुलाब जहाँ तहाँ सींचीं बीथिनु सौरभ छाई ॥ भवन भवन पर धुजा पताका इहि विधि दरसत सोभा। वृन्दावन हित मनहुँ सकल पुर उलहौ भागिनु गोभा ॥

छंद राग परज—पद १११

अग्रज श्री ब्रजपति के पुनि उपनंद चले सब आगे। अतिलड़ के अनुराग मुदित मुख बीरी पहिरें बागे ॥ तिन पाछें आछें बनि आवत धरानंद ध्रुवनंदा। बिहँसत फूल झरत मुख मनु अभिनंद भरे आनंदा ॥ भरि अभिनंद परम अति आनँद सुठिसुनंद तिन साथी। करमानंद अरु धरमानँद चढ़े तन चित्रित हाथी ॥ निर्मलनंद पालकी राजत सबनि मध्य ब्रज ईसा। जात बसेरें राजहंस मनों चँवर ढुरत यौं सीसा ॥ सुमुख गोप नाना बरना कौ ताकी आवनि न्यारी। जसधर अरु जसवंत जसा मामा सँग गोप बिहारी ॥ औरौं गोप समूहनि आवत देस देस के भूपा। सुरपति सभा समाज गोप लखि लाजत मदन सरूपा ॥ आतसवाजी छुटत छवीली मानिक चौक मझारा। जिनमें विविधि रची चतुराई हय गय अस्व अकारा॥ छुटीं महताब एक ही बारी बढ़ीं गगन लगि जोती। वृन्दावन हितरूप निरखि दुति लाजे दुतिधर गोती ॥

छंद राग परज—पद ११२

पटहिं निसान ढोल ढफ झालरि झाँझि और सहनाई। प्रणव मृदंग रबाब तंबूरा मदनभेरि धुनि छाई ॥ बीणा वेणु और सारंगी मुरली मधुर सुहाई। तुरही अरु नरसिंघा बाजे महुवरि सुगति महाई ॥ सुगति महा कठतार सितारा धौंसनि की धुँधकारें। संखनि नाद होत बहु तबला बाजें गज

चिंघारें ॥ हींसें अस्व पालकी अघसें पैंदर संघट भारी । रथ घुर वहिल रुके मारग में फूली छवि फुलवारी ॥ किलकें कौतिक करें सखा सुख वरषत वीथिनु माहीं । उमड़्यौ सोभा निधि वरसाने वरनत आवत नाहीं ॥ ढरकी पाग रँगीली तिनपै तुर्रा कलंगी लोलें । फूलीं विटपनि डारि मनौं ए सौंनचिरी जु कलोलें ॥ प्रफुलित हैं मुख कमल सवनि वनें दूलहु संग वराती । करतिं प्रसंसा वधू निरखि धनि वासर धनि यह राती ॥ वारौठी विरियाँ अतिलड़ की नैंननि कौ फल पायौ । वृन्दावन हितरूप जाँउ वलि भाग्य-अवधि दरसायौ ॥

छंद राग परज—पद ११३

हाटक भीत्यौ विद्रुम देहरी रचीं रतन मणि जारीं । फटिक मणिनु की रौस छवीली मर्कत मणिनु किवारीं ॥ तोरन पर नग ललित जगमगें कुसुमनि वंदनवारा । दीपनि अवलि अलंकृत मंदिर कहा कहौं छवि विस्तारा ॥ कहा कहौं छवि विस्तारा तिनपै तरुनीं यूथनि ठाढ़ीं । मानौं प्रेम विधैता रचि पचि अपनें कर लिखि काढीं ॥ वनी ठनी सव इंदुवधू सी लाल मुनीसी खेलें। कमल नैंन मुख देखनि कौं वाजीं दृग वाग वगेलें ॥ कुसुम कलीं वरपैं मन हरपैं मुख तें मधुरी वोलें । मानौं अटनि घटनि में अगनित चंपला मुदित कलोलें ॥ सोभा हू सेवत जा पुर कौं और कहा गुण गानौं । राधा लाड़ चाइ सुख सरसत गोप राइ वरसानौं ॥ श्री वृषभान पौरि जव आये तव भइ जै जै वानी । वृन्दावन हित मणि चौकी पै वैठे हरि सुख दानी ॥ पट भूपण पहिराये हरि कौं पुनि मणि कुंडल काना । कीनौं तिलक भाल मोहन के पढ़ि सुभ वेद विधाना ॥

छंद राग पंचम—पद ११४

प्रेम सरस मुख दरसि सखी कियौ तिलक रतन भरि थाला । अंतर पट दै वधुनि निकट लिये वोलि तहाँ नँदलाला ॥ तन मन मुदित भई तिहिं छिन कर चटक वारनौं लीनौं । सौभग सींव वदन लखि रानी साजि आरतो

कीनौं ॥ कीनौं साजि आरतौ कीरति भाग भरी को ऐसी । पट तर देउ काहि त्रिभुवन में राधा जननी जैसी ॥ परम तत्व अविनासी जाकौं शिव ब्रह्मादि बतावैं । स्मृति पुराण उपनिषद ताकौं नेति नेति श्रुति गावैं ॥ जोगी हियें जोति कहि ध्यावत अलप पुरुष कहैं कोऊ । ज्ञानी कहैं ब्रह्म अविकारी देखत नाहिन सोऊ ॥ जप कौ फल तपकौ फल तीरथ व्रत फल वरन्यौ जो है । बाँधें मोर भानु की पौरी बरना बैठो सोहै ॥ करहा रथ पालिकी घनेरीं बहुत भाँति कर साजीं। दीनें रतन भार बहु कंचन अगनित गो गज बाजी॥ उड़त अबीर गुलाल भामिनी सजननि गारि सुनावैं । वृन्दावन हितरूप जाउँ बलि हरि मन गारीं भावैं ॥

गारी राग धनाश्री-पद ११५

लखि सखि कौतिक रूप री ॥ बरना बनि आयौ ॥ बड़े ही सजन को पूत ॥ गोकुल रावरौ बरना बनि आयौ ॥ धनि जसुमति जिन उर धरयौ ॥ बरना०॥ यह रस रतन अभूत ॥गोकुल०॥ धन्य सखी नँद गाँवरौ ॥बरना०॥ जहाँ बढ़यौ राज कुँमार ॥गोकुल०॥ धनि व्रजपति लाड़नि पल्यौ ॥बरना०॥ धन्य सखा जे लार ॥गोकुल०॥ धनि वे गोधन वृन्द री ॥बरना०॥ जिनहिं चरावनि जाइ ॥गोकुल०॥ धनि वृन्दावन द्रुमलता ॥बरना०॥ जहाँ बिहरत सचु पाइ ॥गोकुल०॥ धनि वे ललित कदंब री ॥बरना॥ जिनकी शीतल छाँह री ॥गोकुल०॥ बैठि सखनि मधि मंडली ॥बरना॥ आनंदित मन माँहि ॥गोकुल०॥ धनि वह यमुना वारि री ॥बरना॥ करत अमी ज्यौं पान ॥गोकुल०॥ धन्य ललित वह बाँसुरी ॥बरना०॥ अधरनि लगि करै गान ॥ गोकुल०॥ धन्य महरि गिरि पूजनौं॥बरना०॥ फल्यौ हिये को मोद ॥गोकुल०॥ धनि कीरति की अतिलड़ी ॥बरना०॥ जा हित ओटी गोद ॥गोकुल०॥ परम धन्य रावल धनी ॥बरना०॥ जिन यह कियौ विचार ॥गोकुल०॥ समधी सम इत उत बने ॥बरना॥ कुल निर्मल परम उदार ॥गोकुल ॥ फब्यो है जलज मणि सेहरौ ॥बरना०॥ रह्यौ मौर ललित छबि छाइ ॥गोकुल०॥ दिन दूलहु

सुत नंद को ।।वरना०।। अब दूलहु बन्यौ जु न्याइ ।।गोकुल०।। वसन सहानें तन लसैं ।। वरना०।। कंकन बाँधे हाथ ।। गोकुल०।। मरुवट मंडित वदन पैं ।।वरना०।।बन्यौ नख सिख सुत ब्रजनाथ ।।गोकुल०।। गोरो री गोकुल धनी ।।बरना०।। यह काकी उन्हारि ।।गोकुल०।। वात कहौ जो न्याइ की।।वरना।। याकी जननी आवैं गारि ।। गोकुल०।। ठकुराइत सखी नंद की ।। वरना०।। समझि परी मनमोर ।।गोकुल०।। चोर लला अचिरज कहा ।।वरना०।। मैया कियो कौतिक जोर ।। गोकुल०।। हमरी वरनी सुनि सखी ।। वरना०।। कुल लाइक रावल भूप ।। गोकुल०।। यह कारो यह कंचन तनी ।। वरना०।। नख सिख परम अनूप ।। गोकुल०।। गोप हँसे ब्रजपति हँसे।। वरना०।। मोहन मृदु मुसिकाइ ।। गोकुल०।। अटनि चढ़ीं गावतिं वधू ।। वरना०।। सजननि गारि लगाइ ।। गोकुल०।। धरानंद ध्रुवनंद जू ।।वरना०।। उपनंद सुनौं चितलाइ ।। गोकुल०।। वहुरि सुनौं अभिनंद जू ।। वरना०।। अप घरनिनु लेहु बुलाइ ।। गोकुल०।। तुंगी रानी पिंगरी ।। वरना०।। कुविला अतुला नाम ।। गोकुल०।। ये नव रंगिनी भामिनी ।। वरना०।। लावौ रावल पति के धाम ।।गोकुल०।। खुठिनंद सु निर्मलनंद जू ।। वरना०।। करमा धरमानंद ।। गोकुल०।। लावौ अपनी योपितनि ।। वरना०।। देहिं वरसानें आनंद ।। गोकुल०।। महाभान वृपभान जू ।। वरना०।। सत्यभान गुनभान ।। गोकुल०।। धर्मभान रुचिभान जू ।।वरना०।। देहिं सबै सुखदान ।।गोकुल०।। श्रीसुभान वरभान जू।।वरना।। ललित छैल रतिभान ।। गोकुल०।। सजननि वनितनि भान पुर ।। वरना०।। नौहूँ भान देहिं सनमान।।गोकुल०।। रानी नाना सुमुख की ।।वरना०।। पटुला भरी सनेह ।।गोकुल०।। सकल मनोरथ पाइहैं ।।वरना०।। नृप इंदु सैंन के ग्रेह ।।गोकुल०।। जसा और जसवंत जू।।वरना०।।जसधर परम उदार।।गोकुल०।। इनकीं नारि विचच्छनी ।। वरना०।। तेरी मामी नंद कुमार ।। गोकुल०।। हमरे कीरति नंद के ।। वरना०।। जो राचेंगी प्रेम ।। गोकुल०।। तौ मन वाँछित पाइहैं ।। वरना०।। विसरि जोइ सव नेम ।।गोकुल०।। भद्रकीर्ति अति सोहनें

रज चारु ब्रह्मादि याचत रहैं विश्व पावन चरित लोक गायौ ॥ रतन भरि मूठि मन मुदित द्विज भिक्षुकनि देत वहु भाँति जो जाहि भायौ । कृष्ण कौ जनक जग कौन अचिरज वड़ौ जासुकी पौरी सिर रमा नायौ ॥ नृत्य अरु वाद्य वहु सुजस गावत गुनी भानपुर अवधि कौतिक दिखायौ । गलिनु के वीच अति कीच भई अरगजा वुरत नीसान धुनि व्योम छायौ ॥ फुलझरीं हथफूल हवाईं वहु छुटतिं हैं करत अति रंग सवकौं छकायौ । वृन्दावन हित-रूप गहरु सुख-सिंधु लखि विनामित नंद वीथिनु वहायौ ॥

छंद राग पंचम—पद ११८

पुनि आरज सुमतिनु आदर दै व्रजपति मंदिर लीनें । नव नव वसन विचित्र लाइकैं हरपि पाँवड़े कीनें ॥ रमड़े घमड़े आवत यूथनि मन अति मोद नये हैं । करत वहुत आधीनी सवसौं पौरी पग जु दये हैं ॥ पौरी पग दीनें व्रजपति नें आनंदित तिहिं वारा । लै लै नाम नंद कौ अवला गावतिं मंगल चारा ॥ पग धोवन कौं झारी आई सादर भीतर लीये । मंडप तर नंदादिक वैठे विविधि विछौंना कीये ॥ विधि विधान सौं जहाँ तहाँ सव पंकति करि वैठाये । परे निसाननि घाइ तिहिं घरी सजन मांड पै आये ॥ श्री वृषभानु भूप की कहाँ लगि वरनौं प्रभुता भारी । फिरत वहुत परिचारक जित तित करत सवनि मनुहारी ॥ मंडप भवन गोप गन संवही मंदिर अरु वहुतेरे । जथा जोग्य आदर दै सवकौं पुनि पनवारे फेरे ॥ भानोपर कौ नीर अमृत मय झारीं भरि भरि दीनीं । वृन्दावन हितरूप भामिनी गावतिं यौं रँग भीनी ॥

मंडप की सोभा

राग धनाश्री—पद ११९

सजन मिलि मांड पै आये । व्रज वनितनि मंगल गाये ॥ सजन मिलि मांडपै आये ॥टेक॥ भान भवन में छायौ मंडप फवि रही छवि अनहोती । मणिमय खंभ करी वहु रचना लगि रही जगमग जोती ॥ तापर जरी

वितान जगमगै मुक्तनि झालर सोहै। दामिनि निकर लजाति देखिकैं अमरनि के मन मोहै॥ पल्लव नूत कुसुम बहु झूमक मौरी सूत रचे हैं। लाल नगी विद्रुम मणि झूमक तिनमें सुविधि सचे हैं॥ हरे हरे बाँस पीत अंबर ढपि चौरी चीत धरी है। अवनी भाग्य धरी मनु मूरति अस छवि दरस परी है॥ मंगल द्रव्य अलंकृत जहाँ तहाँ देखि चकित सब कोई। पंकति साजि धरे मणि दीपक अति प्रकास ग्रह होई॥ फरहराति नव रंग धुजा लखि सबके मन हरलेई। सोभा सुता भवन चढ़ि मनु मुरि व्रजपति आदर देई॥ रतन कलस उद्दोत महल पर मनु प्रकास ससि कमनी। चित्र विचित्र बिछौंना कोमल कीनें सोभित अवनी॥ सादर तहाँ सजन बैठारे परम सनेह छके हैं। वृन्दावन हितरूप अलौकिक रचना देखि थके हैं॥

ज्यौंनार

छंद राग परज—पद १२०

गनती करै कौन रसना बैठे पुर पौरि जहाँ लौं। अप अपने मिलि इष्ट बंधु सींवा हद नगर तहाँ लौं॥ निपुन नेह की रीति सजन सबकौं दै मान बड़ाई। अज्ञा लई मुनिनु पै खोले पाक भवन जब जाई॥ खोले पाक भवन तहाँ अगनित परसत गोप कुमारा। लावौ लेहु देहु यह बानी ह्वै रही बहु विस्तारा॥ लाडू सुभग देखि मन हरषे खुरमा उज्ज्वल खाजा। पहिलें जाइ मुनिनु कौं परसे प्रमुदित विप्र समाजा॥ घेवर चने पाक मिश्री के फैनी रस की श्रेनी। जिनकौं देखि बराती हुलसे रसना कौं रुचि दैंनी॥ सरस सुहार जलेबी परसी देखि मुदित व्रजबाला। मोदक बनें स्वाद के अतिहीं बाबर परम रसाला॥ मगद और मेवा रस पागी जेंवत रंग भरे हैं। गोप वृन्द लै लै रस स्वादनि घृतरस बहुरि परे हैं॥ मन भाँवती अमरती परसीं बहु मोमन की पूरी। वृन्दावन हित सहित मसाले करीं कचौरी रूरी॥

छंद राग परज—पद १२१

अतिसय बरषत रंग जहाँ जेंवत गोकुल को रानों। स्वाद सराहत जात

॥ वरना०॥ महाकीर्ति गुणवंत ॥ गोकुल०॥ सब अभिलाप पुजाइहैं ॥ वरना०॥ दै हैं सुख भाँति अनंत ॥ गोकुल०॥ सानंदा अरु नंदिनी ॥ वरना०॥ तेरी भूवा सुंदर श्याम ॥ गोकुल०॥ वरनी फूफा कासना ॥ वरना०॥ तिनके पुरवैं काम ॥ गोकुल०॥ ऊँचे चितयौ श्याम ने ॥ वरना०॥ इततें वरपत फूल ॥ गोकुल०॥ उततें चंदन पोटरी ॥ वरना०॥ छूटत रंग दुकूल ॥ गोकुल०॥ मुदित वराती नंद जू ॥ वरना०॥ सुनि गारी मीठे वैन ॥ गोकुल०॥ वारौं आदर कोटिलौं ॥ वरना०॥ हित नातें फूलत नैंन ॥ गोकुल॥ उत रानौं सब घोपकौ ॥ वरना०॥ इतहिं भयाने राइ ॥ गोकुल०॥ सुख वरपत दुहुँ ओरतें ॥ वरना०॥ वर वरना अतिलड़ चाइ ॥ गोकुल०॥ देखत हैं नैंननि सवैं ॥ वरना०॥ दूलहु श्री मदन गुपाल ॥ गोकुल०॥ रूप अवधि वरनी वरी ॥ वरना०॥ वरनौं कहा भाग विसाल ॥ गोकुल०॥ जहाँ तहाँ नर नारि जे ॥ वरना०॥ कहैं धन्य सोम रवि वंस ॥ गोकुल०॥ प्रेम अवधि जोरी वनी ॥ वरना०॥ दोउ सर्वसु श्री हरिवंस ॥ गोकुल०॥ परम रहसि गारी सुनीं ॥ वरना०॥ कीरति ढिंग वोली नीक ॥ गोकुल०॥ बृन्दावन हितरूप वलि ॥ वरना०॥ दुहुँ दिस दइ लिखलीक ॥ गोकुल०॥

जनवासौ की सोभा

दोहा—वारौठी करिकैं चले परम मुदित मन गोप।
ऐसे मणि मंदिर तहाँ दुतिधर दावत ओप ॥

मंगल छंद राग सूहौ विलावल—पद ११६

वारौठी करि नंद वहुरि तहाँ आइयौ। जनवासौ मणि मंदिर भान वताइयौ ॥ जथा जोग्य सनमान भूप सबकौ कियौ। उचित रुचित आहार पसुनि विधि सौं दियौ ॥ दियौ सबकौं वोलि सादर सुखित जो जिहिं भाँति हैं। नाना भवन भंडार दीसत पुनि भरे सरसात हैं ॥ अगनित फिरत परिचार वनि ठनि लेहु लेहु सबै कहैं। अति निपुन श्री वृपभान जन सबके मननि लीये रहैं ॥ रावल पति रचि कीनें पाक अपार हैं। सचि सचि राखे

विधि सौं वहु भंडार हैं ॥ विप्र वृन्द वहु गोप गये हर्षित जहाँ । पठये श्री वृषभान नंद राजत तहाँ ॥ तहाँ श्री ब्रजराज वैठे वीनती सजननि करी । अजू गोकुलईस भोजन हित पधारौ इहि घरी ॥ मुसिकाइ ब्रजपति करी अज्ञा गहकि सहदानें धुरे । आये उमड़ि दल गोप भूषन वसन सजि सजि कैं जुरे ॥ इक आये इक आवत एकनि टेरहीं । एकनि के हित ठाढ़े मारग हेरहीं ॥ एक करत कछु मान मनावत एक हैं । आवौ चलौ चलत हैं कहत अनेक हैं ॥ कहत वचन अनेक विधि सौं महा कोलाहल भयौ । वनि छवीले गोप निकसे नंद कौं आगें लयौ ॥ वंदी पढ़त चले विरद मागध सूत वहु जस गावहीं । वंधुगन के मध्य आवत नंद अति छवि पावहीं ॥ निकसि निकसि नर नारि पौरि पौरिनु खरे। उदित मनौं उडुराज चकोर जु अरवरे॥ देखनि सकल समाज अधिक आतुर जवै । कहा कहौं उरझनि नेहप्रेम मूरति सवै ॥ सवै मूरति प्रेम गोपी गोप अतिलड़ अतिलड़ी । तामें परम उत्साह कृष्ण वरात वनि आई वड़ी ॥ वहु-गुनी गावत नट नटी निर्त्तत कियौ पुर परवेस है । वृन्दावन हितरूप वलि आवनि व्रजेस सुदेस है ॥

श्री ब्रजराज जू की सोभा

करखा छंद राग पंचम–पद ११७

आज ब्रजराज मन वदन फूलनि वढ़ी अतिलड़े पुत्र व्याहन जु आयौ। गोप गन संग लै भवन वृषभान के चले ज्यौंनार छवि निधि वढ़ायौ ॥ रचित खिरकी वनी पाग सिर जरकसी नव रतन पेच तापै सुहायौ । गौर गंडनि झलकि जलजमणि विमल की भालपर तिलक मृग मद वनायौ ॥ अमित करुणा भरे सलज लोचन वड़े भौंह कमनीय लखि चित लुभायौ । कृष्ण उत्साह मुसिकानि अधरनि रमी चिवुक छवि निकर विश्राम पायौ ॥ कंठ कंठी वनी माल मोतीनु की तुलसिका दाम अति रँग वढ़ायौ । वाहु आजानु पुनि मंद गज गति गवन लसत वाजू ललित नग जरायौ ॥ पुष्ट अति तौंद पर नाभि गहरी वनी जयति व्रजईस किन विधि वनायौ । चरण

आप मुख रसना सुख सरसानों ॥ वनी रसीली सामा अति परसंसत हैं सव कोई । जहाँ तहाँ चरचा यह विधि दिनमंणि कुल लायक होई ॥ दिनमणि कुल लाइक रावलपति श्रीवृषभान उदारा । परसत तनक रिती नहिं सामा भरे विविधि भंडारा ॥ मोहन भोग परी वहु मेवा देखत गोप सिहानें । खाटे मीठे वनें राइते लेत आप मन मानें ॥ गूंझा वनें गुली के उत्तम मठरी बूरा पागी । हँसि हँसि जेंवत करत बड़ाई स्वाद अधिक सी लागी ॥ चंद्रकला देखत-ही फूले चकित ह्वै रहे ग्वाला । भैया याकौ नाम वतावौ सुनत हँसीं ब्रजवाला ॥ परसे जाइ त्रिकोंना जवहीं मधुमंगल कें जाई । अरे भैया या वरसानें में त्रिभुवन की चतुराई ॥ भाँति भाँति की सामा लै कैं जहाँ तहाँ कौं दौरें । वृन्दावन हित मृदु मुख वानी लेहु लेहु कहें औरें ॥

छंद राग परज–पद १२२

कहा कहौं लाघवता अति सव पवन गवन ज्यों डोलें । उफल्यौ परत नेह तिन हिय तें लेहु लेहु यों वोलें ॥ देखौ अस प्रभुता जहाँ ठाढ़े एक एक के आगें । परसत कर मनुहारि अधिक हित वचन अति भले लागें ॥ लगें हित वचन अमी तें मीठे हिय सुख दाइक एही । कौर कौर मनुहार करत सुख सनिरहे सजन सनेही ॥ पापर तल नीके विधि लाये ग्रास लेत रुचि वाढ़ी । धीव चुचाते पूवा परसे तिहिं रस रसना आढ़ी ॥ दही वरा देखत ही सवके नैंन कमल से फूले । माँगि माँगि के लये प्रीति सौं जेंवत रुचि अनुकूले ॥ एला आदि सुगंधि डारिकैं दाख राइतौ कीनौं । ब्रजपति भोजन करत सराह्यौ स्वाद अधिक सो दीनौं ॥ वीचं वीच वातें हाँसी की कहि कहि कौरनि लेंहीं । त्यों त्यों नैंन चैंन सजननि उर नंद भली विधि देंहीं ॥ जारिनु वारिनु चढ़ीं अटारिनु छवि दामिनि सीं नारीं । वृन्दावन हितरूप रँगीली हुलसी गावतिं गारीं ॥

गारी

राग विहागरौ–पद १२३

गारी न देहों रे सजना गारी न देहों । गोप चरित वरनौं कछू पै नाम

न लैहौं ॥रे सजना॥टेक॥ विलंग न मानौं नंद जू तुम्हरी रजधानी । रावल ही तें रावरीं हम रीति सु जानी ॥ वड़े घरनि कौतिक वड़ौ कछु कहत न आवै । सव जग तें न्यारी कथा तुम कुल सोभा पावै ॥ वहुतिक दिननि दुरी रही काहू न जताई । अव यह लीला प्रगट ही मुनि ग्रंथनि गाई ॥ गोप्य चरित यह महरि के सुनि मति वौराई । अन मिलितौ ढोटा जन्यौ तापै उपमा पाई ॥ वे नंदन ये नंद जू तन देखि निहारी । ऐसे पूरे सजन कौं क्यौं दीजहि गारी ॥ इ वातन तें डरत हैं जग जन मुनि ज्ञानी । व्रजपति कुल भूषण दोऊ रहीं नाहिन छानी ॥ समधनि के जस की धुजा जगमें फहरानी । वात भीतरीं वहुत हैं वरनौं किंहिं वानी ॥ तुमहू कौं नीकी लगी इहि विधि रुचि मानी । वृन्दावन हितरूप वलि लाइक व्रजरानी ॥

राग धनाश्री–पद १२४

रानी जसुमति वड़ भाग जिनि कुल कलस चढ़ायौ । ताकौ सवसौं अनुराग यह जस जगत वढ़ायौ ॥ पायौ पति व्रजपति साधु ओट लरे ज्यौं गढ़पती । रानी गुन अमित अगाध धनि धनि महरि महा मती॥ चरचा व्रज में सव ठौर नंद घरनि नित सुख लड़ी । वनिता जग सम को और परहित में लाइक वड़ी ॥ एहो व्रजईस उदार तुमहूँ यह अज्ञा करी । समझौ मन दै व्यौहार वात भीतरी रस भरी ॥ जायौ नवरंगी पूत अपनी गौं रानी ढरी । सवही अँग लच्छण धूत कुल प्रतिकूल भये हरी ॥ तुम कुल यह रीति अनादि विधि जु अनोखी निर्मई । वरनौं सुनि लीजे आदि वंस तुम्हारें जो भई ॥ प्रगट्यौ ससि खारे नीर जाहि न कोऊ मुख धरैं । कन्या मदिरा कौ वीर पुनि कलंक लाग्यौ गरैं॥ लायौ हरि गुरु की भाम वुद्ध सुमति तिन कुल भयौ । करिकैं रवि कुल नृप वाम ऐल जनम जातें लयौ ॥ ताकें नृतिकारिनि धाम पाँच पुत्र जनि नसि गई । वरनौं कहाँ लगि गुण ग्राम यह तुम कुल प्रभुता नई ॥ सुत कौ तरुणायौ माँगि नृप ययाति भोगनि रचे । असुरनि गुरु सुता सुरागि प्रेम सहित वहुविधि नचे ॥ यदु की भगिनी अभिराम

पाँच पुत्र कारी जनैं। ताको माधुरी सुनाम ससि कुल चरितनि को गनैं॥ आई चलि एसी रीति आज विलग को मानहीं। इहि विधि कहूँ रानी प्रीति गुपति करी को जानहीं॥ जोपै सतवंती चाल ब्रजपति सौं रुचि हौन के। टेढ़े लखियत नन्दलाल ये लच्छण कहि कौंन के॥ नाच्यौ सुत बहु विधि नाच जवते महरि गरभ धरयौ। सुनि हो ब्रजरानें साँचि अस कौतुक कब तुम करयौ॥ चितयौ जब ऊँचे नंद समझु समझु मुसिकात भलि। वरपैं रस परमानंद वृन्दावन हितरूप वलि॥

छंद राग परज–पद १२५

हितुनि हेत कीं गारीं सुनिके सुख बाढ़यौ तिहिं काला। समुझि समुझि सब बात भेद कीं बहुत हँसे गोपाला॥ प्रीति परख चित करपै पुनि भोजन करि त्रिपति भये हैं। सजन अधिकसन्मान सुखित ह्वै अचवनि सवनि लये हैं॥ त्रिपति भये अचवन लै सबही बीरी रचि रुचि लीनी। वाजे सवहिं गहकि कें वाजे विप्र वेद धुनि कीनी॥ भुव नभ में जै जै भई वानी सुर नर मुनि सब वोलैं। वनिता चारु वधाये गावतिं मनु दामिनी कलोलैं॥ जीत्यौ हो रावल कौ रानों ढोली ढोल वजायौ। राधा कुँवरि व्याह मंगल कौ गावौ हरषि वधायौ॥ नंद करत परसंस आप मुख वारंवार घनेरी। दिनमणि वंस धन्य रावलपति जग यस करनी तेरी॥ नंद उलटि आये जनवासे इहि विधि करत वड़ाई। वंधु सजन भोजन करि पूरन किये भानु कुल राई॥ भाँवरि विरियाँ जानि छवीली लगन महूरत आई। वृन्दावन हितरूप जाऊँ वलि त्यारी सवै कराई॥

छंद राग परज–पद १२६

गरग गऊतम वूझि भान ब्रजपति पै विप्र पठाये। रजनी अलप वेगि पग धारौ अम्मृत वचन सुनाये॥ वेठे सकल मुनीस आइ सुभ वेला गहरु न लावौ। सावधान कीजे सवकों दूलह सिर मौर धरावौ॥ मौर धराइ लै चलौ दूलह भान आगमन हेरें। वर कन्या चिर होहु सुभ घरी उठि चलौ

यह मति मेरें ॥ मंगल सब्द भये दूलह कौं रचि सिंगार करायौ । अपनें हाथ जिमाइ नंद सुतकैं सिर मौर धरायौ ॥ आरज बंधु विप्र गुरु लैकैं भये दिन दूलह संगा । सुख पर श्री सतगुनी बाढ़ी रूप चुवत अँग अंगा ॥ बड़े बड़े गोप नंद के लारें सकल महामुनि जेते । विधिहू भेप बदल कैं आयौ बरनि सुनाऊँ के ते ॥ बैठे श्री वृपभानु भवन में इत उत की रज धानी । मूरति धरें वेद हूँ आये भाँवरि बिरियाँ जानी ॥ स्मृति पुराण उपनिपद आये आगम तन्त्र अनूपा । बृन्दाबन हित तिथि परिवी सब ग्रह धरि आये रूपा ॥

छंद राग परज—पद १२७

श्रीराधा व्याह बधायें आईं पटरितु मूरति वंता । आये द्वादस मास जिन्हें बहु प्यारे चरित अनंता ॥ नक्षत्र योग अरु मुक्ति भक्ति नद नदीं रूप धरि आईं । लीला ललित घोप देखनि ओपधीं पलटि तन आईं ॥ तन कौं पलटि पलटि सब धाईं शक्ति अनंत अपारा । सावित्रि अरु सची अरुन्धती ठाँढ़ी राज दुआरा । उमा रमा हूँ भेप बदलि कैं सहित सारदा आईं । मंगल मूरति धरें पौरि सब ठाढ़ीं जहाँ तहाँईं ॥ देव कोटि तेतीस विमाननि आइ व्योम सब छाये । उनंचास हू अग्नि आइकें बेदी बपु जु दुराये ॥ चारौं युग अरु काल कर्म सब आये इहि सुख आसा । लघु स्वरूप धरि गोपराइ की पौरी कियौ निवासा ॥ जंत्र मंत्र अरु राग रागिनीं चौंसठ कला प्रकासी । बृन्दावन हितरूप लड़ैती वांछित ये पद दासी ॥

कन्या दान कौ मंगल

मंगल छन्द राग सूहौ विलावल

सुनि रावल पति वचन हरपि रानी कह्यौ । धन खरचनि यह वार पूरि जग जस रह्यौ ॥ मंडप छायौ है अजिर सजन मिलि आइयौ । करि विधि विविधि विचार तौ बंधु बुलाइयौ ॥ बुलाइ बंधुनि धनी रावल देखि यह बिरियाँ भली । सिंगार गोधन ग्राम दीजै प्राण तें प्यारी लली ॥ राधा जनक जग विदित तुम सम कौन लाइक देखिये । इहि व्याह सिमट्यौ घोप सब

अब महा भाग्य विशेपिये ॥ आये व्रजपति धाम गोप मुनि जन सबै। बरना त्रिभुवन मुकटमणि निरखौ अबै ॥ औरौं दान अनेक सबै संचि सचि धरौ। विधि सों पियरे हाथ कुँवरि अतिलड़ि करौ ॥ करौ पियरे हाथ अतिलड़ि महा मंगल सुभ घरी। तुमसो न दानी लोक जिनि घर आनि कर ओटयौ हरी ॥ यह सुनत अति मन मुदित श्री वृषभान तिहिं छिन न्हाइकें। पुरवाइ मोतिनु चौक लीनें विप्र हरपि बुलाइ कें ॥ कीरति श्री वृपभान गाँठि पट जोरियौ। बैठे मंडप आइ प्रेम सरस्यौ हियौ ॥ अँगुरिनि कुस मुद्रिका द्विजनि पहिराइयौ। जल भारी नग जटित सुहरपि मँगाइयौ॥ मँगाइ भारी हरपि तिहिं छिन पद प्रछालत मुद भरे। संकल्प के जे साजि गनि गनि आनि कें आँगन धरे ॥ रूपे खुरी मढ़ीं कनक सींगनि जरी पाट उढ़ाइकें। गल घंट कैऊ लच्छ राखीं गाइ नेरें लाइकें ॥ कीनें पियरे हाथ कुँवरि के प्रीति सों। वेदनि पढ़त मुनीस आपनी रीति सों ॥ गोधन वृन्द नगर वहु धन जिहिं साथ है। कन्या जुत संकल्प दियौ हरि हाथ है ॥ संकल्प दीनों हाथ हरि दुंदुभी देव वजाइयौ। जै जै भई नभ भारती तिहिं छिन कुसुम वरसाइयौ ॥ मंगल हरपि व्रजवधूँ गावतिं भवन भीर भई वड़ी। परिवार पुरके भेंट दै वहु विधि असीसत अतिलड़ी ॥ धनि धनि जननी जनक भूरि मंगल सच्यौ। सुर नर मुनि हूँ दुर्ल्लभ अस आनँद रच्यौ ॥ उतहिं नंद इत भान दान वहु विधि कियौ। वर कन्या पै रतन वार सबकों दियौ ॥ दियो सवकों दान समधिनु दुहूँ दिस अनुराग सों। विवस छिन छिन होत इत उत प्रेम हिय की लाग सों ॥ भाँवरिनि विरियाँ ज्ञान साखोचार सुनिवे अरवरें। वृन्दावन हितरूप दोऊ मुनिनुसों विनती करें ॥

श्री व्रजराज जू कौ साखोचार

राग मारू—पद १२६

ज्यों चलि आई आदि अहो मुनि साखा सोम उचारि। तुम प्रसाद आरज नामनि कों सुनिहों वरन विचारि ॥ अहो मुनि साखा सोम उचारि

॥ टेक ॥ बैठे गोप बृन्द इत उत ब्रजपति मन भइ अभिलाषा । बोले मान गरग कौ दै उच्चार सोम कुल साषा ॥ गरग कही सुनिये ब्रजपति जू सोम वंस प्रभुताई । अगनित भूप भये या कुल में कहौं संक्षेप सु गाई ॥ वरनत आदि गरग मुनि सब की बड़े पुराननि ज्ञाता । श्री नारायण की नाभि कमल भयौ तातें भयौ विधाता ॥ अत्रि रिषीश्वर कें ससि प्रगट्यो बुद्ध जन्म तहाँ लीयौ । नृप पुरुरवा तिनके जा कुल आप उदोत जु कीयौ ॥ नहुप बड़ो परतापी जाके सुनि जयादि भुवपाला । यदु कीरति विस्तारी तिन कुल जग जगमगत रसाला ॥ तिनके भयौ क्रोष्टानंदन ब्रजनवान सुत ताकौ । स्वाहिस पुत्र तासु घर जनम्यौ रुसेक कुल धर जाकौ ॥ चित्ररथ पुनि ससिविन्दु पृथुश्रवा धर्म प्रगट सुत जानौं । उसना नृप के रुचीक नंदन ज्यामघ तासु वखानौं ॥ विदर्भ तिनकैं ऋथुकुंति पुनि विला सुवन नरेसा । विला सुवन निरवर्त नाम सुनि सारह कुल जु सुदेसा ॥ जाके व्योमजीमूत तासु सुत ताके विकृत महीपा । यदुकुल सुयश लोक सब पावन खंड सप्त पुनि दीपा ॥ तिनके भयौ भीमरथ नंदन नवरथ सुत वलवाना । दशरथ तिनके सकुनि वंसधर ता सुत करभी जाना ॥ देवरात ताके कुल उत्पति देवक्षत्र तिन वंसे । मधु सुत ते कुरवस सुत प्रगट्यौ ताके अनु सुप्रसंसे ॥ अनु के सुत पुरहोत्र भयौ नृप आयु पुत्र तिन धीरा । तिनके सात्वत पर्म धर्म रति तिन कुल अंधक वीरा ॥ अंधक के भजमान तासुके सिनि सुत परम उदारा । ताके स्वम्भू सकल गुण लक्षण हृदीक सुत दातारा ॥ देवमीढ़ तिन सुवन विदित जग द्वै जिन घर पटरानी । एक वैश्य कुल तें जु विवाही द्वितिय जाति क्षत्रानी ॥ वैश्य सुता ते देवमीढ़ के तीन पुत्र नर भूपा । राजन्यै अरजन्य वहुरि परजन्य चरित्र अनूपा ॥ तिनके विदित भये नव नंदन नंद प्रगट ब्रज ईसा । जिनके कृष्ण कमल दल लोचन गिरि कर धरयौ वलीसा ॥ माथुर मंडल की रजधानी यदुकुल चरित सुहाये । भये परजन्य वैश्य कुल मंडन गोधन ठाट छवाये ॥ विदित महावन गोकुल तुम नंदीश्वर राव कहाये ।

सिंधु समान सोम कुल कीरति नाम विदित ये गाये ॥ देवमीढ़ परपौत्र व्याहिये पोतौ श्री परजन्य । नंद विवाह पुत्र जग जीत्यौ भाग्य वदति धनि धन्य ॥ साखोचार नंद सुनि उठिकैं दान गरग कौं दीयौ । वृन्दावन हितरूप सुयस कुल सुनत सिरानौं हीयौ ॥

श्री वृषभानु जू कौ साखोचार

राग मारू–पद १३०

वरनि अब सूरज वंस मुनीस । श्री वृषभानु कहत गौतम सौं वंदत पद रज सीस ॥ वरनि अब सूरज वंस मुनीस ॥ टेक ॥ गौतम अधिक मान दै बोले सुनि रावल के राने। दिनमणि वंश भये नृप इतने सारद अंत न जाने॥ एक एक के चरित्र सिंधु सम वेद पुराण वखाने । तदपि कहौं संक्षेप आदि तुम अपनी मति परमाने ॥ श्री नारायण नाभि कमल ते भयौ विधि मंगल कारी । तिनके सुत मरीच तिन कश्यप प्रजा विपुल विस्तारी ॥ तिन सुत रवि उद्दोत तासु सुत वैवस्वत गुन कारी । तिनके कुल इक्ष्वाकु तेजधर महीधर्म वलपारी ॥ तिन सुत भयौ ससाद वहुरि सुनि ककुत्स्थ अति वल-माने । तिनके सुवन अनेना प्रगट्यौ तिन कुल प्रथ्व वखाने ॥ विश्वरंधि कुल थंभन जिनके चन्द्र चन्द्र सम जाने । तिनके सुत जुवनाश्व तासु के साव सुवन गुन गाने ॥ सुनि वृहदश्व जस्य कुल ताके सुत सावसि सुधीरा । कुव-लयाश्व ताके कुल तिन सुत नाम दृढ़ाश्व सुवीरा ॥ तिहिं सुत हरिजस तासु निकुंभज सकल गुणनि गंभीरा । जानि कृशाश्व तस्य सुत ताके सिनजित मेटनि पीरा ॥ तिन कुल नृप युवनाश्व तस्य मानधाता सुत जग गायौ । तिनके पौरु कुतस्त नाम तिहिं कुल अनरन्य कहायौ ॥ ताके हरियश नंदन ता सुत अरुन प्रजा मन भायौ । ता सुत भयौ त्रिशंकु तासु घरनी हरिचंद जु जायौ ॥ जस्य सुवन रुहिताश्व तस्य सुत हरित नाम वड़ भागी। ताके चंम्प-विजय पुनि ताघर पुत्र भयौ अनुरागी ॥ ताकौ भरूक आतमज जिहिं कुल वृक सुत सुकृत विभागी । तिनके वाहुक तिन सुत सौरभ देखि सकल भय

भागी ॥ तिन सुत सगर प्रतापी जिन कुल असमंजस योगीसा । तिन कुल अंशुमान तिन नंदन नृपति दिलीप महीसा ॥ जिन सुत भये विश्व हितकारी भागीरथ जु वलीसा । भुव तल पावन करयौ सुरधुनी जे धरि लाये सीसा ॥ नाम भये तिन कुल आनंदन सिंधुदीप सुत तेहा । पुनि अयुनायु जानि तिहिं जातक सुत ऋतुपर्ण सुजेहा ॥ सर्वकाम तिनके जु वंस धरि सुत सुदास गुण ग्रेहा । तिन सुत अस्मक तिनके मूलक भये कुल बर्धन येहा ॥ तिनके दशरथ जानि महाभट छत्रि धर्म मति गाढ़े । जिन सुत विदित ऐड़विड़ जानौं पर्म धर्म रति वाढ़े ॥ तिन घर सुवन विश्वसह सुंदर किनि विधिना रचि काढ़े । सुत पट्वांग दिलीप उजागर सकल गुणनि करि आढ़े ॥ नृप दिलीप की निर्मल कीरति वेद पुराननि गानी । रति रघु धर्म धनन्धर तिनके चारि पुत्र सुख दानी ॥ गोपालक भयौ धर्म पिता की सत्य मानि कैं वानी । वैश्य वंश भई ख्याति विदित यह आरज मुख जु वखानी ॥ तिनके भयो अजित सुत सुंदर गोधन पालक नीकौ । तिनके देवगंध सुत जनम्यौ मन भावन सबही कौ ॥ तिनके भवहर नंदन प्रगट्यौ भरथहिं प्यारौ जीकौ । अभयकरन तिनके कुल भूषण मोद बढ़ावन हीकौ ॥ भरत शत्रुघन आइ मधुपुरी लवनासुर वध कीयौ । अभयकरन भवहरन लाइकें राज तहाँ कौ दीयौ ॥ अभयकरन के मेरज प्रगट्यौ तिन सुंदर व्रत लीयौ । महिसोहन सुत भयौ निरखिकैं तात सिरायौ हीयौ ॥ धर्माकर भये धर्म उजागर सुत जु धराधू ताकौ । नेमाधर ताके कुल मंडन गोपालक व्रत जाकौ ॥ जलपाजय कौ दृढ़ व्रत नीकौ देंउ सु उपमा काकौ । पुनि विरज तिनके कुल जनमें रतनाकर सुत वाकौ ॥ रतनाकर के नौ नंदन भये मुख्य रपंग वखानौ । नौ योगेश्वर मनौं प्रगट भये योग क्रिया दृढ़ जानौ ॥ त्रेता युग लौं रहे मधुपुरी पुनि द्वापर नियरानौ । वसे रपंग सहित कुल गोधन लखि कमनी वरसानौं ॥ जस्यप्रभाकर तिन कुल थंभन अमितावलि यश गाऊँ । परमाजित तिन सुत तिनके सुत उदयादितहिं लड़ाऊँ ॥ सुत प्रताप तिन कुल प्रकाश सुद जिन गुन पार न पाऊँ।

पुनि अनंतव्रज भये तिनके कुल चार वार दुलराऊँ ॥ तिनके सुत आसापति जिन कुल अजमंगल व्रत धारी। सुभमंगल तिन सुवन सुभंकर सवहिनु के हितकारी ॥ तिनके भये महाऋषि जिन सुत भाववीर सुखकारी। भये जवावर नंदन तिन कुल सुत जु रूप निधि भारी ॥ आकरपण जाके ताकौ सुत अछयाव्रत मन मोहै। नाम मगनमाधौ तिन नंदन देंउ सु उपमा कोहै ॥ भयौकिलोल मगन सुत कमनी सुत जु जयतजय सोहै। सुवन यशालय ताकें प्रगट्यौ सदा धर्म रति जोहै ॥ उदै उदार वंसधर जिनके अचलमेघ सुत जायौ। सुत तवेस प्रतापी जिनके कुल भूमेस कहायौ ॥ भुव मंगल कुल वर्द्धन प्रगटे सुवन अचल मन भायौ। तिन सुत प्राणपाल प्राणनि सम सत्यवल सुत दरसायौ ॥ मोद महासिव जिनते जनमे सुत भग्नोजय धारे। तिनके लखिस तिन अरुणादुति प्रजाधर्म रखवारे ॥ जिनके तम नासक तिनके देत्या उत्सव तम टारे। भूमेसुर तिनके कुल तिन सुत रमन सुयस विस्तारे ॥ हिमकर सुत ताकौ भयौ गुणनिधि तासुत भृत्य सुनामा। तिनके जोहनराव उजागर परम भक्ति कौ धामा ॥ सुख सुंदर परतापी जाकौ सकल गुणनि कौ ग्रामा। भोग भुवन सुत ताकौ जानौ सव विधि पूरन कामा ॥ सुभसुख तिनके भये धर्म रति सुत मणि भूपण दरस्यौ। राव मोघ मति इनके जानौं महा मोद मन सरस्यौ ॥ तिनकें पुनि भगवान सनेही सवकौ चित आकरस्यौ। दीप उदै सो तिनको नंदन परम धर्म सुख वरस्यौ ॥ जनमे रावदेवदल जिन कुल देवमाल मति पूरौ। रावअनंग तासु कुल दीपक सकल धर्म रति सूरौ ॥ सरनाध्वज ताकौ सुत कहिये भयौ भक्ति मति भूरौ। नाम राव तिनके सुत जिन कुल रावध्वज गुन रूरौ ॥ ताके राव ललित लोचन तिनके जु भाव मन दाता। जोमाधर जिनके यस वर्द्धन भक्त महा रस ज्ञाता ॥ मदन मोहन ताके सुत ताकौ श्याम सनेही विख्याता। तासुत जानि नाम पुरपोतम राख्यौ समभक्ति विधाता ॥ ता सुत राव कुवेस जासु सुत गोपिय सेवन जानौ। धनपति नंदन ताके ता सुत विदित धनंजय मानौ ॥ सुवन धनंजित इनके तिनके

सुत धनपाल बखानौं। तिनके प्रेमपंख तिन जातक प्रेमाधर गुन गानौ ॥ प्रेमपोप तिन घरनी जायौ उपमा बनत न कोई। प्रेमपोप तिन कुल जु महा-मति सब गुण लाइक सोई ॥ प्रेमालय जु पुत्र तिहिं ताके रसमाकर सुत होई। राव विवेका बल की रासी तिन सुत जानौं जोई ॥ तिनके भये भक्ति बल जिनके सुत भगवत रति भाख्यौ। जानि सुभक्ति राव जिनके कुल प्रेम रसामृत चाख्यौ ॥ इनके राव तेजबल कहिये तेज मही में राख्यौ। तिनके पुत्र भये तेजाकर पर्म धर्म अभिलाख्यौ ॥ तिन सुत भये प्रकास भुवन जू सकल जंतु सुख दानी। रूप भुवन तिन सुत सुभ लच्छण दाइक मान अमानी॥ भान भुवन तिन सिद्ध तासु कुल जाकी मधुरी बानी। भान सर्वसुख तिनके जिनकी प्रभुता मोमन मानी ॥ नाम भान सब रस के भोगी भक्तिभान तिन केरे। ता सुत रावभान भक्तनि प्रिय हियें महत गुण हेरे ॥ भये रतिभान तासु कुल मंडन तिनमें गुण जु घनेरे। सुवन सुभान तासु कुल प्रगटे सब सुख दाइक तेरे ॥ उदैभान तिनके जु आतमज सुयस सकल व्रज राजै। भानु अरिष्ट भये तिनके कुल नित नव मंगल साजै ॥ कंज भानु जिनके जु वंस-धर गोपनि कुल सिरताजै। जिन कुल महीभान सुकृत को सिंधु अधिक बढ़ि गाजै ॥ अहा कहा सुभ करनी निर्मल सुमति नैंन भरि देखौ। नौं नंदन तिन वंस प्रगट भये महा भाग्य फल लेखौ ॥ महाराज वृषभानु सबनि में महिमा महत विसेषौ। गोप वंस अवतंस निगम गथ लह्यौ कृपा की रेखौ ॥ गोपनि कुल कीरति जु विदित जग त्रिभुवन कलमष हरनी। जिनकी महिमा सेष सारदा सिव विधि उर सचि धरनी ॥ श्री वृषभानु वंस श्रीदामा जनम्यौ धनि सुभ करनी। इकसठ अरु बासठ पीढ़ी लगि में यह गाथा बरनी ॥ प्रथम निवास अवधपुर बरन्यौ बहुरि मधुपुरी आये। द्वापर मध्य बसे बर-साने सकल प्रजा मन भाये ॥ गोधन पाल धर्म रति जिनकै बिरद मुनीसनि गाये। तिन कुल प्रगट भये रावलपति सुनि मो बचन सुहाये ॥ रावल बर-हानो बरसानो तीन ठौर रजधानी। देस भयाने के प्रतिपालक सदा भक्ति

रति मानी ॥ सूरज वंस प्रसंस जानिये निर्मल चरित कहानी । महीभानु कुल विदित महामणि दान मान सुख दानी ॥ कंजभान परपोती वरनी महीभान नृप पोती । श्रीवृषभानु विवाहि सुकन्या इत उत उज्वल जोती ॥ वृन्दावन हितरूप सुजस सुनि हरपे गोप सुगोती । वल्लभ राज दान दियौ विप्रनि कनक रतन मणि मोती ॥

दोहा—उतहिं गरग गौतम जु इत कियौ साख उच्चार ।
अब भाँवरि विधि करत हैं वेद लोक अनुसार ॥१२१॥

भाँवरिविरियां को मंगल

मंगल छंद राग सूहौ विलावल—पद १३२

भाँवरि विरियाँ निर्मल लगन विचारिकैं । केसरि अजिर लिपायौ रहसि सुधारि कैं ॥ मोतिनु चौक पुराइ चित्र रचना करी । ललित रीति सों वेदी सुहथ मुनिनु धरी ॥ धरी वेदी सुहथ मुनिजन श्रुतिनु पढ़ि पट्टा धरयौ । ग्रह शान्ति हित आराधि विधि सौं अग्नि में आहुति करयौ॥ जिते मंगल साज सबहीं मँगाइ गनि गनि धरत हैं । विधि वेद रीति विचारी गौतम गरग बैठे करत हैं ॥ दूलहु दुलहिनि इत उत सुभग सिंगारई । करत मंगली रीति जु उचित विचारई ॥ गोप सभा इत उत बैठे जु उमंग में । मागध चारन विरद पढ़त रस रंग में ॥ रस रंग में बोलैं विरद मुनि रीती चारों जुग भनी । सिर लसंत मौरी मोर बाढ़ी सेहरिनु सोभा घनी॥ पहिले बना बैठारि पट्टा बहुरि बरनी लाइयौ। जोरि अंचल छोर विप्रनि बधुनि मंगल गाइयौ॥ रूप सिंधु मथि तत्व रची कीरति लली । उत सौभगता सींव सुवन ब्रजपति अली ॥ ब्रज जन भाग्य अवधि विधि जोरी यह करी । देखि पटा दोउ बैठे धनि धनि यह घरी ॥ धनि घरी धनि यह जाम सजनी विप्र गाँठि जुराइयौ। धनि धन्य ये नर नारि जे यह व्याह मंगल आइयौ ॥ धनि धन्य मंडप भूमि सजनी कौन भागिनु सौं भरी । तापै परैंगी भाँवरी पग परसि ह्वै है हिय हरी ॥ इत उत दूलह दुलहिनि वचन कहाइकैं । तब बैठारी कुंवरि वाम अँग

लाइकैं ॥ कहतु अतिलड़ौ वचन अधर मुसिकात हैं। मुख सोभा के वीज झरत मनु जात हैं॥ झरत मुख ते वीज सोभा कछुक सकुचति अतिलड़ी। पढ़त चारयौं वेद रिपिजन भीर भई मंडप वड़ी॥ थिर चर मुदित अतिसै भयै भाँवरिनु विरियाँ जानिकैं। वृन्दावन हितरूप वलि कहा कहौं वैन वखानिकैं॥

मंगल छंद राग सूहौ विलावल–पद १३३

राधा हरि की भाँवरिं विधि सौं पारहीं। सुर नर मुनि सव जै जै वचन उचारहीं॥ अदलि वदलि कैं फेरे विरियाँ सातहैं। मनु सोभा द्वै सिंधु आज सरसात हैं॥ सरसात सोभा सिंधु वर वरनी निरखि अस मुदित हैं। अहा अद्भुत समय सजनी उभै विधु के उदित हैं॥ श्रुति पढ़त ब्रह्मा प्रेम पूरित जुवति मंगल गावहीं। वाजंत्र कोटि तेतीस हरपे पुनि कुसुम वरपावहीं॥ पहिली भाँवरि अंकुर प्रेम उदै भयौ। दूजी भाँवरि विरवा द्वै दल जु निर्मयौ॥ तीजी भाँवरि गोभा अति सरसत भई। चौथी भाँवरि फैलनि ताकी सुख भई॥ सुखमई फैली प्रेम वेली पाँचई भाँवरि लई। छठी भाँवरि भरनि में सखि मोद की लागी जई॥ सातई भाँवरि अचल फल नर नारि हरपे देखिकैं। नंद सुत सुकृती कहैं दुलहिनि जु रूप विशेपि कैं॥ परत भाँवरिनु तनतें छवि उझली परै। सारद हू लखि थकित तौ कौ वरनन करै॥ वना वनी में हिय उरझनि भइ उहि घरी। घुर गई गाढ़ी ग्रंथि न काहू लखि परी॥ लखि परी न काहू ग्रंथि गाढ़ी परखिकैं तरुनिनु कही। सनवंध पूरव अहा सजनी मैं हिये की गति लही॥ नैंननि जु रंग वसंत फूल्यौ अंग फूलनि कौ गनैं। वरना भरयौ गुन अमित लखिये चरित आगम हूँ भनैं॥ सुर नर मुनि अभिलाप आज पूरन भई। यह मंगल रस रीति निरखि हौं वलिगई॥ व्रज उझल्यौ आनंद देखि विनमित अहा। हिय भरि सुधि विसरावत और कहौं कहा॥ कहौं कहा विचारि सजनी सुमति पैरत रंग में। खेलत वछरुवा गाइ-खिरकनि भरे परम उमंग में॥ धनि धन्य कीरति महरि जसुमति रस रतन उपजे जहाँ। वृन्दावन हितरूप अस सुख समुझि सखि हरिपुर कहाँ॥

मंगल छंद राग सूहो विलावल—पद १३४

घूँघट वरनी देखि वना विथक्ति भयो । आजु सतगुनो रूप अतिलड़ी तन छयो ॥ उत मोहन अँग वरपत सोभा मित नहीं । छाँड़ि पलनि की मेंड़ आँखि इक टक रहीं ॥ रहीं इक टक निरखि अखियाँ उभै छवि सागर वढ़्यौ । भाँवरि परत इहि वार मानों प्रेम सों त्रिभुवन मढ़्यौ ॥ आरतौ श्री वृपभानु अनुजा आइ वर वरनी कियो। दै अरघ विविधि असीस कीरति दुहुँनि कौं भीतर लियो ॥ कपट के देव पुजावति करि वहु चातुरी। हरि भोरे कर धरत वात पुनि हिय फुरी ॥ हँसी सकल व्रजवाल न मैया सिख दई । जाये किहिं उन्हारि सदन काके गई॥ गई काके सदन रानी वचन अस वनि-तनि कह्यो । त्रैलोक सोभग सींव मुख हरि चितै हँसि नोचें चह्यो ॥ पुनि पुनि वलैया लेति कीरति भाग्य सुख विनमित फली । जसुमति सुवन समवर न त्रिभुवन दुलहिनी कीरति लली ॥ नंद राइ कुलमान तहाँ तव आइयो । तेहिं कर अतिलड़ मौर सुहरपि खुलाइयौ ॥ गुलचतिं सव व्रज वाल लाल मुसिकात हैं । सुख सोभा के वीज भरत मुख जात हैं॥ भरत सुख के वीज मुख तैं भाम कोलाहल करैं। वरना वनी कों निरखि चटकनि आँगुरी अंकनि भरैं ॥ लै चले जनवासे जवहिं तव रतन भूरि लुटाइयौ । जै जै नमः भये शब्द दोउनि नंद के ढिग लाइयौ ॥ प्रमुदित गोकुल ईस भयौ वांछित सवै । जो आनँद उर उमड़्यौ न कहि आवत अवै॥ सुकृत पाछिलो समुझि समुझि चुप रहत हैं। जस गावत मुनि देव धन्य नर कहत हैं ॥ कहत हैं धनि धन्य श्री परजन्य कुल वेली फरी । विविधि मेवा लाड़ व्रजपति गोद श्री राधा भरी ॥ हरि जनक रतननि मूठि लैकैं वर वधू पर वारहीं। वृन्दावन हितरूप वलि पुनि तात घर पग धारहीं ॥

रहसि वधाये की असीस व्रजवधूनि के वचन

राग गौरी—पद १३५

अहो गुन रूप अवधि जोरी वनी भाँवरि विधि करी है मुनोस हो। सव

मुरि मुरि अंचल छोर लै ब्रज वनिता देति असीस हो ॥ गुन रूप अवधि जोरी बनी॥ टेक ॥ आज परनी गोकुल नाथ सुत भयौ भुव नभ मंगल मोद हो । अनहोतौ सुख नैननि लह्यौ कहि विधि तन ओटति गोद हो ॥ भइ अति छवि मदन गुपाल की बरनी सँग भाँवरि लेत हो । दोउ उपजे बिरवा रूप के बरसानौ नँदीश्वर खेत हो ॥ इहि कौतिक भूले देव गन नर नारिनु गनती कौंन हो । मिलि सजन सजन वरपै जु रँग इहि रावलपति के भौंन हो ॥ सखी अजिर छबीले गोप गन बैठे पट भूपण साज हो। सखी हरिपुर सुरपुर नागपुर सकुचे यह निरखि समाज हो ॥ सखी घर घर देखे ब्याह ब्रज अरु घर घर मंगलचार हो । सुख अवधि भई बृपभान पुर राधा हरि भाँवरि बार हो॥सखी वर कमनी बरनी ललित समधी सम इत उत देखि हो। सखी भाग्य अवधि फल यह गन्यौं बरनौं कहा वचन विसेपि हो ॥ सखी यह वानिक कहत न बनैं जब मंडप बैठे आइहो । बृन्दावन हित छवि निधि बढ्यौ दृग अँजुरी नहिन समाइहो ॥

गौरनीचारु

मंगल छंद राग सूहो विलावल-पद १३६

बरनी मंदिर आई जननी मुदित है। पहपियरी की बार तरनि भयौ उदित है ॥ दिन दूलहु नंदनंदन हरपि बुलाइयौ । होत गौरनीचारु तो उबटि न्हवाइयौ ॥ न्हवाइ उवटनि करति वनिता वसन आड़ौ तान कैं। इत हिं राधा कुँवरि उत मोहनहिं राख्यौ आनि कैं ॥ हँसि हँसि लला कौ ललित रीतिनु बधू वचन सुनावहीं। बहु सुगंधनि डारि जलमें लाल उबटि न्हवावहीं॥ कुँवरि अंग कौ उबटनि जल दुरि लावहीं । नेही रसिक किशोर सीस ते नावहीं॥ जदपि करत बचाव न मानति भाँमिनी। मनु घन कौ अवपेक करावति दामिनी ॥ दामिनी अवपेक घन कौ करति अस सोभा बढ़ी। हियें फूलनि श्याम के पुनि वदन अति पानिप चढ़ी ॥ अंबरहिं इत उत करत उझकत कुवर गोकुल राइ कौ । ललितादि गुलचा देति नागर भरयौ हिय

रस भाइ कौ ॥ अंग अँगोछति इत उत वसननि सचति हैं। पूजा नाना भाँति गौर की रचति हैं ॥ पट भूषण पहिराइ विनय बहु करति हैं। रौरी अच्छत धूप दीप रुचि धरति हैं ॥ धरति हैं रुचि भोग मंगल द्रव्य लै पूजा करी। जोरे सबनि मिलि हाथ अविचल होहु श्री राधा हरी ॥ मुसिकात गिरिधर कहति बनिता लाल अब सिर नाइयै। जाये जसोमति रंग गहिरे अंग लखि बलि जाइयै ॥ थार परसि व्रजबाला लाईं प्रीति सौं। दूधा भाती करत दोउ रस रीति सौं ॥ बूझति गोपी सत्य श्याम मुख भाषियै। महरि कौन घर जाति न अंतर राखियै ॥ राखियै नहि लाल अंतर जानि यह सबकौं परी। कहूँ गाढ़ी लगनि लागी रूप निधि तब उर धरी ॥ सकुचत कछू व्रजराज नंदन आचवन बीरी दई। वृन्दावन हितरूप कीरति चटकि करजनि बलि गई ॥

कुँवर कलेऊ

करखा छंद राग पंचम—पद १३७

आजु वृषभानु के भवन गहमह अधिक करत सादर कलेऊ सबै गोप सुत। मध्य बलराम सुखधाम बनी मंडिली उदित ससि मनहुँ राका जु उडगननि जुत ॥ लटपटी पाग सिर श्रवण कुंडल लसत विविधि भूषण वसन अंग राजैं। अजिर में रूप फुलवारि फूली मनहुँ कृष्ण के मित्र इहि भाँति भ्राजैं ॥ साक अरु पाक बहु भाँति परसे रुचिर स्वाद सरसत महा मुदित मन में। हंसति गुलचति वधू देति गारी ललित सुबल के चिहुँटिया भरति तन में ॥ पकरि मधुमंगलहिं कहति नवनागरी घेरनीचारु याकौ जु कीजे। वदन कौं माँड़ि बहु भाँति कियौ आपु बस आँगुरीं धरत मुख छाँड़ि दीजे ॥ तोप अर्जुन भोज रैतिक पैंतिका बहु नचाये वधुनि छल पकरि कैं। विविधि कौतिक करैं चिवुक पर कर धरैं छाँड़ि दिये अधिक आधीन करिकैं ॥ लाल रनवास भीतर कुलाहल सुनत बहुत हरषित उझकि उझकि देखैं। मनसुखहिं घेर दस पाँच पूजा करति और सबके वसन चित्र लेखैं ॥ कहति हलधर कहौ नाम

तुम पिताकौ मातु कौ नाम हम विदित जानैं। समुझि मुसिकाइ पट देति ओलै वदन अहा प्रभुता कहा कुल बखानैं॥ कह्यौ रुचिमानि इहि विधि कलेऊ कुँवर आचमन लेत वीरी जु दीनी। वृन्दावन हितरूप सबनि अँग अंग अस मैन की सैन द्रग चौंध दीनी॥

इत उत की सजन वीनती वड़हार न्यौती

मंगल छंद राग सूहो विलावल—पद १३८

गोप संग लै आये पुनि रावल धनी। सुनियौ नंद महाँमति व्रज जन सिर मनी॥ हमहिं ओप अति दीनी अस विनती करी। सोम वंस की कीरति निर्मल विस्तरी॥ विस्तरी निर्मल वंस कीरति जहाँ नृप अगनित भये। मनहुँ गंगा वारि पावन चरित जिनके नित नये॥ राकेस वरपत सुधा सीतल वंस तिहिं अचिरज अहा। तहाँ उतपति भये व्रजपति गुण अगाध कहौं कहा॥ बुद्ध ऐल सुत जासु जग्य करि प्रभु जजे। नहुप इन्द्र के आसन वैठि जगत गजे॥ नृप जजादि प्रताप सु विस्व बखानिये। यदुकुल कीरति तीरथ वेदनि जानिये॥ जानि जदुकुल विपुल तीरथ धन्य जस वड़ लेखिये। देवमीढ़ उदार गाथा प्रवल भाग्य विशेपिये॥ गुण गन विसद तप तेज छत्री वैश्य कुल उतपति कियौ। उत सूर इत परजन्य उत वसुदेव इत तुम सुख दियौ॥ एजू सुनि हरि जनक तुमहिं उपमा जिती। दीजे इहि जग कौन कहौं प्रभुता किती॥ ससि कलंक रवि तपत सिंधु खारी रच्यौ। गिरि जड़ कमल विरंचि माँझ कादौं रच्यौ॥ रच्यौ कादौं कमल विधि ने मणि अचेतन अंग है। कलप तरु चातुरी हीनों धेनु पसुता संग है॥ नद नदी पावस छुभित ह्वै कैं तीर के तरु वर हनैं। तुम सकल गुण की खानि व्रजपति यौं न ये उपमा वनैं॥ विप्र मनोरथ भरन गऊ प्रतिपाल जू। व्रज जन पोपन निपुन व्रजेस कृपाल जू॥ इहि मंगल रजधानी रही भर पूरि जू। जाँचत वड़े वड़े भूप चरण तल धूरि जू॥ धूरि तुम पद भूप जाँचत पुत्र कुल भयौ अति वली। अग्र कर गिरिवर उठायौ भाग्य की महिमा फली॥ मुख एक चरित अनंत तुम कहा

कहौं नाहिं अनेक जू। वृन्दावन हितरूप तुम सम तुम जु जग में एक जू॥

मंगल छंद राग सूहो विलावल—पद १३६

तव वोले व्रजराज धन्य वृषभानु जू। तुम सरवरि कहौं कौंन करै जग आन जू॥ रवि कुल तिलक उदार लोक जस गाइयै। लक्षण महत विशेष आपु तन पाइयै॥ पाइये तन महत लक्षण निगम आगम जे भनैं। धन्य रावल ईस तुमतें वनी सो कापै वनैं॥ सुमिरिये वारंवार तुम गुन को वियौ लाइक अहा। दान अरु सनमान कौं तुम से जु तुम वरनौं कहा॥ सूरज वंस प्रसंस भये छितपाल जे। धर्म धीर गंभीर गुणनि समुदाइ ते॥ ककुत्स्थ अरु जुवनाश्व मान्धाता विदित। सगर भगीरथ भूप भये जिन कुल उदित॥ भये जिनि कुल उदित खट रु दिलीप रघु भुवतल वली। हरि के गुणनि सौं मिली कीरति पवन सम जग में चली॥ तिन कुल कमल महीभान नंदन सुजस सौरभ छाइयौ। आसक्त जन नेही अलिनु कौ सुमति चित्त चुराइयौ॥ गोपनि कुल तुम मुकुट देखि मुख दुख छिपै। सीतल किरनि अलौकिक मानौ रवि दिपै॥ देस भयानें अचल राज प्रभुता वड़ी। विप्र गऊनि सुख वर्द्धन धर्म सुमति अड़ी॥ अड़ी रति मति धर्म श्री वृपभानु वहु मंगल धुजा। कहत पुनि पुनि नंद एजू तुम निवल जनकी भुजा॥ रावल रवानी रहति पद परताप नित सुख वरपहीं। नित नयौ उत्साह देखनि सुरनि के मन हर्पहीं॥ प्रणत मनोरथ भरन जलद अनुराग कौ। कौ निर्मित वपु कियौ व्रज जन भाग कौ॥ नेह रूप रस रतन धाम करुना जनौं। कै व्रज भरयौ गँभीर रंग सागर मनौं॥ मनौं सागर गँभीर रँग कौ उपमा न करनी रावरी। फल चारि सेवत पौरि इहि मुख जाति नहिं अस्तुति करी॥ तुम सम जु तुम रावलधनी उपमा अधिक हम कौं दई। वृन्दावन हितरूप वलि व्रजपति प्रसंस जु निर्मई॥

दोहा—तात संग वैठे कुँमर सुनी वड़ाई कान।
दुहुँ कुल कौ निर्मल सुजस कियौ अमृत रुचि पान॥१४०॥

वड़हार की ज्यौंनार

छंद राग परज—पद १४१

महा मुदित भरे गोप भई जव इत उत वहुत वड़ाई। होत अधिक आधीन भूप वृषभान नंदु मुख गाई॥ वहुरि चोज परिहास करत जैसें रस-रीति चलिआई। त्रिपत न होत श्रवण सुनि सुनि रँग वरषैं सजन महाई॥ वरसै रंग महाई वचननि हरपे दोऊ राने। सोम और सूरज कुल प्रभुता सुनत मुनीस सिहाने॥ देस देस के भूप प्रसंसित रचना वचन सुहाई। देवनि हूँ मान्यौ सुनि मंगल ऐसी गाथा गाई॥ परम रमा उतपन्न जासु कुल इन गुन करि जु भई है। सव अवतारिनि मूल नंदसुत पायौ सुकृत मई है॥ ग्यान-वंत मुनि कहैं परस्पर अपनी अपनी वानी। नंद और वृषभान सुकृत की थाह न काहू जानी॥ सजन गोठी करि आये रावल पति अपने गेहा। व्रजपति सुहृद भाव सुधि करि करि पूरित परम सनेहा॥ कियौ सिंगार श्याम सुंदर कौ जनक भाग्य फल मानी। वृन्दावन हित रूप जासु परसति नहिं निगमनि वानी॥

छंद राग परज—पद १४२

विनती करि रावलपति पुनि पुनि रची वहुरि ज्यौंनारा। महत मान दै सजन वुलाये आयौ दिन वड़हारा॥ आये गोप छवीले वनि ठनि आनंदित अति भारी। ललित गलिनु विच वरषत सोभा देखि थकित नर नारी॥ देखि थकित नर नारी दूलह चल्यौ भानु घर ऐसै। पग पग परत विछौंना छवि के अरु उपमा कहौं कैसै॥ वीथी पौरि अलंकृत तिनमें मद गज गैन चले हैं। नीर सुगंधि अरगजा सींची सौरभ उठत भले हैं॥ नैंन लोल मृदु वोल सखा सँग अगनित गोप कुमारा। मैंन सैंन में मनु मूरति धरि करै वसंत विहारा॥ आगे पाछे छुटति छवि भरी महतावें जु हवाई। अप अपनी खिरकीनु देखनि कौं नव तरुनी मिलि आई॥ भाँति भाँति की पाग लट-पटी कंचुक जरी दुकूले। सखा मंडली मध्य कृष्ण रवि और कमल से फूले॥

उझकें भामिनि मनु दुति दामिनि छवि नव जलधर देखें। वृन्दावन हितरूप माहिले मन सौं मिलति विशेषें॥

छंद राग परज–पद १४३

गावति नटीं जटी छवि अंगनि मनहुँ चित्र लिखि काढ़ीं। तखतनि चढ़ीं अलग गति लेईं सुलप भेद सुर वाढ़ीं॥ हाव भाव लावन्य मधुरता मूरति धरि मनु आईं। सुगतें लेति भाँति ऐसी लाघवता वरनी न जाईं॥ लाघवता वरनौं कहा तिनकी ठुमुकि धरैं पग ऐसे। रति रंभा उरवसी चरन लागी हू न सोहें जैसे॥अप अपनें गुण गुणीं दिखावैं गावें अतिलड़ लारें। रतन मूठि वरपावत व्रजपति लै लै विरद उचारें॥ वीणा वैनु और सारंगी मधुरी धुनि सहनाई। धौंसनि की धँधकार होत सब चले मंद गति जाई॥ कौतिक वाढ़्यो भीर रुकनि में जरैं मशाल दुसाखा। पलक परन दृग खीझे वंधू जन देखनि अस अभिलाषा॥ मनमथ कौ मनमथ वपु सजनी पुनि दूलहु वनि आयो। कौंन धरै धीरज इहि देखत गयो मन रतन ठगायो॥ हाथ लगै कैसें कहि नाटक चेटक या छवि माहीं। वृन्दवन हितरूप विक्यौ मन अव आवनि कौ नाहीं॥

छंद राग परज–पद १४४

एक कहै कटि में यह मुरली उरसैं नंद ढिटौना। एक कहै जादूगर कैसे यामें भरे जु टौंना॥ एक कहै अधरनि में सजनी भरयौ अमी रस ऐंना। सो मुरली धुनि में ह्वै तरुनिनु विपुल जगावति मैना॥ विपुल जगावत मैना देखो याके चंचल नैना। एक कहै चलि भानु भवन गारी देहिं रचि रुचि वैंना॥ एक कहै इहि लटकि चलनि पै कौन वधू जु न मोहे। एक कहै त्रिभुवन याके सम रच्यौ विधाता कोहे॥ इहि विधि वरनन करें लाल को प्रमुदित गोप दुलारी। पहुँचे पौरि भानु की नौवत घुरनि लगीं तिहिं वारी॥ चरन धुवाइ लिये मंदिर में हरपि वैठिना दीनौं। मंडप तर राजत व्रजपति तहाँ सुभग विछौंना कीनौं॥ सुंदर श्याम कमल दल लोचन तात गोद यों राजे। कनक

मेरु कंदरा सजल मनु धुरुवा अंक विराजै ॥ कै सिंगार तरु विरवा अद्भुत कंचन धरु दरस्यौ है । वृन्दावन हितरूप पुंज कै आँगन भान लस्यौ है ॥

छंद राग परज-पद १४५

नाँनाँ चित्र विचित्र किये जलझारी कंचन थारा । अधिक मान सौं देत मुद भरे राधा जनक उदारा ॥ बाँटत वैठि घोप को रानी करि सम्हार वहु भाँती । सरसत प्रेम देखि अतिही सनमाने सकल वराती ॥ सकल वरातिनु कंचन थारा दीने अस छवि छाजै । अगनित चंद विछे मनु अवनी ऐसी उपमा राजै ॥ पीतांवर धोती उपरैना पहिरैं सव गोपाला । अँग अँग लसत विविधि आभूषण उर मोतिनु की माला ॥ वड़े वड़े आरज गोप नंद ढिंग वैठे रचि रचि श्रैंनी । दीरघ देह तोंद अति कमनी वानिक दृग सुख दैंनी ॥ ज्यौं सुर सभा अमी अँचवन कौं सुचि रुचि वैठे माई । ताहू तें सतगुनी कै कोटिक शोभा वरनी न जाई ॥ पातरि वाँधि गरग रिपि छोरी अमृत वचन उचारे । अज्ञा दई महामुनि सवकों जैंवौ जैंवन हारे ॥ भाँति भाँति सामग्री परसी जेंवत स्वाद सने हैं। सकरे निखरे पाक रचे वहु आवत नाहिं भने हैं॥ लै लै ग्रास गोप मन हुलसत ऐसी वनी रसोई । लेहु लेहु वृन्दावन हित यौं वोलत हैं सवकोई ॥

छंद राग परज-पद १४६

कमनी अंग वचन मीठे इक ठाड़े फिरत वतावैं । खेलत कला मनौं नट-वा इक विजन लै लै धावैं ॥ अति गुनवंत सुसील सुमुख इक वहुत करत मनुहारी । द्रवत मनौं मकरंद कमल वचननि रस वरपत भारी ॥ वचननि रस वरपत रंग परस्पर हँसत लसत सव कोई । चोजनि सनी कहत मृदु वातैं सजन रीति ज्यौं होई ॥ घृत पक विविधि परस व्रजपति ने सकरे साज मँगाये। उज्जल भात मूँग पुनि साजी पीत भात पुनि लाये॥ विविधि मसाले परे दार में सरस सुतैवन कीये । देखि नैंन फूले गोपनि के हरपि उठे तव हीये ॥ डारि सिता वँधेवा सिखिरिन भरि भरि कनक कमोरी । भोजन करत

गोप आनंदै रसना रुचि नहिं थोरी ॥ गोघृत कलस उलैंडनि परस्यौ तापर उज्ज्वल वूरा । विधि सौं तले चरपरे पापर दूध पाक अति रूरा ॥ वेसन के वहु साज सँवारे लेत स्वाद सरसानैं। वृन्दावन हित जैंवत रुचि सौं सुख वरपत वरसानैं ॥

छंद राग परज–पद १४७

हुलसे हिये जवै तव दोऊनि साख वदलनौं कीयौ। लटकि लाड़ सौं मुसकि ग्रास वृपभानु नंद मुख दीयौ ॥ उभिल्यौ आनँद वारि हगनि सुख भीजे सकल जनेती । चारौं ब्रह्मानंद कोटि भइ प्रीति परस्पर एती ॥ वड़ी प्रीति वरनौं मति केती प्रमुदित सजन समाजा । उतलाइक नंदीश्वर रानौ इत रावल महाराजा ॥ जिन भूपनि की रहिनी कहिनी शिव ब्रह्मादिक गावैं। शेप सहस मुख कहत निरंतर अजहूँ पार न पावैं॥ भुव तल मुकुट मुकुट हरि-भामनि उपमाँ वनति न आँनौं । ज्यौं देवनि पति देव श्याम यौं नंदग्राम वर-सानौं ॥ जहाँ नित नयौ कौतिक देखनि तरसति देवकुमारी । चढ़ी विमाननि कुसुम वृष्टि करि कहति धन्य व्रज नारी ॥ उभलि परचौ अनुराग दुहूँ दिसि उचरत मुख हित वानी । वनी अधिक ज्यौंनार रसीली व्रजपति आप वखानी॥ धवल महल मणि रचित झरोखनि वैठीं नैंन विसाला । परम रँगीली गावति गारी वृन्दावन हित वाला ॥

गारी

मंगल छंद राग सूहो विलावल–पद १४८

सुनिहो सुनि कुँवर कन्हैया । सव जग जानी जसुमति मैया ॥ जानी सकल जग माइ जसुमति गुण न मुख वरनत वनैं। व्रज में सवैं नर नारि घर घर चरित उनहीं के भनैं ॥ कमनीय तन अति साधु लच्छण महा भाग्य विशेपियै । कोउ दई रचित सुनौं लला इहि परम कौतिक देखियै ॥ गोरी क्यौं कारौ जायौ । सव मन वड़ि अचिरज आयौ ॥ आयौ सवनि मन यही अचिरज लला आप विचारियै । गोपकुल प्रतिकूल रानी वात कौं उर

धारियै ॥ सकुचौ न ऊँचे चितै मोहन महरि अस लाइक महा । आपनें सुख सुखित जननी दोप हरि तुमकों कहा ॥ द्वै बात सकल जग खोटी । ते तुम कुलमें लखियत मोटी ॥ मोटी भई व्रजराज कुलमें चोरि माखन खाइयौ । मैया महरि कौ प्रगट जस तन श्याम धरि दरसाइयौ ॥ सब लोक लोकनि विदित गाथा मुनिनु जहाँ तहाँ गाइयौ । तदपि न रंचक लाज परसी सुनत हरि मुसिकाइयौ ॥ ओढ़ी कुल जस कामरि कारी । धनि धनि हरि गोप विहारी ॥ धनि गोप वंस मयंक जामें कालिमा विधिना रची । लक्ष जोजन सिंधु तामें दई जल खारी सची ॥ यौं घोप राने भवन भीतर बात यह क्यौं बूझियै । बृन्दावन हितरूप बलि हरि चरित सब जग सूझियै ॥

राग काफी—पद १४६

हाँ सुनावति भाँमिनि गारी । हाँ इतै चितवौ गिरिधारी ॥
हाँ पहिल बिगरयौ ननसारा । हाँ सबै परयौ जानि विचारा ॥
हाँ सुमुख तन नाना कारौ । हाँ अचंभौ यह मन भारौ ॥
हाँ सुता तन गोरी जाई । हाँ छिपी जग नाहिं बड़ाई ॥
हाँ महरि सु तुम्हरी मैया । हाँ लखी हम कुँवर कन्हैया ॥
हाँ महरि अँग गौर बिसाला । हाँ जनें जिन तुमसे लाला ॥
हाँ बड़े व्रजपति की रानी । हाँ परे क्यौं रीति बखानी ॥
हाँ जदिपि वह्न भाँति छिपाई । हाँ तदिपि तुम रूप जनाई ॥
हाँ महा नव रंगिल बनिता । हाँ लला मोहन की जनिता ॥
हाँ महल रावलपति लावौ । हाँ लला क्यौं बदन दुरावौ ॥
हाँ जसोधा यस जग जान्यौं । हाँ रह्यौ कछु नाहिन छान्यौं ॥
हाँ चितै मुसिकाने लाला । हाँ बड़े बड़े नैंन रसाला ॥
हाँ हँसीं तब नागरि नारी । हाँ बृन्दावन हित बलिहारी ॥

छंद राग परज—पद १५०

लगतिं कोटि आदर ते मीठी गोपनि कौं अति प्यारी । हीये कौ हीयौ

फूलति सुनि समध्याने की गारी ॥ ऐसैं सुनि न निगम धुनि प्रमुदित ज्यौं अव मुदित भये हैं । कन अखियनि चितवत मोहन पुनि अँचवन सवनि लये हैं ॥ अचवनि लये सवनि भोजन करि नंद जूठि नग डारे । हरि आगे लै गोपनि हँसि हँसि जनवासे पग धारे ॥ सिर गूँदी की मंगल विरियाँ विप्रनि सोधि वताई । गज दंतनि की जटित मणिनु सौं सुभग काकही आई ॥ मौरी मँहिदी अधिक रात्रिनी सो व्रजराज पठाई । कनक कटोरी नग जराइ की भरि फुलेल पहुँचाई ॥ नाइन कै रंभा ठकुराइनि एड़ी माँजि सँवारी । रचत महावर भई वावरी दृष्टि निहारत हारी ॥ परसत चरन ललाई दौरी पुनि पुनि ताहि निहारैं । दे वैं हैं कि दैचुकी ऐसैं होत नहीं निरधारैं ॥ पाटी पार सिंगारी नख सिख वृन्दावन हित आछैं । भरी मखतूल कनक की झविया देति महा छवि पाछैं ॥

राग मारू—पद १५१

नइनियाँ तैं को सुकृत कियौ । उवट्यौ अरु अन्हवायौ जो तन दृष्टि न जात छियौ ॥ नइनियाँ ॥ टेक ॥ मीड़े केस खोलि कैं जूरा को सम भाग वियौ । एड़ी माँजि रिझाइ कुंवरि वांछित भरि गोद लियौ ॥ छकी रहति वरनी सनेह सौं मादिक मनहुँ पियौ । प्रथम सगाई वार नेग अस पायौ कुटँव जियौ ॥ धन सौं भरयौ भवन राधा दत लाड़ भरयौ जु हियौ । वृन्दा-वन हितरूप लली लखि अनत न पाँउ दियौ ॥

छंद राग परज—पद १५२

अति कोविद मिलि ललित रीति वहु क्लसनि केसरि घोरी । मलयज घसकै कियौ अरगजा अरु थैलनि भरि रोरी ॥ भाँति भाँति सौं उत्तम चुनि मेवनि वहु थार भराये । वाजे विविधि वजावत्ति गावति लै अगनित जन आये ॥ आये जन अगनित लै मेवा गहिने विविधि अमोली । मणिमय वंदनमाल मनोहर धरी वनि गरनि टोली ॥ इत उत के गन गोप सिमिटि कैं आये छवि विस्तारा । वैठी सभा इंद्र मद भंजन मानिक चौक मझारा ॥

सजन मिलावौ भयौ दुहूँ दिसि वरपत रंग महाई । केसरि रंग सुगंधि चरचि कैं अवीर गुलाल उड़ाई ॥ अग्रज अनुज सहित व्रजपति कौं पुनि सादर सुख माँड्यौ । वढ़्यौ परस्पर रंग वहुरि गारी दै वनितनि भाँड्यौ ॥ भीतर रँगे सनेहनि ऊपर गहरे रंग सने हैं । नंद और वृषभानु महामति हित के वचन भने हैं ॥ नौहूँ नंद भानु पुनि नौहूँ उठि उठि गहकि मिले हैं । इत उत उर घुमड़नि अति हित की प्रेम प्रवाह भिले हैं ॥ बुद्धि समान होइ तव समधी नाम सौंचिलौ पावै । सो पूरन वृषभान नंद में वृन्दावन हित गावै ॥

छंद राग परज–पद १५३

प्रफुलित मनौ तरनि अंबुज मुख वीरी रचि रचि दीनी । छवि पावत दसनावलि हँसि मनुहारि वहुत विधि कीनी॥ विनवत हैं करजोर सुमति वहु रतन भेंट लै राखे । अहा कहा रस रंग रह्यौ मिलि वचन प्रेम के भापे ॥ भापे वचन प्रेम के पुनि पुनि वहुत करी आधीनी । धन्य धन्य हरि जनक घोपपति उपमा हमकौं दीनी ॥ सुमुख गोप अरु इन्द्रसेन मिलि वर वरनी के नाना । पुर परिवार मिले सब भेंटैं दीनी वेद विधाना॥ अतिसै रस वरस्यौ जव दोऊ भूपनि वदली वीरी । गावति गुन सारदा पढ़त मुनि वानी गहर गँभीरी ॥ कीने विदा वराती सवकौं भूपण पट पहिराये । विप्रनि दान दिये इत उत तें जो जाके मन गाये ॥ रतननि भर्यौ थार रावलपति वहु पाँवरी उढाई । करि करि तिलक सवनि के माथे भेटैं सुविधि चढ़ाई ॥ बाँटी मूँठि घोपपति सव ठौं ह्वै रह्यौ जै जै कारा । वृन्दावन हितरूप जाउँ वलि वुरे निसान अपारा ॥

छंद राग परज–पद १५४

साजि दुकूल आभरन तन मिलि वैठे गोप समाजा । तिनमें उदित दिनेस मनौं मधि गोकुल रावल राजा ॥ तम दारिद्र देखि मुख भाजै वंदी भाट वुलाये । कोसनि भीर छये मंगित मागध चारन सव आये ॥ आये मागध सूत विप्र वहु पौन छतीस वुलाई। वकुचा खोलि नंद तहाँ वठे थैलिनु

गाँठि खुलाई ॥ उचित रुचित सबकौं पहिरावत जो जाके मन भावै । टोडर छाप मणिनु के कुंडल दै जु तुरंग चढ़ावै ॥ बोलि बोलि सबकौं व्रजपति जू मान बहुत विधि दीनौं । पुत्र विवाह घोष के रानै सब सिर साकौ कीनौं ॥ जे सिमटे जाचक त्रिभुवन के वांछित आस पुजाई । इन्द्र समान फिरत ते भिक्षुक दात न बरनी जाई ॥ धन्य धन्य हरि जनक सबनि मुख सुनियत मीठी बानी । बहुत प्रसंसा करत नारि नर निर्मल कीरति गानी ॥ लोक लोक में चली सुधासम दोऊ भूप कहानी । वृन्दावन हितरूप सोम सूरज कुल बिरद बखानी ॥

छंद राग परज–पद १५५

इहि मंगल जाचक त्रिभुवन जन भये दुहूँ घर आई । शिव से विधि से पुनि नारद से मुक्ति भुक्ति ह्याँ पाई॥ ब्रह्मानंद मगन सनकादिक तिनकौ चित आकर्ष्यौ । श्री राधा माधव विवाह दिन व्रज अतुलित सुख बरष्यौ ॥ सुख बरष्यौ सिंगार ललित रस तरु जु व्याह फल लाग्यौ । निर्गुन मति सूखी उर बेलिनु प्रेम गोभ अनुराग्यौ ॥ यह सुख गोपी गोप भाग्य लखि दूलह दुलहिनि सोभा । ठाढ़े श्री वृषभान भवन में बढ़ी बदन पर ओभा ॥ हँसत लसत सरसत मनहीं मन जुरे गोप महाराने । समधनि गोद नारियर धनिया भरि व्रजपति मुसिकाने ॥ कीनी विनय बिदाकी अज्ञा दीजें रावल राई । अधिक रह्यौ रस रंग कौंन मुख कीजे अजू बड़ाई ॥ बार बार जोरें कर इत उत रसभरे बचननि बोलें । सब मिलि करी चलनि की त्यारी मुदित बराती डोलें ॥ नंद उलटि आये जनवासे रथ गज अस्व पलानें । वृन्दावन हितरूप जाऊँ बलि हर्ष बजे सहदानें॥

पलकाचार तथा विदाईगी

राग सूहो बिलावल–पद १५६

गज दंतनि के पाये नग पंकति खचे । विद्रुम पाटी चारु चित्र तिन पर रचे ॥ बुन्यौ पाट मखतूल बहुत रचना करी । दुग्ध फेंन सम बसन बिछाये

सुभ घरी ॥ सुभ घरी धन्य बिसेषि सजनी नंद सुत जु बुलाइयौ । करि सुभग सिंगार तिहिं छिन कुँवरि लै बैठाइयौ ॥ हरषीं वधू मंगलनि गावति पंच सब्दनि धुनि भई । ललित मुख तन चितै इत उत आजु हौं बलि बलि गई ॥ हुलसी बनिता आवति भीर गली गली । भेटनि रचि रचि लावति बाढी रँग रली ॥ आई कीरति धाम लाभ लोचन लयौ । बहुत दिननि तें वांछित सो दिन यह भयौ॥ भयौ सो दिन भूरि मंगल नंद सुत राधा लली। बैठे जु पलिकाचार सर्वसु वारनैं इहि छिन अली ॥ जोरी रची बिधि एक भुवतल घोष जन हिय लाग की। दुलहिनी तन देखि करत प्रसंस दूलह भाग की॥कीरति बसन अमोल काढ़ि तीयर धरी। निरखत चौंधत दृष्टि लगी मोतिनु लरी ॥ छाक छबीली रचि रचि सकल अजिर भरयौ । विधि सौं औरौ साजि आनि गनि गनि धरयौ॥ धरयौ गनि गनि साज भाजन कनक के कहाँ लगि भनौं । किये बनितनि तिलक सिमिटे रतन भार किते गनौं॥ इक गुलचि इक लै बारि मूठिनु मुदित सबकौं देति है । एक रीझी चटकि करजन पुनि बलैया लेति है ॥ जननी जनक उदार प्रेम पूरित भये । अज्ञा रिषि पै माँगि धान दंपति बये॥ थकित भये नर नारि अवधि सोभा लखी । जुग जुग अविचल जोट असीसत हम सखी ॥ हम असीसन देति जसुमति धन्य कीरतिदा भई । जहाँ ये रस रतन उपजे रूप बरषा नित नई ॥ घोष सुख सागर बढ़ायौ नाहिं ताकौ पार है । वृन्दावन हित थकित सुर नर मुनि जु कौतिक हार हैं ॥

छंद राग परज-पद १५७

कुँवरि कुँवर बैठे पलिका छवि निरखि वारि पियौ पानी । भयौ मनोरथ पूरन अब न्यौछावरि बाँटति रानी ॥ पट भूषण निर्मोल छबीली छाप ललहि पहिराई । तन-मन नाहिं समात जु फूले तिहिं छिन कुँवर कन्हाई ॥ कुँवर कन्हाई मुसिकत ज्यौं त्यौं आनंदित ब्रज नारी । गावति मंगल करति कुलाहल भवन भीर भइ भारी ॥ इक जूथनि मिलि आई मंदिर एक गलिनु

में आवैं। इक जसुमति पुनि नाम नंद कौ लै लै गारी गावैं ॥ मेवा भर, गोद वरनी की वना भाग्य फल मानैं। रतननि मूठि भराइ कुँवरि पै देति द्विजनि कौं दानैं ॥ मंडप तनी खोल मेरे अतिलड़ धनि जसुमति जिनि जायौ। श्री कीरति पुचकारि लाल कौं ऐसो वचन सुनायौ ॥ मानतु नौं वरना अति मचल्यौ हँसत भान जू आये। गौधन खिरक छये वरहानैं ते सब हरिहिं वताये ॥ छोरी तनी नंदनंदन तव मनमें मुदित महाई। वृन्दावन हित जदपि लोक पति तदपि मनौं निधि पाई ॥

राग गौरी–पद १५८

ललीं चलन दिन आज मात अरवरति है। थोरे जल में मीन मनौं तरफरति है ॥ पुनि पुनि ताकति वदन नैंन जल भरति है। लीनी प्रेम दवाइ न धीरज धरति है ॥ नेह पंक मनु कुंजर दहल्यौ जातु है। फिरि आवन की आस लागि ललचातु है ॥ उर वर उमड़्यौ प्रेम न मुख तें कहति है। कुँवरि भुवन भूपन मुख ओरी चहति है ॥ मंगल द्योस विचारि वहुरि चुप रहति है। मन तुरंग की डोरी गाढ़ी गहति है ॥ लली मात की दसा देखि चक्रत खरी। वाल मृगी तजि जूथ फिरत मनौं ओदरी ॥ रवकि भरति है अंक लाड़ मित को गनौं। वाट गमाई मिली रंक थाती मनौं ॥ भान भवन सुख वर्द्धनि हौं वलि वलि गई। देहु चैंन मो नैंन करौ न न्यारी दई ॥ एक अंक श्रीदामा इक राधा लली। मनहुँ सुकृत की वेलि अवधि सोभा फली ॥ आये श्री वृपभानु गोद अतिलड़ि लई। करत सीस अघ्रान हिये करुना भई ॥ तुरत पठैहों वीर कुवरि लै आवही। तो विनु क्यों यह नगर वगर छवि पावही ॥ तात मात इहि भाँति भरे करुना महा। वृन्दावन हितरूप प्रीति वरनौं कहा ॥

राग व्रजवासिनु की टेर–पद १५९

अव मिलि हो जननी उर हो जननी उर लागि अतिलड़ि अपने घर चली। कीरति हो पूरित अति हो पूरित अति अनुराग जिनके दृग पुतरी लली॥

ताईं हो कर वर धरि हो कर वर धरि सीस गहवरि आयौ पुनि हियौ। चाची हो बहु देति अहो बहु देति असीस कुल अतिलड़ जुग जुग जियौ॥ तात वहो भरि लीनी अहो भरि लीनी गोद प्रेम दहल अति तन रह्यौ। ठाढ़ौ हो श्रीदामा अहो श्रीदामा कोद ता तन देखि नृपति कह्यौ॥ अवहीहो वेटी तेरे हो मेटी तेरे पास वीरहिं वेगि पढ़ाइ हौं। जिनि होहि मेरी वछ अहो मेरी वछ उदास गहरु न रंचक लाइ हौं॥ पुनिपुनि हो पुचकारत हो पुचकारत जात ललित लली उर लाइकैं। नाहिंन हो हिय प्रेम अहो हिय प्रेम समात आयौ सरसि सुभाइकैं॥ कीरति हो लाई उर हो लाई उर फेरि आनँद वारि दृगनि ढरै। जैसें हो बच्छा तन हो बच्छा तन हेरि गऊ सतगुनौं हित करै॥ मेरी हो अतिलड़ी अहो अतिलड़ी कुँवरि हिय जिय मोद वढ़ावनी। प्यारी हो मम प्राण अहो मम प्राण अधार दुहुँ कुल ओप चढ़ावनी॥ मिल तब हो सब सखी अहो सब सखी सहेलि गाढ़ प्रेम सौं हिय गसी। किधौं कि हो कंचन विवि हो कंचन विवि वेलि किधौं उमैदामिनि फसी॥ नानी हो मुखरा अब हो मुखरा अब भेंटि श्रीराधा अंकनि धरी। लीनी हो मति प्रेम अहो मति प्रेम लपेटि नैंन निरखि करुना भरी॥ वड़े वड़े हो लाड़ी नैंन अहो लाड़ी नैंन सलोल ते आनँद जल सौं भरै। मानौं हो मुक्ता जु अहो मुक्ता जु अमोल अद्भुत गति कमलनि झरै॥ बैठी हो वनिता वर हो वनिता वर वृन्द पुरु जन अरु परिवार सब। निरखति हो अद्भुत मुख हो अद्भुत मुख चंद देह दसा भूली जु तब॥ सजियत हो लाड़ी संगनि हो लाड़ी संगनि साज पट आभूषण लाग सौं। विह्वल हो नर नारि अहो नर नारि समाज श्रीराधा अनुराग सौं॥ भेंटत हो श्रीदामा हो श्रीदामा वीर कंठ सहोदर लाइकैं। इत उत हो सब प्रेम अहो सब प्रेम अधीर वढ़यौ हित सिंधु सुभाइकैं॥ लाड़ी हो मूरति सब हो मूरति सब प्राण चलत अधिक व्याकुल भये। पुनि पुनि हो कीरतिदा हो कीरति वृषभान रंग प्रेम के अति छये॥ पठयौ हो डोला व्रज हो डोला व्रजईस तामैं कुँवरि चढ़ाइयौ। जननी हो रुचि देति अहो रुचि

देति असीस जुवतिनु मंगल गाइयौ ॥ दीजौ हो बेटी जसुमति हो जसुमति आनंद कीरति कुल विस्तारियौ । आरज हो व्रजरानौं अहो व्रजरानौं नंद वंस तिलक जस धारियौ ॥ दीनी हो ललितादिक हो ललितादिक संग दासी दास अनंत पुनि।बाढ़यौ हो अतिसय रस हो अतिसय रस रंग रावलपति कही नंद सुनि ॥ दासी हो मम घर की अहो मम घर की जानि नाम कहत वृन्दावनी । करिहे हो लाड़ी टहल अहो लाड़ी टहल जु रुचि मान विसरौ जिन गोकुल धनी ॥ धरिलये हो लाड़ी खेलनि हो लाड़ी खेलनि साज मणि पिंजरनि सुक सारिका । वलि वलि हो हितरूप अहो हितरूप समाज सँगलियौ भान कुमारिका ॥ करतव हो मुनि देव अहो मुनि देव प्रसंस श्रीराधा वपु रस मई । स्वामिनि हो हित श्रीहरि हो हित श्रीहरिवंस चलत व्योम जै धुनि भई ॥ वर्षत हो कुसुमावलि हो कुसुमावलि आजु भुव नभ दुंदुभी वाजहीं । भरि भरि हो भोरिनु व्रज हो भोरिनु व्रजराज रतन लुटावत राजहीं॥ निकसे हो पुरजन सव हो पुरजन सव साथ प्रेम कुँवरि के विवस अति । वृन्दावन हित देखत हो देखत व्रजनाथ भाग्य वदत धनि ये सुमति ॥

छंद राग परज–पद १६०

दृष्टि नहीं ठहराति सखी डोला नग विविधि खच्यौ है। मंद करत दुति धरनि जोति भालरि मुक्तनि रच्यौ है ॥ मनु सोभा मनजूप अहा लसैं वसन वादले जामें। चकृत देखि भये सव वाढ़ी रतन कलस छवि तामें॥ तामें वढ़ी रतन कलसनि छवि कोटि मदन रति चौंधें । रवि की किरनि जोति रतननि मिलि मनहुँ दामिनी कौंधें॥ डोला निकसि भान मंदिर तें जवहिं चौक मधि आयौ । कमलाहू ससकी दृग देखत इतनौं नंद लुटायौ ॥ तंत्र उपनिपद भेप वदलिकें वाहन रूप वनायौ । शक्ति अनंत चलीं लगि पाछे रूप न प्रगट लखायौ ॥ कोऊ लिये चमर छत्र कर कोऊ सूरज मुखी धरे हैं । कोऊ लिये पान डवा कोऊ सीतल भारी नीर भरे हैं ॥ कोऊ कर पिंजरा सुक सारो कोऊ सुगंधि वहु लीये।दासीं दास अनंत चले संग वनति न गिनती कीये॥

वृन्दावन हितरूप चढ़ी ललितादिक डोला त्रिविधि अपारा। हय गय रथ दिये भानु दाइजे जिनकौ गनत न पारा॥

छंद राग परज–पद १६१

आनंदित हरि जनक महा भये निकसि खेत जब ठाढ़े। ज्यौं सागर हुलसत पूरनमा यौं ब्रजपति सुख बाढ़े॥ अति उदार यह अवसर दीनौं खेत घोष के रानें। मुक्ति अचाहक इहि सुख पोषे अरु जो जा मन मानें॥ जो जा मन मानें सों दीनौ सब अभिलाष पुजाई। जीत्यौ हो गोकुल कौ राजा गहरी बंब बजाई॥ गिरिधर कौं असीस ब्रजपति कौं देत मुनीस बधाई। ऐसी भाँति होहु नित मंगल त्रिभुवन कौं सुख दाई॥ सम्हर न सकत दात जेती वृषभानु भवन तें आई। गोधन ठाट अलंकृत विधिसौं सो आगें पठवाई॥ हय गयं रथ करहा जु पालिकी भरे सकट बहु साजा। सहित सिंगार खेत लाये लखि इन्द्र बिभौ भइ लाजा॥ पुनि आगें पहुँचावनि कौं सजि लीयौ गोप समाजा। सब लाइक दाइक अनेक सुख धनि रावल के राजा॥ अब बरनौं आवन सनेह की निकसे पुर तें ऐसें। वृन्दावन हित मेरु ओटतें उदित निसापति जैसें॥

दोहा–अगनित गोप कुँवर लिये श्रीदामा तिन संग।
अतन सतन धरें विविधि मनौं यौं सोभित सब अंग॥१६२॥

करखा राग पंचम–पद १६३

सजन के मिलन कौं चले रावलधनी संग भ्राता जु गन गोप लीये। रचित खिरकी फबी पाग सिर पर सुभग भाल पै तिलक मृग मद जु दीये॥ उच्च सुठि नासिका गोल भौंहें ललित श्रवण जगमगत बड़ सुच्छ मोती। दृगनि करुना अमित मनहुँ उभली परति वदन विधु देखि हुलसे जु गोती॥ बाहु आजानु अरु ग्रीव त्रिवली सुभग उर उजागर जहाँ धर्म सेवैं। तोंद कमनीय पर नाभि सोभा सुनद हृदो गंभीर को लहे भेवैं॥ कटि फबी पीत अंबर सुभग धोवती जंघ रंभा मृदुल कनक ओभा। चरन बारिज लगे आस अलि

सुमति नर देखि नख सिख धरे विपुल सोभा ॥ रतन सिर पेंच कंचुक खुले वदन सों चलत गजराजगति अमी वानी। मोतिका तुलसिका कुसुम दामावली गुण निकर मान दाइक अमानी ॥ भुजनि अंगद दिपत कंठ कंठी पदिक मुद्रिका करनि नग जटित सोहे। दान दानेस बड़ सुयश पूरित मही देहुँ सम जासु उपमा सु को है ॥ जनक सर्वेस्वरी धन्य भुवलोक में चरित पावन उमापति वखान्यौ। भाँति भाँतिनु कियौ सुखित हरि जनक कौं दात दै व्याह हिय रंग सान्यौ ॥ खेत कों जीति भरि प्रीति रसरंग सौं विदित नीसान दै नंद राजत जहाँ। वृन्दावन हितरूप भयानें भूप कौं आइ आगें दियौ मान ब्रजपति तहाँ ॥

छंद राग परज–पद १६४

निर्मल नीर तीर अति कमनी मणिनु खचित चहुँ ओरें। पोंपर पीरी गहर गँभीरी जहाँ खग निकर कलोरें ॥ कलप तरुनि की पाँति गसि रहीं तिनमें नव नव वेली। फूल फलनि सौं झुकी लुब्ध अलि सौरभ सकत न झेली॥ सौरभ सकत न झेलि घनें उपवन फूली फुलवारी। चौखूटे नग जटित चौंतरा रौंस विचित्र सँवारी ॥ अगनित छुटें फुहारे तिनमें अहा कहा छवि छाजै। आइ मिले गोकुल रावलपति अस रचिना जहाँ राजै॥ ज्यों जल संग कमल वाढ़ै यौं वढ़ै दुहुँनि मन नेहा। किनि विधिना जिनि सुविधि रचे मनु एक प्राण द्वै देहा ॥ अति उत्कंठा हियें भूप दोऊ भेटे भुजा पसारी। आयौ उझलि प्रेम अंतर को वरनत वनें न भारी ॥ वल्लभ कुल रस रीति देखिकें परसंसत नभ वासी। धन्य धन्य कौतिक भुवतल यह धनि जन घोप निवासी ॥ चल न सकत इत उत कौं कोऊ परे प्रेम झकझोरें। वृन्दावन हित विदा होंन कौं वार वार कर जोर ॥

करखा राग पंचम–पद १६५

कुँवरि डोला निकसि खेत आयो जवहिं नंदसों करत विनती जु रावल धनी। जोरि कर आज रवि तिलक ठाढ़ो भयौ घोपपति तुम जु लाड़क न

मोपै बनी ॥ तोड़ फल फूल दल तुम जु सादर लिये मोहि उपमा दई भाँति भाँतिनु घनी । सुधाकर बंस अचिरज कहा लेखिये सकल गुण निकर कुल गोप सज्जन मनी ॥ दिये करि हाथ पियरे जु कन्या अजू कृपा अति रावरी परत नाहिन भनी । ललित मुख रह्यौ प्रफुलित जु वारिज मनौं सुख अपूरब दियौ देखि दिस आपनी॥ नंदीस्वर राव चित चाव पर हित रंहे अमी करुना पलत सुजन लोचन अनी । उतहिं कर जोरि ब्रजराज भये प्रेम वस वृन्दावन हितरूप प्रीति परति न गनी ॥

कवित्त—पद १६६

गोपनि के रानें बखानें को गुन अपार,भाँति भाँति हमकौं अपूरब सुख दये हैं । बनी कै न बनी टहल कछू रावरी जू, ताहू पै दया करि अपनाइ आपु लये हैं॥ लोक लोक जस को वितान पूरि दियौ तुम,प्रेम ही के बिरवा सबनि उर बये हैं । वृन्दावन हितरूप लाइकता सिंधु नंद, इतै उतै महा रंग भींजि सब गये हैं ॥

कवित्त—पद १६७

रावल के धनी जैसी तुमतें जु बनी, अजु ऐसौ काकौ भाग जो बताऊँ जग में अहा । दान सनमान गुन लाइकी के जेते कहै, आपही के माहिं सब देखिये कहाँ कहा ॥ जस ही कौ सागर उमगि अति गाजे है, देखें दत आपको भये हैं लोक मुहंचहा । वृन्दावन हितरूप वल्लभ कुल के मयंक, हमकौं सनेह सुधा सींच्यौ एजू महा ॥

कवित्त—पद १६८

कंचन के गिरि से कमनीय दुहूँ ओर ठाढ़े, इतै उतै प्रेम दहेलि रहे दोऊ भूप जू । वार वार जोर कर देखि दसा सुर नर मुनि, कहत धन्य धन्य यौं भाग्य ये अनूप जू ॥ रावल के धनी प्रीति बचननि करि बाँधे हिय, कहत विरमि रहौ चढ़ि आई धूप जू । वृन्दावन हितरूप परे रंग सागर माहिं, उरझे सनेह सूत जाकौ विकट रूप जू ॥

कवित्त–१६६

नैंननि सों लगे नैंन बैंननि सों मीठे बैंन, चलिहू न सकत देखि विस्मय सबकों भयौ। सुधा सी श्रवति मुख नंद वृषभान जू के, त्रिपित होत कोऊ नाहिं एजू रंग बढ़ि गयौ ॥ ठाढ़े सब जहाँ तहाँ करत हैं प्रसंस ऐसें, कौतिक अपार महा प्रेम प्रबल निर्मयौ। वृन्दावन हितरूप राधा हरि ब्याह विदा, होत होत रवि हू रथ पच्छिम दिस कों नयौ ॥

कवित्त–१७०

मूरति सनेह हरि राधिका जनक दोउ, लोक लोक रही पूरि जिनकी सुभ करनी है। बातनि ही बातनि छके हैं भाग्य महिमा में, प्रेम ही की अवधि मुख आवत क्यों बरनी है॥ जाकौ अंस निगम तत्व ताहू कों सुविधि पोप्यौ, ऐसे दोउ भूपनि की कथा मन हरनी है। वृन्दवन हितरूप वंदौ पद बार बार, इनकी प्रीति रीति सदा हिय रुचि धरनी है ॥

कवित्त–१७१

नीठ नीठ भये हैं विदा दोऊ इत उत कों, इनकौ मन उनपै पै उनकौ मन ह्याँ रह्यौ। हिये कौ प्रेम उम्फिलि आयौ है नैंननि मग, गहकि कें नंद ने वृषभानु जू कौ कर गह्यौ ॥ एजू हमारी सुधि कीजौ जिनि बिसरि जाइ, इतनी कहनि में प्रेम महा सिंधु सौ बह्यौ। वृन्दावन हितरूप बानी कहा बरनि सकै, व्यास सुवन कृपा पाइ कछू एक मैं कह्यौ ॥

छंद राग परज–पद १७२

प्रेम अमी निधितें मनो कुंजर निकसे कर बरजोरी। नंद चले नंदीस्वर उत वृषभानु बाग दत मोरी ॥ पूरित व्योम भई धुनि अस सब बाजे गहकि बजे हैं। और कौंन उपमा बरनों भादों घन गर्ज लजे हैं॥ बाजे बाजें घनहर लाजें आवत त्रिविधि समीरा। प्रफुलित कुंज पुंज सुख बरषत चले मुदित बल बीरा ॥ बट संकेत आइ कछु बिरमे जहाँ तुंग तरु बेली। फल फूलनि सों आवृत्त बीथी उलही प्रेम गहेली ॥ देखि देखि सोभा ब्रजबाला करत

कुलाहल भारी । मेघ उडंवर आये मारग चले वहुरि गिरिधारी ॥ श्रीराधा चौंडोल जहाँ तहाँ देव कुसुम वरसावें । मंद मंद नंदीस्वर ओरी हरि नँद-नंदन आवैं ॥ वाजेनु धुनि सुनि जसुमति फूली निकट वरात लखी री । नाइनि फिरति बुलावति घर घर वेगी चलौ सखी री ॥ वढि मधुमंगल चल्यौ अगमनौ खवरि महरि कौं दीनी । वृन्दावन हित मेवा गोदी भरि जसु-मति पै लीनी ॥

राग विहागरौ—पद १७३

आजु वधावौ मंदिर नँद के आये गिरिधर व्याहि ॥ हुलसी गावति भामिनी ठाढ़ी राज दुवार । डोला की रचना निरखि विथकित कौतिक हार ॥ आजु वधावौ मंदिर नँद के ॥ टेक ॥ रतननि की दीपति घनी तिन पर अलि गुंजार । विधि विमान वैठ्यौ मनौं होत है श्रुतिनु उचार ॥ देत वधाई नंद कौं मागध चारन सूत। परम धन्य जग तुम भये व्याह अतिलड़े पूत ॥ धाइ धाइ सव पुर वधू कहतिं महरि सौं जाइ । सुत दुलहिनि लै आइयौ अव फल भाग्य मनाइ॥ऐसी नाहिनु लोक इहि हौं आई अव देखि । धनि जननी जिनि उरधरी छवि सोंवा की रेखि ॥ मंगल साज करनि लियें मंगल गावतिं वैंन । सुनत उमाहैं उठि चली राधा देखनि नैंन ॥ सुख सरसत नँदगावरौ राधा मोहन मोद । देति असीसैं नारि नर विधि तन करि करि गोद ॥ जोरी भुव एकै वनी सव मुख करत प्रसंस। वृन्दावन हितरूप वलि सर्वसु श्रीहरिवंस ॥

छंद राग परज—पद १७४

पुर प्रवेस सुभ घरी कियौ दुलहिनि लै गिरिधर आये । भाजन धातु वजे घर घर मंगल अनंत दरसाये ॥ वनिता चारु वधाये गावतिं मोतिनु चौक पुराये । ताऊ श्री उपनंद भवन में प्रथम जाइ वैठाये ॥ वैठाये उपनंद भवन में जुरे सकल नर नारी । मंगल विधि कीनी जसुमति ने रचना विविधि सँवारी ॥ सिमिटे सवे विप्र वंदी जन नाना विरद वखानें । भीर भई व्रज-राज पौरि पै चारु चँदौवा तानें ॥ मंगल कलस सवासिन सिर पर धरें वधू

ज़न आईं । घर घर परम होत कौतूहल देखन सब उठि धाईं ॥ कदली फल दल भवन अलंकृत पौरिनु वंदनमाला । गावतिं चलीं वधाये आगें लैंन नंद के लाला ॥ विप्र वेद धुनि भाट कवित्तनि वंदी करत प्रसंसा। मागद मंजुल रीति कहत धनि गोपवंस अवतंसा ॥ छिरकत चले सुगंधिनु आवति सौरभ रेलैं। वृन्दावन हितरूप दुलहिनी आगम सुखहिं सकेलैं॥

छंद राग परज–पद १७५

सजल नैंन विहँसत आवत दुलहिनि आगें हरि पाछैं। वधू किये गठ जोरौ लावतिं नंद भवन कौं आछैं ॥ पंचनाद मंगल धुनि सुनि पौरी पट्टा भये ठाढ़े । निगमनि पढ़त मुनीस जवैं रचि तिलक भाल पर काढ़े ॥ तिलक भाल पर काढ़े अच्छत रोरी हरपि चढ़ायौ । भवन प्रवेस कियौ व्रजरानी आगें अरघ चढ़ायौ ॥ पाट वसन पाँवड़े हरपिकैं जननी सुविधि कराये । मंद मंद पग धरति दुलहिनी भये महरि मन भाये ॥ मोतिनु चौक पुराइ गोद लै बैठी जसुमति मैया । मुह दिखराई में मणि भूषण वारति लेति वलैया ॥ घर घर तें आवति वहु भेटैं दुलहिनु मुख दिखराई । नाचति महरि संग व्रज वनिता फूल न हिये समाई ॥ आइ आइ मुख देखि वधू कौ दूलहु भाग्य विसेपें । ससि तें कोटि गुनौं री सजनी निरखति विसरि निमेंपें ॥ मणिमाला आरसी अँगूठी चौकी दुलरी केती । वृन्दावन हितरूप वारि दई वरनत वनें न तेती ॥

छंद राग परज–पद १७६

हँसि हँसि जसुमति मैया द्विज भिच्छुक दान जु दीयौ । रंक मुदित धन पाइ अमित यौं महरि सिरानौं हियौ ॥ कहा देऊँ पटतर एजू सम वाट तौल कौं नाहीं । लिखत न वनें इहि घरी जेती फूल महरि मन माहीं॥ फूल महरि मन माहीं जेती लिखत सारदा हारें । सेप सहस मुख होहि न गनना विधिहू न वने विचारें ॥ रतन थार भरि लियौ रोहिनी सो न्यौंछावरि कीनौं। वारि वारि कें पुत्र वधू पै मंगत जन कौं दीनौं ॥ मुँहि दिखराई दियौ दुल- हिनी नौतन नौसर हारा । भोजन विरियाँ जानि दुहुँनि कौं लै चली भवन

मँझारा ॥ द्वार रोकि कें वहिन नंद की ठाढ़ी भरी उमाहें। सानंदी पुनि नाम नंदिनी लीक आपनी चाहें ॥ हँसि हँसि दियौ महरि मन भायौ हरपि आरतौ कीयौ । दूलहु दुलहिनु कौं वड़ भागिनु जसुमति भीतर लीयौ ॥ अपने हाथ जिमाइ दुहुनि कौं चटक करज मन फूली । वृन्दावन हितरूप जाँउ वलि निरखि दसा तन भूली ॥

राग विहागरौ–पद १७७

रात जगावौ री आजु दूलहु दुलहिनि लै आयौ। धन्य गिरिराज धन्य सुरभी कुल जिहिं पूजन फल पायौ ॥ दूलहु दुलहिनि लै आयौ ॥ टेक ॥ धन्य धन्य श्रीपति सेवन मुहिं अलभ लाभ दरसायौ । धन्य अतिलड़ौ घोप नृपति जिन आनक व्याह वजायौ ॥ धन्य सजन घर जाइ द्रव्य वहु गोकुल राइ लुटायौ । धनि विधिना ऐसौ मंगल दिन नैंननि मोहि दिखायौ॥ धन्य जनम मेरे गिरिधर कौ जिनि कुल विरद वुलायौ । धन्य सजन रावलपति जग में जिनि मो वोल जिवायौ॥ धनि नंदीश्वर जहाँ नित कौतिक देवनि मन लल-चायौ । धन्य धन्य कीरति की जाई जिनि मम हियौ सिरायौ ॥ धन्य धन्य यह पुर की भामिनि जिननि लाल दुलरायौ । धन्य सुकृत पाछिलौ पौरि मो राधा चरन धरायौ ॥ परम धन्य भई कुँवरि वदन लखि जिनि ससि निकर लजायौ । धन्य भई यह घरी महा मंगल घर घर सरसायौ ॥ धन्य भई हौं इहि मंगल रचि पायौ मन कौ भायौ । वृन्दावन हितरूप भाग्य कौ हरि जननी जस गायौ ॥

छंद राग परज–पद १७८

फिरी प्रेम की डौंड़ी मनु जूथनि मिलि जुवतीं आवैं । विपुल उमाहे सजि सजिकें घर घर तें टीकौ लावैं ॥ विधि विधान कर मंगल विधि सौं वनिता रात जगावैं । लै लै अंचल छोर सवै नारायण देव मनावैं ॥ देव मनावैं मंगल गावैं कुल चलि आई जैसें । राधा हरि अजान से ह्वै कें करत वधू कहें तैसें ॥ गाइ वजाइ वधू संग लै कें गोधन खिरक पुजायौ । देवी

वट संकेत पूजिकैं जसुमति अति सुख पायो ॥ गिरि गोवर्धन सनमुख ह्वै कैं महरि वीनती कीनी । हे गिरिराज वली तैं मोकों मन वांछित निधि दीनी ॥ वर वरनी आये फिरि सोभा वरषत वीथिनु माहीं । नित नव सुख सरसत नंदीश्वर सुर देखनि पछितार्हीं ॥ भोजन हित न्योते घर घर में दूलहु दुलहिनि जाहीं । तहाँ तहाँ मंगल दिन दिन प्रति नये नये दरसाहीं ॥ दान मान पूरन सव कीनें जे व्रजपति घर आये । वृन्दावन हित चले विदा ह्वै गावत सु जस वधाये ॥

कंकण छोरन कौ मंगल

मंगल छंद राग सूहौ विलावल—पद १७६

कंकन छोरो लाल दुलहिनी पानि कौ । अव वल परिहे जानि सु माखन खान कौ ॥ चौंप वढ़ाये हँसि ललिता हरि सौं कह्यौ । अति कौतूहल धाम महरि के ह्वै रह्यौ ॥ ह्वै रह्यौ कौतूहल महा वनितानि वृन्द जहाँ जुरे। खिलवार मोहन रसिक कौं वहु दाय भाय तहाँ फुरे ॥ रतननि कुँडी भरि नीर खेल करावहीं नव नागरी । वैठार उत घनश्याम इत वैठीं कुँवरि छवि आगरी ॥ कपन लगे हरि हाथ कुँवरि कर देखिकैं । दहलि रहे सव अंग सु प्रेम विसेषि कैं ॥ घूँघट पवन डुलनि में हरि दृग लोल हैं । कंकन किहिं विधि छुटहि सखी देहिं वोल हैं ॥ वोल वढ़ि वढ़ि कहति ललिता सुनि कुँवर व्रजराइ के । यह नहीं हरि लेहु माखन पेच ये रस दाइ के ॥ वोलहु जसुमति माइ व्रजपति जनक वल भैये लला । यह न काली सीस जापै खेलि हौ नट की कला ॥ यह नहिं मुरली मंत्र ठगो जिहिं गान जू । नहिं वृन्दावन कुंज माँगिहो दान जू॥ कुल मणि श्रीवृषभानु हाथ कौ कंकना । लाल जतन वहु छुटिहै रहौ जु निसंकना ॥ रहौ जिनि निसंक मोहन गिरि न उचकि उठाइ हो । घुरी कंकन ग्रंथि ताकौं कौन विधि सुरझाइ हो ॥ सुनि हँसी व्रजवाल वलि वलि अव जतन कछु कीजिये । वड़ी मैया रोहिनी कौं वोलि अपु ढिंग लीजिये॥ रैंता पैंता सुवल मनसुखहिं वोलिये । नाम नंदिनी भुवा सँग लै खोलिये ॥ उर गाइ गाढ़ी

गाँठ छुटत नहिं छोरना। सुख सागर व्रज बाढ़यौ लेत हिलोरना॥ लेत सुखहिं हिलोर नागर चेत चतुराई करी। छोरि दुलहिनि कंकना मुसिकात पुनि नगधर हरी॥ भाग कौ उद्धव महरि मानत बढ़ी अस रँग रली। खोलिये श्रीदाम अनुजा पोत यह तुम्हरी भली॥ अब छोरौ वृषभानु नृपति की कुल-मणी। सखि सैंननि समुझावति वुधि बल आपनी॥ ताकि छोरना ग्रंथ चौंप चित चाड़ सौं। मुसकि गह्यौ कर पिय कौ नागरि लाड़ सौं॥ लाड़ सौं कर गह्यौ नागरि सहज दृग करि घूँघटी। करि जतन सो इहि भाँति छोरति प्रेम पिय गति मति जटी॥ दूलहु रचत छँद वंद करकौं देत है झक झोरना। हँसि हँसि परतिं सब भाँम तिहिं छिन कहा कहौं छवि ओरना॥ धनि कीरति वृषभानु सु जाई अति लड़ी। तुम न करौ अब गहरु चतुर सब विधि बड़ी॥ यह जूवा कौ खेल जुगत करि जीतिये। छली सुवन व्रजराज बाँधि दृढ़ प्रीति ये॥ बाँधिये दृढ़ प्रीति उर में डोरना कौं छोरिये। श्रवण लगिकैं कह्यौ ललिता तनक घूँघट मोरिये॥ दृग कोर लखि बिक गये छुट्यौं डोरना बिन जतन है। बृन्दावन हितरूप बलि वारति जसोमति रतन है॥

राग मारू–पद १८०

वनी तेरी-घूँघटी वरना विथकित देखि। तामें खुरी करत द्वै वाजी चावुक अंजन रेखि॥ जब जब हलत पवन बस अंचल लगी मनु एड विशेषि। भरत अलोल चौकरी मानौं तजि कार्येजु निमेषि॥ वक्र भौंह कलगी मनौं सोभित लौंने कौनें पेखि। बृन्दावन हित यह विधि दूलहु भाग्य अवधि फल लेखि॥

राग मारू–पद १८१

वनी गुन आगरी को सम देंउ बताइ। वदन रतन निर्मोल मंजूषा घूँघट धरयौ है छिपाइ॥ वरना निपट जौहरी मोहन परखनि कौं अकुलाइ। जाकी जोति नंद मंदिर निसि वासर जान्यौ न जाइ॥ अतिसै धन्य भूमि रावल जहाँ प्रगटी गुन समुदाइ। कहा कहौं प्रभुता वल्लभ कुल सारद सकहि न गाइ॥ अंग अंग सौभगता सागर सरसत रहत सुभाइ। बृन्दावन

हितरूप अपर्मित क्यौं मति सीप समाइ ॥

नव दुलहिनि कौ रूप

मंगल छंद राग सूहौ विलावल–पद १८२

अचिरज दुलहिनि रूप सुनत धाई सबै। नगर वगर घर घर तें जुरि आई अबै ॥ आदर दै ब्रजरानी सब बैठारियौ। देति वधाई भामिनि वचन उचारियौ ॥ उचारियौ अस वचन कीरति सुता दृगनि दिखाइयौ। बड़ी दृग अभिलाप वलि वलि आजु सुविधि पुजाइयौ ॥ लैं गईं मणि मंदिर महरि जहाँ दुलहिनी छवि आगरी। रहि गईं चिबुकनि कर जु धरि धरि जिती ब्रज नव नागरी ॥ उम्हिलतु अँग अँग रूप आजु नव दुलहिनी। दूलह लोचन लाभ प्रेम हिय उलहिनी ॥ सचि रुचि सुभग सँवारी विधिना को वियौ। कौन सुकृत धौं पूरब नंद सुवन कियौ ॥ कियौ सुकृत नंद सुत को वार वार विसेषही। सौभाग सागर वढ़त छिन छिन प्रवल भाग्य सु लेखही ॥ अहा चरनौं कहा कौतिक वदन कमनी जोति है। नंद मंदिर गगन उदित कलाधर मनु गोत है ॥ वसन सहाने लसत मुदित वारिज मुखी। छवि चाँदनै नस्यौ तिमर भइ जसुमति सुखी॥ भरी सुभग सेंदूर माँग मोतिनु रची। वेनी पाछैं रुरति भीर सोभा मची ॥ मची सोभा भीर अति चन्द्रिका सीस सुफूल है। सिर धरै ससि मनु सुधा घट भये राहु सौं अनुकूल है ॥ वंदनी मनु कर जोरि ठाढ़े तरौंना रवि संग हैं। अरि भाव मेटन हियें मानौं भरे अधिक उमंग हैं ॥ वेना जलज मनौं उडुगन परिवार है। स्वामी सहित नवित मनु वारहुँ वार है ॥ केसर आड़ सुभाल साज पूजन लियौ। रोरी मंडित माँग मनहुँ वंदन कियौ॥ कियौ वंदन प्रीति सौं भृकुटी जु निर्त्त दिखावहीं। मषि वलित पैंनी नैंन कारे सजल सुख वरषावहीं ॥ नासिका नथ के थिरक मोती अधर अरुनाई मिले। उड़पति मिल्यौ अरि भाव मनु सुनि हियें अनुराग सु झिले ॥ वाजू वंद लसे गसि दुतिया चंद से। वलय वलित छवि जाल मृनाल सुफंद से ॥ मुद्रावलि नग उदित आरसी छवि घनी।

कमल दलनि पर मनु नक्षत्र पंकति वनी ॥ वनी पंकति कमल दल मणि खचित कंकण यौं लसे । चक्र मनहुँ मयंक किरनिनु आइ कर गाढ़े गसे ॥ महिंदी रचे जुग पानि भये मनु अरुन अंबुज रोस सौं। नख चंद छौंना छुरत वैठे घेरि भरि मनु जोस सौं ॥ सुभग पोति दुलरी दुति राजति ग्रीव है । सोभा अवधि वदन मनु काढ़ी सींव है ॥ मोतिनु माल मरालनि की सी पाँति है । मनु सर नाभि व्रसन कों हुलसी जाति है ॥ जाति हुलसी नाभि सर पन्नानु खचित हमेल है । सुकनि की सैनी करत गिरि तरहटी मनु खेल है ॥ किंकिनी कटि कमनी व्रनी मधुरीति उपजत है धुनी । कोमल कनक् नव वेलि वसिकैं पढ़ति मनु मनसिज मुनी ॥ डोरी की झव्रिया दमकत छवि ऊजरी । पाइल बिछिया अनवट राजत गूजरी ॥ चित्रित चरन महावर कियौ सखि लाग सौं । तरुवा अरुन जलज मनु दियौ अनुराग सौं ॥ दयौ मनु अनुराग नख सिख दुलहिनी छवि आगरी । सिंगार पट दस जाहि सोहैं फव्यौ सुकृत भागरी ॥ लहलहति मनु सौभग लता मृदु वचन अमृत वरषनी। पूरब फल्यौ दत महरि पाई वधू हिय जिय हरषनी ॥ यह वरनी व्रजपति मंदिर गहनौ सखी । अमित निकाई उमगि परति मनु तन नखी ॥ धनि वरसानौं गाम नाम रावल धनी। जहाँ यह उतपति भई कुँवरि लोकनि मनी॥ भई लोकनि मनि उजागर धन्य सखि नँद गाँवरौ । पल्यौ राज कुमार जहाँ यह सम जु दूलह साँवरौ ॥ जोरी वनी लोकनि मणी लाइक रसिक परसंस की । वृन्दावन हितरूप वलि निधि परम श्री हरिवंस की ॥

छरी खिलावन

राग विहागरौ–पद १८३

छरी खिलावन लै चलीं घूँघटरौ न खोलै । मिलीं सकल व्रजवाल वनी घुँघटरौ न खोलै॥ नव दुलहिनि कीरति लली ॥ घूँ०॥ दुलहु श्री मदन गुपाल ॥ वनी०॥ भूषण तन भूषित भये ॥ घूँ०॥ नूपुर रुनु झुनु चरन॥ वनी० ॥ वसन सहानें तन फवे ॥ घूँ० ॥ इन्द्र वधू के वरन ॥ वनी० ॥

ठुमुक ठुमुक पग धरति हैं ॥ घूँ० ॥ गज सिखु लाजत चलनि ॥ वनी० ॥ कौतिक रूपी छवि लता ॥ घूँ० ॥ लगै लाज पवन सौं हलनि ॥ वनी० ॥ दूलहु चितवत अनकनी ॥ घूँ० ॥ त्यौं त्यौं सकुचति सुकुँमारि ॥ वनी० ॥ कुसुम छरी कर वर वनी ॥ घूँ० ॥ मंगल गावति ब्रज नारि ॥ वनी० ॥ गठ जोरो वनितनि कियौ ॥ घूँ० ॥ गई पावन सर वर तीर ॥ वनी० ॥ खेल करावतिं दुहुनि कौ ॥ घूँ० ॥ जहाँ अगनित वनितनि भीर ॥ वनी० ॥ जव पिय तन परसत छरी ॥ घूँ० ॥ कर दरसि विवस ह्वै जात ॥ वनी० ॥ समुझि समुझि तरुनी हँसैं ॥ घूँ० ॥ भेद भीतरी वात ॥ वनी० ॥ चौंप वढ़ावतिं भामिनीं ॥ घूँ० ॥ छरी लाइ कर देति ॥ वनी० ॥ त्यौं त्यौं सागर प्रेम कौ ॥ घूँ० ॥ उमग्यौ लहरिनु लेत ॥ वनी० ॥ मुदित महरि लेइ वारनें ॥ घूँ० ॥ मानि धन्य अपु भाग ॥ वनी० ॥ वना वनी छवि निरखिकैं ॥ घूँ० ॥ उपड़्यौ जलद अनुराग ॥ वनी० ॥ धन्य भाग नँद गाँवरौ ॥ घूँ० ॥ जहाँ वरषत सुख एइ ॥ वनी० ॥ वृन्दावन हितरूप वलि ॥ घूँ० ॥ वरन्यौ विवि प्रथम सनेह ॥ वनी० ॥

राग हमीर ताल चर्चरी—पद १८४

देखि नव दुलहिनी संग दूलह वनी । खेलते छरी आनंद लागी झरी वढ़ी छवि अमित जव भवन करी आवनी ॥ हाँसि परिहाँसि तरुनी करैं लाल सौं प्रिया के संग ललितादि भई सव जनी । खिच्यौ गठजोर कौ वसन इत उत जवहिं चतुर चौंक्यौ कुँवर लाल लोचन अनी ॥ माइ नें अरघ दै रवकि मंदिर लिये दै असीसैं विविधि हियें सुख सौं सनी । छवि अलंकृत भयौ भवन व्रजराज कौ उभै विधु वदन की जोती फैली घनी ॥ जानि नहिं परत निसि द्यौस कव होत सखि एक राका करी विधि यहाँ थरपनी । और अचिरज अहा कहौं सजनी निरखि ससि सहित संक इन संक सवही हनी ॥ उमगि सौभग लहरि वढ़ति छिन छिन नई सिंधु विनमित वहत थाह आवै न गनी । जसोमति अरु कीरति सुकृत फल्यौ यह श्याम अभिराम लखि

ललित चंपक तनी ॥ धोप नर नारि अस लाभ पायौ मुदित मणि उज्यारे रमें भट्ट जैसें फनी। हमैं विधि दियौ गौ गोप पालक निपुन रंक के हाथ ज्यौं लगै पारस कनी॥ परम कमनीय ये अंग अपूरव रचे लोक उपमा नहीं परति रसना भनी। गुणनि कौ ग्राम अभिराम जोरी बनी सुता वृषभानु की कुँवर गोकुल धनी ॥ छवि सुधा अचल नित वरपिहैं धाम इहि पिये सुकृती अवधि भाग्य महिमा टनी । वृन्दावन हितरूप सुधन हरिवंस को विश्व जीवन जुगल रसिक भूपण मनी ॥

दोहा—१८५

दिना चार बीते जवहिं कुँवरि नँदीस्वर ग्राम । मानौं वीते चार जुग वढ़्यौ प्रेम अभिराम ॥१॥ जननी के देखे विना अति व्याकुल भई जीय । महरि प्रलोवति चिबुक कौं समुझावति ब्रज तीय ॥२॥ वेगि पठैहैं अतिलड़ी तनेक धरौ मन धीर। आज लैन कौ आइहै श्रीदामा तुव वीर ॥३॥ हरि जननी अंकनि लिये बहुत करति मनुहारि । विविधि खिलौंना लाइकैं निकट धरे पुचिकारि ॥४॥ ललितादिक सब सखिनु कैं होत महरि आधीन । वह-रावौ दिन आज कौ तुम सब परम प्रवीन॥५॥ लै आई सुक सारिका मिलि ब्रंज की वर भाँम । गावति रावलपति सुजस बोलत राधा नाम॥६॥ तिनहिं चुगावति प्रीति सौं मुदित होत सुकुँवारि । तिहिं छिन इक जोगी निपुन आयौ ब्रजपति द्वार ॥७॥

श्री शिवजी कौ आइवौ

राग मारू—पद १८६

बहुत दिननि में आयौ री माता रावल की फेरी । भूली कै सुधि है कछु रानी आसा पूजे मेरी॥ री माता रावल की फेरी ॥टेक॥ उठि हरि जननी चरननि लागी आदरु दै बैठायौ । हौं जानति हौं नाथ लाल के जनम प्रथम हो आयौ ॥ सत्य तुम्हारी वानी जानी कबहुँ न लाल डरायौ । तुम प्रसाद तें मैं मन वांछित सबही विधि करि पायौ ॥ हौं अपनें आसन तें माई यह

सुनिकैं उठि धायौ । तेरे सुत कौ ब्याह भयौ देखनि मन क्रम अकुलायौ ॥ जो सुनि मन क्रम वच करि परचै सत्य सत्य तैं पायौ । तौ अब ब्याह वधाये मेरौ कीजे मन कौ भायौ ॥ हरद हाथ तें इहि दिन लौं कौ नेंग झगरि सब लैहौं । मेरौ हाथ फल्यौ तुम सुत कौ अब माँगत न सकै हौं ॥ पुत्र सहित लै आउ वधू कौं निरखि नैंन सचुपाऊँ । तेरे विपुल भाग्य की महिमा जहाँ जाऊँ तहाँ गाऊँ ॥ खपरा हरपि भराइ मान दै दई भयौ अनुकूलै । धुजा चढ़ाइ नाथ मेरे की यौं चहि रावल फूलै ॥ बहुरि कहै तौ गंडा वाँधौं कै भभूति पढ़ि लाऊँ । जतन घनें जानौं हौं तेरे मन की संक मिटाऊँ ॥ मैं हीं श्री कीरति सौं कहिकैं तुव सुत करी सगाई । गुरु गम ज्ञान वरतिकें आगम उन मन संक मिटाई ॥ बूझि देखि ढ़ाँढ़िनि तोघर की वैठी ही तहाँ माई । वैसे राजभवन की कन्या तोहि दई दरसाई ॥ यह सुनि महरि नाथ पद वंदे ढ़ाँढ़िनि जुक्ति वताई । रावल कही सोइ सो कीनी सींगी गहकि वजाई ॥ दूलहु दुलहिनि तन निहारिकैं अपु तन दसा विसारी । लीनें जीति प्रेम ने पुनि पुनि लोटत अजिर मझाँरी ॥ रहि गइ चिवुक आँगुरीं धरिकैं सोचत वारम्वारी । सींचति अंग रोहिनी जसुमति भरि भरिकैं जल झारी ॥ अचिरज छकीं कौंन यह चेटक सुनि व्रजवाला धाईं । ढ़ाँढ़िनि कहति देव कोउ छाया याकौ लेत दवाई ॥ मैं देख्यौ कीरति घर यौं हीं सत्य कहौं समुझाई । तव सचेत ह्वै सींगीं वटुवा लै उठै करत वड़ाई ॥ मेरे नाथ करी यह अज्ञा सुनि अम्मृत मय वानी । अविचल राज करै व्रज तुव सुत श्रीराधा पटरानी ॥ उझकि उझकि देखत व्रज मोहन दृष्टिहिं लेत चुराई । जुक्ति समुझि भयो नाथ विदा तव ब्याह वधाई पाई ॥ निर्त्तत गावत प्रेम वढ़ावत वोलत पुरुप अलेखि । मन करि वंदित दूलहु दुलहिनि रहत छकनि सौं देखि ॥ जुगल उतीरन पट हठ लीनौं दीनी गहकि असीसैं । गोप वंस अवतंस वना वरनी ये विस्वे वीसैं ॥ ब्याह चरित वरनत पुनि व्रज जन भूरि प्रसंसित भागै । वृन्दावन हितरूप उमापति मिलै परम अनुरागै ॥

श्री कीरति जू की प्रेम उत्कंठा

राग धनाश्री—पद १८७

हौं तो किहिं विधि राखौं प्राण सजनी कुँवरि विदेसिनि ह्वै गई। अरी मेरी प्राणनि भाँवती अब देहु दृगनि सुख आनि ॥ सजनी कुँवरि विदेसिनि ह्वै गई ॥टेक॥ कंचन मय ऊँचे अटा अरु यह मणि अजिर निकेत री। राधा बिन फीके सबै लखि होत हैं प्राण अचेत ॥ सजनी ॥ ये खेलनि के ठाम सब अरु विविधि खिलौंना धाम री। विप सम ते छिन में भये वन उपवन गिरि अरु ग्राम ॥ सजनी ॥ ठौर ठौर भोजन सुविधि सचि राखौं नाना नेह री। सखिनि सहित तहाँ आवती ह्वै रहिती जगमग ग्रेह ॥ सजनी ॥ मो दृग की पुतरी लली अरु चलत वढ़्यौ अँधियार री। अब कहा नैंननि देखिये विनु त्रिभुवन सोभा सार ॥ सजनी ॥ मणि पिंजरनि सुक सारिका अरु पढ़त हैं राधा नाम री। त्यौं त्यौं बाढ़ति उर विथा युग सम बीतत छिन याम ॥ सजनी ॥ कब ह्वै है धनि सुदिन फिरि खेलत देखौं यह पौरि री। आवन हित पल पाँवड़े किये नगर नँदीश्वर ओर ॥ सजनी ॥ कुल मणि श्री वृषभानु कौ श्रीदामा प्रेम अधीर री। मो कर जेंवनि झगरते उठि प्रात वहिनि अरु वीर ॥सजनी ॥ हौं पुचिकार जिमावती लै लै मुख देती कौर री। सुधि करि करि वा लाड़ की अब होती महा मति बौर ॥ सजनी ॥ कहाँ अतिलड़ि मृदु बोलिबौ कहाँ वढ़िबौ वारिधि रूप री। आजु सुदिन जसुमति भयौ उर भरि है कुँवरि अनूप ॥ सजनी ॥ चिरजीवौ पुनि पुनि कहति कर अंचल छोर उठाइ री। मो मंदिर भूपण लली विधि वेगि मिलावै आइ ॥ सजनी ॥ प्रेम मगन रावल धनी अरु वहत हैं लोचन वारि री। राधा राधा नाम रट कहाँ मेरी प्राण अधारि ॥ सजनी ॥ नर नारिनु धीरज तज्यौ पशु पंछी तरु कुम्हिलात री। कुँवरि प्राण सबके मनौं ज्यौं चलत तरफरत गात॥ सजनी ॥ मो मन गति ऐसी भई अरु ज्यौं खेवट विनु नाव री। दई लगावै पार अब परी अतिलड़ि नेह सुदाव ॥ सजनी ॥ आजु सगुन सुभ ह्वाँ भये जहाँ अतिलड़ि

धरे जु पाँऊ री। सुख वरपत नँद गाँवरे हौं देखनि किहिं विधि जाँउ ॥सजनी॥ सफल नैंन तिन वधुनि के वसति नंद के वास री। गहकि असीसें देहिंगी लखि मो कुल रूप प्रकास ॥ सजनी ॥ लाड़ पलति इत उत जदपि सुख अवधि सुनी रवि वंस री। कवहूँ इत कवहूँ जु उत रहे देखन कौ दृग संस ॥ सजनी ॥ कन्या कुल संवंध विधि रच्यौ निपट प्रेम कौ फंद री। ससि विनु रजनी साँवरी अरु जगमगात मिलि चंद ॥ सजनी । कुँवरि नेह विनमित उदधि अरु उमग्यौ लहरिनु लेत री। वीर वहिन लावनि कही मरजाद वँधी इहि हेत ॥ सजनी ॥ कुँवरि प्राण सम जो अली अरु सव गुन कर समतूल री। अतिलड़ि पठई मातु पै लखि वढ़ी नगर सव फूल ॥सजनी॥ कीरति उठि तासौं मिली आई भानसुता घर मान री। वृन्दावन हितरूप वलि सुख सुनति कुँवरि दै कान ॥ सजनी कुँवरि विदेसिनि ह्वै गई ॥

सखी के द्वारा श्री लाड़िली जू कौ सँदेसौ माता प्रति।

राग धनाश्री—पद १८८

कुँवरि सँदेसो सुनि मैया चित लाइकैं। श्रीदामा कौं दीजे वेगि पठाइकैं ॥ प्राण पियारी लली भली मुख भाखियौ। मेरी मणिमय गुड़ियनि नीके राखियौ ॥ निपट अचपलौ वीर न देइ वगाइ कैं। धरियौ मातु दुराइ लेऊँगी आइकैं ॥ सुक सारौ अरु मैंननि राखौ प्रीति सौं। मेरे प्राण समान पालियौ रीतिसौं ॥ मैया मोकौं काहे दई विसारि जू। अजहुँ न लीनी खवर भये दिन चारि जू ॥ प्राणनि हूँतें कहति अधिक प्यारी लली। लैंन न पठयौ वीर पठाई मैं अली॥ प्राण भाँवती कहती मोसौं टेरिकैं। राधा राधा नाम लाड़ती फेरिकैं ॥ आना कानी दै हौं खेलनि जाति ही। रहते प्राण न ठौर मातु अकुलाति ही ॥ छिनहूँ न्यारी होति होति व्याकुल महा। अव वीतत दिन राति कहौं अचिरज कहा ॥ मेरी कीरति मैया सींव सनेह की। लीजे वेगि वुलाइ पली सुख ग्रेह की ॥ धन्य घरी को होइ सु देखौं आइकैं। भेटौं कंठ लगाइ सु कीरति माइकैं॥ अरु यौं कहियौ जाइ पिता वृषभानु कौं। कुव-

रिहिं लेहु बुलाइ अधिक दै मान कौं ॥ जदपि इहाँ वहु लाड़ जसोमति नै कियौ । तदपि न मन आनंद प्रेम व्याकुल हियौ ॥ वार वार दृग नीर झरत व्याकुल महा । वृन्दावन हितरूप और वरनौं कहा ॥

छंद राग परज-पद १८६

श्रीराधा विरह हियौ व्याकुल कीरति निसि नींद न आवै। छिन आँगन छिन मंदिर रानी जुग सम पल जु वितावै ॥ लीनी प्रेम दवाइ जवै वोली सुनौं रावल राई । अरवरात दृग प्राण वेगि दै कुँवरिहिं लेहु वुलाई ॥ कुँवरिहिं लेहु बुलाइ वेगि दै व्याकुल प्राण महाई । हाँड़ी डला सँजोइ देहु श्रीदामहि वेगि पठाई ॥ तव उठि वोल्यौ रावल रानौं अति व्याकुल हिय मेरौ । कुँवरि विना घर आँगन सूनौं जदपि विभौ घनेरौ ॥ ससि विन रैंन नहीं छवि पावै सूरज विन दिन कैसौ। कमल विना सरवर ज्यौं सूनौं साखा विन तरु जैसौ ॥ कनक धाम दीपक विन फीकौ मणि विनु पंनग कीरा । राजा विन परजा दुख दहिये ओप विना ज्यौं हीरा ॥ विन धन मनुष प्राण विन काया विन सपूत परिवारा । ऐसैं नगर वगर राधा विन सोचत वारंवारा ॥ प्रेम विवस वृपभानु अति भये वरनत ऐसी वानी । वृन्दवन हितरूप जाऊँ वलि वोली कीरति रानी ॥

छंद राग परज-पद १६०

वोली कीरति रानी वानी सुनि सुत राज कुमारा । वेगि जाइ वहिनैं लै आवौ अतिलड़ि प्राण अधारा ॥ विविधि भाँति पकवान किये वहु हाँड़ी डला भराये । समाचार पालागन कहि नेगिनु के सीस धराये ॥ नेगिनु सीस धराइ विदा करि अगनित जन दिये लारा । कई भार पट भूपण दीनें लै चल्यौ राज कुमारा ॥ तरल तुरंग चढ़े श्रीदामा विप्र वृन्द तिन संगा । कहा वरनौं व्रानिक ताछिन की छवि वरपत अँग अंगा ॥ श्री वृपभानु भूप कौ नंदन कीरति जाकी मैया। अविरज कौन रूप अस होई श्री राधा कौ भैया॥ पहुँचे जाइ नँद जू की पौरी व्रजपति आदरु कीयौ । साज अनेक पठे मणि

मंदिर हरषि वैठना दीयौ ॥ फूली महरि मिले गिरिधारी हलधर अरु व्रजराई। न्यारे भवन जाइ श्रीदामा राधा कंठ लगाई ॥ विह्वल प्रेम सुवन रावलपति प्रेम परावधि राधा। वृन्दावन हित मिलत परस्पर वढ़्यौ सुख सिंधु अगाधा॥

श्री जसोदा जू कौ श्री वृषभानु नंदिनी जू प्रति प्रेम

करखा छंद–पद १६१

कुँवरि के चलनि कौ सुदिन विप्रनि दियौ प्रेम विह्वल भई सुनत जसुमति महा। अहो विधि कियौ मन भाँवतौ भाग वल अव जु न्यारी करत कहौं मन गति कहा ॥ रूप की अवधि गुन अवधि सुख की अवधि कुँवरि वृषभान मो दृगनि थाती। ता विना मोहिं अव कल न रंचक परै कौन विधि वीति है दिन जु राती॥ भवन भूषन अहा सुभग लच्छननि निधि महरि कीरति कूखि सफल कीनी। मंगल जु निकर सेवन लगे गोप कुल आनि मो पौरि जव पग सु दीनी ॥ अंक लै वैठि कर फेरि कैं वदन पै नंद की घरनि अति रंग राची। नाम राधा लगी सहज रसना भरी रहौ मम निकट विधि पै जु जाँची ॥ निपट अरवरति अरु करति उपचार वहु कुँवरि मुख देखिकैं प्रेम सरसी। कौंन धौं सुकृत परजन्य व्रजराज कौ महा मणि जासु परताप दरसी ॥ रोहिनी सुनि जथा कहौं मन की कथा अतिलड़ी भानु की मोहि प्यारी। चलन की वात सुनि प्राण व्याकुल भये अहो गिरिदेव अव करि न न्यारी॥ वदन ससि वृन्द उदित सदा धाम मो ललित गौरंग अंगनि निकाई। सुखित सव विधि भई कियौ वांछित विपुल रंक निधि अमित विन जतन पाई॥ धन्य जननी जनक सुदत कौ फल लग्यौ मोहि प्रापति भयौ कौंन करनी। वृन्दावन हितरूप प्रेम दहली महरि चलत श्री राधिका यौं जु वरनी ॥

छंद राग परज–पद १६२

अहा कहा मन दै कीने जसुमति वहु पाक रचे हैं। चित्र विचित्र करी रचना वहु हौंड़ी डला सचे हैं ॥ देस देस उतपति भये जे मेवा वहु साज अपारा। सादर करति नंद घरनी ज्यौं लोक रीति व्यौहारा ॥ लोक रीति

व्यौहार विदित ज्यौं कियौ हरि जननी तैसैं। मंगल बहुत गवाइ भवन में कुँवरि विदा करी ऐसैं॥ पुर वनिता भेंटी उर लगि लगि पूरित प्रेम महाई। कुँवरि चलत व्याकुल भये सबही कहत कह्यौ नहि जाई॥ व्रजरानीं आयौ मंदिर में गनि गनि साज धरावैं। आयौ उफलि प्रेम अति हिय में समुझि समुझि अहुरावैं॥ पुनि पुचिकारि कहत मारग में गवन भली विधि कीजौ। श्री वृषभानु राइ की अतिलड़ि छाँह विरमि कहुँ लीजौ॥ धरि दिये विविधि खिलौंना व्रजपति देखि कुँवरि हरषी है। जसुमति दियौ मणिनु कौ बटुवा लाड़ रंग बरषी है॥ नगनि जटित कजरौटी ककही दई रोहिनी रानी। बृन्दावन हितरूप जाऊँ बलि देति असीस सिहानी॥

छंद राग परज-पद १६३

लाड़ चाइ सौं व्रजरानी सिंदूर डबा भरि दीयौ। पाटी पारि सुभग नख सिख सिंगार दुलहिनी कीयौ॥ अधिक राचिनी महिंदी पुनि मेवानि कोथरी कीनी। नगनि जटित झबिया अनेक तीयर अमोल धरि दीनी॥ तीयर धरी अमोल दुलहिनी लाड़ हियौ सरसायौ। अविचल होहु सुहाग वधू यौं जसुमति वचन सुनायौ॥ पुनि पुनि वदन निहारैं रानी लै बलाइ पुचिकारैं। मिलति मिलिचुकी बहुरि मिलति कोउ उरझनि प्रेम निहारैं॥ वेगि आइहौ मो दृग गहिनौं बड़े गोप की जाई। तेरे व्याह काज मेरी अतिलड़ि जो कौ विधि न कराई॥ बहुरि मिली रोहिनी मान दै कर वर धरयौ जु सीसै। कीरति सुता महरि सुत जायौ जियौ जुग देति असीसै॥ धरयौ डबा गहने कौ आगें श्री उपनंद सुरानी। कुँवरि कंठ लगाइ असीसैं देति आप मन मानी॥ नौं नंदनि की घरनि भेंट लै चलती बिरियाँ आई। बृन्दावन हित सादर भेंटति कुँवरिहिं कंठ लगाई॥

छंद राग परज-पद १६४

गौर स्याम मनु धुरवा झुकि श्रीदामा कृष्ण मिले हैं। कै सोभा के पुंज उमगि हिय अतिसै प्रेम झिले हैं॥ बरषत सुधा मनौं इत उत वचननि

रस रंग रह्यौ है। करति अधिक मनुहार लटकि गिरिधर कर वहुरि गह्यौ है॥ गिरिधर कर गहि वोले एजू कीजौ सुधि जु हमारी। गये गोपरानें जब ही वर-सानें चलनि विचारी॥ गिरिधर मिले मिले पुनि हलधर श्रीदामा उरलाई। करि परनाम घोपराने कौं निकसे करत वड़ाई॥ नंद कह्यौ वृपभान राइ सौं विविधि प्रणाम कहौगे। एजू गोप मुकटमणि हमरी तुम सुधि लेत रहौगे॥ सदा प्रसंस करत तुम करनी गोपी गोप इहाँ ते। रावलधनी कृपा अति वर-षत रहियौ सदा उहाँ ते॥ श्रीदामें पुचिकार अंक लै प्रेम हियौ भरि आयौ। कर वर सीस राखि ब्रजपति नें पुनि पुनि कंठ लगायौ॥ धरानंद ध्रुवनंद और उपनंद आदि सव भाई। बृन्दावन हित राजकुँवर सौं मिलत प्रेम जुत आई॥

छंद राग परज–पद १९५

सादर सवसौं मिलि श्रीराधा पुनि डोला पगधारे। वार वार रोहिनी जसोमति आसिक वचन उचारे॥ जथा जोग्य भेंटीं पुर वनिता गवन भान पुर कीयौ। द्विज मागद वंदीजन भिक्षुक दान सवनि कौं दीयौ॥ दीयो दान सवनि कौं वांछित रावल भूप कुमारा। नँद नंदन के प्रेम उरझि रहे होत नहीं निरवारा॥ गाँव गोंइरें ठाढ़ौ अतिलड़ तहाँ भीर भइ भारी। सवकौं विदा करत सँग लागे आवत श्री गिरिधारी॥ प्रवल सनेह गोप गोपिनु कौ रसना कहा वखानें। नीरस पाहन समझि सकै क्यौं नेही ही पहिचानें॥ डोला विविधि पालिकी साजे लै सँग सखिनु चली है। श्री वरसानें सनमुख ह्वै कैं भइ अति मुदित लली है॥ ठाढ़े भये उतरि श्रीदामा विदा करे सव कोऊ। मनु मन वद्लत राजकुँवर ये मिले वहुरि कैं दोऊ॥ जिहिं तिहिं भाँति चले इत उत कौं कहा कहौं प्रेम पहेरी। वृन्दावन हितरूप जाउँ वलि थकित भई मति मेरी॥

छंद राग परज–पद १९६

सुरझै जिहिं तिहिं भाँति जवै पगु धरत नंदीश्वर ओरी। जद्दपि सिथिल होत गति मति मन वँध्यौ प्रेम की डोरी॥ अति अटपटी चटपटी उर मुरि

देखत वारंवारी । देखैं वनै कहत नहिं आवै चकृत गोप विहारी ॥ चकृत गोप विहारी इततैं मुरि देखत श्रीदामा । सरसत अधिक नेह इत उत तैं कौतिक अति अभिरामा ॥ जव वढ़ि चले अगमने आये वट संकेत जहाँ है । सीतल कंदमनि छाँह उतरि कियौ भोजन कुँवरि तहाँ है ॥ विविधि रंग फूलनि चुनि माला ललितादिकनि वनाई । अधिक प्रीति सौं लाइ सहेलिनु श्रीराधे पहिराई ॥ वीरं नाम लै विविधि वधाये गावति रंग भरी हैं । मैया मिलन उमाह वेगि दै मन चटपटी परी है ॥ प्रेम सरोवर आइ लड़ैंती वूझी सखी सहेली । पिता नगर की सींव तहाँ के प्यारे तरुवर वेली ॥ सजल नैंन भये निरखत तिनकौं नानाविधि तरु पाँती । वृन्दावन हितरूप जाँउ वलि विचरत खग वहु भाँती ॥ विवाह मंगल-समाप्ति प्रकरण

छंद राग परज-पद १६७

सुधि पाई आवत राधा गिरि पैं ठाढ़े नर नारी । चढ़े महल की सिखिर तिननु खुर रेनु जु उड़त निहारी ॥ रतन कलस डोला पर सजनी मनहुँ उदित उडुराजा । दृष्टि परत ही फूले तन मन गोपी गोप समाजा ॥ गोपी गोप समाज मुदित भये जानी राधा आई । ताही छिन वरसाने घर घर वाजी गहकि वधाई ॥ लैन चले आगौंनी सवहिनु मंगल साज सजे हैं । श्री वृषभानु भवन के आगे गहकि निसान वजे हैं ॥ जैसें प्राण गये पुनि आये चेत उठत है देही । लोग कुटुँव के हुलसे ऐसैं ज्यौं धन प्रापति ग्रेही ॥ कहा कहौं आवनि अतिलड़ि की सवकौं प्रेम भिजावै । पशु पशु धरति ओर वरसाने सुख कौ सिंधु वढ़ावै ॥ नगर चगर कंदरा और गिरि जहाँ तहाँ मंगल गावैं ॥ श्रीराधा प्राणनि की संपति निरखि सवै सचुपावैं । सिंह पौरि वृषभानु नृपति की जवहिं किशोरी आई ॥ वृन्दावन हित अरघ पूरिकैं करति आरतौ माई ॥

राग मारू-पद १६८

अतिलड़ि आई देखि वधावौ मानि कीरतिं माई । प्रथमहिं भेटि सुवन श्रीदामा लायौ वेगि वुलाई ॥ वधावौ मानि कीरतिमाई ॥ टेक ॥ सीतल

नैंन प्राण भये सबके सरस्यौ प्रेम सुभाई। यह आनंद कहत नहिं आवै रह्यौ पुर घर घर छाई ॥ लली प्राण की थाती आई दिन दिन लाड़ लड़ाई। दै बहु दान बोलि विप्रनि कौं मंगल हरषि गवाई ॥ ज्यौं दीपक के धरत भवन कौ तुरति तिमिर नसि जाई। यों राधा आगम पुर बीथिनु बढ़ी ओप समु-दाई ॥ धनि ये कूख रतन रस उपजी निरखौ नैन अघाई। जानि भाग्य कौ उद्धव रानी फनी मनी अस पाई ॥ इहि मंगल गहिनों श्रीराधा खेलत सुख सरसाई। आज फूल रावलपति मन जो को कहि सकहि बनाई॥ अब सोभित भयौ अजिर हरषि जहाँ कुँवरि धरैगी पाई। आये उमगि सुनत पुरवासी भीर न पौरी समाई ॥ कीरति भेंटि अंक लै बैठी सुनति वचन चितलाई। करति सीस अघ्रान वदन विधु निरखति हियें सिहाई ॥ एक मिली इक मिलति प्रेम भरि इक उर लावति धाई। इक घर जाइ तुरति पुनि आवैं देखनि कौं अकु-लाई ॥ धनि लाड़ी अनुराग घोषजन मन विनमित दरसाई। उमगत है सागर सोभा कौ मरजादा विसराई ॥ कहाँ लगि बरनि सुनाऊँ रानी यह मंगल अधिकाई। वृन्दावन हितरूप वारनैं जीऊँ विपुल जस गाई ॥

छंद राग परज—पद १६६

पायौ प्राण पोष पुनि भेंटे पुर जन सब परिवारा। गिरि तरुवर सरवर हरषित भये घर घर मंगल चारा ॥ नीर गुलाब सींचि सादर जननी लै अंक धरी है। दूजे अंक लयौ श्रीदामा अति आनंद भरी है ॥ भरि तन मन आनंद नगर के जुरि आये नर नारी। सबके नैंन प्राँण श्रीराधा कीरति भानु दुलारी ॥ कीरति कहति सुनौ मेरी अतिलड़ि सास कितौ हित कीयौ। जननी महरि दया की मूरति जिनि अतुलित सुख दीयौ ॥ ब्रजपति लाड़ चाइ की गनती मो पै करी न जाई। अरु जो कियौ सनेह रोहिनी कहाँ लगि करौं बड़ाई ॥ सुनि ये वचन सुखित भइ रानी विधि तन गोद पसारी। मेरौ मन वांछित सब कीयौ जिहिं जिहिं भाँति विचारी ॥ वदन अँगोछि लली कौ मैया भोजन सुविधि करायौ। रावलपति पुचिकारि कुँवरि कौं वार वार उर

लायौ ॥ मंगल व्याह रीति वरनी दुहुँ भूपनि कुल जस गायौ। वृन्दावन हितरूप जाँउ वलि दासि लीक में पायौ ॥

छंद राग परज–पद २००

व्रज चरित्र विनमित दिन दिन के सेप सहस मुख गावैं। शिव चिंतत मन हीं मन ध्यावैं अजहूँ पार न पावैं ॥ रमारमन पुर चिंतत यह सुख कथ्यौ पुराणनि व्यासा। सुक सनकादिक नारद सारद करैं गुन विपुल प्रकासा ॥ करैं गुन विपुल प्रकासा नित नये सुर नर और मुनीसा। पावत नाहिं पार बृपभानु सुता सुत नंद व्रजीसा ॥ हौं लघुमति वरनौं कहि केति महिमा सिंधु अगाधा। नंद और बृपभानु भवन सुख वरपे जो हरि राधा ॥ मंगल महा व्याह कौ इत उत भयौ नित नयौ जेतौ। समरथ कौंन भयौ पुनि ह्वै है वरन सुनावै तेतौ॥ विनती करौं रसज्ञ जननि सौं लीजौ अर्थ विचारी। गुपत प्रगट लीला अनंत हरिभजन भाव अनुसारी॥ ठारहसै पर वर्ष सत्रहौं साके गति जु वखानौं। फागुन वदि हरिवासर पूरन ग्रन्थ भयौ यह जानौं ॥ कुसास्थली व्रजमध्य लिख्यौ जो श्रीहरिवंस लखायौ। श्रीरूपलाल गुरुवर प्रसाद तैं बृन्दावन हित गायौ ॥

कवित्त–२०१

लौकिक अलौकिक मिली हैं दोऊ रीति व्याह, प्रेम ने खिलायौ त्यौं त्यौं खेलैं व्रज जन हैं। एजू राधा लाल के चरित्र महा कौतिक हैं, वरवस नचाये लै लै सवनि के मन हैं ॥ कीरति बृपभानु नंदनंदन जसोदा आदि; दै मोहनी सी डारिकैं वढ़ायौ सुख धन हैं। बृन्दावन हितरूप रसिकनि की थाती यही, सुमिरौ जू वार वार जाकैं दृढ़ पन हैं ॥

कवित्त–२०२

राधा हरि व्याह महा मंगल उदोत भयौ, भाँति भाँति रसकनि आनँद जो वढ़ाइ है। जामें नाना कौतिक चरित्र दोउ भूपनि के, समुझि समुझि कैं मति प्रेम ही मढ़ाइ है ॥ वार वार अच्छर कौ अर्थ विचारिवे हैं, मन दै उपा-

सिक याकौ सौनौं सौ गढ़ाइ हैं। राधिका किसोर जोरि उर वर प्रकासैं सदा, वृन्दावन हित याहि कंठ जो चढ़ाइ हैं॥

कवित्त–२०३

व्याह मंगल वेली उपजी है उर थाँवरे में, कृपा तोइ पाइकैं वढ़ी है रस रंग सौं। नख सिख ते फली है चरित्र राधा लाल के,चाखौ रसिक सुक पिक सदाई उमंग सौं॥ ऊँट वैल नीरस कुतर्किनु वचाइ लहो, याकौ महा मिष्ट स्वाद मिलि है सतसंग सौं। वृन्दावन हितरूप भावक जन थाती यहै, भाषौ जिनि भूलि याहि भागहीन अंग सौं॥

छप्पै–पद २०४

सुख सोभा कौ मूल लसत भुव पर वरसानौं। राधा अतिलड़ि चाइ रहै नित प्रति सरसानौं॥ गिरि तरहटी सुदेस विमल पूरित जल सरवर। सींचे कुँवरि सुदृष्टि जहाँ वेली नव तरु वर॥ मंदिर उतंग कलसनि दिपत तहाँ राजत रावल भूप है। वृन्दावन हित घन घुमड़ि नित जहाँ वरषत राधा रूप है॥

छप्पै–पद २०५

चात्रक चतुर किशोर चौंप अति धरि मन माहें। गलिनु गलिनु नित फिरै भरयौ यह रूप उछाहें॥ सरसत वर्षत रहत सदा छवि कुँवरि उलैंडैं। लोक वेद की प्रवल प्रेम ने तोरी मेंडैं॥ भनि वृन्दावन हितरूप वलि देखत हरि पल नहिं लगत। वरसानौं श्री वृषभानु कौ सव लोक मुकुटमणि जग-मगत॥

छप्पै–पद २०६

पावन सर गंभीर कुंड वहु लसत उजागर। मोहन जाकी भूमि वेलि तरु-वर छवि आगर॥ रस गोरस के भोग दया मूरति व्रजरानी। सुर नर थकित मुनीस देखि गोपनि रजधानी॥ गिरिपर व्रजेस मंदिर ललित नित मंगल रचित विसेषियै। वृन्दावन हित अलखित कहत सुनित तहाँ खेलत देखियै॥

छप्पै पद—२०७

ब्याह वधाये माँहि जहाँ निरवधि सुख वरण्यौ। लोक लोक जिनि सुन्यौ चित्त तिनकौ आकरष्यौ ॥ भाग्य न वरनत वनै लख्यौ वर वरनी जिनि मुख। नेति नेति नित कहैं निगम तातें जु परे सुख ॥ जसुमति कीरति वृषभानुजू नँद नंदीस्वर भानुपुर। भनि वृन्दावन हितरूप वलि इत उत नाते सुख सनै उर ॥

कवित्त—पद २०८

मौरी मौर लसैं नित सुहाग मणि एक रस, अंचल सनेह की सहज गाँठ पर गई। लरुवा वनै अधर अरुनाई गहरे रंग, दूधा भाती परस्पर निहारनि की है भई ॥ सोभा ही के सेहरे विराजमान रहैं सदा, मरुवट मुसिकान ओप देखौ यौं नित नई। वृन्दावन हितरूप भाँवरि चित चाइनु की, अहा दिन दूलह की अद्भुत जोरी निर्मई ॥

कवित्त—२०९

तदपि हू लौकिक रीति नंद वृषभानु धाम, भयौ है विदित ब्याह ग्रंथनि में गायौ है। [1]पदम पुराण कथा लिखी है गुसाँई [2]जीव,

१-२ श्री माध्व गौड़ेश्वर सम्प्रदाय के प्रसिद्ध एवम् विशिष्ट आचार्य चरण श्री जीवगोस्वामी जी ने भी अपने प्रसिद्ध संस्कृत ग्रन्थ "श्रीगोपालचम्पू" में विवाह का विस्तार पूर्वक वर्णन किया है। उनके इस वैवाहिक वर्णन का आधार "श्रीपद्मपुराण" का वह खण्ड है जहां पर यह वर्णन आया है कि श्रीकृष्ण द्वारिका से दन्तवक्त्र का वध करने के लिए जब मथुरा पधारे थे, उस समय उन्होंने व्रज में जाकर दीर्घकाल तक वास एवम् विहार किया था। श्रीलाड़सागरकार का संकेत उसी ओर है। अथ थोड़ा पद्मपुराण उत्तरखण्ड के गद्य अंशो व श्लोकों का अवलोकन कीजिए।

॥गद्य॥ अथ शिशुपालं निहतं श्रुत्वा दन्तवक्त्रः कृष्णेन योद्धुं मथुरामाजगाम। कृष्णस्तु तच्छ्रुत्वा रथमारुह्य तेन योद्धुं मथुरामाययौ ॥ दन्तवक्त्रवासुदेवयोरहोरात्रं मथुरापुरद्वारि यमुनातीरे संग्रामः समवर्त्तत ॥ कृष्णस्तु गदया तं जघान ॥ सतु चूर्णितसर्वाङ्गो वज्रनिर्भिन्नमहीधर इव गतासुरवनितले पपात ॥ सोऽपिहरेः सायुज्यं योगिगम्यं नित्यानन्दसुखं शाश्वतं परमं पदमवाप ॥ इत्थं जयविजयौ सनकादिशापव्योजेन केवलं भगवतो लीलार्थं संसृतावयतीर्य जन्मत्रयेऽपि

तेनैव निहतौ जन्मत्रयावसाने मुक्तिमवाप्तौ॥ कृष्णोऽपि तं हत्वा यमुनामुत्तीर्य नन्दव्रजं गत्वा प्राक्तनौ पितरावभिवाद्य आश्वास्य ताभ्यां साश्रुकण्ठमालिङ्गितः सकलगोपवृद्धान्प्रणम्याश्वास्य रत्नाभरणादिभिस्तत्रस्थान्संतर्पयामास॥

॥श्लोक॥ कालिन्द्याः पुलिने रम्ये पुण्यवृक्षसमावृते। गोपनारीभिरनिशं क्रीडयामास केशवः॥
रम्यकेलि-सुखेनैव गोपवेषधरो हरिः। बद्ध प्रेमरसेनात्र मासद्वयमुवासह॥

॥ श्री पद्मपुराण उत्तर खण्ड अ० २५२ ॥

भावार्थ—"शिशुपाल के वध का वृत्तान्त श्रवण कर दन्तवक्त्र श्री कृष्ण से युद्धार्थ मथुरा आया। उसके आने का समाचार ज्ञात कर स्वयं श्री कृष्ण भगवान रथारूढ़ होकर द्वारिकापुरी से वहाँ पहुँचे। एक दिवस पर्यन्त मथुरा के समीपस्थ यमुना तट पर श्री कृष्ण भगवान तथा दन्तवक्त्र का युद्ध होता रहा। अन्त में श्री भगवान ने अपनी गदा से उस पर प्रहार किया जिससे उसके सभी अङ्ग, जैसे वज्र के आघात से सब कुछ चूर्ण हो जाता है, वैसे ही चूर्णित होगए और वह निष्प्राण होकर भूमि पर गिर पड़ा। परन्तु इतने पर भी उस असुर ने वह परम सायुज्य पद प्राप्त किया जो नित्यानन्द, सुखस्वरूप तथा सनातन होते हुए केवल योगी गम्य है।

इस प्रकार से जय, विजय नाम के जो विष्णुपार्षद श्री सनकादिक के शाप के मिस केवल भगवान की लीला पूर्णार्थ अवतरित हुए थे, अपने तीनों जन्मों में श्री कृष्ण द्वारा समाप्त कर दिए जाने पर अवसान में मुक्त पद को प्राप्त हुए। तदनन्तर श्री कृष्ण यमुना पार होकर श्री नन्दव्रज में पहुँचे। उन्होंने अपने माता पिता श्री नन्दराय एवम् श्री जशोदा माता जी को अभिवादन करके उन्हें सांत्वना प्रदान की। उस परमोच्च मिलन की सुख वेला में श्री नन्द तथा यशोदा माता ने गद्‌गद् कण्ठ होकर प्रेमाश्रु बहाते हुए अपने परम प्रिय पुत्र का सोल्लास आलिङ्गन किया। तत्पश्चात् श्री कृष्ण ने वहां के वयोवृद्ध गोपों एवम् अन्य गुरुजनों को प्रणाम करके उन्हें आश्वासित किया तथा अनेकानेक प्रकार के रत्न, भूषण तथा वस्त्रादि देकर उन्हें परितुष्ट एवम् प्रसन्न किया। उसके बाद वह यमुना के उस पार जाकर तट पर जहां अनेकों प्रकार के पुष्प वृक्ष सुशोभित होरहे थे, प्रिय गोपाङ्गनाओं के साथ निरन्तर विहार में प्रयुक्त हुए। इस प्रकार से गोप वेश धारी श्री कृष्ण उन सभी के प्रेमरस रूपी रज्जु से बंध कर दो मास पर्यन्त उस मनोहर केलि का सुख रसास्वादन करते हुए, वहां ठहरे।"

अब थोड़ा सा 'श्रीगोपालचम्पू' (उत्तर) का प्रसङ्ग वर्णन किया जाता है:—

॥श्लोक॥ यदपि च कनक विलासा, राधा कृष्णश्चजिष्णुनीलाभः।
तदपि च वैदूर्याभं, तद्युगमैच्यतिद्युतिभिः॥
एवं तयोः सापरभागलक्ष्मी,र्विष्कम्भिवान् सर्व्व जनान् कार्षीत्।
वैवाहिकं कार्य मनन्तराहे, यथानते कर्तुमथाचमन्त॥

गुरोरथाज्ञा मनुगम्य दम्पती, मान्या नु बद्धां चलता मिथः स्थिती।
प्रदक्षिणी कर्त्तुममूहुताशनं, समुत्थितौ सर्वतनूरुहैः सह॥
प्रदक्षिणावर्त्तममू हुताशनं, प्रदक्षिणं चक्रतुरत्र दम्पती।
ततस्तदावेशवशेननिर्म्ममुः, सर्व्वस्य नेत्राण्यपि तं प्रदक्षिणं॥

(श्री गोपालचम्पू (उत्तर) पूर्ण ३५ श्लोक ७४-७५-७६-७७)

भावार्थ—"यद्यपि श्री प्रिया जी की कान्ति तो स्वर्णयुत है तथा लालजू की इन्द्र नीलमणि सदृश है, परन्तु फिर भी परस्पर प्रतिबिम्बित होने के कारण से दोनों के स्वरूप वैदूर्य मणि के समान प्रतीत होते हैं। उस समय के परम प्रकाशवान सौंदर्य ने अपनी आभा से सभी को चमत्कृत करते हुए आश्चर्य से स्तम्भित सा कर दिया, जिसके कारण से आगे विवाह की कार्यव्यवस्था चलाने में वे सब असमर्थ से हो गए। क्योंकि उस समय श्री प्रिया एवम् प्रीतम के वस्त्राञ्चलों का गठ बन्धन माननीय गुरुजनों द्वारा ही किया गया था। अतः ज्योंही वह दोनों गठ बन्धन से ग्रथित होकर, श्री गुरुजी की आज्ञानुसार अग्नि की प्रदक्षिणा करने के लिए उत्तिष्ठित हुए, त्योंही वह रोमांञ्चित हो गए। तत्पश्चात् उन्होंने घूम घूम कर वहां पर अग्नि की प्रदक्षिणा की। उस समय का सभी उपस्थित समाज उनके युगल दर्शन से इतना तल्लीन एवम् आत्म विस्मृति सा होरहा था कि सभी के नेत्र भी उस युगल छवि के साथ साथ परिक्रमा का परिभ्रमण कर रहे थे।" इत्यादि

३— "श्री हरिविलासलीलामृत तन्त्र" नामक ग्रंथ में भी विवाह का विस्तार पूर्वक वर्णन किया गया है। परन्तु यहाँ विस्तार भय से केवल एक श्लोक वैवाहिक कर्म पुष्ट्यार्थ प्रस्तुत किया जाता है।

।श्लोक॥ अथतत्र शुभेकाले विप्रानाहूय सत्तमान्। वृषभानुर्म्महाभागः पप्रच्छोद्वाह वासरम्॥

(हरि विलास लीलामृत तन्त्र)

भावार्थ—"इसके बाद महान भाग्याधिपति श्री वृषभानु जी ने विज्ञान शील ब्राह्मणों को शुभ समय में आमन्त्रित करके उनसे विवाह योग का शुभ दिन पूछा"।

४— श्री ब्रजलीला एवम् श्रीनिकुञ्जलीला रसिक प्रायः सभी महतजनों ने अपने अपने रस के अनुकूल अपनी अपनी वाणियों में नाना प्रकार से विवाह का वर्णन किया है। उद्धरणार्थ संक्षेप से कुछ पद अष्ट सखाओं की वाणियों में से यहाँ उद्धृत किये जाते हैं।

श्री सूरदास जीः— (राग रायसौ)

ललित लाल कौ सेहरौ जगमगि रह्यौ है री माई। हरषि हरषि गोपी गावहीं यह सुख देखौ आई॥
अलकैं झलकैं वदन पर मरवट खौर बनाई। सोभा सींव उलंघिकैं उमगी है सुन्दरताई॥
कुमकुम वेंदी भाल पर शशि सम उदित सुहाई। मुक्ता अछि तन जलद में उडुगन देत दिखाई॥
भृकुटि कुटिल मन मोहिनी वरुनी है सुखदाई। वागौ वीरा अति बन्यौ छवि सौं चतुराई छाई॥

समुझियौ रसज्ञ जन नातौ दोऊ गामनि कौ ऐसैं चलि आयौ है॥

जननी न्यौछावर करैं बाजे बजत बधाई। सुर वनिता जकि थकि रहीं रस मूरति है पाई॥
धनि जसुमति सुत साँवरौ दूलह कुँवर कन्हाई। राज कुँवारी राधिका नवल दूलहनी पाई॥
यह जस गावैं सारदा जिनके भाग बड़ाई। यह आनन्द जिनकैं हियैं "सूरदास" बलि जाई॥

श्री नन्ददास जीः— (राग गौरी)

अरी चलि दूलह देखन जाहिं।
सुन्दर श्याम सलौंनी मूरति अँखियाँ निरखि सिराहिं॥
जुरि आईं ब्रजनारि नवेली मोहन दिसि मुसकाहिं।
मौर बन्यौं सिर काननि कुंडल मरवट ललित सुहाहिं॥
पहिरि जरकसी वसन अभूषन अंग अंग मन उरझाहिं।
तैसी ये बनी बरात चहुँ दिसि जगमग रंग चुचाहिं॥
गोप सभा सरवर में फूल्यौ कमल प्रमलैं झपझाँहिं।
"नन्ददास"गोपिनि के दृग अलि लपटनि कौ अकुलाहिं॥

श्री कृष्णदास जीः—

भाँवरि भवन भानु कैं सजनी होत है आज देखौ कीजै।
जोरी गौर श्याम है सजनी निरखि निरखि नैननि सुख लीजै॥
मधुर मधुर पग धरति अवनि पर धन्य धरी निसि यह सुख जीजै।
वेद विधिवत विप्र दुहूंदिस पढ़त हैं सुनि श्रवननि सुख दीजै॥
झुकीं झरोखनि भामनि गावैं दामिनि दुति तहां वारनैं कीजै।
भाँवरि लै बैठे रत्नसिंहासन ललिता आरति करि मन रीझै॥
बरषत पुहुप देव दुंदुभि धुनि तन मन धन न्यौछावर दीजै।
"कृष्णदास" गिरिधारन रंगीले रगमग रंग राधा कैं रीझै॥

श्री परमानंद दास जीः— (राग बिलावल)

माँगैं सवासनि वार रुकाई।
झगरन अरत करत कौतूहल चिरजीवौ मेरी बीर कन्हाई॥
चिरजीवौ वृषभान नन्दनी रूप सील गुण सागर माई।
निरखि निरखि मुख जीजै सजनी यही नेग बड़ सम्पति पाई॥
दीनी धौंर धूमरी पीयर अरु ताकौ तीयर पहिराई।
फिर सबहिनकी महरि जसोमति मेवा मोदक गोद भराई॥

*कृष्ण जनम खंड माहिं लिखौ स्कंध पुराण, वृषभ स्वयंवर वृषभानु जू करायौ है।

आरति करि लिये रतन चौक में बैठारे सुन्दर सुखदाई।
"परमानन्द" आनन्द नन्द कैं भाग बड़े घर नौ निधि आई॥

४– "श्रीब्रह्मवैवर्त पुराण" के अन्तर्गत "श्री कृष्ण जन्म खण्ड" में भी विवाह का वर्णन है। कुछ अंश यहां लिखे जाते हैं—

पुनर्ननाम तां भक्त्या विधाता जगतां पतिः। तदा ब्रह्मा तयोर्मध्ये प्रज्वाल्य च हुताशनम्॥
हरिं संस्मृत्य हवनं चकार विधिना विधिः। उत्थाय शयनात्कृष्णं उवास वह्निसन्निधौ॥
ब्रह्मणोक्तेन विधिना चकार हवनं स्वयम्। प्रणमय्य पुनः कृष्णं राधां तां जनकः स्वयम्॥
कौतुकं कारयामास सप्तधा च प्रदक्षिणाम्। पुनः प्रदक्षिणां राधां कारयित्वा हुताशनम्॥
प्रणमय्य ततः कृष्णं वासयामास तं विधि। तस्या हस्तं च श्रीकृष्णं ग्राहयामास तं विधिः॥
वेदोक्त सप्त मंत्रांश्च पाठयामास माधवम्। संस्थाप्य राधिकाहस्तं हरेर्वक्षसि वेदवित्॥
श्री कृष्णहस्तं राधायाः पृष्ठदेशे प्रजापतिः। स्थापयामास मंत्रांस्त्रीन्पाठयामास राधिकाम्॥
पारिजातप्रसूनानां मालां जानुविलंबिताम्। श्रीकृष्णस्य गले ब्रह्मा राधाद्वाराददौ मुदा॥
प्रणमय्य पुनः कृष्णं राधां च कमलोद्भवः। राधा गले हरिद्वाराददौ मालां मनोहरां॥
पुनश्चवासयामास श्रीकृष्णं कमलोद्भवः। तद्वामपार्श्वे राधां च सस्मितां कृष्णचेतसम्॥
पुटांजलिं कारयित्वा माधवं राधिकां विधिः। पाठयामास वेदोक्तान्पंचमंत्रांश्चनारद।
प्रणमय्य पुनः कृष्णं समर्प्य राधिकां विधिः॥

(श्री ब्रह्मवैवर्त महापुराण श्रीकृष्ण जन्म खण्ड अध्याय १५ श्लोक १२०–१३०)

भावार्थ—"फिर जगत्पति ब्रह्मा ने श्री राधामाधव को श्रद्धाभक्ति युत प्रणाम किया तथा उन दोनों के मध्य में अग्नि को प्रज्ज्वलित करके श्री विष्णु का स्मरण करते हुए विधि पूर्वक हवन किया को सम्पन्न किया। उस समय श्री कृष्ण भी शैय्या से उठ कर अग्नि के समीप विराजमान हो गए। तत्परचात् उन्होंने ब्रह्माजी की बताई हुई विधि के अनुसार स्वयं भी हवन किया। तब ब्रह्माजी ने स्वयं श्री प्रियां-प्रीतम को प्रणाम किया और कौतुक पूर्वक सात बार श्री लालजी तथा श्री प्रियाजी से अग्नि की प्रदक्षिणा किया पूर्ण कराई। तदनन्तर ब्रह्मा जी ने प्रणाम करके श्री कृष्ण को आसन पर विराजमान कराया तथा श्री राधिका जी के करकमल से श्री कृष्ण के हस्त कमल को ग्रहण कराया। वेदों के ज्ञाता श्री ब्रह्माजी ने श्री राधिकाजी के हस्तकमल को श्री कृष्ण के वक्षस्थल पर रखवाकर वेदोक्त सात मंत्रों को श्रीकृष्ण के मुख से उच्चारण करवाकर तथा श्रीमाधवके करकमल को श्रीराधिकाजी के पृष्ठ देश पर रखवा कर श्री राधिकाजी से तीन मंत्रों का उच्चारण करवाया। तत्पश्चात् श्री ब्रह्माजी ने आनन्द पूर्वक पारिजात पुष्पों की आजानुलम्बित माला को श्री माधव के गले में श्री प्रियाजी के द्वारा पहनवाया। तदनन्तर श्रीराधामाधव को प्रणाम करके एक सुन्दर ग्रथित पुष्पहार श्रीहरि के द्वारा श्री राधिकाजी को पहनवाया। फिर श्रीकृष्ण को आसनासीन कर उनके वामाङ्ग में श्रीकृष्ण लवलीनहृदय मुसकराती हुई श्री प्रियाजी

बाईस विलासनि में वरनी है व्याह रीति, श्री नारायण आपु मुख रमा कौ सुनायौ है ॥ तैसेंई सदाशिव ने गौरी प्रति वरन्यौ है, कीर भृंग दुहुनि कौ संवाद सोई गायौ है । वृन्दावन हितरूप राधा लाल अज्ञा पाइ, जथामति चरित कछु मोपै कहि आयौ है ॥

॥ इति श्रीवृषभानु नंदिनी श्रीनंद नंदन विवाह मंगल समाप्तम् ॥

को विराजमान कराया । हे नारदमुनि ! तब विधि ने श्री राधामाधव को बद्धाञ्जलि करवाकर वेदोक्त पांच मंत्रों को पढ़वाया । फिर प्रणाम करके श्री राधिकाजी को श्री कृष्ण के अर्पण किया ।" इत्यादि वर्णन है ।

६– "श्रीआदि पुराण" में सदाशिव गौरी सम्वाद के अन्तर्गत श्रीकीर भृङ्ग सम्वाद में विवाह का वर्णन किया गया है । कुछ श्लोक यहां उद्धृत किये जाते हैं—

श्री भृंगाधिप-उवाच–

किमहं वर्णये भाग्यं राधायाः परमाद्भुतम् । ब्रह्मादयोऽपि न विदुः परमानन्द मन्दिरम् ॥
ततो विवाहमकरोद् वृषभानुर्गुणोदयः । वैशाखे सितपक्षे तु तृतीया चाक्षयाह्वया ॥
रोहिणीस्वर्क्षसंयुक्ता जगाल्लग्नशुभावहा । पारिबर्हादिकं दत्त्वा वस्त्रमन्नसमृद्धिमत् ॥

(आदि पुराण अध्याय १२-श्लो० १०-११-१२)

भावार्थ—"मैं श्री राधिकाजी के परम अद्भुत सौभाग्य की महिमा क्या कहूँ? उनके परमानन्द मन्दिर स्वरूप भाग्य के विषय में ब्रह्मादिक देवता भी अनभिज्ञ हैं । इसके पश्चात वैशाख मास के शुक्ल पक्ष की अक्षय तृतीया के दिन रोहिनी नक्षत्र में शुभ मुहूर्त और लग्न में गुणवान श्री वृषभानु जी ने उत्तम वस्त्र अन्नादि और बड़ी भारी समृद्धि को देकर कन्या के पाणिग्रहण कार्य को संम्पादित किया ।"

यद्यपि "श्रीगोपालचम्पू" एवं "श्रीब्रह्मवैवर्त" तथा "श्रीआदिपुराण" में विवाह समय भिन्न भिन्न रूप से वर्णित मिलता है । "ब्रह्मवैवर्त" तथा "आदिपुराण" मथुरागमन से पूर्व ही विवाह का समय का निश्चित करता है जबकि "श्री गोपालचम्पू" द्वारिका से पुनर्गमन के बाद । इसे कल्प भेद से ही समझना चाहिये । क्योंकि श्रीकृष्ण की अवस्था नित्य किशोर है और उनकी सब लीलाएँ नित्य हैं । अतः मथुरागमन से पूर्व या बाद वर्णन किये जाने में वास्तविक कोई तारतम्य नहीं है यथा:—

"सन्तं वयसि कैशोरे भृत्यानुग्रह कातरम् ।"

(श्री भा० १०स्क० ३अ० २८ श्लो १७)

"वृन्दावनविहारेषु कृष्णं किशोर विग्रहम् ।"

(पद्मपुराण)

अन्य प्रमाणों का लेखमाला बढ़ जाने के भय से एवम् स्थानाभाव के कारण से विश्लेषण नहीं किया जा सका है एतदर्थ पाठकगण क्षमा करेंगे ।

विनीत—रतनलाल वेरीवाला

श्री लाड़िली लाल जू कौ गौंनाचार

मंगल छंद राग सूहौ विलावल—पद १

गौनौ कौ मंगल समयौ सुभ जानिकै। इत उत हरपे सजन परम हित-मानि कै ॥ सादर विप्र बुलाइ सुदिन सुधिवाइकै। व्रजपति पठये विप्र पत्र लिखवाइ कै ॥ लिखवाइ पत्री सुदिन निर्मल भानु पुर तिहिं छिन गये। रावलधनी पद वंदि विप्रनि मुदित अति तन मन भये॥ वहु पाक मेवा महरि पठयौ लियौ कीरति प्रीति सौं। समाचार सु वाँचि विप्र जिमाइयौ रसरीति सौं ॥ मानि सजन के वचन जानि सुभ जोग जू। विप्र विदा करि रचे सजन हित भोग जू ॥ अपने अनुग पठाइ जाइ सुनाइयौ। व्याह समय की रीति गोप लै आइयौ ॥ गोप लै आवौ कृपा करि समझि हिय कौ हेत जू। विपुल मंगल होइ इत उत तुम सनेह निकेत जू॥ व्रजराज सुनि आनंद आये गोप गन लै संग जू। मनु अलौकिक मदन दल तिन मध्य साँवल अंग जू॥ सखनि सहित वलवीर सु अस छवि पावहीं। मनहुँ उदित रवि खिले कमल सँग आवहीं ॥ लखि आगमन भये जन प्रमुदित भानपुर। करि करि सुभग सिंगार मिले सब लागि उर ॥ लागि उर वृषभानु वृजपति श्री दामा गिरिधर मिलैं। नौं नंद पुनि नौं भानु मिलि कै परस्पर अति सुख झिलैं ॥ करि करि प्रसंस प्रणाम इत उत वहुरि मणि मंदिर चले। वैठे जहाँ तहाँ गोप गन लगे सुर सभा तें अति भले ॥ भोजन हित तब सजन सु रावल वोलियौ। चरण ध्वाय वैठाइ पाक तव खोलियौ ॥ परसत राजकुँवार संग विप्रनि लिये। श्रीदामा श्रीकृष्ण निरखि हरषित हिये ॥ हिये हरषित परस्पर वहु साक पाक मँगावहीं। जैंवत छवीले गोप गन जहाँ वधू गारीं गावहीं ॥ नौ नंद घरनी सुमति वरनी कियौ कौतुक जू अहा। तिन पै महरि लाइक विदित सुत श्याम वे गोरी महा ॥ लला कौन उपमा तुम जननी

दीजियै। तिनकौ जस अति मिष्ट सुन्यौंई कीजियै ॥ देखि जनक तन आपु तन जो न पतीजियै। ऊँचे रंचक चितवौ लाज न भीजिये॥ भीजिये तनक न लाज सुनि मुसिकात कछु गोकुल धनी। हँस्यौ श्रीदामा जु हर हर श्याम चितये अनकनी॥ रुचि बढ़त सुनि गारी सजन जेंवत भरे रस भाइ जू। वृन्दावन हितरूप बलि उत रहे श्रवण लगाइ जू॥

मंगल छंद राग सूहौ विलावल—पद २

बैठी है ज्यौंनार सबै पुर पूरि जू। करत सबै रुचिमान तौ भोजन भूरि जू॥ कौर कौर मनुहारि करत वृषभानु जू। पाक अनेक न रसना सकहि बखान जू॥ सकहि नाहिं बखानि रसना तृपति ह्वै अचवन लियौ। नित नयौ सनमान बहु दिन राखि रावलपति कियौ॥ लाड़ मदन गुपाल कौ नौ भानु घरनि विसेषिये। महरि हू तें प्रेम अधिकौ करति जू उर लेखिये॥ मंगल तिथि अरु वार लगन सुभ आइयौ। दूलहु भवन बुलाइ सु गाँठ जुराइयौ॥ इत गौतम उत गरग वेद विधि उच्चरी। बहुरि लोक विधि रीति सबै बनितनि करी॥ करी बनितनि रीति सबही ह्वै रह्यौ गहमह महा। दिये भूषण बसन साज अनेक विधि बरनौं कहा॥ भरयौ रतननि थार कीरति तिलक मोहन कौ कियौ। तन गौर श्याम अभूत जोरी निरखि जल वारयौ पियौ॥ कुल बनिता पुर बनिता जुरि जुरि आवहीं। करि करि तिलक असीसैं विविधि सुनावहीं॥ बरषत है रस रंग भवन कीरति अली। होत है गौनौ-चार नगर सब रँग रली॥ नगर सब रँग रली भाँति भली विपुल मंगल सच्यौ। कीरति दई अस दात जाकौं देखि विधि सुरपति लच्यौ॥ बैठे पटा गठ जोरिनौं करि कहा कहौं छवि आजकी। दामिनि कुँवरि कौंधति सजल घन दुति सुवन ब्रजराज की॥ परम कौतिकी लाल अरी रसिया बड़ौ। नैंन लोल मृदुबोल नंद कौ अतिलड़ौ॥ दृष्टि जोरि रहे ताकि निकट तरुनिनु तनै। छैल भरयौ हिय फैल जात नहिं गुन भनै॥ जात नाहिन भनें गुनगन चतुर समझत बहु कला। यहे बन में होत दानी जस धुजा जसुमति लला॥

करजनि चटकि लै वारनें गुलचति जु हँसि हँसि परतिं हैं। वृन्दावन हितरूप इहि विधि वधूँ कौतुक करति हैं॥

राग सूहो विलावल—पद ३

ब्रजपति मान्यौ मोद सजन सनमान सौं। करत प्रसंसा गोप सुनत जस कान सौं॥ एजू रावल ईस विदा अब दीजियै। गुण अगाध कहा रचना वरनन कीजियै॥ कहा वरनन कीजिये बृपभानु मूरति नेह की। मिले भुजनि पसार सरस्यो प्रेम नहिं सुधि देहकी॥ पाँवरीं पट पहिराइ भूपण कनक बहु भाजन दये। भरे सकटनि साज अगनित अस्व सिंगारे नये॥ प्रीति परस्पर लखियत अतिसै गहगही। उर वर वेली नेह ललित भइ डह डही॥ मिलत मिलत सुख प्रेम न सुरझनि देखिये। यह ब्रज कथा अलौ-किक किहिं विधि लेखिये॥ लेखिये किहिं विधि कथा गोपी गोप वपु अनु-राग कौ। सागर बतावे थाह को अस मितन इनके भाग कौ॥ भूपण वसन निर्मोल गोकुल चंद सुभग सिंगारियौ। उमग्यौ जुगल तन रूप निधि लखि वधुनि सर्वसु वारियौ॥ मिलति अतिलड़ी कुँवरि आपनी मात सौं। खगी कनक मनौं वेलि वेलि मृदु गात सौं॥ किधौं मेरु कंदरा दुरति दामिनि नवी। यौं जननी के अंक लगत उपमा फवी॥ फवी उपमा अंक जननी अजिर वनितनि भीर है। मिलति पुर परिवार भामिनि श्रवत नैननि नीर है॥ दृग प्राण थाती गवन करिहै नंद मंदिर कौ अवै। नर नारि विथकित होति कीरति भवन भये एकत सवै॥ जनक निरखि करुना अतिही हिय आइयौ। लैहौं वेगि बुलाइ यौं वचन सुनाइयौ॥ पुनि पुनि कै पुचिकारत होत अधीर जू। पुनि भेंटति है कुँवरि अतिलड़े वीर जू॥ वीर अतिलड़े भेंटि सुंदरि भाँति यह चकृत खरी। वाल मृगी विसार यूथहिं मनौं छवि जुत अरवरी॥ ढरत आनँद वारि लोचन सवै वेपथ अंग हैं। वृन्दावन हितरूप स्वामिनि चली सखि वहु संग हैं॥

करखा राग पंचम—पद ४

आनि डोला धरयौ अजिर वृषभानुकै, देखि री देखि रचना न आवत भनी। नगनि की जोति चख चौंधि दृग होति है, वादले वसन की छवि जु वाढ़ी घनी॥ रतन कलसान की अहा कहा जग मगनि, वाँस परि चित्रकारी अपूरव वनी। आठ वाहन तासु मैंन रूपी वनें, कुँवरि अस लाड़ सौं मुदित गोकुल धनी॥ लली डोला चढ़ी अमित सोभा वढ़ी, भानुकुल सफल कियौ धन्य सौभग मनी। धन्य तें धन्य यह जानि व्रजपति सुवन, रूप निधि वरी मित भाग्य परति न गनी॥ पालकी विविधि डोला जु रथ पंकतनि, चढ़ि चलीं संग ललितादि अलि सव जनी। सुता वृषभानु की प्राण मूरति मनौं, क्यों जियैं ता विना जानि गति मणि फनी॥ मंगलनि गान नीसान वाजे गहकि, वेद धुनि करत हैं विप्र रुचि आपनी। दै असीसनि कृष्ण सीस कर राखिकैं, वृन्दावन हित हियें सुख जु कीरति सनी॥

राग भैरौं इकताला—पद ५

निकसि खेत ठाढ़े भये विदा करन गोप गये, नंद सुजस भानु कहत भानु कहत नंद कौ। भिक्षुक जन देत दान इत उत सनमान गान, मानों मुख कमल श्रवत धारा मकरंद कौ॥ वचननि वहु वरषि रंग सुखित भये अंग अंग, गोधन वृन्द दीनें वृषभानु जू व्रजचंद कौ। डोला चढ़ि चली कुँवरि नालिकी व्रजेस कुँवर, रसिक लाल हिये सिंधु वाढ़यौ आनंद कौ॥ मारग में चले जात सखनि संग करत वात, विरमौ संकेत भैया धाम सुख जु कंद कौ। मेघनि कियौ व्योम छँवन तिहिं छिन चल्यौ त्रिविधि पवन, सेवत सवै माहिली रुचि जानि सुधन छंद कौ। कुसुमनि की करत वृष्टि गावत सुर चरित मिष्ट, समुझत प्रभु जवतें मद नवायौ मति मंद कौ। वलि वलि वृन्दावन हितरूप श्याम निरखि मुदित, कुंज संकेत सोभा जाल प्रेम फंद कौ॥

मंगल छंद राग सूहो विलावल—पद ६

नव दुलहिनि पुर नियरें आई। तव उपनंद भवन वैठाई॥ फूली

बाँटति महरि बधाई । धनि धनि आजु सुदिन री माई ॥ आज कौ दिन महा मंगल कहति महरि सुजान की । त्रैलोक सौभगसींव दरसी कुँवरि श्री वृषभानु की ॥ मंगल गवाइ बजाइ बाजे दुलहिनी मंदिर लई । वारति महामणि रतन धनि यह जोट विधि जिनि निर्मई ॥ देखनि कौं ब्रज सुंदरि आई। गाँठि जोरि रस रीति कराई॥ राधा छवि निरखति रहीं ऐसें । सूरज उदित नछत्रगन जैसें ॥ जैसें नछत्र जु उदित रवि के ससिहिं देखत कमल ज्यौं । अतिलड़ी राधा रूप आगें नसी उपमा लोक त्यौं ॥ गौरंग आभा श्याम तन तन श्याम गोरे अंग लसी । कोउ बदलत वसन दोउनि रूप बदलनि चित बसी ॥ जसुमति सादर हरपि जिमावैं । पाक विविधि तहाँ लखि रुचि लावैं॥ कौर कौर प्रति कर हित भारी। छकि रहि जननी भाग निहारी॥ निहारि जननी भाग अपनौं नीर शीतल प्याइकैं । हरि भुवा कीनौं आरतौ ब्रज बढ़्यौ प्रेम सुभाइकैं ॥ दुंदुभि गोमुख भेरि ढोलक मिलि मृदंग सुबाजहीं । रनिवास गोकुल राइकै मंगल अलौकिक साजहीं ॥ उभै भाल पर तिलक कराई । मंदिर इक आवैं इक जाई ॥ यह अनहोतौ लाड़ सखी री । इत उत विनमित प्रीति लखी री ॥ लखी विनमित प्रीति ब्रज जन सदा दुहुनि लड़ावहीं । तब लगि न रंचक चैंन जब नित नये सुख दरसावहीं ॥ वृषभानु कीरति नंद जसुमति लाड़ सुख सागर बह्यौ । बृन्दावन हितरूप गुरु परसाद कछु इक मैं कह्यौ ॥

राग गौरी—पद ७

श्री राधा रूप अगाध बधू निरखत छकी । हौं गई मंदिर नंद देखि मो मति थकी ॥ नख सिख ते अँग अंग वनी नव नागरी । नहिं पटतर नख कोर तौ को जग आगरी ॥ जिहिं विधि महरि अराधे ब्रज के देव गन । ताही विधि गिरिराज पुजाई आस मन ॥ जा दिन तें नव दुलहिनि पौरी पगु दये । ता दिन तें नंदीस्वर मंगल नित नये ॥ ब्रज मोहन के रूप मथ्यौ मन मदन है । सो विथकित अति भयौ गौर लखि वदन है ॥ धनि कीरति

भई कूखि कलपतरु रूप कौ। जहाँ दृग वांछित पावत सुत व्रज भूप कौ॥ जाके पद आराधत लोकनि ईश हैं। सो राधा पद नावतु अपनौ सीस है॥ सकल कला गुन अवधि जानि मणि जानकी। बृन्दावन हितरूप सुता वृषभान की॥

राग गौरी–पद ८

हीरनि चौकी वैठि दुलहिनी यों लसी। ससि आसन करि दामिनि मनु अवनी वसी॥ नीलांवर घूँघट पट दुरि खोलनि दिपै। पूरन ससि वदरी तें मनु निकसै छिपै॥ वैठीं तरुनी वृन्द वनी उपमा अहा। मनु कुमुदिनि सर उग्यौ राका पति महा॥ ढिंग ढिंग मनौं अनेक रूप दीपक धरे। इहि छवि पुंज प्रकास सवै फीके करे॥ नंद भवन सुकृत की कै यह रासि है। दूलहु कौ धनि भाग्य जासु मृदु हासि है॥ विधि हूँ की चातुरी नहीं जानी परी। और विधैता कौंन जु रचि पचि यह करी॥ या दुलहिनि कौ वार वार दृग देखिये। वृन्दावन हितरूप जनम सुभ लेखिये॥

राग गौरी–पद ६

देखि देखि सव कहत वधू छवि उलहिनी। इहि मंदिर गहनौं व्रजपति सुत दुलहिनी॥ तिमिर सदन दुरि जाइ खुलत घूँघट जवै। परति रूप वौछार तनक मुसकत तवै॥ कोर मुरनि दृग तनक वधुनि मद हरति है। अंग अंग दुति दुतिधर फीके करति है॥ मृदु करजनि सौं करति मिहीं पट घूँघटी। दमकति है नहुँ कांति पाँति मनु विधु जटी॥ वसन कसूँभी वीच पीठि वैनी लसी। मनु अनुराग जाल कारी नागिनि फँसी॥ रतन जटित ताटंक ओप श्रवननि किये। भये भोर रवि उदित वीच मनु ससि लिये॥ सीस फूल सौभाग्य मंजरी उदित है। फवी चंद्रिका सुक ज्यौं वैठ्यो मुदित है॥ सुभग भौंह मृदु चिवुक कपोल अनूप हैं। वृन्दावन हित ग्रीवा सींवा रूप है॥

राग गौरी–पद १०

ऐसें करति विचार वधू घर कौं चलीं। श्री राधा छवि उतकर्ष सुखित

भागिनु फली ॥ कियौ वड़ौ उत्साह महरि सुनि सुख पगी । पुनि रजनी मुख दीपक ज्योति सु जगमगी ॥ गोधन दुहुँन घमरके खिरकनि में भये । पहिरि खराऊँ रवकि तहाँ गिरिधर गये ॥ धौरी धूमर नाम कहत पुचिकारि कैं । फेरत कर वर पीठि फिरैं जु सम्हारि कैं ॥ अगनित दूध दोहनी जननी ढिंग धरी । महरि महा मन मोद देखि सुत तन भरी॥ करि ब्यारू पय पान सैंन मंदिर चले । गज सिसु गति जु लजावत रँग सरसत भले॥ वारौं मनसिज निकर सुयोवन कौंप पै । होत सखी सौं दीन आपनी चौंप पै ॥ अंग अंग छवि सींव आज नखि हैं सखी। वृन्दावन हित वलि वलि विनमित मैं लखी॥

राग परज–पद ११

यह सुहाग सुख रैंन जु सजनी कर वर तलप वनाई । लोभी लाल हिये की ललकनि तू लखि नेरैं आई ॥ सजनी०॥ प्राँन भाँवती सकुचि समझि कैं सनैं सनैं समुझाई । दुहुँ मन संधि होहु चड़ भाग्यनि परम प्रसादहि पाई ॥ जतन रतन अव खोलि हिये तैं करि विवि हिलग जराई । दै अव ओप दृगनि सुख उपजै तेरी लेंउँ वलाई ॥ सव सुख कौ फल सार सखी री दै एकांत मिलाई । वृन्दावन हितरूप जाउँ वलि रहसि वधाई गाई ॥

राग सोरठ–पद १२

अरी हेली प्रथम मिलन दिन दुलहिनी आज भई रंग भीनी रैंन। वाग मनोरथ कौ फल्यौ हेली चाख्यौ रसना नैंन ॥ हेली प्रथम मिलन दिन दुलहिनी ॥ टेक ॥ विपुल सुहाग लड़ाइये हेली राधा नंद कुँवार । मर्कतमणि कंचन तनी हेली जोरी सौभग सार ॥ कहा कहौ नव रँग लाल मन हेली वढ्यौ मिलन निधि लोभ । इत उत उलही प्रेम की हेली हिय अभिलाषा गोभ ॥ करि सिंगार नख सिख सुभग हेली सौरभ चरच्यौ अंग । श्याम सजल धन तडित मिलि हेली ज्यौं वरषैं रस रंग॥ न्यारौ मणि मंदिर ललित हेली झुके तरु वेली पाँति । जूवा मदन खिलाइये हेली सुख उझिलै वहु भाँति ॥ इहि रस वरषनि भीजियै हेली रीझ रहसि वितु पाइ । नेति नेति

वच श्रवन सुनि हेली केलि कहानी गाइ॥ लाल प्राँन थाती प्रिया हेली प्रिया प्राँन धन लाल। दुहुनि मिलन धन आपनौं हेली कर उपचार रसाल॥ फूलीं डोलति टहल में हेली हित रूपा जु सहेलि। वृन्दावन हित वारनैं हेली सरसावति रस केलि॥

राग विहागरौ–पद १३

प्रथम समागम रजनी सजनी फूली मंगल गावौ। अति सुकृती नँद नंदन राधा विपुल सुहाग लड़ावौ॥ सजनी०॥ चुनि चुनि कली भली कुसुमनि की सज्या सुभग वनावौ। दुग्ध फेंन सम कोमल तापै वसन विचित्र बिछावौ॥ उचित रुचित मधुपान दुहुँनि कौं अति हित मानि करावौ। पान डवा सुगंधि नाँनाँ विधि निकट जाइ धरि आवौ॥ हित की सखी जाइ निज नियरें चोज चाइ उपजावौ। वरनौ प्रेम कहानी मन दै मदन मोद सरसावौ॥ छिन छिन रहौ दुहुनि मन लीयें उद्धव भाग्य मनावौ। भई सुभ घरी प्रेम वितरनी अब दृग वांछित पावौ॥ पढ़ौ पत्राँरे सुरत युद्ध के खुलि खुलि खेल खिलावौ। ज्यौं बाढ़ै रति रंग चाय चित यौं रस रीति चितावौ॥ देहु असीस ओटि कर अंचल कोक कलानि पढ़ावौ। सुरत सिंधु तैं दृष्टि आँजुरिनु अमी सुविधि अँचवावौ॥ यह रजनी दिन दिन अस मंगल होहु हिय नैंन सिरावौ। वृन्दावन हितरूप वारनैं इहि विधि सुख दरसावौ॥

राग परज–पद १४

दुलहिनी सैंन भवन आई। कीने पलक पाँवड़े प्रीतम प्यारी निधि पाई॥ भींजत लाज लोक सौभग मणि मंदिर ओप बढ़ाई। सादर लई भुजनि भरि मनु मर्कत मणि हेम जराई॥ वरषत सुख सुहाग रस अंबुद घुरि घुरि रंग महाई। भरत मनोरथ सरवर सजनी मननि असीस सुनाई॥ मुंचि मुंचि वच हौं वलि कीनी सुनि री श्रवन लगाई। वृन्दावन हित सुखित नैंन लखि प्रानिन देत वधाई॥

राग परज–पद १५

होति है आज महा रस वृष्टि । दूलह दुलहिनि उमड़ि घुमड़ि घन हिय सर भरति गरिष्ट ॥ कोक कलानि प्रकासित चौंपनि वरनि भटू गुन मिष्ट । वृन्दावन हितरूप वलि गई लखि दै रंध्रनि दृष्टि ॥

राग सोरठ–पद १६

आजु मिलि वाढ़ी रंग रली । वैसंधिनु की छुटति अलोलैं गहमह भवन भली ॥ यह सुहाग की रैंन जगमगति विवि अभिलाष फली । विनु-मित प्रेम नंदनंदन उर श्री वृषभानु लली ॥ उत उझिल्यौ रस सिंधु नैंन मो नान्ही ओक अली । वृन्दावन हितरूप वलि गई इहि सुख प्रानपली ॥

राग विहागरौ इकताला–पद १७

पावन सर तीर धवल महल वने चित्र रचित, मणिनु खचित अहा कहा उिच्चि अति निकाई ॥ रितु रितु अनुसार चहूँ ओर अति प्रकासमान, असन सैंन संपुति जुत सब विधि सुखदाई ॥ विजन चँवर वहु सुगंधि भूषन पट नाँनाँ रंग, भरे विविधि कोस जहाँ अतिहीं सुघराई । ब्रजपति सुत बधू हेत निर्मित किये अस निकेत, उपमा नहीं तिनकौं लोक मो मति नें पाई ॥ अगनित सखी बृन्द जहाँ झनक झनक फिरति तहाँ, दुलरावति राधिका सुहाग भाग आई । गौर श्याम अर्बुद सुख वरषत हैं घोरि घोरि, वलि वलि बृन्दावन हितरूप अवधि माई ॥

राग केदारौ–पद १८

पौढ़े अलप रजनी रही । नवल दूलहु नवल दुलहिनि लवधि रस की लही ॥ नवल महल विचित्र सोभा परति वैन न कही । बृन्दावन हितरूप रति रन जीते अपु वल सही ॥

राग भैरों ताल चर्चरी–पद १९

भोर भये लाल नव लाड़िली श्रमित कछु भये वस नींद अवहीं सखी री । ललक रस वलक उर उघरि परे गुन अमित अधर मधु रसिक सादर

चखी री ॥ वाहु ग्रीवा वलित देखि अति मुख ललित अंग अंग छवि परति मनु नखी री । वृन्दावन हितरूप मदन चौंपरि जगे रंध्र जारीनु लगि मैं लखी री ॥

राग भैरौं इकताला–पद २०

निकट जाइ लै वलाइ वीना वर कंध लाइ, मधुर गाइ गाइ सखी जुगल कौं जगावैं । मीठी धुनि ताननि सुनि उठि न सकत आलस पुनि, परसि पवन सीतल पल नींद झपकि आवैं ॥ नाद स्वाद नींद वाद कबहुँ उतैं कबहुँ इतैं, उनमद करी केलि रैंनि जगे सुख लखावैं । वलि वलि वृन्दावन हितरूप वदन दरसि दरसि, सरसि सरसि प्रेम सावधान अलि करावैं ॥

राग भैरौं इकताला–पद २१

विरिया जब प्रात लखी सावधान करति सखी, मृदुल करनि चरन चाँपि जुगल कौं जगायौ । करवावति पट सम्हार उरझि रहे हार वार, मधुर मधुर वचन रचन कहि कहि सचुपायौ ॥ सकुचत सुरतांत चिन्ह देखि देखि समुझि समुझि, रुपहि लिये मनहि दियें हितू हित वढ़ायौ । लसत मरगजे सुचीर भवन भई सोभा भीर, दुहुँनि कौ सुहाग भाग छकि छकि दुलरायौ ॥ लाल रंग दहलि जात विरमि विरमि कहत वात, मुसिक्त हैं चतुर भाल जावक लखि पायौ । वलि वलि वृन्दावन हितरूप अहा कहा उमगिनि, साज नित रंग झलकि आनन पर आयौ ॥

राग भैरौं इकताला–पद २२

सेवा सव करतिं उचित जेहि विधि दोऊनि रुचित, आसन वैठारि मुख प्रछालि भोग लाई ॥ माखन मिश्री मिलाइ मोदक दधि मिष्ट लाइ, प्रीति सौं जिमाइ ग्रास ग्रास मुद वढ़ाई ॥ सकुचति सुकुँवारि एह प्रथम मिलन प्रथम नेह, दुलहिनी सुहाग भाग निरखि लै वलाई । वलि वलि वृन्दावन हितरूप सिंधु वढ़त रहत, अचमन दै वीरी चाँनि आरती उठाई ॥

राग भैरौं इकताला–पद २३

आरती उतरि चारु पुहुप अंजुली जु वारि, आड़ौ दै अंबर सखि उव-उवटनौं करावैं। सुख सनेह भींजि जाति लाड़ति हैं विविधि भाँति, जल सुगंध लाइ सुविधि दुहुँनि कौं न्हवावैं॥ भूषण पट सचति अंग वरषति हैं विपुल रंग, वर सुवासि चरचि मुदित तात भवन आवैं। जननी निरखि हियें हरषि आप हथ जिमाइ चाइ, बलि बलि वृन्दावन हित भाग्य फल मनावैं॥

मंगल छंद राग सूहौ विलावल–पद २४

मिहीं घूँघटी किये दुलहिनी डोलहीं। झनक झनक पग नूपुर मधुरे वोलहीं॥ चोटी रुरुकति पीठि सुही सारी लसी। मनु अनुराग सुजाल आनि नागिनि फसी॥ फसी नागिनि हलति वैंनी सोभित गोरी पीठि है। अहा अचिरज कहा वरनौं डसति पिय की डीठि है॥ फौंदना मणिनु उजास खेलत मत्त भइ मनु लोल हीं। मिही घूँघटी किये दुलहिनी डोलहीं॥ माँग भरी चित लाइ सुहथ कोविद अली। मनहुँ सुरसुरी वारि कनक गिरि तें चली॥ लसति जलज मणि पाँति सोई मनु सुरधुनी। इत उत रविजा वारि भई छवि सतगुनी॥ भई छवि सत गुनी मधि सैंदूर त्रिवैंनी मनौं। मुनि जन जु मन प्रीतम भयौ मज्जन करत पुनि पुनि जनौं॥ लगि रही सोभा जात सी मद मदन रुंदति विधि भली। माँग भरी चित लाइ सुहथ कोविद अली॥ सोभा सर मनु खेलत लोचन मीन हैं। कोर मुरनि उछरनि पिय करत अधीन हैं॥ किधौं कमलदल पखरिनु पर अलि सुत वसे। श्याम श्याम पुतरीनु रंग कौतिक लसे॥ लसे कौतिक रंग कमठ कठोर मनु ताटंक हैं। वेसरि जलज मणि हंस सावक रमै मनहु निसंक है॥ चिवुक विंदुला श्याम जहाँ छवि गहर भयौ मन लीन है। सोभा सर मनु खेलत लोचन मीन है॥ रुचिर कपोल सु गोल जहाँ तिल श्याम है। प्रीतम मन मनु रीझि कियो विश्राम है॥ ग्रीव ललित छवि वलित परति लहरी सखी। मनु सोभा मरजाद उमगि आवति नखी॥ आवति उमगि मनु सीम सोभा सिमिटि भये श्री अंग हैं।

तहाँ लोचन पथिक पिय मनु ह्वै रहे गति पंग हैं ॥ बैठे कनक गढ़ ताकि दुर्गम देहिं त्रिनौती काम हैं। रुचिर कपोल सुगोल जहाँ तिल श्याम है॥ वाहु नाहु दृढ़ फंद सु भूपन वलित है। कनक वेलि मृदु साखा फूली फलित है॥ महिंदी रचे जुग पानि खिले वारिज भले। नख ससि दल दल पर चढ़ि मनु कौतिक चले॥ चले कौतिक ससि जगमगति मुद्रिका नग कांति है। आये जुहारी देंन उडुगन वैठे मनु करि पाँति हैं॥ मृनाल जड़ क्यों देउँ उपमा निरखि छवि दलमलित है। वाहु नाहु दृढ़ फंद सु भूपण वलित है॥ पिय मन उर वर चौक क्रीडत सचुपाइ कै। नाभि सुधा सर पैठतु पुनि पुनि धाइ कै॥ ता ढिंग त्रिवली रेख महा कमनी खची। प्रीतम मन अविलंब सिढ़ी मानो रची॥ रची मानों सिढ़ी सजनी रुरत मोतिनु हार हैं। गिरि कनक पै वग पाँति अनुपम करति मनहु विहार है॥ छवि की भई जहाँ भीर कहाँ लगि कहौं वैंननि गाइ कै। पिय मन उर वर चौक क्रीड़त सचुपाइ कै॥ कटि छीनी पर किंकिनि मनु थंभन दियौ। उपजत है मृदु नाद हरतु पिय कौ हियौ॥ नीवी वंधन भविया हेम जराइ की। सुभग फौंदना छवि मखतूल भराइ की॥ भराइ छवि मखतूल भविया जंघ कदली गति हरी। गूजरी पायल वीछुवा झनकार पिय श्रवननि परी॥ गति भई स्वादी कुरंग की वरवस थकित मोहन कियौ। कटि छीनी पर किंकिनि मनु थंभन दियौ॥ जावक चित्रित चरन फिरति नव नागरी। नख मणि दुति मणि अजिर लसति छवि आगरी॥ तरवनि की अरुनाई फैलति अगमनी। इहिं छवि चौंधति भौंम तौ अस वाँनिक वनी॥ वनी वाँनिक सुभग नखसिख कौंन जग उपमा अहा। सिंगार पट दस जाहि सोहत रूप तन उमड़त महा॥ वृन्दावन हितरूप स्वामिनि सकल रूप उजागरी। जावक चित्रित चरन फिरति नव नागरी॥

राग विलावल—पद २५

घरु अँगना सोभित कियौ सुत नंद वहुरिया। छवि परसत कांपै वनै छक्यौ लाल जहुरिया॥ सम उपमा देत न वनै त्रिभुवन की छहुरिया। वृन्दा-

वन हित स्वामिनी नव-वैस लहुरिया ॥

राग विलावल–पद २६

काहे न मंदिर नंद कै तू जाइसखी री। अति लौंनी गिरिधर वधू दृग आज लखी री ॥ मणि चौकी पर राजही तहाँ मैं परखी री। वृन्दावन हित-रूप वढ़ि मरजाद नखी री ॥

कवित्त–पद २७

नंद धाम व्यौम रूप घटा गौर दरसै है, धुरवा सजल स्याम सदा रहै जहाँ ऊनयौ ॥ चौवाई घुमड़नि सनेह प्रवल इत उत, पीत वसन कौंधै लखि ओप दामिनी दयौ ॥ वरषै है रंग महा ढुरि घुरि कै अष्टजाम, वृन्दावन हितरूप विरवा प्रेम कौ वयौ। मुदित पिकी चातिकी मयूरी सहेली जन, अद्भुत अखंड नित चौमासौ अहा यह भयौ ॥

राग विलावल–पद २८

आवैं जाँहिं वधू घनी व्रजपति घर महियाँ। रूप सिंधु दृग न्हात हैं दुलहिनि मुख चहियाँ ॥ दुलहु भागिनु फल अवधि विधि सृष्टिजु नहियाँ। उपमा हेरति सारदा सम वनति न कहियाँ ॥ मदन चिनौती देतु पिय जाके वल वहियाँ। वृन्दावन हितरूप की तन कौंप उलहियाँ ॥

राग विलावल–पद २६

झनक झनक मंदिर फिरै छवि कहा वखानौं। सुनतै कानदै साँवरौ अति रीझि विकानौं ॥ अम्मृत वारौं वचन अस मिठ वोलनि जानौं। वदन रतन घूँघट डवा धरि राख्यौ मानौं ॥ नंद सुवन वड़ जौहरी परखन अकुलानौं। रोक्यौ आरज लाज उत इत मन उरझानौं ॥ मुख देखन अवसर तकै लाल निपट सयानौं। वृन्दावन हितरूप रस उपजन वरसानौं ॥

राग विलावल–पद ३०

विधना नैं सव चतुराई खरची इहि रचिकै। सोभा सिंधु विलोइकै वपु सार जु सचिकै ॥ अंग अंग छवि कौ निकर कीनी मति पचिकै। कवि

खोजत उपमा नसी वानी उठि नचिकै ॥ येहि सम वनी न दूसरी करता रह्यौ लचिकै । वृन्दावन हितरूप अस कहूँ रह्यौ न बचिकै ॥

राग बिलावल–पद ३१

सीस फूल लसै चन्द्रिका देऊँ को समतूलै । मनु छवि जीति धुजा धरी मनसिज मनु सूलै ॥ सलज दृगनि अंजन वन्यौ लखि प्रीतम फूलै । मनहु मीन सिंगार सर क्रीड़ा अनुकूलै ॥ श्रवन तरौना अति दिपै सोभा मनु मूलै । दुरन सरस्वती राहु डर कै रवि रथ हूलै ॥ नथ वेसरि मोती सुभग कहा कहौं भटू लै । किधौं चौंच सुक की गहे भृगु नंदन भूलै ॥ ससि सत वदनी आभरन तन सजे दुकूलै । वृन्दावन हितरूप लखि सब गति मति भूलै ॥

राग बिलावल–पद ३२

इत निरखति है वधू तन उत सुत की ओरी । पुनि पुनि रानी नंद की मन मुदित न थोरी ॥ मोहन भाग वली गनति विधि तन करि भोरी । नव दुलहिनि विधु वदन की ह्वै रहत चकोरी ॥ मेरौ सुंदर साँवरौ नृप सुता जु गोरी । एक दई अनुकूल सौं यह वनी सु जोरी ॥ कबहु पूरब सुकृत की गनै रासि बटोरी । वृन्दवन हितरूप पै डारति तृन तोरी ॥

राग आसावरी–पद ३३

पाक रचे बहु व्रजपति घरनी । आउ आउ व्रजराज लाड़िले सुहथ जिमाऊँ यौं उचरनी ॥ विहँसत आये लाल रसिक मणि कर पद ध्वाइ पटा रचि धरनी । न्यारे भवन संग नव दुलहिनि वैठे सो छवि जाति न वरनी ॥ परसति भाग भरी बहु सामा ग्रास देत उर आनँद भरनी । कंदर्प कोटि लजावन मोहन देखि दुलहिनि रति झुरि मरनी ॥ कौर वदलनौ सलज होतु है रानी मन अभिलाष जु ढरनी। परम लाड़ सौं भीजि जिमावति जो मंगल को मंगल करनी ॥ विंजन भाजन भरि धरि अहुरति साला पाक आपु अनुसरनी । मन मन सुकृत प्रसंसति अपनौं जाकी करनी मुनि मन हरनी॥ षट रस अधिक सवादी रसना रूप सवाद लोल दृग अरनी । वार वार करि

नेह निहारति अधर परसि उर सुख विस्तरनी॥ सकुच निवारति महरि ओट दै सखी वचन मनु अम्मृत झरनी। वृन्दावन हितरूप परावधि हिय फूलति मुख हँसि हँसि परनी॥

राग आसावरी–पद ३४

जेंवत परम रसिक नँदलाला। न्यारे भवन संग ललितादिक बैठे दोऊ नैंन बिसाला॥ परसति सखी बढ़ावतिं अति रुचि जसुमति पठवति पाक रसाला। भोजन करत दुलहिनि दूलहु कहा बरनौं छवि जो इहि काला॥ मनु अल्हर बाजी पिय लोचन देखन लोल सकुचि रही बाला। वृन्दावन हितरूप चलि गई मन भयौ मीन फसौ छवि जाला॥

राग सारंग चौताला–पद ३५

नंद मंदिर सुख बरषत करत हैं भोजन दूलह दुलहिनि सलज। बैठी वाँम अंग किये घूँघटी सोभा निकर मनौ परे बिन देखें न कलज॥ लै लै ग्रास निवारत घूँघट ससिहिं निहोरें कमल मनु थलज। अरि तें पाइ मांन सुख भींजतु कछु संकित सौ कछु भरयौ मन वलज॥ दृग लगि चलत सजातिनु के सँग गति जु पलैंडी परिवौ पलज। वृन्दावन हितरूप सवादी रसिक दुहूँ विधि यामें नहीं हल चलज॥

राग सारंग–पद ३६

हरि तात भवन भोजन करें। सखियनि पै परसावति जसुमति पाक विविधि भाजन भरें॥ वाँम भाग बैठारि दुलहिनी वचननि प्रीतम आदरें। सखरे निखरे साज जाँनि रुचि आँनि आँनि आगें धरें॥ दोऊनि कौं मन लै निज सजनी ग्रासनि देति हरें हरें। लाज भींजि कछु कहति भाँवती मनु सुख बीज बदन झरें॥ लाल होतु आधीन सखिन कैं मुख देखनि कौं अरबरें। चतुर समुझि लै कौर कियौ मिस घूँघट डारि दियौ परें॥ चखनि दै गई चौंधि मनौ दामिनि सी दमकी खरें। मानौं रसिक मनोरथ पूरन तृपिति भये यौं उच्चरें॥ जल अचवाइ खवावतिं बीरी पुनि निज मंदिर अनुसरें।

वृन्दावन हितरूप आरती करति और सुख विस्तरैं ॥

राग सारंग–पद ३७

सखी आरति करति उमंग में। रतन सिंहासन राजत दंपति ए भीजति रस रंग में ॥ पणव मृदंग झालरी घंटा सुगतिनु लेति उमंग में। गावति हैं मिलि सारंग नैनी जील घोर मुखचंग में ॥ इक वारति पुहुपांजुलि छवि पै इक छकीं प्रेम प्रसंग में। वृन्दावन हितरूप वढ़नि लखि मनसिज झलकनि अंग में ॥

राग सारंग–पद ३८

सखि रंग महल सेज्या रची। कुसुम दलनि कोमल पुनि वसननि परम चातुरी सौं सची ॥ दूलह दुलहिनि सैंन करायो देखि लूटि सुख की मची। एक प्रेम के रस बस जानैं समुझि मदन छाती तची ॥ नव संगम अनुराग नवल को अनत नवलता नहिं वची। वृन्दावन हितरूप लाभ लहि दग रंध्रनि जारिनु खची ॥

राग सारंग–पद ३९

रहै जसुमति सदन वधावनौं। दूलह दुलहिनि लाड़ चाव जहाँ नित नौतन सरसावनौं ॥ जा दिन तें आयौ गौंनौं लाल भूल्यौ गाइ चरावनौं। घर कौ रहिवौ रुचै राति दिन पुर मंगल दरसावनौं ॥ सवकौं भूले काम धाम अव फिरि फिरि इहि घर आवनौं। विधिना रची प्रान मनु थाती चिरुजीवौ कुसरावनौं ॥ लोक मुकट मणि दुलहिनि पाई भयौ महरि मन भावनौं। कुल अरु नगर ओप अति वाढ़ी दिन दिन लगत सुहावनौं ॥ श्री वृषभान नृपति कुल मंडनि सुदिन व्याहि घर लावनौं। तव तें भयौ लाल मिठ वोला सव कौं मान वढ़ावनौं ॥ गोधन खिरक समाति न तव तें वहँगिनु दूध दुवावनौं। पावन सर कुंजनि की रचना नित नित नई दिखावनौं ॥ कुंड भये सव सोभा आगर द्रुम फल फूलनि छावनौं। हरिपुर तें गरुवौ भयौ यह सुख सवके वदन कहावनौं ॥ सील चलन सुंदरि जु विचक्षन तासु सुहाग मल्हावनौं। नंद

जसोदा सुकृत सिंधु कौ वनत थांह नहि पावनौं ॥ या अतिलड़ की लहुर वहुरिया मुख ससि निकर लज्यावनौं। भागवली गोकुलपति रानी इक रसना कहा गावनौं ॥ चक्रृत देव मुनीसनि संभ्रम नर अचिरज उपजावनौं । ऐसौ घोप वढ़्यौ अति आनँद सबके चित्त घुमावनौं ॥ जब जब व्रज मंगल भयौ तव तव सुर सुमननि वरपावनौं । छिन छिन होति वृद्धि अति सुख की फल्यौ गिरि कृपा मनावनौं ॥ रीझ्यौ दई कौंन हम सुकृत व्रजपति वास वसावनौं । गिरिधर के अनुराग आपनौ हीयौ सुविधि सिरावनौं ॥ मरमी सखी गई तव मंदिर मन लै दुहुँनि जगावनौं । दुलहिनि सहित लाल उठि वैठे शीतल जल अचवावनौं ॥ पट भूपन लाई जु सहेली दुहुँनि सिंगार करावनौं । दुलहिनि आई मंदिर जसुमति ताहि हरपि दुलरावनौं॥ उभकतु लाल मणिनु जारिनु ह्वै चित चाइनु उरभावनौं। वृन्दावन हितरूप मुकर मुख देखत रीझि रिझावनौं॥

राग नट—पद ४०

दूलहु दुलहिनि कौ जस गाऊँ। नंद भवंन कौ भूपन दोऊ चित चाइनु दुलराऊँ ॥ भीतर तें आवत देखौं तव चौकी अजिर बिछाऊँ। धरि पद पीठि सामुहें सादर तहाँ हरपि वैठाऊँ ॥ रतन जटित डाँडी कौ बिजना रुचि लै पवन ढुराऊँ। कृपा दृष्टि करि चितवै नागरि तव हौं भाग्य मनाऊँ ॥ मन की वात समुझि स्यामा कौं वीरी वानि खवाऊँ। रुख पहिचानि रूप छाकी कौ दर्पन आँनि दिखाऊँ ॥ लाल झरोखनि झाँकतु तिन की वात न प्रियहिं जनाऊँ। मुकर सुकर फेरनि नैंननि की वढ़ी छवि कहा समुझाऊँ ॥ पुनि पुनि वदन विलोकै भामिनि हौं वतरस उरझाऊँ। प्रीतम अलभि लाभ सो पावत त्यौं त्यौं खेल खिलाऊँ ॥ मगन भई प्रतिविंव आपनें हौं हँसि हँसि समुझाऊँ। छवि आसक्त कौतिकी पिय दृग कहा गति वरन सुनाऊँ ॥ लोक मुकटमणि दुलहिनि परम रसिक सुख पार न पाऊँ। वृन्दावन हितरूप सिंधु वूढ़त किहिं वाँह गहाऊँ ॥

राग नट–पद ४१

दुलहिनि अँग अँग सोभा हद है। मणि चौकी बैठी राजति सखि जावक चित्रित पद है ॥ सारी जरी घूँघटी कीयें निरखि मदन गयो मद है। तामें वदन जगमगत मानौ छवि कौ गहरौ नद है ॥ कर वर चाँपनि चीर कनक मनों अंबुज खिल्यौ सरद है। वृन्दावन हितरूप निधि वढ्यौ उपमा कीनी रद है ॥

राग नट–पद ४२

दुलहिनि नंद भवन में डोलै। अधिक मान पावति जसुमति तें मधुर सलज सी बोलै ॥ धनि कुलवंती बाला कबहूँ घूँघटरौ नहिं खोलै। मिहीं वसन में तरलित वैंनी नागिनि मनों कलोलै ॥ मुकर लिये कर वदन विलोकति पुनि पुनि रूप जु तोलै। वृन्दावन हितरूप छवि छकी करज चिबुक टकटोलै ॥

राग नट–पद ४३

लाल दिन दूलहु ब्रज की मणि है। निरखि नैंन अचिरज उपजत भये जननी जनक धनि धनि है ॥ वरी राधिका दुलहिनि महिमा भागिनु की को गनि है। वृन्दावन हितरूप निकर इहि उपमा लोक न वनि है ॥

राग गौरी–पद ४४

दुलहिनि देखि जसोमति फूलै। विधि तन अंचल ओटि आपने सुकृत हिंडोरे झूलै ॥ कबहूँ सुत कबहूँ जु वधू तन लखि अपु वपु सुधि भूलै। मगन होहि आनँद निधि कबहूँ गिरि जु कृपा अनुकूलै ॥ लाड़ति नाँनाँ भाँति दुहुँनि कों कोटि प्राण संमतूलैं। वृन्दावन हितरूप रीझि तृण तोरति सकल वधू लै ॥

राग गौरी चौताला–पद ४५

दुलहिनि जवतें मो घर पग धारचौ है री माई। गोधन वढ़ति वढ़ति वहु संपति सुख कौ सिंधु वढ्यो में गिरि कृपा मनाई ॥ मेरे मोहन को सुजस वढ़तु है वड़े हो सजन की जाई आई। वृन्दावन हितरूप को अंबुद मो घर

अँगना बरषत रहत सदाई ॥

राग गौरी चौताला–पद ४६

अरी मिठ बोलनि बहुरिया कीरति जाई सुभ लच्छन जाके अंग । धनि सुभ जनम मेरे अतिलड़ को जाको व्याही नित जु बढ़ावनि रंग ॥ धनि नित मंगल नगर नँदीश्वर धन्य गोप कुल सुजस उतंग । बृन्दावन हितरूप धन्य गौरंग दुलहिनी नित नव प्रेम प्रसंग ॥

राग गौरी चौताला–पद ४७

महरि तेरे भवन उज्यारो या दुलहिनि करि उदित रहत विधु बदन । औरों इक कौतुक में कौतुक जब हँसि बोलति दामिनी से दमकत रदन ॥ सुत सोभा वपु ताकी बहुरिया लोकनि गहनों फिरति तो सदन । वृन्दावन हितरूप अति बली जाकी अंग लखि करवट दै चल्यौ मदन ॥

राग गौरी चौताला–पद ४८

सखी यह धन्य महीतल परसत है ये चरन । जिनहिं निरखि मृदुता हूँ लाजति ऐसैं कोमल सब मन आनंद भरन ॥ को विधि कौंने रची यह मूरति सकल सृष्टि तें विलच्छन बरन । बृन्दावन हितरूप धन्य बृषभानुकुल मणी जहाँ लगि तरुनी कोऊ नख पटतर न ॥

राग गौरी–पद ४९

जिमावति जसुमति अपने कर है । लै लै ग्रास देति मुख रानी हिये प्रेम अति भर है ॥ इत दुलहिनि कौं सखी जिमावति ओट दिये अंचर है । मात पोप खिल्यौ वदन कमल मनु फूल्यौ गहरे सर है ॥ छबि बेली सोभा जु कलपतरु सफल कियो यह घर है । तुष्ट पुष्ट ह्वै कै जल अचवन लीयौ मुरलीधर है ॥ राई लौंन महरि लै वारति लगत डीठि कौ डर है । बृन्दावन हितरूप जलद कौ आँगन लाग्यौ झर है ॥

राग गौरी–पद ५०

आरति करति नंद जू की रानी । दूलह दुलहिनि निरखि सिहानी ॥

कवहूँ इत कवहूँ उत देखै । आपनौं भाग अपरमित लेखै ॥ कौंन सुकृत यह वनी सु जोरी । सुत साँवल नव राधा गोरी ॥ प्रेम सरसि हिय पुनि पुनि आवै । तव तव कर आरती उचावै ॥ छिन छिन वाढ़ति प्रीति नित नई । वृन्दावन हितरूप वलि गई ॥

राग गौरी—पद ५१

छवि सौं चले खिरक व्रज मोंहन । सेली काँध खराँऊँ चरननि हाथ दोहनी लागत सोंहन ॥ श्याम गऊनि पै काहे न आये कहत मित्र कछु मोरत मौंहन । अव घर रहिवोई भावैगो हँसत लसत लागत मुख जोंहन ॥ एक श्रवन लगि मधुरे वोलत वात मरम की उर टक टोंहन । एक कहत भयौ चित कौ चीत्यौ अव न सहोगे पलक विछोंहन ॥ अगनित कलस भराये पयसौं चले भवन करि कै गो दोंहन । वचननि मान वढ़ावत अतिलड़ आवत सखा लगे सव गोंहन ॥ इहि घर लाड़ लड़ावहु उहि घर काहि वदैंगौ तू अर कोंहन । भैया अव ससुरार वसैंगौ वृन्दावन हितरूप रिझोंहन ॥

राग कान्हरौ—पद ५२

सुनि मैया गैया दुहिलायौ । कहाँ लगि कलस गनैंगी रानी अजिर भरयौ अरु ह्याँ धरि आयौ ॥ फूली महरि भाग धनि मान्यौं पौरी आवत अरघ दिवायौ । अंचल वदन अँगोछि लाल कौ करज चटकि गोदी वैठायौ ॥ तात आये माथे करदीयौ रोहिनी आसिक वचन सुनायौ । दासी दास नंद मंदिर जे अपुनौं सर्वसु सवनि लुटायौ ॥ पय भाजन भरि मिश्री खजुला महरि सानि मोहनहिं जिमायौ । उमह्यौ लाड़ ग्रास मुख दै दै और लेहु कहि कहि सचुपायौ ॥ ओदन दूध डारिकैं वूरा वहुरि रोहिनी हाथ मँगायौ । सुख देखनि दूलहु दुलहिनि कौ कौर वदलनौं वधुनि करायौ ॥ माच्यौ परम प्रेम कौ गहगड़ स्वादहि कहि कहि रंग वढ़ायौ । जे जे पाक रचे ते लीये जननी उर आनंद भिजायौ ॥ तुष्ट पुष्ट भये प्रान भाँवते सीतल जल जु सखिनु अचवायौ । वारी दै वारति पहुपाँजुलि अहा कहा सुख सिंधु वढ़ायौ ॥ नव नव

लाड़ लड़ावति जननी मैं लघुमति कछु रसना गायौ। वृन्दावन हितरूप निकर वपु निरखि सबनि कौ हियौ सिरायौ ॥

राग विहागरौ–पद ५३

नंद भवन नव दुलहिनि राजे। विनमित सुकृत कहाँ लगि वरनौं दूलह सहित समाजे ॥ सेवति सखी वृन्द रुचि लीयें जहाँ वहु मंगल साजे। तरसति हैं लोकनि की वनिता इहि सुख देखन काजे ॥ त्रिभुवन मोहन नंद दुलारो सबहिनु कौं सिरताजे। छक्यौ रहत अनुराग सिंधु सोभा लखि रति पति लाजे॥ चित वित्तु लेत चुराइ मुरलिका जब मुख लगिकै गाजे। बृन्दावन हितरूप अलौकिक जोरी अचल विराजे ॥

राग कान्हरौ चौताला–पद ५४

महरि इक कियौ है मनोरथ दूलह दुलहिनि चौपरि जाइ खिलावौ। दाइ रचन में कौ अति कोविद तुम होहु साची बुद्धि थाह लै आवौ ॥ काहू की घाँ करौ न विचच्छन जैसे चलैं ये तैसें चलावौ। वृन्दावन हितरूप रौंटि काहू करन न दीजो न्याइ रीति समुझावौ ॥

राग कान्हरौ चौताला–पद ५५

भवन न्यारे जु लैगई मिलि कै वधू जन सबै तरुनि गुणवंत। चौपरि रचि बैठारे सनमुख पासे दिये कर इत दुलहिनि उत कंत ॥ जो भापत सो दाव परत है चलत गोट जुग हिय विकसंत। वृन्दावन हितरूप वदन घूँघट मधि दरसतु लाल मति दहलति मन मनसिज उलहंत ॥

राग कन्हरौ चौताला–पद ५६

कढ़त कर गोट चलन कौ लखित रीति सौ पुनि पासे लै ढारें। लाल रचतु चतुराई जैसे कछु मुख बोलै कछु डारि कछुवै विचारें ॥ गोट धरत अहुराइ विचच्छन जैसें न्याइ नीति अनुसारें। वृन्दावन हितरूप समुझि वनिता मुसिकानी कपट रचैं सोई हारें ॥

राग कान्हरो चौताला–पद ५७

कहति ललिता सुनौ भामिनि कहो महरि सौं तुम सुत वड़े खिलारी। दाव परत औरै कछु औरै मुख तें भाषत औरै चाल विचारी॥ मन वाजी की डोरि छूटि गई करिकै कढ़त बुद्धि वल हारी। वृन्दावन हितरूप विक गये को खेलै चौपरि यह खेलनि कछु न्यारी॥

राग विहागरौ चौताला–पद ५८

वधू हँसि हँसि जु कहति हैं चतुर दुलहिनी परम निपुन गोपाल। निपुन खेल की रीति वहुरिया पिय चाल रोकी आपु चली खुलि चाल॥ सुत कौ रंग रह्यौ काचे घर सुनि व्रज रानी भानु सुता कौ भयौ रंग लाल। वृन्दावन हितरूप कितौ वोलनि कौ जतन कियौ लाल कपट रचि ऊतर न दीनौ वाल॥

राग विहागरौ चौताला–पद ५६

समुझि फूलति है जसुमति होहु नित यह दिन मरमी सखी सौं वोली। लाल हूँ तें अधिक दुलहिनी भावति कहा कहौं मन गति ग्रंथि हिये की खोली॥ मेरौ भवन भयौ अजिर अलंकृत फिरति वहुरिया रतन अमोली। वृन्दावन हितरूप मनोरथ वाग फल्यौ मम लखि जोरी तन विधि पै ओटति ओली॥

राग विहागरौ चौताला–पद ६०

लै चली नव दुलहिनि कौं सखी विचछन वातन संग लगाइ। धवल महल पावन सर कमनी ताके तट में सेवैं मदन समुदाइ॥ तलप रची कर चतुर सहेलिनु तहाँ वैठारी सादर जाइ। वृन्दावन हितरूप भलें मिलि वीरी वदलत सखी भइ न्यारी फूल माल पहिराइ॥

राग अड़ानौं चौताला–पद ६१

महल पावन सर तीर ऊँची चित्रसारी राजत मुरली धरन। रतननि जोति जगमगति जारी रंग किवारी लगी मणिनु नाना वरन॥ मृदुल तलप पर वैठे दंपति रस वतियनि लागे सुख ढरन। वृन्दावन हितरूप अहा कहा

कोक कुशल दोऊ मदन मनोरथ भरन ॥

राग विहागरौ चौताला–पद ६२

लाज जहाज दुलहिनी दरसी । धनि मोहन कौ भाग सखी यह कुंजनि सोभा वरसी ॥ छवि लावन्य कहा कहौं सजनी रस वतियनि सुख सरसी । घूँघटरौ नहिं खोलै दुलहिनि चित की वृति आकरसी॥ कन अँखियनि चितवत जव कवहूँ झरत अमी आगर सी । वृन्दावन हितरूप वदन सर दृष्टि तरनि पिय तरसी ॥

राग विहागरौ--पद ६३

परम सभागिनि दुलहिनि राधा । रस की लवधि लहत दिन दूलह मिटति मदन हिय वाधा ॥ पावन सर तट कमनी कुंजनि पुजवति सव मन साधा । वृन्दावन हितरूप विवस रस वरपति रंग अगाधा ॥

राग विहागरौ–पद ६४

दुलहिनि दूलह सुख मोहि लहनौं । रजनी रस वरपत हैं हिलमिलि रसना वनत न कहनौं ॥ वड़ भागिनु की हौं जु भाँवती छिन छिन प्रेम उमहनौं । भरत मनोरथ सागर सजनी जेहि विधि मन रुचि चहनौं ॥ ये रस रूप दामिनी घन मुहि ह्वै जु चात्रिकी रहनौं । वृन्दावन हितरूप परस्पर ह्वै रहै उर वर गहनौं ॥

राग विहागरौ चौताला–पद ६५

गौर श्याम रस के अंवुद ढुरि घुरि वरपत तू चातिक व्रत लै री । आछी नीकी गरज किंकिनी नूपुर हिय सुख भीजनि मो चितवनि जु चितै री॥ दसन प्रकास तड़ित मनु कौंधति रोम हरपि हरियारी है री । वृन्दवन हितरूप प्रेम पावस मनु छायौ रंग महल दिसि तू कौतिक मन दै री ॥

राग विहागरौ तथा अड़ानौ चौताला–पद ६६

जोति जारिनु ह्वै निकसति मनहु निकर ससि उदित भये इहि धाम । वैसंधिनु की उठति अलोलैं दाड़नु भाड़नु क्रीड़त दुलहिनि श्याम ॥ चौपर

सुरत विचच्छन दोऊ भाँननंदिनी रसिक अभिराम। वृन्दावन हितरूप चकोर धरैं व्रत सेवत सखी जन आठौं जाम ॥

राग विहागरौ तथा अड़ानौ चौताला–पद ६७

अरी मेरी दृष्टि वटोहिनि फिरि फिरि आवति कर चकरी ज्यौं फिरति ।
गौर श्याम सोभा गढ़ दुर्गम तहाँ जहाँ जाइ लागी करि वल चढ़ति जु गिरति ॥ कबहूँ जाइ उतहीं जु विरमि रहै जो रोकौं तौ नाहिन घिरति । वृन्दावन हितरूप सवाद जु गीधी वीधी विन देखे जल झिरति ॥

राग केदारौ–पद ६८

रति रन सूर आलस वलित । सींची जो वारी मनोरथ सो भई अव फलित ॥ रस विहार जु परम कोविद मान तासौं पलित । कला नाना रचत अंग अनंग भेदनि चलित॥ कंचुकी की कसनि तरकी कुसुम माला गलित। वृन्दावन हितरूप कीये कुंज कौतिक ललित ॥

राग केदारौ–पद ६९

आलस भरनि तन मन भई । दोऊ अति सुकुवार सजनी अधिक रजनी गई ॥ अकह रस विलसन पहेरी तुहिं सुनाऊँ नई । महा सूर गरूर दोऊनि लवधि रस की लई ॥ नेह वेली डहडही अति पोप दुहुँ दिस दई । वृन्दावन हितरूप रंग विहार लागी जई ॥

राग केदारौ–पद ७०

सजनी क्यौं न आलस होइ । अति साहसी अलोल दोऊ काम रस गये भोइ ॥ मदन गढ़ दुर्गम जु तोरचौ वुद्धि वल टकटोइ । अंग नव वैसंधि उलही तू जु नीकैं जोइ ॥ यह रस क्रीड़ा सुधन अपनौं हिये राखि समोइ । वृन्दावन हितरूप वलि कछु श्रमित से गये सोइ ॥

राग केदारौ-पद ७१

पौढ़े दुलहिनी व्रजचंद । तीर पावन सर महल वरपत जहाँ आनंद ॥ वहत है रुचि लिये मारुत सीत सौरभ मंद । राधिका भुज लागिकै भये

सुखित नंदन नंद ॥ मधुर बतियाँ करत मनु मुख कमल द्रवै मकरंद। वृन्दावन हितरूप उरभै प्रेम गाढ़े फंद ॥

राग सोरठ–पद ७२

लड़ैंती जू के लोचन नींद भरे। पलक झपकत पिंजरनि रुकि खंजन मनु अकुलान खरे ॥ प्रीतम मन बाँधन जु अतिबली बाँकी रीति अरे। रजनी अलप रही अब लगिये रति रन सूर लरे ॥ इत उत अति सनेह बस रहि गये चिबुकनि कर जु धरे। ससि सौं मनु अरि भाव मिटावन वारिज पाँइ परे ॥ वेसरि कौ मोती अधरनि बिच लखि दृग थकित करे। मनु भृगु नंदन सरस्वती धारा गोता लै उछरे ॥ किधौं अंजन के भार नवे पल किधौं छवि भार भरे। किधौं अति खूँनी जाँनि नींद नैं पलक कपाट जरे ॥ सोवत हूँ दरसत जु अधखुले प्रीतम ओर ढरे। वृन्दावन हितरूप अमल सौं छाके सुधि विसरे ॥

राग भैरौं चौताला–पद ७३

मदन अभिलाषिनि दाइक सब विधि लाइक कुल मणि श्री वृषभाँन। कोक पढ़ी मन बढ़ी बढ़ी चित सोभा निकर वपु लोक न उपमा आँन ॥ बीति गई रजनी देखि सजनी पियहि छकायौ सुरत रस दाँन। वृन्दावन हितरूप कंत गुन वंत प्रसंशी करत अधर मधु पाँन ॥

राग भैरौं चौताला–पद ७४

कहा नीकी भोर भई है तन सोभा की बढ़नि। बिथुरे कचनि में दिपत तरौंना मनु रवि उगत भयौ तम आड़ौ आगे देत न चढ़नि ॥ आलस अंग लपेटनि गाढ़ी मनहुँ प्रेम करी तन मन मढ़नि। वृन्दावन हितरूप वदन विधुकी जु मयूषें रंध्र जाल लागी कढ़नि ॥

राग भैरौं झपताल–पद ७५

तू जाइ निकट आइ कौतुक लखि दृग अघाइ बीनाँ मृदु धुनि बजाइ भोर भयौ दरस्यौ। बीती निसि सुख सुहाग काम कृत्य जागि जागि एरी

तम चल्यो भागि रवि प्रकास सरस्यौ ॥ चात्रिक दृग त्रिपिति भये महा प्रेम भीजि गये विवि सनेह कुंज ग्रेह घुमड़ि रंग वरस्यौ। मीनध्वज अति गरूर ताकौ मद कियौ चूर कहा कहों केलि कथा चित वित आकरष्यौ ॥ भूपन खसि खसि जु परे चोटी तें कुसुम भरे प्रीतम उर चाह सुरस पीवत हे तरस्यौ । वलि वलि वृन्दावन हितरूप भरे आलस प्रात वढ़ी नींद पवन सीतल तन परस्यौ ॥

राग भैरों झपताल–पद ७६

सखियनि की सुनी वात जानी अव भयौ प्रात जगे गौर स्याम धाम छवि प्रकाश ऐसें । वदल आभरन वसन नीवी कंचुकी की कसन अलक वदन टारति ससि निकर उदित जैसें॥ वाजत हैं मधुर जंत्र पढ़त मनहुँ मदन मंत्र आनँद के सदन भूर मंगल होइ तैसें । वलि वलि वृन्दावन हितरूप अलि सिंगारति हैं आये मंगल निकेत सोभा कहौं कैसें ॥

राग विभास–पद ७७

हँसि हँसि चरन धरत रस उनमद झूमत झुकत गहे सखी वहियाँ। रति रन चिन्ह ललित तन मंडित सकुचति सी वाला मन महियाँ ॥ छवि के होत विछौंना मानौं रूप छकनि कहि आवति नहियाँ। वृन्दावन हितरूप सहेली लेति वारनैं उभै मुख चहियाँ ॥

राग विभास–पद ७८

वार वार वारतिं पहुपांजुलि वार वार मुख लखि सुख साँनी । वार वार सव देतिं वधाई मदन जीति निसि कुसल जु मौंनी ॥ वार वार आलस अहुरावतिं वार वार कहें जे जे वाँनी । वृन्दावन हितरूप वार वार करजनि चटकि वारि पियें पानी ॥

राग विभास–पद ७९

मणि चौकी पर आसन रचिकें बैठारे दोउ वदन प्रछारत । सुहथ अंगोछि चरचि तन सौरभ लैं दर्पन रद छदन निहारत ॥ मननि उदोत होत

निसि सुख कौ मुकर सुकर तें नेक न टारत। वृन्दावन हितरूप रहे छकि रीझि सहेली सर्वसु वारत॥

राग विभास–पद ८०

मैया ने पठयौ दधि माखन जामें मिश्री पीसि मिलाई। जेंवत दिन दूलह नव दुलहिनि खोवा मिष्ट मलाई आई॥ स्वाद सराहत हैं व्रज मोहन ग्रास लेत मन मुदित महाई। पुनि हिय मोद देत सुक सारौ इत भोजन उत मृदु धुनि छाई॥ गावतिं राग विभास सहेली रसना रस सरसति जु सवाई। श्रवन राग रुचि नैंन रूप रुचि मन रुचि भोजन वरनि न जाई॥ रजनी सुख की प्रवल ललक लखि लाल रसिक मन की गति पाई। वृन्दावन हितरूप जुगल कौ दै अँचवन रचि बीरी खवाई॥

राग भैरौं–पद ८१

साजि आरती कर वर लीनी। सादर सखी प्रात ही कीनी॥ टेक॥ एक करति झालर टंकार। एक वजावति है करतार॥ इक मृदंग धुनि मधुर सुचार। इक करैं जै धुनि वारंवार॥ इक वीना कौं अंकनि धरैं। एक गानताननि विस्तरैं॥ इक पहुँपांजुलि सादर भरैं। एक रीझि कै वरपा करैं॥ इक निर्त्तति ग्रीवा करि वंक। एक लगति एकनि के अंक॥ एक छकी लखि वदन मयंक। इक वारति प्राणनि निरसंक॥ इक लिये चँवर दुरावति सीस। इक अंचल गहि देति असीस॥ भानु सुता सुत नंद व्रजीस। ये व्रज पोषौ प्रेम वलीस॥ वरसानौं नंदीश्वर ग्राम। वृन्दावन हितरूपी धाम॥ तहाँ संतत रहु श्यामा श्याम। हौं दुलराऊँ आठों जाम॥

राग रामकली–पद ८२

यह सुहाग सुख रसना गाऊँ। भाग्य भरी राधा दुलराऊँ॥ यह प्रसाद गोदी भरि पाऊँ। गौर श्याम लखि हियौ सिराऊँ॥ सुगतिनु लै अभिनय जु दिखाऊँ। प्रान भाँवती रवन रिझाऊँ॥ ये कर दंपति टहल लगाऊँ। ये दृग जुगल रूप अघवाऊँ॥ अजिर माहिं चौकी जु विछाऊँ।

हदनी नाभि कटि अति खीन पै किंकिनि लसी। मनहुँ वेली रूप मैंन मुनीनु की पंकति बसी॥ झविया कनक भरी मखतूलै। ताकौं पहिरि दुलहिनी फूलै॥ पाइल रतननि खचित बनी है। देति गूजरी छवि जु घनी है॥ घनी छवि अँनवट जु विछुवा मोहनी विद्या महा। रूप अभिमानी जु पिय वस वरनियौ अधिकौ कहा॥ हिये कुसुमनि माल जावक चरन कर मँहिदी दिपै। बृन्दावन हितरूप दुलहिनि निरखि सव उपमा छिपै॥

मंगल छंद राग सूहो विलावल—पद ८७

सुविधि सिंगारति सहचरि मोहन मदन कौ। लै दर्पन कर देति निहारति वदन कौ॥ अलकैं चुपरि फुलेल सीस चीरा रच्यौ। कलँगी रतन जराइ चारु तुर्रा सच्यौ॥ सच्यौ तुर्रा चारु पीत इजार कंचुक काछिनी। पटुका छवीले छोर केसरि तिलक मूरति मोहनी॥ कुंडल कपोलनि में दिपैं नासिका वेसरि छवि भरी। और उपमा देऊँ को भृगुनंद दुति फीकी करी॥ अलक रुरति गंडनि अस सोभा हद मनौ। भौंह मनौ भव धनुष करति छवि रद जनौं॥ चिवुक ललित अति ग्रीव सींव सोभा नखी। उर अति पीन नवीन निकाई लखि सखी॥ लख निकाई सखी बाहु विसाल बाजू जगमगे। अँगुरिनु छवीली छाप चूरा कनक के कर नग लगे॥ कंठी धुकधुकी माल मोतिनु सुभग चौकी नग खची। नाभि छवि कौ नद महा त्रिवली मनौं सीढ़ी रची॥ लंक लजत मृगराज सुगति गजराज है। मूर्छित सैंना रतिपति किंकिणि वाज है॥ को रंभा की उपमा जंघनि सम लहौं। पग चूरा नग खचित कौंन बाँनिक कहौं॥ कहौं बाँनिक कौंन नख अवली निसापति दुति हरी। नख सिख वन्यौ ब्रजराज सुत लै कुसुम माला उर धरी॥ सिर मुकट काँधे पीत पट कटि बाँसुरी सोभित भई। धरैं अद्भुत वपु मनोहर काम लखि करवट दई॥ लटकि ललित गति चलनि अति भले लगत हैं। जे निरखत यह वदन नैंन तिन ठगत हैं॥ सवतें आगे दुलहिनि दूलहु पद्मनें। रूप बाग सौ फूल्यौ जूथ सखियनु वने॥ वनें जूथ अनेक सखियनु सहित अति-

लइ आइयौ । करजनि चटकि लै वारनैं लै महरि सुहथ जिमाइयौ ॥ मन मन जु देति असीस रानी सुत वधू तन देखिकैं । वृन्दावन हितरूप अपनौ भाग्य प्रबल विशेषि कैं ॥

राग विलावल–पद ८८

जो सुख जसुमति नैंन मन सो कहत न आवै । लै गई न्यारे भवन में सुत वधू जिमावै ॥ अवलोकति दुहुँ वदन तन सुधि सी बिसरावै । आपुन अपने सुकृत कौं रानी पारु न पावै ॥ कबहूँ मानति गिरि कृपा कबहूँ दुलरावै । कबहूँ मुख में ग्रास दै हिय मोद बढ़ावै ॥ कबहूँ विधि कारीगरी देखि सीस ढुलावै । जोट रची सोभा अवधि जिय समुझि सिहावै ॥ काम धाम भूली सबै उर और न भावै । राधा हरि अनुराग में दिन रात बितावै ॥ नारद सारद व्यास सुक अज भाग्य मल्हावै । शेष सहस मुख नित नई जाकी कीरति गावै ॥ धन्य अखिल ब्रह्मंड में नंद घरनि कहावै । निगमनि दूर दुराध्य जो ताहि कौर गहावै ॥ मित्र मंडली बैठिकै छाकनि जु चुरावै । मंगल व्याह दिखाइ सुख अचिरज उपजावै ॥ सागर गहरैं प्रेम के पितु मात न्हवावै । छिन छिन ब्रज के जननि कौं सुख रूप छकावै ॥ सुधन दुलहिनी पाइकैं रस केलि मचावै । वृन्दावन हितरूप वलि आनँद वरषावै ॥

राग आसावरी–पद ८६

दूलह दुलहिनि सब ब्रज गहनौं । जसुमति धाम लगी परवी सी देखन कौ सब हीय उमहनौं ॥ इहि सोभा दृग ठगे सबनि के काहु न भावतु है घर रहनौं । राई लौंन वारि री सजनी लगहि न डीठि मानि मो कहनौं ॥ कोधौं सुकृत हमारौ पूरव सादर सदा वदन विवि चहनौं । वृन्दावन हितरूप कि चेटक श्रीहरिवंस लाड़ यह लहनौं ॥

राग आसावरी ताल आड़–पद ६०

श्रीराधा दुलहिनि भाग्य भरी है । दूलह नंदनंदन अति सुकृती मन क्रम वचन वरी है ॥ धनि वासर धनि रजनी सजनी धनि वह गनी घरी है ।

कर गहि दुहुनि तहाँ बैठाऊँ ॥ चेरी मन रुचि लै जु कहाऊँ । उर को काम समुझि करि आऊँ ॥ प्रेम पहेली वरनि सुनाऊँ । तुम जु हँसो हौं भाग मनाऊँ ॥ यह चित वृत्ति चरन उरझाऊँ । वृन्दावन हितरूप लड़ाऊँ ॥

राग देवगंधार–पद ८३

रूप को अंबुद वरष्यौ भोर । चात्रिक चतुर सखीजन पोपन उठि बैठे इक जोर ॥ अनुरागी मनु वोलत झिल्ली सुनि भूपन रव घोर । हिये नद नदिनु प्रेम जल वाढ़यौ कूल मरजादा तोर ॥ हरित भई चित वृत्ति जु वल्ली फूली फली न थोर । विकसे वारिज वदन श्रवन से मुदित मयूरी मोर ॥ कियौ सुकाल कुंज थल ये चिरजीवौ उभै किसोर । वृन्दावन हितरूप लेत सव दोऊ कर अंचल छोर ॥

राग देवगंधार–पद ८४

लाल नव दुलहिनि कौ मुख चाहि । जो सुख उपजत है मो नैंननि सो समझाऊँ काहि ॥ ह्वै गये छवि आधीन जदपि मो लोचन वेपरवाहि। धीरज रहन न देत चलत हैं उतही पल विसराहि ॥ वसन सहाने गोर स्याम तन लसत मरगजे आहि । छिन छिन छवि निकसत अंगनि तें गड़ति हिये में जाहि॥ पावन सर तट फिरैं भोर यह सोभा दृग अवगाहि।वृन्दावन हितरूप बलि गई यौं सुख देहु सदाहि ॥

मंगल छंद राग सूहो विलावल–पद ८५

मणिमय चोकी अजिर विछाई । उवटनु लै जु सहेली आई॥ इत दुलहिनि उत बैठे लाला । करति उवटनौं अँग अँग वाला ॥ वाला करति तन उवटनौं अति लोल प्रीतम नैंन हैं । निर्त्तत कमल मनो कोस खंजन परम सोभा दैंन हैं ॥ वरजति सखी द वसन आड़ौ चपल मोहन मदन हैं । छवि पारखू नागर नवल भई झलक औरैं वदन हैं ॥ सनै सनै केसनि निरवारैं । विधि विचित्रता छवि जु विचारैं ॥ मृदुता वारौं अंग लुनाई । उपमा और न खोजत पाई ॥ पाई न उपमा और खोजत निकर सोभा अवधि है । रस-

मई सवतें. परे रसिक किशोर लोचन लवधि है ॥ मुख ससि मयूपें सदन पूरित अंग दुति फैली घनीं। राधिका सम धन न लोकनि श्याम सम नाहिन धनी ॥ लाल सुभग तन उवटन कीयौ। निज जननी वहु आदर दीयौ ॥ अति दीनता सखीनु जनावै। रूप अमल विनु और न भावै ॥ भावै न रूप सवाद विन कहा नेह वरनि सुनाइये। लै चलीं पावन सर न्हवावन कौंन कौतुक गाइये ॥ जल केलि में छल वल रचत अंजुलीनु भर भर मेलहीं। नंद सुत वृषभानु तनया खेल नाना खेलहीं ॥ दुरे दुरे जल आवैं ऐसें। मीन लीन ह्वै विचरत जैसें ॥ छिपि परसत पद चतुर विहारी। झिझकति दुलहिनि अति सुकुँवारी ॥ सुकुँवारी अतिहीं दुलहिनी तन अँगौछि पट पहिराइयौ। त्यौं हीं जु दूलह कौं सहेली सुभग मंदिर लाइयौ ॥ वहु भाँति अतर फुलेल भूपन वसन चुनि विधि सौं भली। वृन्दावन हितरूप करति सिंगार ससि वदनी अली ॥

मंगल छंद राग सूहौ विलावल—पद ८६

अतरौटा कंचुकी तन सारी। पहिरें अलक सुखावति प्यारी ॥ झारि फुलेल सगवगी कीनी। कर गज दंत काकही लीनी ॥ लही कर गज दंत ककही सुभग पाटी पारिकै। सेंदूर सौं भरि माँग कवरी कुसुम गूँथि सँवारिकै ॥ धरि सीस फूल सुहागमणि वंदनी वहु रतननि खची। ओपे श्रवन ताटंक माथें आड़ मृग मद की रची ॥ नैंननि अंजन रेख बनाई। नथ वेसरि छवि वरनी न जाई ॥ मकर पत्रिका कपोल विराजे। भौंह गरूर चिवुक छवि छाजे ॥ छाजे चिवुक सुठि नासिका तिल लसत परम अनूप है। सीस थिरकनि चन्द्रिका कहि परत क्यों सो रूप है ॥ ग्रीवां सुत्रिवली रेख सींवा मनहुँ सोभा की दई। केसरि पयौधर पंक मंडित कंठ मणि ओभा नई ॥ सुंदर वाजू भुजनि गसे हैं। मनु दुतिया के चंद लसे हैं॥ कंकन मुँदरी पहुँची रूरी। वरा जँगाली कर वर चूरी ॥ चूरी जु हार हमेल चौकी धुकधुकी नग जोति है। दुलरी जु मोतिनु सतलरी जगमगति गंजा पोति है ॥ सोभा जु

लोक मुकुट मणि जोरी धनि छिन जब भाँवरी परी है ॥ धनि वृषभानु धन्य कीरति वरु सोधौ श्याम हरी है । धनि बरसानौं ग्राम जहाँ याकी लगन जु सोधि धरी है ॥ धन्य अजिर तहाँ छायौ मंडप चौरी चीति करी है । धन्य विप्र कर वेदी रचि मुख वेद रिचा उचरी है ॥ धनि सोभा की सींवाँ नागरि सकल गुननि अगरी है । उपमा कौ दूजी न सृष्टि में टकटोरी सगरी है ॥ कौंन विरंचि कौंन साँचे रचि करी अंग सुथरी है । जिहिं आगम जसुमति घर आँगन आनँद लगी झरी है ॥ हमहूँ परम सभागिनि यह छवि हीये रहत अरी है । कोधौं सुकृत घोप जन दंपति सुख संपति वितरी है ॥ रस चिंता-मणि दुलहिनि जिन लोकनि वैभव निदरी है । वृन्दावन हितरूप विक्यौ दूलह उर प्रीति खरी है ॥

राग आसावरी ताल आड़—पद ६१

कृष्ण दिन दूलहु न्याइ कहायौ । त्रिभुवन मणि सोभा की आगरि न्याहि दुलहिनी लायौ ॥ मोहन वदन विलोकि कोऊ पटतरि कौ मन नहिं आयौ । ससि भयौ सोच करेजा कारौ सो कलंक दरसायौ ॥ तन के वरन भयौ, घन चाहत पावस रितु गर्वायौ । तदपि न भयौ समान श्याम के कुढ़ि दृग नीर वहायौ ॥ नैंन विसाल देखि वारिज रितु सरद अधिक विकसायौ । दीयौ जनम कीच में तव मुख मूँदि राति पछितायौ ॥ कंबु कंठ उपमा जु होंन कौ उज्ज्वल वरन बनायौ । यह कोमल वह वज्र अंग तव विधि सागर जु चुड़ायौ ॥ अहि भुज सम अपु वपु जु बनावन घसि काँचुरी गमायौ । तुलि न भयौ क्रोध उर जरि जरि विप धरि भूमि विलायौ ॥ केहरि होड़ लंक करि वन वन गाजत वल सरसायौ । झुरि झुरि भयौ अंग भौंड़े रँग पसु कुल जनम जु पायौ ॥ कदलि जंघ की रीस करी तव तन कौ कंप जनायौ । चरण अवनि कौ गहिनौं निरुपम लखि सौभाग्य वढ़ायौ ॥ पीतांवर छवि चटक जीतिवे दामिनि सीस उचायौ । वार वार उझकति है घन तजि लजि पुनि वदन दुरायौ ॥ मुरली मधुर नाद सीखन कौ घन पुनि

पुनि घहरायो। कहा अस अमी मिठास क्रूर कर्कस ही सव्द सुनायो॥ को नख पटतरि इहि जु सृष्टि में विधिना ने उपजायो। नख सिख कमनी नँद नंदन जाने ब्रज प्रेम नचायो॥ धन्य भाग को उद्धव जिनि यह दूलहु लाड़ लड़ायो। धन्य महरि को अजिर जहाँ इन अंगनि तेल चढ़ायो॥ धन्य नँदीश्वर ग्राम जहाँ नित मंगल बढ़त सवायो। जहाँ के कौतुक हार देव मुनि घोप कुलाहल छायो॥ छवि को निकर निकर सब गुन जिन सैंना मदन लजायो। श्रीराधा सुहाग मणि जिन अस नागर रूप रिझायो॥ नित नवीन दिये नेह सेहरे नित उत्सव मन भायो। वृन्दावन हितरूप अवधि सुख मैं लघु मति कछु गायो॥

राग आसावरी ताल आड़—पद ६२

दूलह भागवली री माई। रूप जोति दुलहिनि वरी जानैं वानिक वरनी न जाई॥जगमगात घर अँगना जा छवि कहा करौं वदन वड़ाई। अवनि अलंकृत होति जहाँ तहाँ राखति चरन उठाई॥ धन्य घरी जब परी भाँवरी धनि विधि की चतुराई। जोरी बनी एक त्रिभुवन सम को उपमा नहि पाई॥ नैंननि चाह वढ़ति देखन उर लाड़ चाह जस माई। अंग सिंगार चाह कर वर मो वाढ़ति रहति सदाई॥ सवहि सुथरता दुलहिनि तन दूलह अंग अमित निकाई। वृन्दावन हितरूप दुहुँनि को हौं हिय हिलग विकाई॥

राग आसावरी ताल आड़—पद ६३

लोक में को दिन दुलहिनि ऐसी। भई न ह्वै है रूप आगरी श्याम वरी है जैसी॥ मौंन भाँवती मुरलीधर की सदा रहति नव वैसी। देखति हौं दृग सजनी जैसी हौं वरनत हौं तैसी॥ अंग अंग जाके अति कौतिक छिन छिन छवि वदलैसी। वृन्दावन हितरूप अवधि विधि रची और कहौ कैसी॥

राग टोड़ी चौताला—पद ६४

वदन एकै मो रसना या दुलहिनि छवि कहि सजनी क्यों गाऊँ। जव देखौं तव लगति औरसी कहाधौं चेटक किहिं विधि तोहि समुझाऊँ॥ न्याइ

लाल हारयौ है सर्वसु या सोभा कौ पार न पाँऊँ। बृन्दावन हितरूप रँगीली अति गरवीली तरुनि मुकटमणि वार वार दुलराँऊँ ॥

राग आसावरी झपताल–पद ६५

धनि दुलहिनि तुव भाग अति वली। धनि दिन दूलह रूप गुमानी सो वस कियौ जब दृग कोर हली ॥ धनि वासर नक्षत्र वह धनि धनि ग्रंथि जुरी धनि घरी वह भली। बृन्दावन हितरूप अवधि विधि रची यह जोरी धन्य भुवथली ॥

राग आसावरी झपताल–पद ६६

दिन दूलह दिन दुलहिनि दिन दिन वेली नेह वढ़ावनैं। दिन दिन नंद जसोदा कौ उर राधा श्याम सिरावनैं ॥ दिन दिन पावन सर तट कुंजनि कौतिक सखिनु दिखावनैं। दिन दिन जननी जनक प्रेम सौं पलत घोप मन भावनैं ॥ दिन दिन लाड़ चाव नाना विधि दिन दिन रचत वधावनैं। दिन दिन क्रीडंत हैं सुख सागर सब मन सुख सरसावनैं ॥ दिन दिन के अति चरित अलौकिक कहाँ लगि वरनि सुनावनैं। दिन दिन रस भोगता लोक-मणि सुर अविरज उपजावनैं ॥ दिन छवि लाभ लहत हैं लोचन अनमिलि तदपि जनावनैं। जो आनंद निगम हूँ दुर्ल्लभ सो ग्रेहिनु दरसावनैं॥ दिन छिन मास कौंन मित वरनौं छकि अनुराग वितावनैं। बृन्दावन हितरूप नंद सुत भानु लली कुसरावनैं ॥

राग सारंग–पद ६७

चढ़ि महल कुँवरि ठाढ़ी भई। कंचन की सी वेलि सखी री किधौं मोद सोभा जई ॥ पिता भवन की धुजा देखि कै प्रेम दसा पलटी नई। विहवल जानि चक्रत भई ललिता रवकि अतिलड़ी उर लई ॥ वचननि पोप तोप दै सजनी जल पिवाइ वीरी दई। सनैं सनैं लै आई मंदिर वुधिवल तव औरै ठई ॥ श्रवन लागि ब्रजपति रानी सौं कह्यौ वचन करुना मई। राधा आये भये वहुत दिन माइ मिलन छाती दई ॥ अब विचार करि पीहर पठवौ वहुत

सीर सुख की वई । आवत जात रंग रस रहि है बृन्दावन हित बलि गई ॥

राग सारंग–पद ९८

सुधि जननी की अतिलड़ि करी । बड़े बड़े नैंन नीर भरि आये थकित चित्र मनु पूतरी ॥ समझावतिं ललितादिक सजनी अधिक प्रेम सौं अरवरी । महरि करति मनुहार चिबुक गहि पुनि सादर अंकनि धरी ॥ मनु सोभा के पुंज दुरति है रूप जोति संकित खरी । किधौं कनक वेली खगि वल्ली प्रेम पवन बस अनुसरी ॥ वदन प्रछाल रोहिनी रानी मधुर वचन मुख उच्चरी । करिहैं विदा वेगि नव दुलहिनि अब सुधिवावैं सुभ घरी ॥ आवै तुम वीरन श्रीदामा ये बातें सुनि सुख भरी । बृन्दावन हितरूप बलि गई वचन अमी से मुख झगी ॥

राग सारंग–पद ९९

रानी यह विनती सुनि लीजे । जब आवै मो वीर ता घरी पठै तात घर दीजै ॥ मैया तें मुहि अधिक सुख दियौ कौंन बड़ाई कीजै। कृपा रावरी सौं मेरौ उर छिन छिन प्रेम जु भीजै ॥ मात पिता वीरन देखन कौं हिय हुलसत कहा कीजै । बृन्दावन हितरूप घोषपति हूँ सौं विनय करीजै ॥

राग सारंग–पद १००

वलि वलि दुलहिनि मुख सुनि बतियाँ । तृपित न होत श्रवन री सजनी अमी श्रवति दिन रतियाँ ॥ मंगल रूपनि मंगल करनी सुख वरपत बहु भतियाँ । जाकी अंग माधुरी निरखत सीतल ह्वै गई छतियाँ ॥ याकी सील गुननि की कहाँ लगि वरनि सुनाऊँ पतियाँ । बृन्दावन हितरूप निपुन मनसिज मद ढाहति घतियाँ ॥

राग सारंग ताल आड़–पद १०१

भौंन भवन तें वस्तु अपूरब कीरति नित जु पठावै हौ । नित सुख समाचार अतिलड़ि के भाग्य भरी जु मँगावै हौ ॥ जसुमति की करनी जु प्रसंसा करि करि मान वढावै हौ । मो कुल मंडनि सुखित राखिहो ऐसें

सुविधि चितावै हो ॥ व्रजपति रानी करुना आलय किहिं विधि जसकौ गावै हो । पर हित कुसल श्याम की जनिता जग अचिरज उपजावै हो ॥ पालागन कहियौ री ढाँढिनि सुकृतिनु ज्यौं सचुपावै हो । वृन्दावन हितरूप लोक मणि जोरी नित दुलरावै हो ॥

राग सारंग–पद १०२

सखी कह्यौ सँदेसौ जाइकै । तुम मिलिवे कौं कुँवरि अरवरति लीजे वेगि वुलाइकै ॥ काल्हि प्रेम कौ भयौ तामरौ ललिता लइ सम्हराइकै। आज पठायौ मोहि सँदेसौ कहि यह कीरति माइ कै ॥ पुर परिवार सुनी रावल पति सवै उठेअकुलाइ कै। वृन्दावन हितरूप कहा कहौं उमग्यौ प्रेम सुभाइकै॥

राग व्रज वासिनीनु की टेर–पद १०३

कीरति करुना भरि कह्यौ॥सुत सुनियौ हो । मो अति लड़ श्रीदाम॥ अहो सुत सुनियौ हो॥ राधा तौ गवनी सासुरे ॥सुत०॥ तवतें रुचत न धाम ॥ अहो० ॥ लै आवै अव कुँवरि कौं ॥ सुत० ॥ व्याकुल मेरे प्राँन ॥ अहो० ॥ राधा तौ आई सौंवपुर ॥ सुत० ॥ कव जु सुनौंगी कौंन ॥ अहो० ॥ मो लोचन की पूतरी ॥ सुत० ॥ कियौ नँदीस्वर गौन॥ अहो०॥ कहा देखौं गौरंग विन ॥ सुत० ॥ विष सम लागत भौन ॥ अहो० ॥ पढ़तिं न पिंजरनि सारिका ॥ सुत० ॥ करति न हरपि अहार ॥ अहो० ॥ नगर न मंगल वृद्धि जुत ॥ सुत० ॥ विरह विकल परिवार ॥ अहो० ॥ विलंव न करि कुलमणि कुँवर ॥ सुत०॥ यौं वोले व्रपभान ॥ अहो सुत० ॥ विना सहोदर वहिनि कौं ॥ सुत० ॥ को दैहै अति मान ॥ अहो० ॥ कुँवरि प्रेम गरुवे पली ॥ सुत० ॥ हिय अकुलाति निराट ॥ अहो० ॥ छिन छिन हेरति होहिगी ॥ सुत० ॥ वरसानै दिस वाट ॥ अहो० ॥ चढ़िकै नंद निकेत पै ॥ सुत० ॥ देखति इहि पुर ओर ॥ अहो० ॥ करि व्रजपति सौं वीनती ॥ सुत० ॥ काल्हि लाइहौ भोर ॥ अहो० ॥ मेरी वहु परनाम कहि॥ सुत०॥ घोप नृपति सौं जाइ ॥ अहो० ॥ लावौ रवि कुल मंडिनी ॥ सुत० ॥ डोला

माहिं चढ़ाइ ॥ अहो० ॥ गई कुँवरि जा द्यौस तें ॥ सुत० ॥ फीकौ लागत ग्रेह ॥ अहो० ॥ अजिर वैठि को खेलही ॥ सुत० ॥ को वरषै सुख मेह ॥ अहो० ॥ कीरति जू पुनि पुनि कह्यौ ॥ सुत० ॥ मेरे राज कुमार ॥अहो०॥ जसुमति जू सौं कीजियौ ॥ सुत० ॥ पालागन वहुवार ॥ अहो० ॥ अति हित मान पठाइयौ ॥ सुत० ॥ मो कुल वेली रूप ॥ अहो० ॥ वहुत भलौ तुम मानिहौं ॥ सुत० ॥ हौं पुनि रावल भूप ॥ अहो० ॥ सुख वर्द्धन कव देखि हौं ॥ सुत० ॥ इन नैंननि इहिं पौरि ॥ अहो० ॥ हौं राधा कहि टेरि हौं ॥ सुत० ॥ सुनत आइहै दौरि ॥ अहो० ॥ वेटा गहरु न कीजिये ॥सुत०॥ लेहु कोविद जन संग ॥ अहो० ॥ तो मिलिवे की वहिनि मन ॥ सुत० ॥ नित नित रहति उमंग ॥ अहो० ॥ कोटिनु तारे नभ उदित ॥ सुत० ॥ ज्यौं ससि विनु न प्रकास ॥ अहो० ॥ सुवस वसतु यौं मो जु पुर ॥ सुत० ॥ विन अतिलड़ि जु उदास ॥ अहो० ॥ वासर राधा सँग गयौ ॥ सुत० ॥ मावस निसि मो लार ॥ अहो० ॥ नैंननि भरि कहा देखिये ॥ सुत० ॥ वाढ्यौ अति अँधियार ॥ अहो० ॥ मो दृग प्यारी पूतरी ॥ सुत० ॥ मौंननि थाती तात ॥ अहो० ॥ सो जसुमति मंदिर गई ॥ सुत० ॥ हम जु तरफत गात ॥ अहो० ॥ चंपा ताई कुँवरि की ॥ सुत० ॥ कहति भई वस प्रेम ॥ अहो० ॥ चित पंछी उहि दिसु उड़तु ॥ सुत० ॥ जित मूरति मृदु हेम ॥ अहो० ॥ अनुरागिनि काकी सवैं ॥ सुत० ॥ आइ वलैया लेतिं ॥ अहो०॥ लावौ वेटी राधिका ॥ सुत० ॥ हम असीस तुहि देतिं ॥ अहो० ॥ पुर-वासिनि आईं जु मिलि ॥ सुत० ॥ होति अधिक आधीन ॥ अहो० ॥ कुँवरि विना सव तरफरैं ॥ सुत० ॥ जैसें जल विनु मीन ॥ अहो० ॥ आये पालक पौरि के ॥ सुत० ॥ गहमह नहिं रनिवास ॥ अहो० ॥ कुल मंडनि वृषभान की ॥ सुत० ॥ विनु आये न हुलास ॥ अहो० ॥ कुल ढाँढिनि वोली तवै ॥ सुत० ॥ कहौं कीरति उर रतन ॥ अहो० ॥ सव मन मोद वढ़ावनी ॥ सुत० ॥ करि लावन कौ जतन ॥ अहो० ॥ इहिं पुर मंगल वर्द्धनी

॥ सुत० ॥ सुकृत पुंज कुल गोप ॥ अहो० ॥ तात भवन कौ आभरन ॥ सुत० ॥ गलिनु वढ़ावनि ओप ॥ अहो० ॥ कीरति प्रेम अधीर ह्वै ॥ सुत० ॥ भरचौ श्रीदामा अंक ॥ अहो० ॥ पाक वसन जन संग दै ॥ सुत० ॥ पठयौ कुल जु मयंक ॥ अहो० ॥ वहुत मान दै लाइयौ ॥सुत०॥ अति प्रिय राधा नाम ॥ अहो० ॥ वृन्दावन हितरूप वलि ॥ सुत० ॥ विरमौं जिनि उहि गाम ॥ अहो ॥

राग व्रजवासिनोनु की ढेर–पद १०४

श्रीदामा कौ आवतै ॥ सुनि सजनी हो ॥ सुधि पाई सुकुँवारि ॥ अहो सुनि सजनी हो ॥ राधा मिलन उमाह मन ॥ सुनि० ॥ विहँसी प्रान अधार ॥ अहो० ॥ रोंम रोंम आनंद भयो ॥ सुनि० ॥ अव भेंटोंगी वीर ॥ अहो० ॥ कव देखोंगी दृष्टि भरि ॥ सुनि० ॥ भई प्रेम उर भीर ॥ अहो० ॥ झमकि अटा नागरि चढ़ी ॥ सुनि० ॥ सजल भये अति नैंन ॥ अहो० ॥ ललिता सुधि लै वेगिदै ॥ सुनि० ॥ गद गद निसरत वैंन ॥ अहो० ॥ मगन भई मन निरखिकैं ॥ सुनि० ॥ वीरन मारग माहिं ॥ अहो० ॥ भुज उचाइ पुनि पुनि कहति ॥ सुनि० ॥ कवहिं मिलौं भरि वाँहिं ॥ अहो० ॥ पुर पौरी आयौ कुँवर ॥ सुनि० ॥ गिरिधर भेंटे धाइ ॥ अहो० ॥ वहुरि गये व्रज-राज पै ॥ सुनि० ॥ लीनें अंक लगाइ ॥ अहो० ॥ गोप नृपति वूझत कुसल ॥ सुनि० ॥ कहतु है राजकुमार ॥ अहो० ॥ विनती रावल भूप की ॥ सुनि० ॥ सुनत हैं वारंवार ॥ अहो० ॥ वहुरि चले भीतर भवन ॥ सुनि० ॥ व्रजपति आज्ञा पाइ ॥ अहो० ॥ अनुजा मिलन जु चटपटी ॥ सुनि० ॥ चरन धरत हैं धाइ ॥ अहो० ॥ मणि मंदिर वैठी कुँवरि ॥ सुनि० ॥ मिलन काज अकुलाइ ॥ अहो० ॥ मनहुँ पवन वस छवि लता ॥ सुनि० ॥ यौं तन झोंका खाइ ॥ अहो० ॥ रवकि मिल्यौ वीरनु वहिनि ॥ सुनि० ॥ इत उत प्रेम अधीर ॥ अहो० ॥ सागर उमग्यौ क्यौं रुकै ॥ सुनि० ॥ वाढ़ी लहरि गँभीर ॥ अहो० ॥ निरवारति वनिता सुमति ॥ सुनि० ॥ गाढ़ी भेंटनि प्रीति ॥

अहो०॥ भानवंश के विधु उभै ॥सुनि०॥ प्रवल प्रेम लये जीति ॥अहो०॥ सुरझावति वहु जतन करि ॥ सुनि० ॥ एक प्रेम भयौ राज ॥ अहो० ॥ मनु मूरति करुना दया ॥ सुनि० ॥ सुख भिंजयौ जु समाज ॥ अहो० ॥ कुशल बूझि परिवार पुर ॥ सुनि० ॥ पुनि जननी की प्रीति ॥ अहो० ॥ राजकुँवर वरनत सुविधि ॥ सुनि० ॥ नेह घनेरी रीति ॥ अहो० ॥ तात मात तन मन दसा ॥ सुनि० ॥ श्रीदामा मुख कढ़नि ॥ अहो० ॥ वृन्दावन हितरूप वलि॥सुनि सजनी हो॥भई प्रेम सुनि वढ़नि॥अहो सुनि सजनी हो॥

राग व्रजवासिनिनु की टेर—पद १०५

तेरे खेलन ठौर जे॥सुनि राधा हो॥देखि विवस होइ माइ॥कुँवरि सुनि राधा हो ॥ लघु भोजन लघु वोलिवौ ॥ सुनि० ॥ करति है समयौ पाइ ॥ कुँवरि० ॥ रसना तेरे नाम रट ॥ सुनि० ॥ नैंन वहत रहैं वारि ॥ कुँवरि०॥ धाम काम भूली सबै ॥ सुनि० ॥ समुझावत पुर नारि ॥ कुँवरि० ॥ गुड़ियनि कंठ लगावहीं ॥ सुनि० ॥ लाड़ति तो समतूल ॥ कुँवरि० ॥ वासर वितवति भाम मिलि ॥ सुनि० ॥ रैंन नींद प्रतिकूल ॥ कुँवरि० ॥ सुक सारौंनि के पींजरा ॥ सुनि० ॥ लेति है निकट वुलाइ ॥ कुँवरि० ॥ तेरे नाम पढ़ावही ॥ सुनि० ॥ प्रेम मगन ह्वै जाइ॥ कुँवरि० ॥ कहाँ कहाँ मेरी अतिलड़ी ॥ सुनि० ॥ सोवत यौं वराइ ॥ कुँवरि० ॥ कवहूँ मोकों अंक लै ॥ सुनि० ॥ कहै सुत वहिनि वुलाइ ॥ कुँवरि० ॥ वावा जव आवैं भवन ॥ सुनि० ॥ थार धरत परसाइ ॥ कुँवरि० ॥ मेरौ तेरौ नाम लैं ॥ सुनि० ॥ टेरत सहज सुभाइ ॥ कुँवरि ॥ समुझि वहुरि चुप ह्वै रहत ॥ सुनि० ॥ सकहिं न कौर उठाइ ॥ कुँवरि० ॥ कवहुँ दृग ह्वै सजल से ॥ सुनि० ॥ कवहुँ देहि अहुराइ ॥ कुँवरि० ॥ मोहि जव देखें तव कहैं ॥ सुनि० ॥ तोहि लावन का वात ॥ कुँवरि ॥ कृपा धरैं मूरति मनौं ॥ सुनि० ॥ रावल पति मम तात ॥ कुँवरि० ॥ पुर वासिनु कौ प्रेम अस ॥ सुनि० ॥ वरनत आवत नाहिं ॥ कुँवरि० ॥ ग्रीपम रितु ज्यौं जल विना ॥ सुनि० ॥ तरु

वेली कुम्हिलाँहिं ॥ कुँवरि० ॥ वार पार सरवर तजी ॥ सुनि० ॥ उपवन फल करि हीन ॥ कुँवरि०॥ मृग छौना तुव लाड़िले ॥ सुनि० ॥ ते जु फिरत अति दीन ॥ कुँवरि० ॥ कोकिल वन वोलै नहीं ॥ सुनि०॥ तो गावन करि रीस ॥ कुँवरि० ॥ गिरि केकी कुहकैं नहीं ॥ सुनि०॥ खग वृति लइहे मुनीस ॥कुँवरि०॥ गान न अधिक उमंगसौं॥ सुनि०॥ वरसानें के वास ॥कुँवरि०॥ तो साथिनि आगम चहतिं ॥ सुनि०॥ सव नित रहतिं उदास ॥ कुँवरि० ॥ तूँ आई जव सासुरें ॥ सुनि० ॥ व्हाँ भई सुख हटतार ॥ कुँवरि० ॥ जा दिन तू पगु धारिहे ॥ सुनि० ॥ होय पुर जै जै कार ॥ कुँवरि० ॥ कहि सुनि तन वेपथ भये ॥ सुनि० ॥ काहु न सुरति सम्हार ॥ कुँवरि०॥ महरि भोर पठवनि कह्यौ ॥ सुनि० ॥ प्रमुदित सुनि सुकुँवारि ॥ कुँवरि० ॥ सजियत डोला पालकी ॥ सुनि० ॥ पाक वसन आभरन ॥ कुँवरि० ॥ फूली ललितादिक फिरतिं ॥ सुनि० ॥ दिन भयौ, मंगल करन ॥ कुँवरि० ॥ कालिह विदा करनें कह्यौ ॥ सुनि० ॥ व्रजपति विस्वै वीस ॥ कुँवरि० ॥ श्रीदामा उठि तहाँ गयौ ॥ सुनि० ॥ जहाँ घोष कौ ईस ॥ कुँवरि० ॥ सोधौ सुभ वासर जु तिथि ॥ सुनि० ॥ चल्यौ महरि के पास ॥ कुँवरि० ॥ सखिनु सहित गइ सासुपै ॥ सुनि० ॥ धरि मनु वड़ौ हुलास ॥ कुँवरि० ॥ रजनी गत वासर भयौ ॥ सुनि० ॥ सजन चलन के साज ॥ कुँवरि० ॥ व्रजपति पै अज्ञा लई ॥ सुनि० ॥ तो वीरन सुत राज ॥ कुँवरि० ॥ सासु सुविधि सनमानियो ॥ सुनि०॥ भेंटी सव पुर भाम ॥ कुवरि०॥ डोला आयौ पौरिपै ॥ सुनि०॥ मिले स्याम श्रीदाम ॥ कुँवरि० ॥ गवन भानुपुर सुनि समुझि ॥ सुनि० ॥ महरि भरति दृग नीरं ॥ कुँवरि० ॥ एक जाँहि इक आवहीं ॥ सुनि० ॥ नंद भवन भइ भीर ॥ कुँवरि० ॥ देति असीसै रोहिनी ॥ सुनि० ॥ पुनि विधि तन करि गोद ॥ कुँवरि० ॥ जसुमति वैठी अंक लै ॥ सुनि० ॥ हिय अति मानत मोद ॥ कुँवरि० ॥ चलौ चलो सव कहति हैं ॥ सुनि० ॥ वीरन चढ़्यौ है तुरंग ॥ कुँवरि० ॥ वृन्दवन हितरूप वलि ॥ सुनि० ॥ राधा हो

गवनौं सोदर संग ॥ कुँवरि सुनि राधा हो ॥

राग विलावल ताल आड़–पद १०६

दुलहिनि नख सिख सोभा पाई । डारि फुलेल सहेली कुसुमनि वैंनी गूँथि वनाई ॥ सीस फूल वंदिनी जटित मणि मोतिनु माँग भराई । नथ वेसरि ताटंक जगमगै छवि नहिं वरनी जाई ॥ उच्च लिलाट तिलक मृग मद कौ कहा कहौं सुंदरताई । मकर पत्रिका सुभग कपोलनि चिबुक स्याम विंदु माई ॥ त्रिवली ग्रीव लसति सींवा छवि वाजू नगनि जराई । कंकन वलय वनी मणि मुँदरी नख ससि अवलि सुहाई॥ हार हमेल सतलरा दुलरी चौकी उर ढरकाई । पुंज पोत धुकधुकी जु मोतिनु माला जोति सवाई॥ रतन खचित किंकिणी सुभग डोरी मखतूल भराई । खीन लंक दीनौं मनु थंभन लखि मृग राज लजाई ॥ पाइ गूजरी छवि सु ऊजरी तरवनि लसति ललाई। अनवट विछुवा नूपुर जावक चित्र विचित्र महाई॥ वसन सहानैं किये घूँघटी लोचन सजल वँक्याई । लोकनि सोभा जीति मनौं चन्द्रिका धुजा फहराई ॥ इत उत की वानिक लखि सजनी प्रेम सिंधु में न्हाई। वृन्दावन हितरूप वली दूलहु वस रहत सदाई ॥

राग पंचम–पद १०७

परम अभिराम करुना महा धाम जो नंद की घरनि आनंद अति ही भरी ॥ निकट वैठारि दूलह सुविधि दुलहिनी पाक मेवा दही थार भरिकैं धरी । ग्रास मुख देति है हियौ भरि लेति है वहुरि धीरज धरति चलन लखि सुभ-घरी ॥ लाड़ अरु चाव के गहर में मन परयौ वेगि यौं देखिहौं विनैं विधि सौं करी ॥ रूप कौ वाग सो फूल रह्यौ अजिर में सखिनु की भीर अरु भीर वनितनि खरी । राधिका लाल सोभा उदधि है सखी मीन कै महरि की दृष्टि तामैं तरी ॥ करति मनुहारि पुचकारि कै कौर दै सुत वधू निरखि मन डीठ कै डर डरी । वृन्दावन हितरूप सुविधि अचवाइ जल वारनैं लेति पुनि आसिका उच्चरी ॥

राग भैरों ताल चर्चरी—पद १०८

दुलहिनी लाड़ नंद घरनि विस्तरति है। करति मंगल जु विधि परम उत्साह सों आसिका देति पुनि रवकि भुज भरति है॥ कबहूँ लखि वदन तन चक्कत सी ह्वै रहति कवहूँ पुचकारि कैं चिबुक कर धरति है। कवहूँ सुधि करति अब जाइगी मातु घर महा करुना हिये उमिलि अरवरति है॥ कबहूँ ह्वै चेत अति हेत को रति कहति वदन तें मनहुँ आनंद कन झरति है॥ दया को भौन मुख कौन परसंसिये सुता सुत सील तें जानि सब परति है। कीजियो वीनती वेगि दैइ पठै कै भानु की अतिलड़ी मो जु मन हरति है। कलप सम वीति है रात दिन मोहि अब ललित गौरंग दिख पंथ अनुसरति है॥ महरि अरु रोहिनी बंदि पद सवनि मिलि कुँवरि डोला चढ़ी मोद उर ढरति है। वृन्दावन हितरूप द्विज निगम उच्चरें गान मंगल महा जुवति जन करति हैं॥

राग भैरों ताल चर्चरी—पद १०६

तात घर कौं चली कुँवरि सचु पाइकैं। घोपपति पौरि ठाढ़े विदा करत हैं वदन तें अमी सम वचन वरपाइ कैं॥ कृपा को मेरु कै मेरु दुति कनक को कृष्ण को जनक निधि नेह समुदाइ कैं। निकर मंगल वसें द्वार जाके सदा कहत श्रीदामा सौं यौं जु समुझाइ कैं॥ विविधि परनाम वृपभानु सौं कहौगे रावरो जस रह्यो लोक में छाइ कैं। भाट बंदी विरद पढ़त रवि बंश को सुनत श्रीदाम ताकौ सुचित लाइ कैं॥ पाक बहु भार अरु वसन भूपन विविधि लाड़ दई कोथरी महरि पठावाइ कैं। सखनि की मंडली कृष्ण वलिराम मधि संग श्रीदाम आगे चले धाइ कैं॥ नेह उरझनि महा कहौं वैंननि कहा दुहूँ दिस बढ़नि को सकै सुरझाइकैं। पहेरी प्रेम की होहि पूरन जु क्यौं पछमनै सकत नहि चरन अहुटाइ कैं॥ परम अनुराग वपु गोप अरु गोपिका चलत गौरंग हिय उठे अकुलाइ कैं। दृष्टि डोला जु तन उठि लगे संग मन एक रसना कहा प्रेम कहौं गाइकैं॥ जसोमति रोहिनी महल

ऊँचे चढ़ीं तहाँ तें देति वह भीर दरसाइ कैं। भान की अतिलड़ी दूरि गई है सखी कहति तन प्रेम कौं तामरौ खाइ कैं ॥ विरमि श्रीदामा फिरे जु सब नगर दिस अपु चले अगमने नेह निधि न्हाइ कैं। वृन्दावन हितरूप रम्य संकेत वन देखिकैं हिये आनंद गयौ छाइकैं ॥

राग धनाश्री ताल चर्चरी—पद ११०

सगुन सुभ होत हैं आज वृषभान पुर। भान के सुकृत को पुंज सनमुख भयौ सबनि के हिये तें भाजि गयौ विरह जुर ॥ मात के मिलन की अटपटी चटपटी निपट अकुलाति मुख आवति न बात फुर। चली आतुर अधिक प्रेम के बस भई लोक तरुनीनु की मुकटमणि अति चतुर ॥ दृष्टि डोला परयौ धाइ आये सबै बजे आनक भयौ गान गहरे जु सुर। कोऊ निर्त्तति चली लगी आगे भली कोऊ गई खबरि लै महल कीरति जु धुर ॥ भानु की नंदिनी निकट आई सखी बात भइ नगर सबही जु घर घर प्रचुर। वृन्दावन हितरूप साजि करि आरतौ भवन कीरति लई रवकि कैं भरी उर॥

राग बिलावल—पद १११

के तौ सुख जसुमति दियौ कहि अतिलड़ि मेरी। किहिं विधि रानी रोहिनी सुधि लीनी तेरी ॥ अति करुना कौ धाम है मेरी सासु बड़ेरी। महरि लाड़ बरनौं कहा बरषी सुख ढेरी ॥ पुर बनितनि की प्रीति अति मैं विनुमित हेरी। कृपा जलद गोकुल धनी नित नित बरसे री ॥ मुहि पोष्यौ घट मौंन ज्यौं करि दया घनेरी। जब तब बैठे अंक लै रानी कर सिर फेरी ॥ बदन बिलोके जब महरि तब प्रेम जु घेरी। ये बातें जननी सुनति सुख रासि सकेरी॥ विधि तन गोद उचाइकैं कीरति कह्यौ टेरी। वृन्दावन हितरूप मो वांछित कियौ येरी ॥

राग बिलावल—पद ११२

कीरति सुहथ जिमावही मन मुदित महाई। दधि ओदन कौ ग्रास दै पुचिकारति जाई॥ इत अतिलड़ि श्रीराधिका विधि एक बनाई। उत बैठ्यौ

भोजन करै श्रीदामा भाई ॥ समाचार ब्रजराज के सब कहत सुनाई। समुझि समुझि जननी जनक मुख करत बड़ाई ॥ सीतल जल अचवाइ कै रानी लेति बलाई । बृन्दावन हितरूप निधि मैया मति न्हाई ॥

मंगल छंद राग सूहो विलावल–पद ११३

जै जै श्रीवृषभानु नृपति कुल नंदिनी । तात भवन में राजति सब जग वंदिनी ॥ नंद भवन आनंद वरपि पुनि आइयौ । प्रान सुधन नर नारिनु सादर पाइयौ ॥ पाइयौ सादर प्रान कीरति उर रतन दुर्ल्लभ महा । परम मंगल आजु सब मन कहौं इक रसना कहा॥ सकल ब्रज सुख करि जु ओप्यौ कृष्ण परमानंदिनी। जै जै श्रीवृषभानु नृपति कुल नंदिनी ॥ जै जै श्री कीरति उर मोद वढ़ावनी । पुर जन मंगल वर्द्धनि सखी मन भावनी ॥ चंपतनी अस वनी न उपमा और है । चरन और तर्के तरुनि होति मति बौर है ॥ होति है मति बौर ऐसी रची विधिना एक है । महा अचिरज एक वपु उपमा न वनत अनेक है ॥ छवि कौन वपुरा वरनि है छिन छिन नई दरसावनी । जै जै श्री कीरति उर मोद वढ़ावनी ॥ जै जै श्रीगौरंग विरद रासेश्वरी । जाके पदतल परसि प्रगट भइ चातुरी ॥ वचन अमी आभास नहीं सम पाव हीं । हँसनि दामिनी निकरनि निदरि लजावहीं ॥ लजावहीं दुति दामिनी आनंद रस वपु उदित है । सुकृत कौ कुल गोप उमड़्यौ सृष्टि जिहिं लखि मुदित है॥ जा आगे सोभा जु प्रभुता लोक की सबही दुरी। जै जै श्री गौरंग विरद रासेश्वरी ॥ जै जै श्रीव्रजराज सदन सुख वरपनी । गोप सुता मिलि विहरति चित आकर्पनी ॥ गिरि गहवर वन उपवन सर कमनी जहाँ । लौकिक और अलौकिक खेल रचति तहाँ ॥ रचति खेल अनेक पिय सिंगार पलटि जु आवहीं । जानि होत अजान ललिता परम रस जु वढ़ावहीं ॥ बृन्दावन हितरूप लीला करत कौतिक हरपनी । जै जै श्रीव्रजराज सदन सुख वरपनी ॥

मंगल छंद राग सूहौ विलावल—पद ११४

एक मिली इक मिलति एक आतुर चली। श्रीवृषभानु निकेत सु आवत विधि भली ॥ सवके लागति अंक सवनि देइ मान है। मंगल सेवति पौरि आनि वृषभान है॥ वृषभान पौरी निकर मंगल जहाँ हरि अहलादिनी। पूरन निसापति मनहुँ सेवति कला सखि मृदु वादिनी॥ आगे लिये जननी जु वैठी लाड़ति प्रान सुधन लली। एक मिली इक मिलति एक आतुर चली॥ रावलपति के धाम जितौ सुख को कहै। थकित सेष विधि शंभु मौंन सारद गहै॥ नारद शुक व्यासादि कहत कछु रुख लिये। समुझि डुलावत सीस ढ़ाँपि राखत हिये॥ ढ़ाँपि राखत हिये को वपुरां यथामति जानिहै। नंद अरु वृषभानु घर भयौ परम रस की खाँनि है। रासेश्वरी की कृपा रसिक सुजान लघुमति कछु लहैं॥ रावलपति के धाम जितौ सुख को कहैं॥ कवहूँ इत कवहूँ उत राजत कुलमनी। उत सुख वर्षत नीरद इत कंचन तनी॥ भरत मनोरथ सरवर व्रजजन प्रीति सौं। तात मात रहैं मुदित सजन रस रीति सौं॥ रसरीति सौं नित नित वधावौ लाड़ जहाँ नित नित नयौ। ब्रह्म पद श्रोता जु वक्ता निरखि मति संभ्रम भयौ॥ श्रुतिहूं जु दूरी दुराध्य जो रस सो जु जोरी वरपनी। कवहूँ इत कवहूँ उत राजति कुलमनी॥ नंद ग्रह दूलह दुलहिनि नित नित लसैं। पहुनाई वृषभानु भवन रुचि सौं वसैं॥ वनि निकसत गोपालक अति सोभा धरैं। कवहूँ जल कवहूँ थल वहु क्रीड़ा करैं॥ क्रीड़ा करैं व्रज भूमि पुनि पुनि वसत वृन्दारन्य हैं। यह सुधन श्रीहरिवंस वाढ्यौ जाँचक रसिक अनन्य हैं॥ रस रूप वेहद जुगल रंग विहार सुख सागर धसैं। नंदग्रह दूलह दुलहिनि नित नित लसैं॥ सखिनि संग नागरि निकसति जिंहिं ओर है। अलि वपु धरि आवतु तहाँ नंदकिसोर है॥ प्यारौ वट संकेत खोरि गह्वर जहाँ। प्रीतम सहित रचति लीला रसमय तहाँ॥ तहाँ लीला रास कुंज विलास ठाँनति मान है। वृन्दावन हितरूप कवहूँ लाल जाँचत दान है॥ गरुवौ महाँ रस परम दुर्ल्लभ कौंन उपमा जो रहै। सखिनि

संग नागरि निकसति जिहिं ओर है ॥

कवित्त–११५

ब्याह दिन होंनौं गौंनौं नित ही ललक रहै, नित ही दुहूँ तन देख्यौ वै संधि छूटी है। नित ही मिलन लाला वाला कौ उमाह रहै, नित ही वढ़ति हिये काम देव बूटी है ॥ नित ही जु दोउनि कौ मन लैन दोऊ चाहैं, नित ही अनौंखी यह रस रासि लूटी है। बृन्दवन हितरूप नित ही विहार भावै, ऐसें जाँनि परै लोक वेद मेंड टूटी है ॥

दोहा–११६

मोहन न्यौति बुलाइयत भानु भवन त्यौहार। अखिल लोक ईश्वर्ज सुख भूतल इहिं सुख सार ॥ कीरति जू के हेत सौं परम डहडहे होत। जैसें रवि के आगमन प्रफुलित कमल सुगोत ॥ कीरति जसुमति सुकृत के लगे उभै फल एह। सुखमय रसमय रूपमय विनमित भरे सनेह ॥ शुक नारद शंभु जु विधि शेप शारदा आदि। इहि सुख सिंधुन मिलत ही वरन्यौ सबनि अनादि ॥ ब्याह वेली उलही ललित तात मातु अहलाद। गौंनौंचार जु फल लग्यौ वीधे जुगल सवाद ॥ अपने अपने तात घर मिलन काज अकुलाहिं। तातें करत अनेक मिस दुरि वन में मिलि जाहिं ॥ समझि परै क्यौं माहिली दंपति कला अनंत। नित ब्रज नित बृन्दाविपिन क्रीड़त राधा कंत ॥ श्रीहरिवंश प्रताप तें वरन्यौ गौंनौंचार। लोक रीति पुनि अलौकिक श्यामा श्याम विहार ॥ सुमति दई हितरूप गुरु कथी रसिक रसरीति। बृन्दावन हित समुझि हैं भावक जन यह प्रीति ॥

॥ इति श्री लाड़िली लाल जू कौ गौनाचार समाप्तम् ॥

श्रीलालजू कौ महिमानी कौं वरसाने जाइवौ

श्री ब्रज विनोद

दोहा—श्रीहरिवंश कृपाल कौ जस उदार विस्तार।
श्रीराधावल्लभ केलि धन संच्यौ सुमति भंडार ॥ १ ॥
तिन के पद परताप तें वरनौं घोष विनोद।
रसिक सुदृष्टि करौ सवै ज्यौं वाढ़ै मनमोद ॥ २ ॥
जसुमति सुत कीरति सुता एक प्रेम रस लीन।
ब्रज मंडल सरवर जितौ संतत दोऊ मीन ॥ ३ ॥
श्रीहितरूप प्रणम्य कैं कीनौं बुद्धि विचार।
चरित भानुजा नंदसुत वरनौं वारंवार ॥ ४ ॥

चौपाई

उत हरि जनक नँदीश्वर रानौं। इत जग विदित भानु वरसानौं॥
हरि पुर हुतें वैभव भारी। वरनत सुमति सारदा हारी ॥५॥
दोऊ सजन सनेह रहे भरि। जिन घर प्रगट भये राधा हरि ॥
तिन घर दासि देव हु जाँचैं। शिव सनकादिक द्वारे नाँचैं ॥६॥
अष्ट सिद्धि नोऊँ निधि पौरी। चाइनु डोलति दौरी दौरी॥
गोप सभा में नंद विराजैं। उडुगन जुत मानौं ससि राजैं ॥७॥
कंचन नग मय जटित अथाई। पारिजात द्रुम की परछाई॥
ऊँचे आसन ब्रजपति सोहैं। गुन अगाध सुरपति मन मोहैं ॥८॥
सुत के लाड़ चाड़ भरे हीयें। करत सिंगार आप मन दीयें॥
नख सिख भूपन वसन सिंगारे। सिर पर मोर चन्द्रिका धारे ॥९॥
तव कछु सोभा वढ़ी न थोरी। निरखत नंद वदन विधु ओरी॥
सवके दृग भूपन गिरिधारी। अँग अँग छवि की श्रवत पनारी ॥१०॥

अखिल लोक पालन जु करैया । सो भये गोप सभा के छैया ॥
क्रीड़त कृष्ण गोप गन माँहीं । सुवल सखा दीयें गल वाँहीं ॥११॥
तव भीतर वोले नँदराँनी । भोजन की सव सामा आँनी ॥
कर गहि हरि आगे वैठाये । अलकनि अतर फुलेल लगाये ॥१२॥
कछु इक जेंइ लेहु मेरे प्यारे । ज्यों सुख पावें मो दृग तारे ॥
मोहन कहें भूख नहिं मैया । आवन देहु वलदाऊ भैया ॥१३॥
सुनि ये वचन दौरि वलि आये । जसुमति अपने हाथ जिमाये ॥
ग्रास ग्रास प्रति मुख तन देपें । रहे मातु दृग विसरि निमेपें ॥१४॥
तृपिति मानि हरि अचवन कीयौ । जननी निरखि भयौ सुख हीयौ ॥
जसुमति नंद प्रान धन गिरिधर । वदन निहारि जियें नारी नर ॥१५॥
अरु इत हेत भानु हिय भारी । कीरति हूँ यह वात विचारी ॥
कछु दिन इहाँ श्याम कों लावौ । विप्रनि सौं कर विनय पठावौ ॥१६॥
भूपन वसन भेंट पकवानें । जसुमति कों पठये मनमानें ॥
अरु कछु वात कही हित की पुनि । जसुमति कों कहियौ पाँड़े सुनि ॥१७॥
कृपा दया कछु हमपै कीजै । दिन दस श्याम पठै ह्याँ दीजै ॥
अरु डलियाँ मेवनि सौं भरियाँ । लै चले विप्र जानि सुभ घरियाँ ॥१८॥
आगे खवरि महरि जव पाई । तव कछु वाँटति अधिक वधाई ॥
व्रजपति पौरी वैठे पाये । समाचार सव जाइ सुनाये ॥१९॥
विप्र असीस नंद कों दीनी । नंद प्रनाम विप्र कौं कीनी ॥
भीतर तें व्रजमोहन निकसे । सुनि ये वात कमल ज्यों विकसे ॥२०॥
पुनि असीस गिरिधरहि सुनाई । जुग जुग जीवौ कुँवर कन्हाई ॥
नंद परम आनँद भरि मन में । श्यामहिं हरपि भरत अंकन में ॥२१॥
पठये साज भानु जू जेते । व्रजपति कहें गनौ हों केते ॥
लै लै भवन धरतिं व्रजवाला । मेवा भूपन वसन रसाला ॥२२॥
धन्य भाग नँदरानी मान्यौ । अति सैं हेत भानु कौ जान्यौ ॥

भीतर मंदिर विप्र बुलाये। आदर दै भोजन करवाये ॥२३॥
पीत पिछौरी हरि कटि कसि कै। परसत विप्रनि मृदु मुख हँसिकै ॥
विंजन पाक सबै रचिकीनें। जेंवत विप्र स्वाद सुख भीनें ॥२४॥
जसुमति बोली सब पुर नारी। सजननि देति हेत सौं गारी ॥
अचवन कौ सीतल जल आँन्यौं। वातनि माँहि ढरयौ व्रजरानौं ॥२५॥
बूझत कुसल बहुत मन दीयें। वारिधि प्रेम भरयौ जा हीयें ॥
अब कछु सुनौं सजन के हित की। हम सब कहैं भानु के चित की ॥२६॥
मोहन दिन दस बोलि पठाये। सुनौं व्रजईस लैंन हम आये ॥
जब ये विप्रनि वचन सुनाये। व्रजपति मनु आनँद निधि न्हाये ॥२७॥
हिय में अति हरषित भये भारी। लीये निकट बोलि गिरिधारी ॥
प्रातहिं उठत भानु घर जैयै। सजननि के हिय आनँद दैयै ॥२८॥
ऐसी बात सुनी व्रजरानी। फूली फिरति महा सुख मांनी ॥
जो कछु आई भेंट रसाला। बाँटति नगर जोरि व्रजबाला ॥२६॥
विप्रनि सुदिन चलन कौ थप्यौं। नंद बहुत धन तिनकौं अप्यौं ॥
बहिल वाहिनी सकट सँवारे। नंदादिक सब गोप पधारे ॥३०॥
सखा मंडली मोहन संगा। छविपर वारौं कोटि अनंगा ॥
श्री वृषभानुसुता हित जसुमति। भूषण वसन अमोल दिये अति ॥३१॥
अरु अगनित पकवान बनाये। ते सब गिरिधर संग पठाये ॥
अब कछु कहौं कृष्ण की सोभा। लखि कंदर्प होत चित छोभा ॥३२॥
बन्यौ मुकेसो सिर पर चीरा। कलँगी जटित जग मगत हीरा ॥
पीत इजार बनी तन आछैं। कंचुक जरी काछनी काछैं ॥३३॥
पटुका छोर छबीले राजैं। सीस मुकुट सोभा अति छाजैं ॥
रतन जटित कुंडल श्रवननि लगि। गंडनि उठति अमित छवि जगिमगि॥३४॥
कंठी कंठ धुकधुकी सोहै। कुसुमनि दाम सबै मन मोहै ॥
चौकी माल विसाल बनी छवि। बाजूबंद रहीं पहुँची फबि ॥३५॥

कटि पर वनी किंकिनी गाढ़ी । मनु सोभा की सींवा काढ़ी ॥
चूरा लसत सुदेस करनि में । पदिक जगमगत चारु चरन में ॥३६॥
घोप नृपति यौं कृष्ण सिंगारे । अखिल भुवन लोचन के तारे ॥
चलत विराजत मोहन नीके । जा छवि लगत अमर गन फीके ॥३७॥
देव विमाननि यौं नभ छायो । मनु हरि चलत वितान तनायौ ॥
जै जै जै बानी सुभ राजै । गहगही व्योंम दुंदुभी वाजै ॥३८॥
सीत सुगंध मंद वहै मारुत । पंथ गवन मनु श्रमहि निवारत ॥
वट संकेत जाइ कछु विरमें । पौढ़े श्याम कुंज मंदिर में ॥३६॥
चरन पलोटत सुवल श्रीदामा । गोद सीस धरैं मनसुख नामा ॥
मधुमंगल रचि वीरी कीनी । अति हित मानि श्याम मुख दीनी ॥४०॥
आगे गयौ विप्र वह तवही । बूझत दौर नगर के सवही ॥
आइ भये मारग में आड़े । कहौ कहाँ तुम मोहन छाँड़े ॥४१॥
श्रीवृषभानु जवहि सुधिपाई । तव कछु हरप न हिये समाई ॥
घर घर मंगल साज वनाये । पौरिनु वंदनवार सुहाये ॥४२॥
ग्रह ग्रह धुजाँ पताका रोपीं । पट आभरन सँवारतिं गोपीं ॥
वीथीं नीर सुगंध सँवारी । चित्रित कीने अटा अटारी ॥४३॥
आगे गोप लैंन कौं आये । उततें मोहन आवत पाये ॥
गोपी गावतिं चलीं वधाये । मंगल कलस द्वार धरवाये ॥४४॥
चढ़ीं अटनि पर देखतिं भामिनि । मनौ घटनि में ओपी दामिनि ॥
राजत कृष्ण गोप गन ऐसें । ग्रह जुत उदित सरद ससि जैसें ॥४५॥
प्रथम पौरि ठाढ़े भये गिरिधर । श्री वृपभानु लिये आँको भरि ॥
पोंछत बदन रतन वहु वारत । जै जै विप्र वेद उच्चारत ॥४६॥
जवहिं नंद रावल पति भेंटत । मनु आनँद के कोट समेटत ।
दृग भये सजल रहे सुख में भिलि । बूझत हित कुसुरात सजन मिलि ॥४७॥
मारग फूल सुगंध विछाये । चौक वजार जरी पट छाये ॥

औरौं मंगल साज घनेरे । राखे आनि कृष्ण के नेरे ॥४८॥
लै लै भेंट नगर के धाये । मोहन सौं हँसि हँसि चतराये ॥
ऐकनि अंक भरत मन हरपत । तिहिं छिन देव कुसुम गन वरपत ॥४६॥
वंदी विरद पुनीत वखानैं । भाट कवित्त करि जस कौ गानैं ॥
मंगल वर्द्धन सभा भानकी । हरि उर अभिलापा निदान की ॥५०॥
श्रीवृपभान नंद कर गहि कैं । तहाँ चले लै हिये उमहि कैं ॥
पूरित प्रेम दोऊ व्रजरानैं । सो सुख रसना कहा वखानैं ॥५१॥
जहाँ कलपतरु वहुविधि फूले । अमृत स्वाद फलनि करि झूले ॥
नाना रतन कनक मधि जरिया । मनु सोभा के साँचे ढरिया ॥५२॥
ऊँचे अटा अटारी द्वारे । जिनमें नाना चित्र सँवारे ॥
गोकुल चंद तहाँ पगु धारे । आये सजन गोप गन प्यारे ॥५३॥
चढ़ी अटारी भानु दुलारी । लखी न किनहूँ उझकि निहारी ॥
मोहन चित्रनि देखत डोलैं । निरखि सुंदरी घूँघट खोलैं ॥५४॥
चितै थकित भये हरि व्रजमोहन । लगे ठगे से ऊँचे जोहन ॥
कुँवरि हाथ गहि वीरी डारी । फूलनि माल कंठ हरि धारी ॥५५॥
रूप छके हरि भये डहडहे । उर वढ़े आनँद गोभ लहलहे ॥
छवि के गहर परे पिय नैंना । अव तौ काहू जतन फिरैं ना ॥५६॥
दुहुँ विच परी नेह की डोरी । काहू भाँति न छूटति छोरी ॥
प्रेम गाँठि उर वैठी घुरि घुरि । पुनि पुनि वदन निहारत मुरि मुरि ॥५७॥
उत मोहन मन वाढ़ति साधा । इततें वरपति छवि जु अगाधा ॥
तृपिति न होत कमल दल लोचन । इत भींजति कुल कानि सकोचन ॥५८॥
हिय उपजति कोटिक अभिलापैं । चहत कछू वचन मुख भापैं ॥
ह्वै गयौ नेह दुहूँ विच टाटी । नाँखि न सक्त प्रेम की घाटी ॥५६॥
मिथुन महा रस लीन सखी री । ललिता हिय की लाग लखी री ॥
तव कछु सकुचि भये दोउ न्यारे । अपनें अपनें ठाँम पधारे ॥६०॥

गोप सभा वृषभान विराजैं। तिन ढिंग नंदमहा छवि भ्राजैं॥
दुहूँ सजन के गिरिधर आगे। बैठे पहिर सहानें बागे॥६१॥
कहै वृषभानु पढ़े कछु लाला। तब हरि बोले वचन रसाला॥
वेद रिचा स्वर सहित उचारी। अरु पुरान स्मृति विस्तारी॥६२॥
तब सब सुनत छके नर नारी। रहे कृष्ण कौ वदन निहारी॥
फिरि बूझत हरि सौं चित लायें। दूध देति कहौ केतीं गायें॥६३॥
अरु कहौ कृष्ण साँचि इकबाता। तुमहिं दूध प्यावति कछु माता॥
तब हरि हँसे कंठ लपटाये। गोप इन्द्र देखत मुसिकाये॥६४॥
भीजे नेह महा सुख सानें। कहौ श्याम तुम रहौ बरसानें॥
सुनि श्री कृष्ण मुदित भये भारी। लागी बात सुधातें प्यारी॥६५॥
जबहिं नंद वे विप्र बुलाये। तेहे प्रथम आप ग्रह आये॥
मेवा भूषण बहुत मिठाई। दै तिन हाथ भवन पहुँचाई॥६६॥
धरति सदन रावलपति धरनी। निगमनि जो बड़ भाग बरनि॥
इच्छा पूरण जासु कहत हैं। सो हरि ताकी पौरि चहत हैं॥६७॥
श्री राधाजनक श्याम मुख हेरैं। पुनि करकमल बदन पर फेरैं॥
तब इक अनुग टेरि ढिंग लीयौ। कहि कछु वचन पठै घर दीयौ॥६८॥
दूध दही के माट मँगाये। मेवा पान मिठाई लाये॥
सखनि सहित हरि रुचि सौं पावत। रावलपति आनंद बढ़ावत॥६९॥
शीतल जल अचवत हरि नागर। बीरी लेत रूप गुन आगर॥
दुहुँ भूपनितें अज्ञा माँगी। हरि दृग दरसन के अनुरागी॥७०॥
पुनि हरि कौतिक चले नगर में। झाँकत डोलत बगर बगर में॥
सखा संग लीयें इकदाई। पुर वर वीथिनु केलि कराई॥७१॥
तरुनी सनमुख दही विलोवैं। सुंदर श्याम वदन तन जोवैं॥
सैंननि में तासौं बतरानें। ग्वालिनि चंचल दृग पहिचाँनें॥७२॥
करि परिहास भये मुरि ठाढ़े। ग्वालिनि वचन अटपटे काढ़े॥

तिनहिं श्रवण सुनि हरि मन फूले। लगे हित वचन सुधा समतूले ॥७३॥
तब हरि गये सदन आगे चलि। सुंदरि कहति बैठिये वलि वलि ॥
उन कछु मिश्री माखन सानी। सो लै मोहन आगे आनी ॥७४॥
जेंवत हरि मुख करत बड़ाई। अरु भीतर तें दही मँगाई ॥
कछु खायौ कछु दयौ ढ़रकाई। ग्वालिनि हरि कौं गारि सुनाई ॥७५॥
गिरिधर जाइ और घर झाँके। अलक सँवारति भामिनि ताके ॥
उन कछु सकुचि दियो पट ओलें। हरि हँसि ताकौ घूँघट खोलें ॥७६॥
तिन कछु कही प्रेम बस वानी। हरि मन रुची भाग्य कर मानी ॥
आगें कुँवरि अटा पर ठाँढ़ी। मनु सोभा के साँचे काढ़ी ॥७७॥
गेंद उछारति सहचरि गन में। भरी खेल सुख आनँद मन में ॥
हरि को चित ऊहि रूप गह्यौ है। जा दिन तें यह वदन चह्यौ है ॥७८॥
छिप छिप छवि कौ स्वाद लेत हैं। काहु न मन कौ भेद देत हैं ॥
देखि दसा वे कृष्ण सँघाती। कहैं श्याम तुम हौ केहिं भाँती ॥७६॥
पुनि पुनि अविलोकत उहिं ओरी। अखियाँ भई विधु वदन चकोरी ॥
सुंदरि भई दृगनि तें न्यारी। मोहन तब तन दसा सम्हारी ॥८०॥
धनि वृषभानु गोप बरसाँनौं। जहाँ कौतूहल सरस रवाँनौं ॥
यौं घर घर क्रीड़त नँदनंदन। देत अखिल भाँतिनु आनंदन ॥८१॥
तब हरि गये भानु के सरवर। जहाँ फूले बहु विधि के तरुवर ॥
विकसे कमल करत अलि गुंजें। चहुँदिस ललित लतनि की कुंजें॥८२॥
क्रीड़त सुभग सरोवर माहीं। अम्मृत जल हरि पान कराहीं ॥
इत सखियनि मधि भानु दुलारी। आई न्हान सरोवर प्यारी ॥८३॥
जल तें निकसि भये हरि न्यारे। कुंज ओट दुरि देखत प्यारे ॥
वाँम भाग वह सखी विशाखा। जा उर भरी टहल अभिलाखा ॥८४॥
दच्छिण दिस ललिता हित वेली। आवति दुहुँ अंस भुज मेली ॥
जब हँसि गजगति मंद ढ़रतिं हैं। यह छवि वानिक कहि न परति हैं॥८५॥

अंचल की गतिविसरि गई है। वदन चाँदिनी फैलि रही है॥
मोहन विके विलोकनि वाँकी। जवहिं ओट तें यह छवि ताकी ॥८६॥
कछु कछु वात भेद की कहि कहि। रहति सखी के मुख तन चहि चहि॥
डगनि भरत कच कुसुम भिरत हैं। सौरभ कौं अलि संग फिरत हैं ॥८७॥
जोवन आगम भौंह नचति हैं। रूपभार कृश कटि जु लचत हैं॥
श्री राधा सँग लियें सहेली। जल में उतरि करति वहु केली ॥८८॥
सोभा लाभ लहत हरि नैंना। पलक धरन की हाँनि सहैंना॥
ज्यौं ज्यौं भामिनि जलहिं कलोलें। हरि के दृग चंचल गति डोलें ॥८६॥
तव कछु जियमें श्याम विचारी। चाहत धरयौ भेप सहचारी॥
अछन अछन चल सारी चोरी। मोहन तें भये नवल किसोरी ॥६०॥
छल वल में कोविद हरि भारी। जल पैठे पहिरी तन सारी॥
डुवकी लेत कुँवरि तन भेटे। तन मन अति आनंद लपेटे ॥६१॥
कहति कुँवरि को मो तन भेंटी। कहाँ धौं वसति कौन की वेटी॥
तव हरि कछु इक वुद्धि उपाई। नाम ठाम औरै जु जनाई ॥६२॥
व्रजमंडल में वास जतायौ। सखी साँवरी नाम वतायौ॥
देखी सुंदरि सव गुन आगरि। वोलि लई अपने ढिंग नागरि ॥६३॥
तव जल छींट भरत मन भाई। साँवल गौर भरे चतुराई॥
लै लै कमल परस्पर मारत। एक गहैं कर सौं कर टारत ॥६४॥
मींचति आँखि पद्मनी रहि रहि। इक लावति गहिरें जल गहि गहि॥
करतल वल जल भरत भरावति। इक हँसि एकनि कंठ लगावति ॥६५॥
इक जल तिरति फिरति गति सोहन। एक लगति पुनि ताके गोहन॥
यौं जल केलि करी मनमानी। तव कछु सुरत और उर आनी ॥६६॥
ललिता लखि भोजन की वारी। कहति कुँवरि सौं चलौ सवारी॥
सारी डारि गये हरि वन में। किनहुँ न जानें श्याम सखिनि में ॥६७॥
पहिरें वसन आभरन वाला। चलीं सदन छवि देति विसाला॥

गावत कछू कृष्ण रस मातें । जामें मिलीं नेह की बातें ॥६८॥
ढूँढत सखा श्याम पै आये । चलौ तुम्हें ब्रजराज बुलाये ॥
तव हरि गये घोषपति नेरे । भरि लिये अंक वदन कर फेरे ॥६६॥
कीरति पाक किये बहु रचि रचि । नीकी विधि राखे सव सचि सचि॥
ग्रह ग्रह तें नव बाला आँईं । कीरति भवन वोलि वैठाँईं ॥१००॥
तव रावलपति नंद बुलाये । कृष्ण सहित सव गोप जु आये ॥
घर घर द्वार निकस ब्रजवाला । ठाढ़ी भईं देखत नँदलाला ॥१०१॥
मारग बसन पाँवड़े डारे । हरि आगें लै सजन सिधारे ॥
मंगल साज लियें ब्रज जुवतीं । मनु चकोर विहसीं ससि उगतीं ॥१०२॥
गावतिं मंगल भामिनि हित सौं । कृष्णहिं मिलति माहिले चित सौं ॥
उड़ि उड़ि छवि उरझत दृग मग में । धन्य भानुपुर वासी जग में ॥१०३॥
भानु भवन आवन छवि हरि की । वरनत वैस खसे अज कवि की ॥
ऊँची पौरि चित्र जहाँ काढ़े । मूरति धरैं धर्म तहाँ ठाढ़े ॥१०४॥
नग जगमगत दृष्टि चकचौंधें । तन की दुति चपला ज्यौं कौंधें ॥
हरि प्रतिविंवित ऐसें जानौं । अगनित वपु दरसाये मानौं ॥१०५॥
भानु भवन देखन उमहे हैं । यातें रूप अनेक भये हैं ॥
किधौं कि कीरति पाक बनाये । स्वाद लैंन वहु तन धरि आये ॥१०६॥
किधौं छवि देखन भानु कुँवरि की । मूरति विविधि भईं हैं हरि की ॥
ऐसें कृष्ण दृगनि दरसे हैं । जव इहि पौरी माहिं धसे हैं ॥१०७॥
जा पौरी कौं झाँकन नितही । हरि के अभिलाषा रहे चित ही ॥
जहाँ भये ठाढ़े कुँवर कन्हाई । पग धोवन कौं झारी आई ॥१०८॥
भीतर भवन लये ब्रज मोहन । चंचल लगे चहूँदिस जोहन ॥
तव हरि दृष्टि वड़ी दौराई । प्राण भाँवती नहिं लखि पाई ॥१०६॥
ऊँची सी इक तहाँ अटारी । सोभित सुभग मणिनु की जारी ॥
तहाँ निहारी वैठी सुंदरि । छवि की किरनि रहीं रंध्रनि भरि ॥११०॥

जित जित दृष्टि करति सुंदर वर । तितिहीं तित लागत पुहुपनि झर ॥
अद्भुत भेष धरें छवि आगर । मुरझत मनमथ गन वानिक पर ॥१११॥
अंबर पाट बिछे चहुँ ओरी । बैठे सजन पालथी मोरी ॥
कंचन थार और जलझारी । परसे लाड़ू सरस सुहारी ॥२१२॥
खुरमा खाजा रुचिर कचौरी । पूरी पापर बरा फुलौरी ॥
मोहन भोग जलेबी मठरी । बनी इमरती सबतें सुठरी ॥११३॥
घेवर सेव सुहार सलोंनें । घृत में तले सुभले निमोंनें ॥
सरस चूरमा घी में सान्यौं । मगद परोस्यौ हरि मन मान्यौं ॥११४॥
बूँदी गुल पापरी पकौरी । अति रुचि देंनी फैंनी सौरी ॥
गूझा हिरसे सक्करपारे । मिश्री के रस पुवा सँवारे ॥११५॥
मोदक मधुर स्वाद के कीनें । दधि में बरा भेद सौं भीनें ॥
चंद्रकला पेरा जब परसे । जेंवत श्याम गुलाबी सरसे ॥११६॥
मूँग भात घृत भरे कटोरा । खट रस खीर स्वाद नहिं थोरा ॥
कढ़ी मुरब्बा मठा धुँगारयौ । बन्यौ राइतौ जीरौ डारयौ ॥११७॥
पीत भात अरु भूँनी खिचरी । तले घिरत में पापर कचरी ॥
परसे फुलका घीव चुचाते । जेंवत सजन स्वाद सरसाते ॥११८॥
धोवादार सिखरनी गाढ़ी । ग्रास लेत में अति रुचि बाढ़ी ॥
रस की खीर दही अति मीठी । दुध लपसी नहिं खात उबीठी ॥११६॥
बरी मुँगोंरी मीठी रोटी । मेली मठा पकोरी छोटी ॥
छुर्कीं तोरई बैंगन न्यारे । भाँति भाँति के आँव निकारे ॥१२०॥
नीबू अदरक बनें करैला । इमली पना धरे भरि बेला ॥
तले ककोरा सबतें नीकें । जेंवत कृष्ण भाँवते जीके ॥१२१॥
मीठी कढ़ी जु बहुत अथानें । लेत गोप जो जो मन मानें ॥
बेसन के बहु साँज सँवारे । जेंवनहार सराहत हारे ॥१२२॥
जिमींकंद अरई रुचि कीनी । हरि कों स्वाद अधिक ही दीनी ॥

सक्कर बूरा अगनित भाजी । श्यामहिं रुचित होत अति राजी ॥१२३॥
पेठे कीं द्वै विधि तरकारी । मीठी और सलौंनी भारी ॥
खोवा अधवट दूध मलाई । मेवा विविधि भाँति परसाई ॥१२४॥
खटरस विंजन वनें अपारा । कहि न सकौं तिन कौ विस्तारा ॥
जसुमति नंद नाम कौं लै लै । सुंदरि गावति गारी दै दै ॥१२५॥
कहति भाँम हरि औगुन गारे । ज्यौं ज्यौं सकुचत नंददुलारे ॥
गोरे नंद जसोदा माई । तुम काकी उन्हार कन्हाई ॥१२६॥
अति मन मुदित होति ब्रज बनिता । सुनहुँ कृष्ण ह्याँ लावहु जनिता॥
तब ऊँचे कर नंद निहारे । हँसि वृषभानु बचन चित धारे ॥१२७॥
निगम निरंतर अस्तुति करहीं । ता कौं हरि कबहूँ मन धरहीं ॥
ताहू तें कोटिक विधि प्यारी । भाँवतिं ब्रजनारिनु की गारी ॥१२८॥
भोजन करि हरि अँचवन लीनी । सब सौं भानु करी आधीनी ॥
हितू हेत सौं बीरो लैकरि । कीरति भवन बुलाये तब हरि ॥१२९॥
हँसि हँसि वारति रतन भरी सुख । गिरिधर कौ निरखति सुंदर मुख ॥
भरि लिये अंक नेह रस पूरी । जिनि के श्याम सजीवन मूरी ॥१३०॥
चौकीपर बैठारे हरि जब । भेंटे तिलक करति सुंदरि तब ॥
करति आरतो अप कर रानी । कीरति की कीरति जग जानी ॥१३१॥
जोहरि अखिल लोक के नाइक । कीरति कूख तिन्हें वर दाइक ॥
भाग्य भरी रावलपति घरनी । मंगल हू कौ मंगल करनी ॥१३२॥
पूजति कृष्ण विविधि विधि करिकैं । सर्वसु वारति रहि सुख भरिकैं ॥
जाचक जननि अमित धन दीयौ । गद् गद् कंठ प्रेम भर्यौ हीयौ ॥१३३॥
नंद विनै करि-विदा जु माँगी । कहैं वृषभानु परम अनुरागी ॥
कछु दिन रहि हमकौं सुख दीजै । ऐसी कहा उतावरि कीजै ॥१३४॥
पट आभरन गोप पहिराये । नंद विदा करि भवन पठाये ॥
वहिल वाहिनी हय गय जेते । गाइनु ठाट गनौं हों केते ॥१३५॥

दिये वृषभान सिंगारनि साजे। दूलह श्याम चढ़नि के काजे॥
चलते सजल नैंन ह्वै आये। भुज भरि नंद भाँन लपटाये॥१३६॥
प्रेम वचन रावलपति भाखे। कछु दिन कृष्ण आपु ग्रह राखे॥
सजननि चलत अधिक छवि पाई। नंद भानु की करत वड़ाई॥१३७॥
पीरी पोखरि ब्रजपति आये। तव फिरि गिरिधर वोलि पठाये॥
सुनौं कृष्ण तुम नीकें रहियौ। दिन दस पाछें आवन कहियौ॥१३८॥
पुनि पुनि मोहन वदन निहारैं। तजि न सकै हित भान विचारैं॥
तव सव गोप गये चलि उतकौं। मोहन फिरि आवत भये इतकौं॥१३९॥
श्री वृषभानु गहें कर लाये। न्यारे भवन भँडार वताये॥
जसुमति हूतें करि दूनौं हित। कीरति हरिहिं लड़ावति नित नित॥१४०॥
गिरि पर मणिमय सदन लसत हैं। राधा हरि नित तहाँ वसत हैं॥
श्रैंनी कलप द्रुमनि की वनीं। लता असोकनि फूली घनीं॥१४१॥
झुकि झुकि रही अटनि पर डारी। रतननि ही की ज्योति उज्यारी॥
औरौं द्रुम समूह नित हरे। विविधि भाँति फल फूलनि फरे॥१४२॥
ठौर ठौर जहाँ झिरना झरैं। मोर मराल मधुर धुनि करैं॥
नाना धातु धरैं गिरि दरसै। रसिक किसोर चरन उर परसै॥१४३॥
जित तित भ्रमत नदित अलि डोलैं। मूरति धरैं निगम मनु वोलैं॥
शुक सारौ राधा हरि रटैं। नाना चरित और खग पढ़ैं॥१४४॥
अति उत्कंठा मन में करिकैं। सेवत कोटि मदन वपु धरिकैं॥
राग रागिनी कला जु जेती। वनिता तन धरि सेवत तेती॥१४५॥
कुसुम दलनि करि तलप रची है। सोभा की अति भीर मची है॥
ऐसौ कौतुक सदन जहाँ है। क्रीड़त राधा नाथ तहाँ है॥१४६॥
ताल तान सुर साजैं वीना। ललितादिक सुख देति नवीना॥
केलि कलानि कल्लोलत दंपति। लोभी लाल लुनत सुख संपति॥१४७॥
रंध्रनि लगी रूप हित सहचरि। रूप रसा पीवत दृग भरि भरि।

लोचन या सुख माँहिं बसैं जो । भागिनु कौ फल वरनें के तो ॥१४८॥
ब्रज विनोद लीला यह बरनी । अखिल भुवन में मंगल करनी ॥
संवत सै दस आठ विचारौ । चारि वर्ष ऊपर चित धारौ ॥१४९॥
माधौ मास सुभग दिन सातें । ब्रज विनोद कह्यौ सुमति सुहातें ॥
या रस भजन ढरेंगे जबहीं । साधु अनुग्रह करिहैं तबहीं ॥१५०॥
बलि हितरूप मिथुन जीवन धन । बृन्दावन हित बसौ सदा मन ॥
श्री बृषभानु सुता सुत ब्रजपति । बृन्दावन हित रहौ चरन रति ॥१५१॥

॥ इति श्री ब्रज विनोद ॥

श्री राधा छबि सुहाग

राग भैरों झपताल–पद १

नंद कौ निकेत प्रात सुमिरिये मना । दूलहु अभिराम स्याम दुलहिनि राधा सुनाम बैठे उठि तलप लखि प्रकास छबि घना ॥ भूषन पट की सम्हार करत दबत लाज भार ढाँपत सुरतांत चिन्ह समुझि सकुचना । अहा महा सुहाग भाग रद छद जगमगत दाग जावक रेख पिय कपोल नखन छत तना ॥ पावैगो सुख अघाइ सेइ पौरि गोप राइ वेद औ पुरान तंत्र सचि धरयौ धना । गाइ गाइ चित लगाइ अमल प्रेम सिंधु न्हाइ आलस तजि सादर भजि भाव दृढ़ पना ॥ सोभा आनंद अवधि विनुमित रस लहे लबधि गों चिताइ गये सुमति महत जे जना । घोप ईस नाइ सीस झूँठी सब छाँड़ि रीस साधैं सब धर्म हाथ लग्यौ न सुख कना ॥ महा मधुर रस ब्रजेस नंदन बृषभानु सुता चाहे तौ सरन लागि भूमि न जगवना । बलि बलि बृन्दावन हितरूप रस प्रवाह जहाँ धापि पिवत भूख मिटै मिलौ अलिगना ॥

राग भैरों झपताल–पद २

नंद धाम विहरत दुरि लोक जो धनी । दुलहिनि राधा सुनाम ताकी

छवि छक्यौ श्याम अहा कहा जोरी भूतल अभूत बनी ॥ प्रात उठत जपहु जाप सफल होहि यह अलाप पावै सुख संपति आनंद रस सनी। रसिकनि कौ परम धना जाँचि राचि अरे मना यातें परें और नाहिं निगम यौं भनी॥ गुरु प्रसाद लहि सवाद मिथ्या जग तजि विवाद ताकौ पद पल्लव की छाँह सुख घनी। तनहिं हारि मनहिं हारि और सुखनि मानि हारि एरे डर डारि अमी वारि अचवनी ॥ मृग मरीचिका जु तोइ खोजत क्यों सुखित होइ डारयौ नर जनम खोइ आस तुस कनी। मुरली कर मुकुट धरन तेरी उर पीर हरन राधाधव करहि भक्त और लरजनी ॥ पीत वसन अंग लसन मधुर हँसनि अधर रमी ललित वचन प्रणत पलत कृपा दृग अनी। वलि वलि वृन्दावन हितरूप रसिक मुकुट मनी नेह जोरि तासौं तजि जगत उरझनी ॥

राग भैरों ताल चर्चरी—पद ३

नंद के सदन आनंद गरुवौ सखी। भोर उठि दुलहिनी अजिर मध्य फिरति है निकर ससि वदन पर में जु आभा लखी ॥ लाल खिरकी उझकि उझकि देखत दुरे कौंन छवि माधुरी दृगनि रसना चखी। मनहु सौभाग्य की मंजरी चन्द्रिका मुकर लै सुकर लोचन सँवारति मखी ॥ सासु के चरन कियौ नवन आतुर गवन आसिका दै महरि कर जु माथे रखी। वृन्दावन हितरूप सिंधु अंगनि वढ़यौ रुकै किहिं भाँति जैहै जु सींवा नखी ॥

राग रामकली—पद ४

दुलहिनि सम बताऊँ कौंन। सारदा बरनन अरबरत देखि धरि रहे मौंन ॥ बुद्धि वल उपमा जु तोली लगै न या सँग हौंन। निकर सोभा श्याम पै गौरांग सम जु वदौं न ॥ पुर वधू सुर वधू कीनी नागपुर कीं गौंन। अहा अहा निसिदिन बखानति गोप कुल महतौंन ॥ नंद घर रहै चाँदनों कबहूँ तिमिर परस्यौ न। कौंन विधिना निर्मई अँग अंग सबहि सुठौन ॥ विश्व मोहन लखि थकित परसंश अधिक करौं न। वृन्दावन हितरूप इहिं वारौं जु राई लौंन ॥

राग रामकली–पद ५

विधिना किहिं मुहूरत करी। बहुरि वह नहि हाथ लाग्यौ मोहि जानी परी॥ देखी सुनी न सृष्टि जाकी तो सम अरु सुंदरी। मनहिं मन पछितात अब वह फिरि न पावत घरी॥ इहिं छवि नहीं छवि छींट परसी जो तो तन सचि धरी। लोक में नहिं और भाग सुहाग की अति भरी॥ तो प्रताप ब्रजेस मंदिर लगी आनँद झरी। को अपूरव धाम तहाँ ते तू अवनि अवतरी॥ रूप रस की बेलि कीरति पोप सौं भइ हरी। कौंन सुकृत मदनमोहन दुलहिनी तू वरी॥ रति रंभा अरु सची तो वाँनिक जु लखि झुरि मरी। ससि कमल अरु दामिनी उपमा जु देतैं डरी॥ हिता मैया सासु जसुमति लाड़ नित विस्तरी। बृन्दावन हितरूप मूरति पिय दृगनि रहै अरी॥

राग रामकली–पद ६

धनि बृषभानु पुर की मही। परी जापै भाँवरी महिमा न आवति कही॥ धन्य रावल जहाँ जनमी सुख की सरिता वही। धन्य गोपी गोप लीला वाल नैंननि चही॥ धन्य जननी जनक जिन बर श्याम सोध्यौ सही। धन्य जसुमति नंद जिनि घर वधू जगमगि रही॥ धन्य मुरली धरन तो रुख लै चलन गति गही। बृन्दावन हितरूप लवधि जु अवधि सुख की लही॥

राग बिलावल–पद ७

जा दिन तें श्री राधिका घर ब्याही आई। ता दिन तें ब्रजराज कें नित नई वधाई॥ कवहूँ भवन कवहूँ अजिर फिरै कुँवर कन्हाई। भयौ अलि अंबुज वदन कौ मँडरात सदाई॥ ग्वार सवै लरि पचि रहे वरहे नहिं जाई। मैया वावा की कछू इन सह सी पाई॥ वावा कौ यह लाड़िलौ वोलौ जिनि भाई। अव जु हमारी वात कछु याकौं न सुहाई॥ ब्याह भयौ ता द्यौस तें वढ़ी सुंदरताई। गौंनों आये तें भई अति ओप सवाई॥ हम जानी पलटी कछू विधि की विधिताई। औगुन गारो जनम को ताकी होति वड़ाई॥ मित्र वचन सुनि सुनि हँसे दई आनि दिखाई। अरे मनसुखा धूत तें कहा

छवि छक्यौ श्याम अहा कहा जोरी भूतल अभूत वनी ।। प्रात उठत जपहु जाप सफल होहि यह अलाप पावै सुख संपति आनंद रस सनी । रसिकनि कौ परम धना जाँचि राचि अरे मना यातें परें और नाहिं निगम यौं भनी ।। गुरु प्रसाद लहि सवाद मिथ्या जग तजि विवाद ताकौ पद पल्लव की छाँह सुख घनी । तनहिं हारि मनहिं हारि और सुखनि मानि हारि एरे डर डारि अमी वारि अचवनी ।। मृग मरीचिका जु तोइ खोजत क्यौं सुखित होइ डारयौ नर जनम खोइ आस तुस कनी। मुरली कर मुकुट धरन तेरी उर पीर हरन राधाधव करहि भक्त और लरजनी ।। पीत वसन अंग लसन मधुर हँसनि अधर रमी ललित वचन प्रणत पलत कृपा दृग अनी । वलि वलि बृन्दावन हितरूप रसिक मुकुट मनी नेह जोरि तासौं तजि जगत उरझनी ।।

राग भैरौं ताल चर्चरी—पद ३

नंद के सदन आनंद गरुवौ सखी । भोर उठि दुलहिनी अजिर मध्य फिरति है निकर ससि वदन पर मैं जु आभा लखी ।। लाल खिरकी उझकि उझकि देखत दुरे कौंन छवि माधुरी दृगनि रसना चखी । मनहु सौभाग्य की मंजरी चन्द्रिका मुकर लै सुकर लोचन सँवारति मखी ।। सासु के चरन कियौ नवन आतुर गवन आसिका दै महरि कर जु माथे रखी । बृन्दावन हितरूप सिंधु अंगनि वढ़यौ रुकै किहिं भाँति जैहै जु सींवा नखी ।।

राग रामकली—पद ४

दुलहिनि सम बताऊँ कौंन । सारदा बरनन अरबरत देखि धरि रहे मौंन ।। बुद्धि बल उपमा जु तोली लगै न या सँग हौंन । निकर सोभा श्याम पै गौरांग सम जु बदौं न ।। पुर वधू सुर वधू कीनी नागपुर कौं गौंन। अहा अहा निसिदिन बखानति गोप कुल महतौंन ।। नंद घर रहे चाँदनों कबहूँ तिमिर परस्यौ न । कौंन विधिना निर्मई अँग अंग सबहि सुठौन ।। विश्व मोहन लखि थकित परसंश अधिक करौं न । बृन्दावन हितरूप इहिं वारौं जु राई लौंन ।।

राग रामकली—पद ५

विधिना किहिं मुहूरत करी। वहुरि वह नहि हाथ लाग्यौ मोहि जानी परी॥ देखी सुनी न सृष्टि जाकी तो सम अरु सुंदरी। मनहिं मन पछितात अब वह फिरि न पावत घरी॥ इहिं छवि नहीं छवि छींट परसी जो तो तन सचि धरी। लोक में नहिं और भाग सुहाग की अति भरी॥ तो प्रताप ब्रजेस मंदिर लगी आनँद झरी। को अपूरव धाम तहाँ ते तू अवनि अवतरी॥ रूप रस की वेलि कीरति पोप सौं भइ हरी। कौंन सुकृत मदनमोहन दुलहिनी तू वरी॥ रति रंभा अरु सची तो वाँनिक जु लखि झुरि मरी। ससि कमल अरु दामिनी उपमा जु देतैं डरी॥ हिता मैया सासु जसुमति लाड़ नित विस्तरी। बृन्दावन हितरूप मूरति पिय दृगनि रहे अरी॥

राग रामकली—पद ६

धनि बृषभानु पुर की मही। परी जापै भाँवरी महिमा न आवति कही॥ धन्य रावल जहाँ जनमी सुख की सरिता वही। धन्य गोपी गोप लीला वाल नैंननि चही॥ धन्य जननी जनक जिन वर श्याम सोध्यौ सही। धन्य जसुमति नंद जिनि घर वधू जगमगि रही॥ धन्य मुरली धरन तो रुख लै चलन गति गही। बृन्दावन हितरूप लवधि जु अवधि सुख की लही॥

राग विलावल—पद ७

जा दिन तें श्री राधिका घर व्याही आई। ता दिन तें ब्रजराज कें नित नई वधाई॥ कवहूँ भवन कवहूँ अजिर फिरैं कुँवर कन्हाई। भयौ अलि अंबुज वदन कौ मँडरात सदाई॥ ग्वार सवै लरि पचि रहे वरहै नहिं जाई। मैया वावा की कछु इन सह सी पाई॥ वावा कौं यह लाड़िलो वोलो जिनि भाई। अव जु हमारी वात कछु याकौं न सुहाई॥ व्याह भयौ ता द्यौस तें वढ़ी सुंदरताई। गौंनौं आये तें भई अति ओप सवाई॥ हम जानी पलटी कछु विधि की विधिताई। औगुन गारो जनम को ताकी होति वड़ाई॥ मित्र वचन सुनि सुनि हँसे दई आनि दिखाई। अरे मनमग्न धत तें ---

धूम मचाई ॥ लला छाक घर ससुर की तुहि माइ खवाई। फूल गये भुज दंड अब भयौ वली महाई ॥ व्याह भयौ अब वड़े घर भूले मित्र जु ताई। वृन्दावन हितरूप वलि फबी भाग्य निकाई ॥

राग विलावल–पद ८

अरे नंद के लाड़िले जिनि नाम धरावै। मित्र कहत सब कुनबुसा तोहि लाज न आवै ॥ वन जैवो तोहि न रुचै घर रहिवो भावै। ऐसें कैसे गोप कुल तू सोभा पावै ॥ सोई सपूत कहावही जो गाइ चारावै। हम जु कहत हैं सीख की तू नाक चढ़ावै ॥ तेरो मन जु विक्यौ कहां कोउ थाह न पावै। चन्यौ चीकनौं चाँदनौं छवि गलिनु दिखावै ॥ हां जु एक तुम वहुत हौ को रारि वढ़ावै। मित्र भलौ न अनदेखनौं जो चपरि चिरावै ॥ दिना चारि नहिं वन गयौ तुम करत चवावै। दोस न काहू कौ जु यह मनसुखा सिखावै ॥ घर घर गौंनौ व्याहु पुनि सवहिनि कै आवै। स्याम कही मुसिकाइ कै को दोप लगावै॥ सुनि कोऊ हर हर हँसै कोऊ कर पटकावै। वृन्दावन हितरूप वलि कौतिक जस गावै ॥

राग विलावल–पद ९

गौनैं आई वहुरिया मेरे मुरलीधर की। वेटी रावल भूप की अति लाड़क घर की ॥ मो अज्ञा लीये चलै वहु लाज सुसर की। कानि राखि जानैं अधिक जेठ हलधर की ॥ सीलवंत गुनवंत अति सोभा जु निकर की। लेइ असीस आदर सहित सब नारी नर की ॥ मो लोचन पुतरिनु वसै कहौं उर अंतर की। वारौं याके रोम पै वधू अमर नगर की॥ नै चलनी मिठ वोलनी को इहि सरवर की। वृन्दावन हितरूप मणि सुत मो सुंदर की ॥

राग विलावल इकताला–पद १०

वधू मृदु वोलनी हो अरी मेरे कुल कौं दीनी ओप। कीरति कुखि मोहि भई लहनी जग उपमा करी लोप ॥ वनी सील की मूरति राधा हिये न परसत कोप। वृन्दावन हितरूप महत महिमा वर्द्धन कुल गोप ॥

राग बिलावल इकताला–पद ११

घोप नृप कुल वधू हो देखि दियौ करवट सैंना मदन । ससि के निकर प्रकास होत मनु जब घूँघट खुलै वदन ॥ तामें मृदु मुसिकानि तड़ित सिसु कौंधनि दमकत रदन । झिल्ली सी झनकार धरत पग नूपुर लागत नदन॥ नंदनंदन छवि छिपि अवलोकत आनँद नद वढ्यौ जाकी हद न । वृन्दावन हितरूप घटा घुरि वरपति जसुमति सदन ॥

राग आसावरी–पद १२

यह दुलहिनि मेरे सुकृत फल है । वसति लच्छमी जिहिं पद तल है ॥ जवतें पौरी पग जु धरयौ है । निधि सिधि रहत भंडार भरयौ है ॥ खिर-कनि में भईं गाइ दुधारीं । जूथनि वढ़ीं विलोवन हारीं ॥ घर घर वढ़ि चले गाइन टोला। चले ग्वाल सब भये मिठ वोला॥ मो सुत मित्र सवै अनुरागे। व्याह हौंन सवहिनु के लागे ॥ मो घर भयौ चेटक सो एहा । सव कोउ आवैं मानि सनेहा ॥ यह प्रताप दुलहिनि कौ जानौं । डीठि लगन डर हौं न वखानौं । वरि लियौ मेरौ रूप गुमानी । हौं छवि निरखि वारि पियौं पानी ॥ यह सुलच्छनी विसे जु वीसा । मोसौं कहि गयौ एक मुनीसा ॥ वृन्दावन हितरूपी लहनौं । भानु सुता मम मंदिर गहनौं ॥

राग आसावरी–पद १३

राधा किहिं घर दुलहिनि तोसी । वौंना तोरि अगह फल लावै यौं प्रापति तू मो सी ॥ व्रजपति निरखि भाग्य फल मानत सील प्रसंसत तेरौ । तू रस रतन भई जहाँ उतपति धनि वरसानौं खेरौ ॥ लाड़ करन मन अति ही लरजत सुता सजन वड़ घर की । देति परम अहलाद नागरी जोरी मुरलीधर की ॥ मृग सिसु नैंनी तू सुख दैंनी वचन अमी मृदु भाषै । धनि कुलवंती तू सव लाइक आरजमान जु राखै॥ वदन कांति ससि पाँति पलेड़नि सकल गुननि की श्रैंनी । वृन्दावन हितरूप आगरी मो दृग आनँद दैंनी ॥

राग सारंग इकताला–पद १४

कौ है भागवली जसुमति सम त्रिभुवन पति जाकौ छैया हो। जा घर वधू रमा की स्वामिनि बजै नित न्याइ वधैया हो॥ जा घर मचलि खुरचनी माँगतु जज्ञनु भोग करैया हो। हरिपुर तें गरुवौ ब्रज कीयौ भयौ जु वच्छ पलैया हो॥ शिव विरंचि करैं ध्यान सो फिरैं ग्वालनि कंध चढ़ैया हो। बृन्दावन हितरूप महरि धनि परमेश्वर की मैया हो॥

राग सारंग इकताला–पद १५

ताकत कृपा महरि मैया की कब भोजन करवावै हो। जाकी आस करत ब्रह्मादिक माँगि कौर सो पावै हो॥ रवि ससि पवन चलै डर जिहिं तिहिं ब्रजपति नीति सिखावै हो। कमला पद चाँपै जाके सो राधा पद सहरावै हो॥ ईशनि ईश जाहि मानत सो दुलहिनि भलौ मनावै हो। बृन्दावन हितरूप रसमई लीला चितहिं चुरावै हो॥

राग पूरवी चौताला–पद १६

आनन कमल कमल दल नैंनी महँदी रंचे कमल कर नवला। चरन कमल गनि गनि जु धरति है श्याम दुलहिया मुकुट मणि कमला॥ कमल आतमज सृष्टि जु नाहीं कमल नैंन बस करन जु सबला। बृन्दावन हितरूप कमल तें कोमल सब अँग न्याइ कहत सुकुँवारी अबला॥

राग पूरवी चौताला–पद १७

घूँघटी की हलनि चलनि सकुचीली लाज कौ मँजूषा किधौं सोभा कौ निकर है। नंदधाम अष्ट जाम कौतिक अभूत रहै दुलहिनि देखिबे कौं आव वधू वर हैं॥ आरज की कान करि बैठे हैं झरोखा दुरि उझकत हैं वार वार मुरलीधर है। बृन्दावन हितरूप कौ जलद मानौं घोपपति घर रहै आनँद कौ झर है॥

राग गौरी चौतालौ–पद १८

बैठि चौकी मणि दुलहिनी अति लसी। खोलि घूँघट जु बतराति है

सखी सौं सदन अँधियार निर्मूल सवही नसी ॥ भानु के वंस परसंस कीजे कहा वदन पै भोर रवि उदै मनु वनक सी । इंदु अरविंद वारौं निकर हे सखी और उपमा जु कोऊ न मो उर वसी ॥ मोरि आनन निहार्यौ चतुर अलि दिस परि गई श्रवन इहि वचन की भनक सी। लाड़ उभल्यौ हिये परम हित समुझि कै रवकि भुज ग्रीव धरि कुँवरि हर हर हँसी ॥ लाल अति कौतिकी छिप्यौ निरखत निकट जा हिये गड़ी यह महा छवि करकसी । साँझ के माँझ अँग अंग फूलनि भई हर्यौ वल तड़ित तन चपलता तनकसी ॥ सासु के पास कौं और मंदिर चली तास की ओढ़नी कछुक लखियति खसी । वृन्दावन हित भई रूप की वढ़नि जब महरि पद नवनि कौं भवन आतुर धसी ॥

राग गौरी टेर–पद १६

जसुमति दीनी गहकि जु आसिका सिर धर कर अभिराम । अचल सुहागिनि हो नृप कुल मंडनी दुलहिनि सुंदर श्याम ॥ तरुनिनु मंडल हो तू जु महा मणि सवहि वढ़ावन ओप । आरज मान जु हो विपुल वढ़ावनी सुजस दैंन कुल गोप ॥ वेटी सम नहि हो जैसी राधिका सुत सम नहि व्रजचंद । मैया और न हो कीरति महरि सम पिता भानु पुनि नंद ॥ वास समान न हो नंद जु भानुपुर कथि गये विधि जु महेश । लोक न कानन हो वृन्दारन्य से व्रज सम और न देश ॥ गोकुल रानौ हो अरु रावलधनी समधी सम नहिं आँन । प्रीति अपर्मित हो वाढ़ति नित नई रसना सकौं न वखान॥ नदी न भूतल हो जैसी रविसुता गोप गाइ सुख दैंन । गोवर्धन सम हो और न गिरि जहाँ रमत कमलदलनैंन ॥ जोरी और न हो विधना जग रची राधा हरि जू समान । वृन्दावन हित हो मित नहिं रूप की मनसिज मर्दन मान ॥

राग विहागरौ–पद २०

दुलहिनि द्दग कौतिक उपजावै । जव देखौं तव सोभा औरै रसना कहत न आवै ॥ महरि तुम्हारे सुत भाग्यनु के सिंधु पार को पावै । देखी द्दग न

सुनी कानन अस वधू व्याह घर लावैं ॥ छवि की लता अलौकिक मानों फिरति अजिर के माहीं । अलभ लाभ यह कहिये रानी भागिनु की मित नाहीं ॥ दूलह दृग कों लहनों आनन सो जु घूँघटी ढाँपै । मनु अभिराम छवीली जाकी उपमा सींव न चाँपै ॥ मुख दिखराई भामिनि तो घर पुनि पुनि लै लै आवैं । मुरलीधर की नवल वहुरिया इहि मिस दरसन पावैं ॥ हिय कौ हिय हुलसत है रानी तुव सुत वदन विलोकैं । वृन्दावन हितरूप निहारत पलक परन गति रोकैं ॥

राग केदारौ इकताला–पद २१

दुलहिनी रजनी मुख लखि न्यारे मंदिर गई पावन सर तट है । वैठी सुभग मणिनु की जारी सोभा पुंज सौं जहाँ सखियनि संघट है ॥ परम रसिक प्रीतम तहाँ आये छकनि छक्यौ अति नागर नट है । वृन्दावन हित-रूप कौतिकी रचत कला वहु रस प्रापति जा वट है ॥

मंगल छंद राग परज खमायची–पद २२

दूलहु विहँस्यौ री हेली आई सरवरी । अति अभिलाषा री हेली जाके हिय भरी ॥ भरी हिय अभिलाप सजनी असन दुहुँनि करावहीं । जो जो रुचै घृत पाक सादर सोई मधुरे लावहीं ॥ मनुहार करि करि नेह भरि भरि ग्रास लेत जु देत हैं । पय पान मधुर कराइ सखि ह्वै तुष्ट अचँवन लेत हैं ॥ नव नीरद दुति री हेली जाकी देह की । हिय अति घुमड़नि री हेली परम सनेह की ॥ सनेह की घुमड़नि जु हीये लाज भींजति भाँमिनी । सेज मंदिर सखी लाई मनहुँ ओपी दामिनी ॥ मिले साँवल गौर वरपत रस अपूरव मेहरा । मुदित सजनी चात्रिकी जगमगत रति रस ग्रेहरा ॥ छकत छकावत री हेली विद्या कोक पर । दृगनि सिरावौ री हेली कौतिक लग्यौ झर ॥ लग्यौ कौतिक झर मनोहर सुरत दोऊ सवल हैं । लोभ ललक नई वढ़ै वैसंधि उलही नवल है ॥ होत सव अभिलाप पूरव श्याम सुकृती के अली । रूप रस कौ कलप-तरु रावल महीपति की लली ॥ वलय किंकिनी री हेली नूपुर रव जु कल ।

सुनि सुधि बिसरी री हेली मुरझै मदन दल ॥ मदन दल मुरझै न सुरझै गौर श्याम विहार तें। भूख हम नैननि चढ़ी नेकौ न मुरति निहार तें ॥ कीयौ पराक्रम प्रेम नें नहिं हटत कियौ निहोर है। बृन्दावन हितरूप चहलैं फसे चलत न जोर है ॥

राग विहागरौ चौताला—पद २३

निरखि सुख अनहौतौ सौ प्रथम मिलन यह रस की लवधि दोऊ लहत। निपट गरूर कोक विद्या पर विपुल उमाहौ नैंकु विरमि नहिं रहत ॥ वय सम तूल पराक्रम समही दृढ़ भुज फंदनि हँसि हँसि गहत। बृन्दावन हितरूप नेह की उफिलनि इत उत रस भीनी वतियन कहत ॥

राग विहागरौ चौताला—पद २४

अरी मद मदन नवायौ रूप गुमानी ओपै सुरति रन सूर। नवल दुलहिया वारनें हौं याके दिन दुलराऊँ लोक सुहाग मनि भूर ॥ विजय प्रसंशत नूपुर किंकिनी कवच कंचुकी कीनी चूर। बृन्दावन हितरूप खेलत में रुपै महा भट चलकत निपट गरूर ॥

राग केदारौ—पद २५

पौढ़े प्रेम लपटनि अंग। श्रमित भये सुकुमार निदरे ओज निकर अनंग ॥ रह्यौ रजनी शेष सुरत प्रसंग वरपे रंग। चात्रिकी ललितादि अलि पियौ पलक गति करि पंग॥ नवल दुलहिनि नवल दूलहु चाह उर जु अभंग। वदन पर श्रम कन दिपैं सीपज जु ढरके मंग॥ नंद सुत वृपभानु तनया मिल चढ़ी छवि संग। बृन्दावन हितरूप राजत धवल महल उतंग ॥

दोहा—पद २६

छवि सुहाग श्री राधिका वरन्यौ पद पच्चीस। ठारह सै पर जानियौ वर्ष और वत्तीस ॥ सावन शुक्ला सप्तमी शुभ वासर गुरुवार। पुस्कर तीरे कृष्णगढ़ कर्‌यौ ग्रंथ रस सार ॥ श्री हरिवंश कृपा मुदत हिय उपजी यह लाग। दूलह दुलहिनि कौ सुविधि कह्यौ प्रथम अनुराग॥ पुत्र वधू के लाड़

में मगन मात पित होत। वृन्दावन हितरूप विवि मंदिर नंद उदोत ॥
॥ इति श्रीराधा छवि सुहाग ॥

श्री जसुमति मोद प्रकाश

राग रामकली–पद १

वंदौ कृपा वपु उतपन्य। भक्ति भुवतल विस्तरी कियो व्यास कौ कुल धन्य ॥ श्रीराधावल्लभ इष्ट सेये वसे बृन्दारन्य। वृन्दावन हितरूप धारचौ विकट व्रत जु अनन्य ॥

राग रामकली–पद २

तुम प्रभु सुमति देहु जगाइ। मन क्रम वच सेंऊ जुगल पद लेहु सरन लगाइ ॥ वसौं वृन्दारन्य दृढ़ व्रत रावरौ बल पाइ। लीला रास विलास दंपति फुरैं उर वहु भाइ ॥ दूलह दुलहिनि नंद घर सुख पलत जिहिं जिहिं भाइ। तारा तनय सुदृष्टि सौं रसना कहौं कछु गाइ॥ यह रस चाख्यो जिननि ब्रह्मानंद दियौ विहाइ। अमी तजि को कूप खारी नीर कौं ललचाइ ॥ लोक मोहन चरित कीये गोप ग्रह में आइ। सर्वोपर व्रजभूमि चारीं जहाँ वन वन गाइ ॥ को पिता व्रजराज सौ लाड़त सु मन न अघाइ। छिन छिन करति सम्हार को है जसोमति सी माइ ॥ महरि गरुवे भाग कौं उपमा न दीनी जाइ। सीथ दै दै जिनि जु पाल्यौ अखिल अंडनि राइ ॥ व्याह पुनि गौंनौं कियौ सुत वधू लई बुलाइ। अपु चकोरी भई दुलहिनि वदन ससि समुदाइ ॥ कृपा वपु सौं यही विनती जो सुनौ चितलाइ। बृन्दावन हितरूप रसमय चरित जीऊँ गाइ ॥

राग रामकली–पद ३

गरुवौ श्याम दुलहिनि रूप। देखि दृगनि अघाइ चलिकै भवन गोकुल भूप ॥ गोप कुल जु प्रसंश लाड़क गौर श्याम अनूप। बृन्दावन हितरूप

अचवत तृषा बढ़ति तऊप ॥

राग रामकली–पद ४

मेरौ श्याम लोकनि मनी । कौंन सुकृत अहा लागी हाथ पारस कनी ॥ ता गुन वय जु समान दुलहिनि मिली जोरी बनी । यह उपकार न भूलि हौं जो कियौ रावल धनी ॥ धन्य कीरति कूखि मो मंदिर जु भूपन जनी। वदन जीती ससि कला अम्मृत वचन श्रवनी ॥ पावन सर तट महल ब्रजपति किये अति कमनी । राज सुता विराजि है रुचि मानि है जहाँ घनी ॥ जूथ ललितादिक सखी इछया फिरौ अपनी । भोग वांछित भेजिहौं सुनि वधू कंचन तनी ॥ मोपै अपने भाग्य महिमा जाति नाहिन भनी । वृन्दावन हितरूप यह गिरि कृपा अंतिसै गनी ॥

राग रामकली ताल मूल–पद ५

कियौ गिरिराज मेरौ मन भायौ । राधा दुलहिनि वरी श्याम नैं यह परचौ मोहि प्रगट दिखायौ ॥ वर दाइक मैं अहा महा बल मैं नित काचे दूध न्हवायौ । श्री वृषभानु सजन की बेटी ता पग मेरी पौरि धरायौ ॥ तब तें विधि मैं गन्यौं दाहिनौं जब कीरति मुख हाँ कहिवायौ। सुनौं रोहिनी खिरक गउनि कौ पूजन कियौ तुरत फल पायौ ॥ धनि देवी संकेत सभागी बार बार मैं तोहि मनायौ । जैसे वांछित ही उर अंतर तैसोई नैंननि दरसायौ ॥ ब्रजपति कौ पाछिलो दत लह्यौ मो सुत राधा पति जु कहायौ । व्याह बड़े घर करि जु धन्य भई इह मंगल जस लोकनि छायौ ॥ मोहि श्याम तें प्यारी श्यामा मिठ बोलनि उर अधिक सिरायौ । भान घरनि सम को जग लाइक विपुल मान मेरौ जु बढ़ायौ ॥ श्री प्रजन्य श्रीपति जु अराधे सुत नाती बहु पाइ सिहायौ । भरि गये खिरक ग्वाल गाइनु सौं प्रभु सुदृष्टि करिकैं अघवायौ ॥ मेरे हाथ अगह फल लाग्यौ वह नातौ करि सत्य जनायौ । ब्रज बरसानैं खेत जीति कै घोप ईश नीसान बजायौ ॥ आनँद कौ वारिद मोहन सुत जनम्यौ तादिन तें बरपायौ । अब सोभा कौ बाग दई नें रीझि अजिर

मेरे जु लगायौ ॥ सुखित होत नर नारि घोप के सादर सब कोऊ देखन आयौ । होत नये नित कौतिक सजनी गहरौ सागर लाड़ बढ़ायौ ॥ मंगल मूल दुलहिनी आगम नगर वगर वैभव सरसायौ । और कहा वरनौं री सजनी दधि में माखन कढ़तु सवायौ ॥ लाल तजी दधि चोरी जब तें दुलहिनि अंचल छोर जुरायौ । ऐसी सुभ लच्छन की आगरि धनि गोकुल जस कलश चढ़ायौ ॥ बहुत प्रसंश करत डरपत हौं कहि रवि तन अंचल जु उचायौ । बृन्दावन हितरूप निकर यह मोहि परमेश्वर ही जु मिलायौ ॥

राग रामकली–पद ६

आरज वधुनि जहाँ समाज । तहाँ आई दुलहिनी त्रिभुवन त्रियनि सिरताज ॥ वसन सूहे तन धरें घूँघट कियें जुत लाज । रतन जटित जु बीछुवा नूपुरनि रुन झुन बाज ॥ सासु पद नवनी करी उपमा बनत नहिं आज । नवी वेली कनक के मोहनी त्रिभुवन साज ॥ महरि दीनी आसिका अविचल सुहाग सदा ज । भूपन भूपित अंग वारौं निकर छवि प्रमुदा ज ॥ वदन ओर विलोकि वनिता और भूलीं काज । वदति अपनौं भाग्य धनि सुकृती सुवन ब्रजराज ॥ वारति राई लौंन संका डीठ मन जसुदा ज । बृन्दावन हितरूप वरपत सील वचन सुधा ज ॥

राग भैरौं इकताला–पद ७

अरी मेरी मुरलीधर की वधू कि प्रानन थाती । धनि कुलवंती वाला कबहूँ तजति न घूँघट गाती ॥ करत रहत परसंसा जाकी घोप राइ दिन राती । बृन्दावन हितरूप सुलच्छन सुविधि सिरावनि छाती ॥

राग भैरौं इकताला–पद ८

अरी कब जगै बहुरिया कब होइ नूपुर झनक । कब फिरि है मो मणि मंदिर में मधुर वचन सुनौं भनक ॥ मो नैंननि की जोति छवीली विसरि सकौं नहिं याकौं तनक।बृन्दावन हितरूप आगरी कहा त्रिभुवन अस वनक॥

राग भैरौं इकताला–पद ६

जागि री जागि भान की अतिलड़ि कीरति जाई। तो देखे विन कल न परति है ज्यौं त्यौं रैंनि विताई॥ सुनौं रोहिनी सत्य कहति हौं मन मोहिनी वधू मैं पाई। वृन्दावन हितरूप सासु के वचन अमी से सुनि मन विहँसनि आई॥

राग भैरौं इकताला–पद १०

आउ री तू विपुल सुहागिनि सुहथनि उवटि न्हवाऊँ। सुत तें प्रीति सतगुनी तोसौं सुनि री भाँवती कासौं कहि समुझाऊँ॥ सौंधें सनें दुकूल जु नौतन चुनि चुनि के तोहि जु पहिराऊँ। वृन्दावन हितरूप आज करिहौं चित चीत्यौ हौं फल भाग्य मनाऊँ॥

राग विभास तालमूल–पद ११

मणि चौकी पै महरि लै वैठी जूरौ खोलि फुलेलहिं डारै। मणि ककही सौं केश सँवारति पाटी पारति माँग सँवारै॥ पट अमोल भूपन पहिरावति सुविधि तिलक रचि वदन निहारै। वृन्दावन हितरूप भाग की वली जसोमति रतन मूठि नित नित उठि वारै॥

विभास चौताला–पद १२

आउ मेरे श्याम सभागे अंग ऊवटिकैं सुविधि न्हवावै मैया। आये हँसत वैठि मणि चौकी उवटि अंग जल मज्जन करति कन्हैया॥ पट भूपन जननी लै आई रचि सिंगार पुनि लेति वलैया। वृन्दावन हितरूप श्याम सद माखन माँगत महरि मथति दधि रैया॥

राग विभास ताल रूपक–पद १३

अपने हाथ जिमावति जसुमति घृत पक मिष्ट दही भरि भाजन। इत उत पुत्र वधू लै वैठी देति ग्रास मुख विश्व निवाजन॥ भाग्य गरिष्ट वदति ब्रह्मादिक रहे मुनीस विचार समाजन। वृन्दावन हितरूप महरि घर मंगल हूँ लगे मंगल साजन॥

राग विभास ताल रूपक पद १४

सुनि मोहन यौं ग्वाल कहत सब गाइ चरावन चलतु न काहें। मैया हू अति लाड़ करति है बात कान दै सुनत जु नाहें॥ पहिलें हीं अति ऐंड भरयौ हो अब ऐंड़तु कछु और उमाहें। वृन्दावन हितरूप श्याम तोहि लै चलि हैं वन कौं बिनु चाहें॥

राग विभास ताल रूपक--पद १५

महरि गही ठोढ़ी जु सुबल की बेटा ऐसौ क्यों हठ कीजै। अति प्यारौ मोहन जु सखा तुम दिन दस याहि रहन घर दीजै॥ ग्वाल बहुत तुम संग दैऊँगी अरु मेवा गोदनि भरि लीजै। वृन्दावन हितरूप बहुत गुन मानैं अतिलड़ मेरे वचन पतीजै॥

राग बिलावल–पद १६

हलधर होड़ न कीजै तेरौ प्यारौ भैया। बली मेरौ बलिराम अति तो अनुज कन्हैया॥ कबहूँ जो यह घर रहै तौ अर न करैया। वृन्दावन हित-रूप पै बलि बलि गई मैया॥

राग बिलावल–पद १७

मैया ग्वालनि कौं सिखै लायौ बलदाऊ। तोहि काल्हि बन लै चलैं करि कोटि उपाऊ॥ हौं जु करौं आधीनता यह फिरै भगराऊ। हँसि हँसि कैं सब सखनि सौं मेरौ करै चवाऊ॥ औरनि सौं करै मित्रता मुहि गनैं बटाऊ। याके कौतिक कहा कहौं आछौ न सुभाऊ॥ महरि कह्यौ मुसिकाइ कैं चुप रहि उरभाऊ। वृन्दावन हितरूप तू भयौ श्याम लराऊ॥

राग बिलावल–पद १८

मैया मानति बात तू बेटा हलधर की। अब न रहौं घर पास तो कहि भौंह जु फरकी॥ उलटी ही सी चाल कछु या नंद नगर की। करैं चवाव जु नारि नर सब ही घर घर की॥ हौं न गयौ वन चारि दिन लखी सब अंतर की। मोहि बतावत है जु भय ये बड़े महर की॥ बेटा तेरी रीस कौं

करै कहैं जु डर की । वृन्दावन हितरूप हौं बलि सुंदर वर की ॥

राग विलावल-पद १६

लोक मुकुट मणि वहुरिया मेरे गिरिवरधर की । तू मेरो लाइक कुँवर कहौं उर अंतर की ॥ लरज्यौ विधि जु असीस मैं लई नारी नर की । सुखित करन मिली दुलहिनी शोभा मो घर की ॥ तप फल कै परजन्य नृप कै सुकृत महर की । सुत मिठ बोला पुनि वधू दाइक आदर की ॥ मैं पाई संपति जु यह निगमनि ते पर की । वृन्दावन हितरूप चलि आवै वात न तरकी ॥

राग बिलावल-पद २०

मेरे मोहन की दुलहिया नित लगत नई है । कौंन भाग व्रज भूमि कौ जहाँ प्रगट भई है ॥ अमृत घरी वह कौंन विधि जब कलम लई है । इहि समान नहिं दूसरी करिसकौ दई है ॥ को सतवंती टहल करिकैं मैं रिझई है । ता मुख की जु असीस यह सुख वेलि वई है ॥ बेटी रावल भूप की छवि अचिरज मई है । वृन्दावन हितरूप लखि दृग भूख गई है ॥

राग विलावल इकताला-पद २१

लाल मन मोहन हो कही कछु ललिता सौं हँसि बात । रूपवंत गुन-वंत न मो सो सुनि सखी कमनी गात ॥ अपनी स्वामिनि की परसंसा करति रहति दिन राति । मैं ढायौ मद मदन रूप अस तुम जु कूट करि जाति ॥ समुझि न्याइ बोली जु विचच्छन कछु इक दई सुहाति । वृन्दावन हितरूप आपनी वांउ बहत इतराति ॥

राग ब्रजवासिनीनु की टेर-पद २२

लाल तुम्हारी नव वधू ऐसी लोकनि नाहिं ॥ अतिलड़े रूप गुमानी नंद के ॥ देखौ अपु तन गोर तन रूप तोलि मन माँहि॥ अतिलड़े०॥ दर्पनलै मुख देखियै इत उत दोऊ ओर ॥ अतिलड़े० ॥ अपने मुख साँची कहौ एहो नवल किशोर ॥ अतिलड़े० ॥ हँसत कहा मुख मोरि कैं ऊतर मोकौं देहु ॥

अतिलड़े० ॥ लागत या छवि छाँह से यामें नहिं संदेहु ॥ अतिलड़े० ॥ गज ऊँचौ सब कटक में अधिक सिहायौ हीये ॥ अतिलड़े० ॥ जब ठाढ़ौ गिरितर कियौ तब सकुच्यौ अपु जीये ॥ अतिलड़े० ॥ ऐसें बुद्धि विचारि कें लाल बोलिये न्याइ ॥ अतिलड़े० ॥ स्याम विलगु जिनि मानियौं वचन कहौं सति भाइ ॥ अतिलड़े० ॥ गोकुल पति की कुल वधू रावलपति की धीय ॥ अतिलड़े० ॥ काहू लोक ने विधि रची नहिं नख पटतर तीय ॥ अतिलड़े० ॥ अधिक बनाउ जु तुम करत ह्वै न सकत इहि रीस ॥ अतिलड़े० ॥ मोर पच्छ को मुकुट यह नवै सहित ह्याँ सीस ॥ अतिलड़े० ॥ मदन मोहन तुम सौं कहैं सब कोउ साँवल गात ॥ अतिलड़े० ॥ विनु उद्दिम मोहे जु तुम अधिक कहौं कहा बात ॥ अतिलड़े० ॥ वारौं कोटिक मोहनी विद्युत निकर अनेक ॥ अतिलड़े० ॥ यह अतिलड़ि वृषभानु की शोभा सींवाँ एक ॥ अतिलड़े० ॥ घर घर कौ माखन हर्यौ वन वन माँग्यौ दान ॥ अतिलड़े० ॥ राजनीति समुझौ नहीं नहीं समझौ कुल कान ॥ अतिलड़े० ॥ प्यारी कर की मूँदरी मैं परखी तुम पाँनि ॥ अतिलड़े० ॥ छुटे न लच्छन चोर ये सुनौं कुँवर दै काँनि ॥ अतिलड़े० ॥ नंदन घोष नरेस के औगुन दीजे छोरि ॥ अतिलड़े० ॥ लला मूँदरी दीजियै हँसत कहा मुख मोरि ॥ अतिलड़े० ॥ मुँदरी लै प्यारी मिले लोभी रूप निराट ॥ अतिलड़े० ॥ सखी हँसीं प्यारी हँसी निरखि चातुरी घाट ॥ अतिलड़े० ॥ तुम सागर छवि सींव ये सुनहु कुँवर व्रजराज ॥ अतिलड़े० ॥ छाँड़ौ वचन गरूरता झगरो जिनि वे काज ॥ अतिलड़े० ॥ सनमुख देखौ दृष्टि भरि क्यों रहे ग्रींव नवाइ ॥ अतिलड़े० ॥ गरुवौ रूप जु दुलहिनी सकत न दृष्टि उठाइ ॥ अतिलड़े० ॥ वचन सखी अरु स्याम के सुने महरि रही ओटि ॥ अतिलड़े० ॥ मित न विचारत भाग्य फल सचति हियें सुख कोटि ॥ अतिलड़े० ॥ भाग सुहाग जु राधिका सजनी करति प्रसंश ॥ अतिलड़े० ॥ जोरी लोक सिरोमनी जीवन श्रीहरिवंश ॥ अतिलड़े० ॥ चलि हितरूप छकनि छके इत उत उभै किशोर ॥ अति-

लड़े० ॥ वृन्दावन हितरूप वारनैं प्रेम बढ़नि दुहुँ ओर ॥ अतिलड़े रूप गुमानी नंद के ॥

राग विहागरौ–पद २३

दूलहु दुलहिनि रंग भरे हैं । लै गई पावन सर सखि महलनि घृत पक भोग धरे हैं ॥ भाजी अरु तरकारी अगनित पापर घीय तरे हैं । अध-वट दूध वतासा सुभग मलाई माँहि ररे हैं ॥ विविधि अथाने विविधि मुरब्बा लागत स्वाद खरे हैं । जेंवत हैं रुचि मानि परस्पर दंपति रंग ढरे हैं ॥ लिये कर ग्रास निहोरत इत उत दृग दृग रूप अरे हैं । नेह सिंधु के गहर मनौं मन मीन जु जाइ परे हैं ॥ वचननि की रचना मृदु मुख तें मानौं फूल झरे हैं । भोजन सैंन क्रियौ जु तृपित ह्वै और भाव उघरे हैं ॥ जल भारी लाई जु सहेली अचवन दुहुँनि करे हैं । कीनी साजि आरती जै जै शब्द सबनि उचरे हैं ॥ हिये भई रस ललकनि निकर अनंग जिननि निदरे हैं । वृन्दावन हितरूप सैंन मंदिर कौ पुनि निसरे हैं ॥

राग विहागरौ चौताला–पद २४

तलप वैठे रस उनमद पान डवा धरि सजनी ओट भई है । कोक कलानि विचछन दोऊ चौंप चौगुनी वेली काम वई है ॥ छिन छिन उठति सिंधु की सी लहरी सजनिनु सुमति प्रेम भिजई है । वृन्दावन हितरूप मदन गढ़ तोरन श्यामा श्याम कौतिकी रजनी सुख बितई है ॥

राग केदारौ–पद २५

पौढ़े नींद नैननि भरी । सोभा कैसे पुंज इत उत भुजा अंसनि धरी ॥ रति रन सूर किशोर जगि जगि रस लगाई झरी । मैं पियौ लगि रंध्र जारिनु पलक नाहिन परी ॥ यह रस चेटक रूप पीवत प्यास वाढ़ी खरी । वहुरि कब ह्वै है सखी री धन्य ऐसी घरी ॥ मदन मादिकता चढ़ी क्रीड़ा विविधि विस्तरी । या सुख में यह नींद वैरनि आइ आड़ी अरी ॥ चित्र पुतरी सी रही हौं ठौर तें नहिं टरी । वृन्दावन हितरूप चापन चरन पुनि अनुसरी ॥

दोहा

जसुमति मोद प्रकाश के वरने पद पच्चीस। मूरति दंपति लाड़ की ता पद रज मो सीस ॥ ठारह सै वत्तीसयौ वर्ष जु सावन मास। सुक्ल पच्छ पुनि द्वादशी कीयौ ग्रंथ प्रकास ॥ जव जव सृष्टि जु विधि रची प्रभु प्रगटे सव ठौर। कीरति जसुमति सम कहूँ लाड़ सुन्यौ नहिं और ॥ रस रसकनि हित विस्तरन प्रगटे साँवल गौर। या रस विनु दूजौ कहाँ हो रसिकनि कौं ठौर ॥ वार वार दुलराइये हित पद्धति अनुसार। जो नातौ तजिकैं भजै तौ छानतु है छार ॥ वरसाने नँदगाम कौ नातौ सजन अनादि। इहि तजि भजै जो आन विधि रसिक कहावै वादि ॥ सुख अनंत नाते सहित दुलरावै वहु भाइ। नाते विनु जैसें सिता चावै धूरि मिलाइ ॥ हैं अनादि दोऊ धन धनी विदित तात पुनि मात। नाते विनु नीरस जु कवि क्यों भाषत मुख वात ॥ नाते लाड़ जु वरन ते वली प्रेम हिय होइ। कुकवि पिट भरा खात खरि स्वाद तसमई खोइ ॥ पुस्कर मंडल कृष्णगढ़ नृपति वहादुर धाम। दूलह दुलहिनि के कथे चरित परम अभिराम ॥ जिनकौ नातौ रीति इहि रसिक महा मति सोइ। वृन्दावन हित पान करि तिनकी पद रज धोइ ॥ वेद कह्यौ आगम कह्यौ कह्यौ पुरान पुकारि। जो प्रसाद जसुमति लह्यौ सु लह्यौ न विधि त्रिपुरारि ॥ निर्मल मति हस्ताच्छरनि लिख्यौ केलि निज दास। कीरति जसुमति कृपा करि दीजै पौरि निवास ॥

॥ इति श्रीजसुमति मोद प्रकाश ॥

श्रीराधा लाड़ सुहाग

दोहा—रस पद्धति के मुकुट मणि जुगल हिलग हिय लाग। बंदौं श्री हरिवंश पद मूरति विवि अनुराग॥ १॥ प्रेरति मेरी सुमति कौं समरथ वार-वार। गौर श्याम कौतिक चरित उठति कहनि उदगार॥ २॥ श्रीराधा विपुल सुहाग को सागर सरस्यौ हीय। लाड़ रतन ता मधि भरे रसिकनि लागैं प्रीय॥ हित रूपी गुरु की कृपा काढ़न समरथ सोइ। मन मरजीया पैठिकैं लावै सुमति टटोइ॥ ४॥ हौं लघुमति नहिं करि सकौं राधा लाड़ प्रसंस। जो चाहै सोई करै कृपा जु श्रीहरिवंश॥ ५॥

राग विभास ताल आड़—पद १

सुमति गगन में प्रेम दिवाकर उदित भये सुख संपति दरसै। पद पर-नम्य धनी रस पद्धति मंगल बेला कृपा किरिनि ताही छिन सरसै॥ गौर श्याम रस रतन अलौकिक परषि दृष्टि अब तिमिर न परसै। बृन्दावन हित-रूप होंहि गुरु दत चिन्हार अस गिरा गम्भीर उमगि रस बरसै॥

राग विभास ताल आड़—पद २

प्रनऊँ या रस प्रचुर जु करता अलभि लाभ जो विनु श्रम लहि हौं। श्रीहरिवंश कृपा जु कलपतरु ता सेवन तें जदपि अगह पै ताहू गहि हौं॥ फलरूपी व्रजभूमि सबै है इष्ट सुदृष्टि विपिन परि रहि हौं। बृन्दावन हितरूप गोप्य रस अनुभव जनित छंद रचि कहि हौं॥

राग रामकली ताल रूपक—पद ३

रसिकनि हित अनुग्रह करयौ। नंद अरु वृषभानु घर वपु आनि रस मय धरयौ॥ ग्रन्थ नीरस सर जु सूखे तीर मचलि जु परयौ। तृषा क्यौं करि जाइ आमा लागि के तन गरयौ॥ हठी वादिनु समझि कैं तद्दपि न सो परि हरयौ। पंडित मानी भये हरि की ओर चित्त न ढरयौ॥ जो हरिनु खोजैं

जु वन में झूठ भ्रम पचि मरयौ। तत्व छिलका छान हीं कहैं ब्रह्म इनमें ररयौ॥ प्रभु दिखायौ सिंधु रस कौ महा गहर जु भरयौ। धन्य भक्त रसग्य गरुवौ सुख जु जिनि आदरयौ॥ गोप ग्रह लीला रची जिनि सवनि कौ मन हरयौ। जो न याहू सुनि द्रयौ तौ जठर काहे न जरयौ॥ गौर साँवल चरित अम्मृत कौ जु वारिद झरयौ। जन अन्यनि धापि पीयौ नीर सनि विसरयौ॥ मुरली सव गुन ग्राम लोकनि प्रेम जिनि विस्तरयौ। निकर जो आनंद ताकौ कोप व्रज उघरयौ॥ लाड़ राधा लाल कौ व्रज जननि उर सँचरयौ। वृन्दावन हितरूप प्रेमिनु हिय जु वरवस अरयौ॥

राग रामकली ताल मूल–पद ४

रावलपति गोकुलपति जिन कुल चरित कहाँनी ओर न पायौ। रसिक भाग कौ उदौ कहा कहौं रस अंवुद जु घुमड़ि वरपायौ॥ लीला रची अलौकिक नाना लोक रीति मुनि ज्ञातनि गायौ। वृन्दावन हितरूप अनन्यनि सुधन पाछिलौ दुरयौ दिखायौ॥

राग रामकली ताल रूपक–पद ५

सुकृती श्याम भागिनु वली। दुलहिनी राधा वरी हिय लाग वेली फली॥ सुख अपूरव विलसहीं निसि मानि अति रँग रली। होतु आवै भोर ज्यौं हिय ललक वढ़ति जु चली॥ तलप मंदिर सेवहीं मन की लियें रुचि अली। जुंगल प्रेम गरूर सैंना मदन की दलमली॥ अलप रजनी रहैं सोयें भाँवते विधि भली। वृन्दावन हितरूप निरखि सिंगार गति वदली॥

राग रामकली ताल रूपक–पद ६

दुलहिनि शेप रजनी जगी। खुलत वदन मयंक जा लखि तिमिर सैंना भगी॥ सनैं सनैं पट आभरन कर वर सँवारन लगी। वृन्दावन हितरूप जूरो सचति लट सगवगी॥

राग रामकली ताल रूपक–पद ७

ऐसी दुलहिनी को लोक। विनामित जिहि रूप दूलह दृगनि नान्ही

ओक ॥ तृपिति कैसें होहि घूँघट की जु गाढ़ी झोक । महा कोविद श्याम श्यामा पढ़ी विद्या कोक ॥ नैन मुख देखन अरबरत नहीं मानत रोक । वृन्दावन हितरूप छुटति कटाच्छि पैनी नोंक ॥

राग विभास ताल आड़–पद ८

अति शोभा कौ निकर दुलहिनी सजति निचोलनि बोलनि धीरी । झूमनि झुकनि अंग आलस की ज्यौं ज्यौं हौंन लगी पह पीरी ॥ सहि न सकति यह नींद बिछोहौ आवति सरस पवन लगि सीरी । लोभी लाल कहत पुनि बिरमौं प्रात भयौ यौं प्रिया कही री ॥ परम रँगीली अति सकुचीलो मन मिलु सखी बुलाई नीरी । वृन्दावन हितरूप सँवारति अंक माल लट उरझि रही री ॥

राग विभास–पद ९

प्रातही चली सासु सनमानन नंद भवन कौ गहनौं जोहै । लाज जिहाज दुलहिनी सजनी रचति घूँघटी सूही सारी इहि बिधि सोहै ॥ ढँपैं अनुराग मनु विधु दामिनि कहिवे कौं उपमा अरु कोहै । वृन्दावन हितरूप लाल मुख खोल निहारी मन गज दहल्यौ कढ़न वल टोहै ॥

राग विभास ताल रूपक–पद १०

सनैं सनैं पग धरति अजिर मधि काम की मुनी सी बोले बिछुवा झनक है । रजनी के सेस जागी करत कतूहल मानौं कियौ जु निवास छवि वेली कनक है ॥ आलस के भार नवति सुकुँवारी मानौं मोहन की मोहनी सी अंगनि वनक है । वृन्दावन हितरूप सजनी कै अंस भुजा महरि कैं कान परी पाइल भनक है ॥

राग विभास–पद ११

आदर दै अंक लई गहकि असीस दई रोंम रोंम सुखित भई घोप रानी। इक कर सीस चिवुक कर दूजौ वदन बिलोकि कछु उचरी वानी ॥ दुहूँ कुल लाड़ भरी विपुल सुहाग भरी नवनि सुसीलता तो मो मन मानी । वृन्दावन

हितरूप डीठ भार संकित अंचल की ओट देकैं वारि पियौ पानी ॥

राग विभास-पद १२

रावलपति कुल मंडन राधा कहि अभिलाष होहि जो तेरैं। भवन अलंकृत करनि सभगिनि उचरि वचन मुख रहि मो नेरैं॥ पीहर पूरी समझि परावधि लेहि आसिका साँझ सवेरैं। बृन्दावन हितरूप तोहि आनँद दैन उतकंठा मेरैं॥

राग विभास-पद १३

मणि चौकी लै वैठी रानी लाड़ति भोर भान ज्यौं थाती। वड़े सजन की कुलमणि राधा देखत ताहि सिरानी छाती॥ कवहूँ कुल रस रीति सिखावति कवहूँ दैंन सिखावति गाती। कवहूँ विधना कीजु चातुरी परखति अंग हिये जु सिहाती॥ वधू लोक मणि किहिं कृत पाई इहि सुख मगन रहति दिन राती। बृन्दावन हितरूप मोहनी संपति पाइ प्रेम सरसाती॥

राग विभास ताल मूल-पद १४

पट भूषन अमोल व्रजपति नैं पुत्रवधू हित सुविधि मँगाये। अतिसै मुदित करन गोरांगी चुनि चुनि सुहथ महरि पहिराये॥ छवि कौ निकर रची जो विधिना तिहिं अँग परसि अधिक दरसाये। तापै लाड़ भरनि भई ऐसी जसुमति निरखि पलक झपि आये॥ भूरि वलैया लेति रोहिनी तोरि तोरि तृन वधुनि वगाये। बृन्दावन हितरूप नये नित मंगल नंद सदन रहें छाये॥

राग विभास ताल चौतालो-पद १५

फिरति है सखिनु दियें गर वहियाँ मन आनंदित रूप जोति चाँदनों करति है। अवनी रचति पाँवड़े मानों पद अरुनाई फैलति जहाँ तहाँ लटकि धरति है॥ प्रीतम लगे झरोखनि निरखत उमगि उमगि छवि दृगनि भरति है। बृन्दावन-हितरूप दुलहिनी कंत लोकमणि ताहू की मति थकित करति है।

राग कालिंगरो ताल मूल-पद १६

मुरली धर भागिनु जु भर्यौ है। रूप ऊजरी कुल जु ऊजरी श्रीराधा

वरु सुविधि वरयौ है ॥ गुननि ऊजरी लोकनि ऐसी मोकौं निश्चै जानि परयौ है। रावलपति की सुता सुलच्छन सील सुजस जग प्रगट करयौ है ॥ मन पट रँगे प्रेम रैंनी सौं कितौ संचि इहि सुमति धरयौ है। करत प्रसंश नारि नर सबही पोष पाइ तन होतु हरयौ है ॥ धनि ब्रजपति ब्रजरानी जिन कौ सुकृत पाछिलौ यह उघरयौ है। गौर श्याम हितरूप जियौ चिरु वृन्दावन हित यौं उच्चरयौ है ॥

राग कालिंगरौ ताल मूल–पद १७

दै दै जाहु असीसैं एरी। सबके मुख की मोहि फली है यातैं विनती करौं घनेरी ॥ सुत कौं मिली दुलहिनी राधा पूजी मन अभिलाषा मेरी। ता दिन तें बरपति जु उलैंडनि मेरे घर आनंद की ढेरी ॥ कोऊ है सुलच्छनी इहि पुर सो आई जु दई की प्रेरी। मैं लीनी जु ओटि कैं अंचल वह उच्चरी शुभ घरी बड़ेरी ॥ सुत जनम्यौ भयौ व्याह बड़े घर मैं तादृत सुख रासि सकेरी। वृन्दावन हितरूप चाँदनौं भयौ कुल की नसि गई अँधेरी ॥

राग भैरौं ताल चर्चरी–पद १८

मदन कौ मद हरन गौर साँवल वरन। अजिर मधि नागरी लाल निरखत दुरे महा छवि छकनि सौं ठुमकि राखति चरन ॥ कलापिनु कुहक पुनि कोकिला नाद कल हंस किलकार आनंद अति उर भरन। गान सजनीनु कौ भात ब्रजपति भवन सुर वधू सुनि लगीं कुसुम वरषा करन ॥ सप्त सुर सचति पुनि रचति हैं तान बहु रसिक ब्रजचंद कौ मन जु वरबस हरन। चारु चौकी बिछी महरि बैठी जहाँ अंक में दुलहिनी विविधि शोभा धरन ॥ गाइनिनि देति सनमान भागिनु भरी जलद आनंद कौ घमडि लाग्यौ झरन। कुँवरि की अली अति सुघर सब विधि भली नाद के सिंधु मन मीन लागी तरन ॥ गाइ री गाइ कीरति जु कुल मण्डनी हौं सुनौं श्रवन तो गान मुख उच्चरन। वृन्दावन हितरूप सुर जु प्यारी भरयौ उर भयौ ताँवरौ सुनत नारी नरन ॥

राग भैरों ताल चर्चरी–पद १६

सुघरता समुझि परी मधुर सुर भरन में। सासु के निकट वैठी जु नव दुलहिनी अमी वरष्यौ अमित राग उच्चरन में॥ भुराई चातुरी दोऊ पूरन जहाँ नवल वैसंधि लसै कनक तन वरन में। जील की लैन अरु देंन करताल की मदन सुनि थरहरयौ नाद विस्तरन में॥ अरी गुनवंत मेरी जु कुल वहुरिया महरि चूँवन लगी लै जु कर करन में। सखीं तृन तोरि रहीं रोहिनी प्रेम वस वधू परसंस लगी करन घर घरन में॥ हंस किलकार कोकिल जु फीकी लगैं निकर आनंद अस भोर ही झरन में। वृन्दावन हितरूप अहा वरनौं कहा सुख समातु न हीयें मुरलिका धरन में॥

राग भैरों चौताला–पद २०

सखी कीरति जु पठाई नंद महर घर अपनी अतिलड़ि पास। समाचार लै आउ विचछन विरमि कोऊ दिन जिनि वह होहि उदास॥ लीजो भेद भाव ललिता सौं केती प्रीति करति है सास। वृन्दावन हितरूप सुख पली प्रान सुधन मो अव ग्रह ससुर निवास॥

राग भैरों चौताला–पद २१

करै आवन जो अरवी सो कहो रानी किहिं विधि भाखौं वैंन। तुम ग्रह काज माँहिं भूलति हौ कोऊ पल प्यारी जु छिन विसरै न॥ मोहि देखि समुझैगी ऐसें मैया यह जु पठाई लैंन। वृन्दावन हितरूप धन्य दिन हौं आज भेटौं राधा देखौं नैंन॥

राग भैरों चौताला–पद २२

सखी कहियो अतिलड़ि सौं व्रज रानी कौ मन लीयें ही रहियो। तू कुलमणि रावल रानें की लाड़ गहेली कछु वढ़ि वचन न कहियो॥ सील सुभाव सुलछन तोमें तिनहिं सुमति गाढ़े करि गहियो। वृन्दावन हितरूप गोप गोपी जे आरज तिन असीस नित लहियो॥

राग भैरों ताल आड़–पद २३

तोहि वेगी बुलाइहौं तात कही यों पठै श्रीदामा वीर। कहियौ सासु सदन के सुख सब या सजनी सौं हे गौरंग सरीर॥ तो अज्ञा पालक मैं दीये दासी दास संग बहु भीर। बृन्दावन हितरूप नाम अहलादनि तेरौ जिनि जिय होहि अधीर॥

राग भैरों ताल चर्चरी–पद २४

हिता अज्ञा जु लै चली वह सहचरी। सँदेसे कहति हैं नगर की भाम सब करति हाँ हाँ जु गवनो महा मुद भरी॥ विविधि पकवान भूपन वसन सजि दिये महरि सौं कहन सादर जु विनती करी। सिता मेवा जु कीरति सुहथ आपनें सुता हित दई भरि लाड़ पुनि कोथरी॥ वारहूँ वार दीनी जु बहु आसिका सुखित राखौ दई मो दृगनि पूतरी। अनुज श्रीदाम की कंठ लगि भैंटिहौं धन्य विधिना करै कौंन वह शुभ घरी॥ देखिहौं आजु कीरति जु उर रतन कौं मन उमाह्यौ बढ़्यौ रवकि कैं धप धरी। नंद के ग्राम पुनि धाम पहुँची जबै सखी कौं देखि भइ कुँवरि हिय जिय हरी॥ अंक भरि मिली हैं प्रान से पाइकैं कुशल कुल बूझिकैं बहुरि बातनि ढरी। सँदेसे सबनि के कहति समुझाइ कैं अहा रस सुधा सी बदन विधु तें झरी॥ महा उरसाह सुनि बढ़्यौ राधा जु उर माइ के चाइ की बात कही भीतरी। बृन्दावन हितरूप विपुल मंगल सुदिन मात के लाड़ की वानि बूझनि परी॥

राग भैरों चौताला–पद २५

भेद दिन दिन कौ सजनी कुँवरि लाड़कौ लेति महरि के घर कौ। कछु अन बोली कछु रूखी सी रहति सयानी परखति हित अंतर कौ॥ कछु बूझति प्यारी की मरमिनि पुनि सनेह लखै नगर वगर कौ। बृन्दावन हित-रूप लाड़ सुख सबकौं भावै राधा मुरलीधर कौ॥

राग भैरों चौताला–पद २६

छेह काहू के उर कौ सखी न पायौ जिते नगर नर नारि। लाड़ करन

सब उत्कंठा गौर श्याम जीवैं वदन निहारि ॥ बिनु मित प्रेम घोषरानी कौ महरि लाड़ सागर बिनु पारि। वृन्दावन हितरूप गुननि कौं जपै जाप सब कहैं धनि भानु कुँमारि ॥

राग भैरौं ताल मूल–पद २७

श्रीराधा सुख वर्द्धन आई। दियौ पग पौरि घोष रानें के पुर मंगल विस्तरत सदाई ॥ धनि भयौ जनक धन्य भइ जननी जिननि सीख ऐसी जु सिखाई। भरि गयौ नंद भवन संपति सौं बिनमित शोभा बरनि न जाई ॥ धनि धीरज कीरति रानी कौ हेत मानि यह करी सगाई। महरि बीनती सुनि मन लरजी जदिपि गुनीले कुँवर कन्हाई ॥ कीरति कुँवरि इंदु सत वदनी पूरव तप पुन्यनि करि पाई। गिरि पूजन ऐसी विधि कीयौ इन्द्र परचौ पग बिजै मनाई ॥ परम सुशील शैल परचायौ धन्य धन्य कीरति की जाई। सखी प्रसन्न होति है सुनि सुनि अतिलड़ि की सब करत बड़ाई ॥ जसुमति प्रान सुधन ज्यौं राखति भानु वंश की कहै प्रभुताई। वृन्दावन हितरूप आगरी धन्य सभागिनि पिय मन भाई ॥

राग जैजैवंती चौताला–पद २८

कृपा वपु कीरति मैया मो कौं सजनी सुधि जु करति किहिं बार। हौं न बिसारति एकौ पल छिन अपने चित तें प्रान बसत उहिं लार ॥ जे जे अधिक लाड़ के समये सुधिकर बिवस हौंहु निरधार। वृन्दावन हितरूप दृगनि के आगे रहे मेरे फिरौं उहि अजिर मझाँर ॥

राग जैजैवंती चौताला–पद २९

कुँवरि सुनि मैया हिय की हिलगनि गाढ़ी दिखियत आठौं जाम। प्रात कलेऊ हित बड़भागिनि टेरै विवश ह्वै लेकें राधा नाम ॥ तेरे प्रेम मगन रहे रानी बिसरि गई सब घर कौ काम। वृन्दावन हितरूप जाहि सूनों सौ लागत तो बिन वह सुखधाम ॥

राग जैजैवंती चौताला—पद ३०

अरी सुनि सदन आइकैं तात कौंन विधि सुधि जु करति है मेरी। सदा सम्हारत रहते सुधन सौं भोजन विरियाँ लै वैठत है नेरी ॥ पुनि पुचिकार गोद में लै कैं लाड़ तोतली सुनत पहेरी। वृन्दावन हितरूप कौंन विधि विसरत हौंहिंगे मोहि हियेतें जिन उर दया दरेरी ॥

राग जैजैवंती चौताला—पद ३१

वीर श्रीदामा प्यारौ मोहि लैंन कौं कव आवन जु कहत हो। तेरी सासु साँवरी राधा मोहि खिजावन कहि हँसि चुप जु रहतु हौ ॥ मैया पय भाजन भरि देती मोहि प्यावत वह कर जु गहतु हो। वृन्दावन हितरूप अतिलड़ौ सोदर मेरौ अंतर पल न सहतु हौ ॥

राग ईमन चौताला—पद ३२

भटू वे मैना मेरी नीके रहति हैं छिन हू मुहि न विसरती। मैया पग पैंजनी गढ़ाई जिनि चरननि कौं ते मणि अजिर विचरती ॥ वावा मोद मानते सुनि सुनि जव मुख राधा नाम उचरती। वृन्दावन हितरूप चुगौ कर मेरे देखत कौतिक नाँनाँ करती ॥

राग ईमन चौताला—पद ३३

ग्रीव पचरंग तोता हरित वरन कौ मो जिय अति भावतु हो। ज्यौं श्रीदामहिं हों जु मल्हाऊँ ऐसें साधि सुर वह मीठें गावतु हो॥ मो कर उड़ि वैठितौ सभागौ हिय आनंद अधिक पावतु हो। वृन्दावन हितरूप कहतु हो प्रेम कहानी मो हिय भरि आवतु हो ॥

राग ईमन चौताला—पद ३४

प्यारी जू सवनि जतन सौं राखति रानी लाड़ करति ज्यौं तिहारौ। पंछी हू सव प्रेमी भये हैं राधा रटनि कौ जिननि गह्यौ व्रत भारौ ॥ कीरति सुहथ चुगावति तिनकौं वेहू लेत कछु अलप अहारौ। वृन्दावन हितरूप कुँवरि तुम आगम चाहत धनि छिन जव पगु धारौ ॥

राग ईमल ताल आड़–पद ३५

लाड़ देखन हौं आई कुँवरि तिहारो पठई कीरति माइ। सासु प्रेम गरुवौ कै हरुवौ तोलि बुद्धि वल तू जु नँदीश्वर जाइ ॥ कैसे रहति अतिलड़ी मेरी बात बूझिये मन जु मिलाइ। वृन्दावन हितरूप सवै रस रीति उहाँ की कहिये मोसौं आइ ॥

राग जैजैवंती चौताला–पद ३६

अहो रानी लाइक तुम सम इहि ब्रज कोहै धनि मुरलीधर माइ। गोपी गोप विमल गुन वरनत पुर पुर घर घर सजन जियत जस गाई ॥ पुत्र वली गोपाल निपुनभयौ ब्रज जन सवकी करी सहाइ। वृन्दावन हितरूप लोक भई प्रभुता पूरित धन्य घोप मनि राइ ॥

राग जैजैवंती चौताला–पद ३७

तुम्हे पग नवन कह्यौ है कीरति जू ने पुनि जु सँदेसो और। सुदिन विचार कहाइ भेजियौ मानि वीनती मोपै कृपा करौ जौर ॥ कहाँ लगि करौं प्रसंस आपकी आरज गोपिनु तुम सिर मौर। वृन्दावन हितरूप अतिलड़ी वेगि पठै हौ प्रान सुधन मम गौर ॥

राग जैजैवंती चौताला–पद ३८

दया की मूरति तुम हो ब्रजपति रानी मेरी अतिलड़ी भोरी। जो कुल रीति प्रीति सौं सवही तुम सिखवौगी लैहैं समझि किशोरी ॥ करुना कुशल माइ मुरलीधर विधि लाइकता दई न थोरी। वृन्दावन हितरूप सुकृत कियौ पूरव औंड़ो अव सुख रासि वटोरी ॥

राग जैजैवंती चौताला–पद ३९

अजू कीरति के विमल गुन सुधि कीजत है मुहि विधिना दरसाये। जे जे मनोरथ मो मन उपजे ते ते सवही नीकी भाँति पुजाये ॥ उनके कृत की हौं जु रिनी हौं एक वदन करि जात न गाये। वृन्दावन हितरूप धन्य रावलपति पत्नी कीये मो मन सव भाये ॥

राग केदारौ चौताला–पद ४०

करौं कीरति चित चीत्यौ पठऊँ अतिलड़ी मुहिं कल कैसें परि है। यह मम अजिर लगै फीकौ भाग्य भरी बिनु कौंन ठुमक पग धरि है॥ अंक बैठिकैं बात लाड़ की बिहँसि बदन को मोसौं करिहै। बृन्दावन हितरूप अहा फल भाग्य दिखावनि बिनु को भवन सुख भरि है॥

राग केदारौ ताल आड़–पद ४१

जोट मेरे मुरलीधर की सुघर विधाता रची मुहूरत कौंन। कीरति की कीरति सदेह ह्वै दरसी भाग्यवल सोभा भरन मो भौंन॥ सुर नर नाग लोक की वनिता जा आगें सबही भई गौंन। बृन्दावन हितरूप अहा अचिरज को बरनैं गहति शारदा मौंन॥

राग केदारौ ताल आड़–पद ४२

जाइ रानी सौं कहियौ एहो सुलच्छन सुता सुसील तिहारी। मेरौ रुख लीयें जु रहति है उर अहलादनि सब गुन रासि निहारी॥ छत्र सुहाग विराजतु जा सिर दुहुँ कुल कौ जस वर्द्धन हारी। बृन्दावन हितरूप वैस लघु समुझि परावधि रावल भूप दुलारी॥

राग हमीर चौताला–पद ४३

तात मुरलीधर सुनियौ भानु दुलारी गहनौं हमारे भवन। सबकौ मान बढ़ावनि वाला अति गुनवंती करौं बड़ाई कवन॥ कीरति जाई को विधि दीनी सोभा सील सुभाइक नवन। बृन्दावन हितरूप घोप रानी यौं बरनत सुनत नंद रुचि श्रवन॥

राग हमीर चौताला–पद ४४

आदि रजधानी उहि कुल प्रभु दई प्रभुता ये गुन दरसे न्याइ। ईख मिठास कियौ नहि होई सुनौ सभागिनि विधिना रच्यौ सुभाइ॥ भानुवंश वेली जु अमी फल लागे सदा सुमति कहै गाइ। बृन्दावन हितरूप उपजनौं खेत भानुपुर कहत घोप कौ राइ॥

राग विलावल ताल आड़–पद ४५

रतन होंहिं सिंधु ही हौं सुनी नहीं लघु सरवर इन खानि। उत्तम गुन यों होंहिं वड़े कुल सुमति लेहिं पहिंचानि॥ सजन सोधियत याही कारन रानी यह जिय जानि। घर वर शोभित करन वधू आवै राखनि कुल की कानि॥ संपति वृद्धि वृद्धि होइ सुख की होइ कुजस की हानि। वृन्दावन हितरूप धन्य सनवंध भानु कुल मानि॥

राग विलावल ताल आड़–पद ४६

रीझि गिरि देव नें हो दियौ यह मो आरज वरदान। सुत ब्रज भूपन वधू सुलच्छन दै राख्यौ मो मान॥ ओप वढ़ावन सजनि मिलावन कुल-मणि श्री महीभान। वृन्दावन हितरूप भाँति सव विधि जस रच्यौ वितान॥

राग विलावल ताल आड़–पद ४७

सहेली कुँवरि की हो सुनी व्रजपति व्रजरानी की वात। आई तुरत पांस अतिलड़ि कै फूल वढ़ी सव गात॥ भयौ डहडह्यौ आनन मानों प्रात खिल्यौ जलजात। वरनत कथा नंद मुख की सुनि प्यारी श्रवन सिरात॥ भानुवंश की अधिक प्रसंशा करी मुरलीधर तात। वृन्दावन हितरूप लाड़ सागर देख्यौ सरसात॥

राग विलावल ताल आड़–पद ४८

कुँवरि गुन आगरी हो सकल पुर जाके जस कौ जाप। सुखित भई श्रवननि सुनि सजनी सुहृदनि मुख आलाप॥ महरि करी मन खोलि प्रसंशा पुनि व्रजपति हू आप। वृन्दावन हितरूप छाइ रह्यौ राधा सील प्रताप॥

राग विलावल ताल आड़–पद ४९

धन्य पुर नंद कौ हो जहाँ वसत गुन गाहक सव कोइ। धनि मोहन की माइ क्यों न सव ता चित चीत्यौ होइ॥ गौर श्याम के लाड़ प्रेम सौं राखे हिये समोइ। गदले नीर रुचै को जहाँ नित वरसै अमृत तोइ॥ शोभा वढ़ी श्याम तन औरै में लीनी दृग जोइ। दुलहिनि छवि निरखत जु मदन

उर डारयौ लाज विलोइ ॥ रति पति लै गई पछमनौ रह्यौ सकुच धर सोइ। बृन्दावन हितरूप जोट अस नहि लोकनि टकटोइ ॥

राग विलावल ताल आड़-पद ५०

सुनौं जू चित दै सुंदर श्याम। विविधि प्रनाम कही है तुमकौं भानु सुवन श्रीदाम ॥ गो चारन कौं आवत नित इत बचि निकसत इहि ग्राम। लाज जिहाज भये हौ अवही सिख सुनिकैं वलिराम ॥ हमैं मिलन अभिलाप तिहारी रहति जु आठौं जाम। तुम सनेह कौ मारग भूले धरयौ निर्मोही नाम ॥ सज्जनता है वाट तुम्हारे अहो सुमति अभिराम। बृन्दावन हितरूप जानियौ यह वह एकै धाम ॥

राग विलावल ताल आड़-पद ५१

सखी सँदेसौ लै चली सवहिनि के चित कौ। प्रेम सिंधु घट घट लख्यौ एजू विनमित कौ ॥ कछु वानी कछु उर सच्यौ प्यारी लाड़ जु नित कौ। उत प्रेरी कछु वुद्धि वल गहरौ अति इत कौ ॥ कैसें तोल वताइ है सुमेर सव वित कौ। रूप अनूप अकृत है बृन्दावन हित कौ ॥

राग विलावल-पद ५२

सजनी आई भानुपुर कीरति उर भेटी। पाई प्रान समान ही राधा मनु वेटी ॥ गाढ़ फंद भुज विच भरी सव अंग लपेटी। तन की सुधि विसरी सवै उर प्रेम खखेटी ॥ सनैं सनैं न्यारी करीं सहचरि महरेटी। बृन्दावन हितरूप पुनि रानी सुमति समेटी ॥

राग विहागरौ चौतालौ--पद ५३

अरी आजु सगुन भलौ भयौ मंगल वासर राधा सँदेसौ तू लाई। मैं किये पलक पाँवड़े मारग तो आवन कौं कहि कछु हरपि वधाई ॥ कैसें रहति श्रीदामा अनुजा कैसैं मिलि तोसौं वतराई। बृन्दावन हितरूप अहा मेरी चंपक वरनी धन्य देखि तू आई ॥

राग विहागरौ चौताला–पद ५४

चलत तुहि क्यों धरयौ धीरज मुहि यह अचिरज वा उर प्रीति घनेरी। कहि बड़ भागिनि अमृत वानी ज्यों की त्यों ही हौं वलाइ लेंऊँ तेरी ॥ जाकौ हृदौ कमल हू तें कोमल संग विछोह सकें क्यों एरी । वृन्दावन हित-रूप प्रेम जाके साथ औतरयौ ऐसी सुता राधा मेरी ॥

राग विहागरौ चौताला–पद ५५

समझि बोली जु विचछन मन धीरज धरि वचन अमी संवलित । पूरव सुकृत गहकि बढ़ी वेली भानु वंश की सो जु भई अब फलित ॥ कहाँ इहि लोक सुता राधा सी गरुवे लाड़ दुहुँ घर पलित । वृन्दावन हितरूप नंदपुर सबहि नारी नर गुन वरनत जाके ललित ॥

राग विहागरौ चौताला–पद ५६

लाड़ सुख के सागर में पैरत नित उठि में न थाह जाकी पाई । भाँवरि परत शुभ घरी ऐसी कोऊ वरति गई विधि हू विचार न आई ॥ राधा नाम धरति कै ताछिन अमृत वेला दई दिखाई । वृन्दावन हितरूप ह्वै सब थिर चर जा सुनि तुम कुल अस प्रभुताई ॥

राग विहागरौ चौताला–पद ५७

बहुरि सुनौं रानी मन दै उहि पुर घर घर राधा जस की कहानी । कोउ तृपिति न होइ श्रवण सुनि अतिलड़ि मुख की ऐसी मीठी वानी॥ जूथनि मिलि आवति हैं वनिता वदन निहारि वारि पियें पानी । वृन्दावन हितरूप अधिक अब दरसन लागी नंद महर रजधानी ॥

राग विहागरौ चौताला–पद ५८

भयौ तीरथ जु नंदपुर गाँव गाँव तें वनिता देखनि आवें । मंगल नयौ रहै नित उहि घर मुख दिखराई भेंट अपूरव लावें ॥ दिन दूलह ब्रज-राज लाड़िलौ दिन दुलहिनि प्यारी न्याइ कहावें । वृन्दावन हितरूप प्रेम रहै भीजी जसुमति नित गिरि कृपा मनावें ॥

राग विहागरो चौताला–पद ५६

महरि रहे वदन विलोकति प्यारी जू कौ ज्यों शशि ओर चकोर। पर-सन देहि रुखाई न मन कौं हाथ लिये रहे जैसें खाँस साधैं चोर॥ कवहूँ वाग तड़ाग दिखावै कवहूँ जाइ पावन सर ओर। वृंदावन हितरूप कोटि सुख कैसे लूटै व्रजरानी निसि भोर॥

राग विहागरो चौताला–पद ६०

महरि के चित की वृत्ति नित दहलत प्यारी लाड़। सुत हू तें अधिक प्रीति वढ़ी रानी कछु अनोंखी मैं जु निहारी चाड़॥ अतिलड़ि हँसै मान वहु पायौ परे छवि गहर कपोलनि गाड़। वृन्दावन हितरूप दीठि कौ भार गनि रानी देइ मुख अंचल आड़॥

राग विहागरो चौताला–पद ६१

करै जव तुम मिलिवे की मन सुधि प्यारी और न कछु सुहाइ। लाड़ अनोंखौ रचै व्रजरानी वधुनि वोलि कैं छिन में लेहि हँसाइ॥ गाढ़ प्रीति सौं चिवुक प्रलोवै नंद घरनि उठै मधुरे गाइ। वृन्दावन हितरूप चतुर पुनि भोरी किशोरी राखै प्रेम परचाइ॥

राग केदारो ताल आड़ चौताला–पद ६२

प्यारी लई महरि ने परचाइ। वोलि नवला वाल पुर की देहि ढिंग वैठाइ॥ कोऊ कहै रुचती कहानी कोऊ रिझावै गाइ। कोउ लेहि लगाइ वातनि जव करै सुधि माइ॥ छेह परन न देहि मन कौं करहिं विविधि उपाइ। मृदुल चित गौरांग सवसौं लेहि मन जु मिलाइ॥ करहिं विपुल सनेह चित की वृत्ति देइ उरझाइ। वानी जाकी मोहनी सुंदर सुशील सुभाइ॥ कुँवरि सवकी लाड़िली वहु गुननि की समुदाइ। सुख जु सरसत रहे वासर जात जान्यौ न जाइ॥ जो जो मन कौं रुचै सो सो महरि देहि मँगाइ। उच्च भाग सुहाग कुल मंडनि जु रावल राइ॥ घोप जस सलिता वहाई अस जु लाइक आइ। वृन्दावन हितरूप कहा कहौं अधिक और वनाइ॥

राग केदारौ चौताला–पद ६३

मोहि कहि परै न एक मुख तुम अतिलड़ि कौ सुख सागर विनु पार। साखु न ऐसी लोक सुनी मैं जैसी जसुमति मनहुँ दया आगार ॥ रुचि पहिंचानति रहति कुँवरि की उर वर गरुवौ करति विचार। वृन्दावन हितरूप लाड़ नित नये उपावति राखति अपनें लार ॥

राग केदारौ चौताला–पद ६४

घोप रानें मुख वातें हौं सुनि आई तुम जु सुनों दै कान। रावर आइ कहत जसुमति सौं भानु दुलारी राखियौ प्रान समान ॥ इहि सनवंध भाग्य फल मान्यौ तुम कुल कौ जस कियौ वखान। वृन्दावन हितरूप प्रेम उर उझलि जु आयो राख्यौ रोकि वलवान ॥

राग केदारौ चौताला–पद ६५

रोहिनी रानी के गुन कहौं कहाँ लगि लै वैठति प्यारी अंक। सुहथ सिंगार करति वड़ भागिनि दृग अंजन दै निरखति वदन मयंक ॥ राधा मन उन सौं अति परच्यौ होहि मुदित करै वात निसंक। वृन्दावन हितरूप माइ वलि कीयौं राखति जैसे थाती रंक ॥

राग केदारौ चौताला–पद ६६

सुहृद उपनंद की रानी आइ महरि ढिंग सिद्या जाति नित दैकैं। वड़े सजन की वेटी हम घर व्याही आई राखौ इहि मन लैकैं ॥ गहवर आवति महरि हिये अति चुप ह्वै रहति अमी सौं अचैकैं। वृन्दावन हितरूप कछू मन जपति जाप सौ गिरि सनमुख सिर नैकैं ॥

राग अड़ानौं चौताला–पद ६७

अरी कछु नंद सुवन कौं तैं परख्यौ है वदल्यौं सील सुभाउ। याकी देहुँ वधाई तोकौं कहि जु खोलि मन निपट निकट मो आउ ॥ जसुमति लाड़ घनेरो कीनौं प्रेम छके रहे गोकुल राउ। वृन्दावन हितरूप सुधन दुहुँ घर मुरलीधर तिनके लचन गाउ ॥

राग अडानौं चौताला–पद ६८

अहो रावलपति रानी मुहि दियौ आदर श्याम कमल दल नैंन । घर घर की कुसरात वूझिकैं महा मुदित भये पुनि भाखे अस बैंन ॥ कहियौ सुमति जुहार हमारौ रानी जू सुनि पावैं चित चैंन । बृन्दावन हितरूप तात श्रीदाम सहित लगजैयौ सँदेसौ दैंन ॥

राग अडानौं चौताला–पद ६६

बुद्धि कछु औरै पलटी नंद सुवन की भयौ लाइक कुल गोप । तात सिरायौ हीयौ सब विधि मुरलीधर नें घोप वडाई ओप ॥ अंग अंग सुंदरता की हद उपमा देत होति सब लोप । बृन्दावन हितरूप सहाइ करी व्रज भुज-वल भंजि इन्द्र मद कोप ॥

राग विहागरौ ताल आड़–पद ७०

रानी कीरति जू लाड़ की भूख रहै मन मेरें । वाट बुलावन की जु निहारौं नित उठि साँझ सवेरें ॥ देहि पुचिकार ग्रास मुख सादर लै वैठारैं नेरैं । बृन्दावन हितरूप कृपाकरि बहुरि सीस कर फेरैं ॥

राग विहागरौ ताल आड़–पद ७१

रानी कीरति परम कृपाल कौ नहीं भूलौं लाड़ जु छिन घरी । महरि महा मनहू तें अधिकी नित करुना उर रहै भरी ॥ मो पर भयौ दयाल दई जिनि उनकुल प्रभुता विस्तरी । बृन्दावन हितरूप पोपि मो चित की वृत्ति सुखित करी ॥

राग विहागरौ ताल आड़–पद ७२

जहाँ मन जु भाँवरे लेत है भावै संपति मोहिं उहि ग्राम की । अति रसमई भूमि दरसति है प्रेम नृपति विश्राम की ॥ मोहू उर अभिलाप वढ़ति देखन श्री कीरति धाम की। बृन्दावन हितरूप जहाँ रट पंछिनु राधा नाम की॥

राग विहागरौ चौताला–पद ७३

दीजिये जू मोहि वधाई माइ लली की सुमति लाल की में गाई । हिये

माहिली हिलग मुरलीधर इहिं विधि रानी मुहि एकांत सुनाई ॥ कीरति दीयौ हार हिये कौ पटभूषण दै सुविधि पहिराई । वृन्दावन हितरूप महा मंगल सुनि मान्यौ मोहन मन की समुझि थाह कछु पाई ॥

राग विहागरौ चौताला–पद ७४

लै गई सखी कौ भुज गहि अपनें महल में श्रीदामा की घरनि। कुंवरि कुँवर कौ प्रेम जु कैसौ मोसौं विचच्छन तू नीकी विधि वरनि ॥ हँसि हँसि वूझति है अतिलड़ि की रहसि कहानी हिय सुख भरनि । वृन्दावन हितरूप कहति है सजनी मन मिलि रति रन सुभटनि लरनि ॥

राग विहागरौ चौताला–पद ७५

कौंन विधि कहौं इहि रसना सुख अतिलड़ि कौ पिय हिय गाढ़ी लाग। रजनी रंग बढ़तु है सागर गौर श्याम मिलि सजनी वदति धनि भाग ॥ रंगमहल झुकि लगति झरोखनि फूलि रहतु छवि कौ सौ वाग । वृन्दावन हितरूप लोक सवहिनु तें अगरौ राधा जू विपुल सुहाग ॥

राग विहागरौ चौताला–पद ७६

शैल की शिखिर जु मंदिर अस जहाँ रचना विधि के विचार न आवैं। रस भोगी संतत जहाँ रजनी कोक विचच्छन प्रेम खिलारी खिलावैं ॥ सुकृती श्याम सुधन लै पछिलौ छकि छकि कैं रस सखिनु छकावैं । वृन्दावन हितरूप घमड़ि घुरि आनँद वारिद वरसै हियो सिरावैं ॥

राग ईमन ताल आड़–पद ७७

देखि हौं आई कुँवरि को सुख सौभाग्य घनेरौ । राधा जू कह्यो संदेसौ कहियौ भाभी सौं यह मेरौ ॥ मैया सौं कहि वेगि बुलावै हौं गुन मानौंगी तेरौ । वृन्दावन हितरूप लैंन मुहि आवै वीर दरेरौ ॥

राग ईमन चौताला–पद ७८

वरनि अव सील सुघरता मुरलीधर की जे सब भाँति गुनीले । पुर चोरी वन दान माँगते हेजु ऊधमी परे कछु अव ढ़ीले ॥ जो अर धरते सौ

न छाँड़ते हे अपनी छवि छके छबीले। बृन्दावन हितरूप विके अब समभि परति है भूले गरव गरवीले ॥

राग मारू कोप ताल सूरफाकता-पद ७६

श्याम भानपुर मानत नातौ। होत परम आधीन देखि कै जो कोऊ ह्याँ कौ आवत जातौ ॥ तन डहडहौ निहारि होतु है अधिक सनेह जु मन सरसातौ। बृन्दावन हितरूप नाम अब चोरी दान सुनै सकुचातौ ॥

राग मारू कोप ताल सूरफाकता पद ८०

श्रीराधा की चाची ताई। कहि कैसें मेरी चंपक वरनी सबै सभागिनि बूभनि आई ॥ सजनी कहति भानु कुल मंडनि नीके कहि सबही समुभाई। बृन्दावन हितरूप लाड़ की वात बहुत भाँतिनु जु सुनाई ॥

राग मारू कोप ताल सूरफाकता-पद ८१

सुखित भई सब सुनि सखी वानी। हम कुल भई महामणि राधा जा मन लियें रहति ब्रजरानी ॥ धनि गौरंग लाड़ की मूरति धनि यह तात मात हम जानी। बृन्दावन हितरूप आगरी गुननि आगरी सब मन मानी ॥

राग कान्हरौ ताल आड़-पद ८२

श्री बृषभानु भवन आये जब। बूझत समाचार अतिलड़ि के बरनति है सहचरि नीके सब ॥ मूरति कृपा नंद जू की घरनी लेति अंक बैठारि सु जब तब। कुँवरि सनेह रहे उर भीजी लाड़ति है नित नित विधि नव नव ॥ तदपि अहो रावल राने जू तुम्हें कुँवरि विसरति नहिं त्रुटि लव। प्रेम विवश ह्वै कह्यौ किशोरी जू तात बुलाइ लैहिं मोकौं कब ॥ वल्लभ राज प्रेम भये पूरित उचरे कछु वदन तें मृदु रव। बृन्दावन हितरूप लैंन कौं पठै देहुँ श्रीदामा हौं अब ॥

राग कान्हरौ ताल आड़-पद ८३

कातू जु गई सखि पास कुँवरि कै। बूझत है श्रीदामा भैया कहि जु बात मन धीरज धरिकै ॥ कैसें है राधा जु सासु घर कहा सँदेश कह्यौ सुख भरि

कै। जिहिं विन देखैं तात मात के पलक जात हैं जुग से टरिकैं ॥ खेलन जाति वरजतौ हौं जव दुरि जाती मंदिर में डरिकैं। हँसि पुचिकार मनाइ लावतौ मैया ढिंग तव कर जु पकरि कै ॥ वड़े भोर माँगती कलेऊ जननी अंचल गहि जु झगरि कै। सो राधा ह्वै गई विदेसनि वावा हू रहे सुधि जु विसरि कै ॥ कैसौ लाड़ करति ब्रजरानी मो अनुजा सौं उर हित ढ़रिकै। भाग्यवली रावलपति कुलमणि हौं जानतु तू कहि जु उचरिकै ॥ सुनौं भूप नंदन जुँ सँदेसौ कुँवरि कह्यौ मोसौं मन जु उघरि कै। आवै लेन वेगि मम सोदर ऐसें कह्यौ गरें मो परिकै ॥ भोरेहु नाम तिहारौ सुनिके मृदु मन परति अधिक औदरि कै। वृन्दावन हितरूप प्रेम की मैं कहि जथा कथा विस्तरिकै ॥

राग कान्हरौ ताल आड़–पद ८४

पुनि वूझति अतिलड़ि की मैया। सखिनु सहित कैसें मेरी राधा कहि सजनी तेरी लेऊँ वलैया ॥ सासु ससुर की परम भाँवती विनुमित लाड दाहिनौ दैया। लेति वारनें सव ब्रज वनिता नित ब्रजपति रहै सदन वुधैया ॥ पैरति महरि प्रेम सागर में पाई वधू सुखनि सरसैया। वृन्दावन हितरूप सुनौं रानी राधा लैंन पठै देहु भैया ॥

राग कान्हरौ–पद ८५

धन्य जनम मेरी राधा कौ साखु लाड़ की मूरति पाई। धन्य भाग्य मानति है अपनौं महरि लियें मन रहति सदाई ॥ सवके लिये उराहनें रानी सुत लाड़त यह प्रभुता पाइ। मो कुलमणि पुर कियौ चाँदनौ लोकनि जस की धुजा फहराई ॥ सुखित भई ब्रजपति की रानी हौं सुनि सुनि उर अधिक सिहाई। वदलि गये लच्छण जु लाल के मैं चोरी शुभ घरी धराई ॥ मेरे मन की वे रुचि जानति उन मन की रुचि मो मन भाई। समधिनि सम जु वुद्धि विधिना तें पूरव पुन्यनि मोहि मिलाई ॥ उनिके जस कौं हौं नित गावति वे नित मेरी करें वड़ाई। यह संयोग दई कारन विनु हौंहिं न करो विविधि

चतुराई ॥ सुत विवाहि जग साकौ कीनौं कुल कीरति सर्वोपरि छाई । को सज्जन जु घोषपति के सम कहाँ मुरलीधर सौ वर माई ॥ मो अतिलड़ि सम को जु सुलच्छनि जिनि जसुमति मन साध पुजाई । रावलपति सम नवनि कवन में नंद वदन परसंश कराई ॥ मो चाह्यौ सब प्रभु नें कीयौ महरि चाह नित फलै सवाई । बृन्दावन हितरूप महामति कीरति प्रेम पहेरी गाई ॥

राग विलावल ताल आड़–पद ८६

कुँवरि गोरंगिनी हो आइ सुख कब देहै मो नैंन। कब करिहै मो भवन अलंकृत उर अह्लाद जु दैंन ॥ कबहि जाहि वीरनु लै आवै हौं पाऊँ चित चैंन । बृन्दावन हितरूप सुलच्छन श्रवनी अमृत वैंन ॥

राग विलावल ताल आड़–पद ८७

सबै शोभा जु सुख हो वसत हैं मो अतिलड़ि के लार । हौं दरसोंगी तब जब आवै मेरे अजिर मँझार ॥ अब वड़ भागिनि महरि लेति है सकल सुखनि कौ सार । बृन्दावन हितरूप आइ है कब माननि आधार ॥

राग विलावल ताल आड़–पद ८८

शोभा सौं मेरौ भवन कब भरिहै री माई। कहि वड़ भागिनि सगुन जो कछु लै तू आई ॥ किहिं दिन किहिं छिन किहिं घरी आवै मो जाई । प्रान सुखित तब होंहिगे अति मानि बधाई॥कब भेंटोंगी भुजनि भरि देखौं दृगनि अघाई । तात देखि आनंदि है मनु नव निधि पाई ॥ वीर कंठ लागे सु जब होइ मगन महाई । चरन लागि पुनि भैंटिहै रंभा भौजाई ॥ हे गिरि देव कृपाल ह्वै देहु वेगि मिलाई । बृन्दावन हितरूप रचि विधि सींव दिखाई ॥

राग विलावल ताल आड़–पद ८९

राधा सी मिठ वोलनी बेटी किहिं घर है । भुव तल नाम निकासिनी भई भान नगर है ॥ वल्लभ कुल कौं जस दियौ व्रज वगर वगर है । गिरि परचायौ पूजिकैं जिनि अपने कर है ॥ मान वढ़ावनि सासु कौ लखियति जु सुघर है । मूरति धरैं जु चातुरी जाके उर अंतर है ॥ जा छवि उपमा दैंन

कौं नाहिन सम सर है। परनी अति भागिनु भरी देखौ मुरलीधर है ॥ म
भवन भूपन भई दियौ गिरि यह वर है। वृन्दावन हितरूप रस रहे लग
जहाँ झर है ॥

राग सारंग ताल आड़–पद ६०

वहिन लैन कौं राज कुँवर चल्यौ श्री वृपभानु पठायौ हो। श्री राधा के
सोदर सुंदर अस्व नचावत आयौ हो॥ हलधर गिरिधर सौं मिलि पुनि व्रजपति
कौं माथौ नायौ हो। वृन्दावन हितरूप कृष्ण के तात रवकि उर लायौ हो।

राग सारंग ताल आड़–पद ६१

श्री वल्लभ राज कुँवर कुल मंडन देखत नंद सिहाये हो। हिये लगा
रहे अनुरागी प्रान पोप सौ पाये हो ॥ समाचार रावल रानें के सहित सनेह
सुनाये हो। प्रेम पत्रिका वाँचि घोपपति के दृग जल भरि आये हो ॥ करुना
कुशल समुझि ताही छिन पुनि जोतिपी बुलाये हो। राधा चलन सुदिन सु
धवायौ सजन वचन मन भाये हो ॥ वहिनि मिलन भोजन हित ता छिन
भीतर भवन पठाये हो। वृन्दावन हितरूप अतिलड़ी मंगल हरपि गवाये हो॥

राग सारंग ताल आड़–पद ६२

ह्वै अधीर मिलत वीर विहवल अति ही सरीर नैंननि तें वहत नीर
कहति माइ माइ री। करुना अरु दया सिंधु उझिल्यौ है दुहूँ ओर कैसें कहौं
ताकी मित रसना करि गाइ री ॥ हित की छवि वेलो सी सहेली चहुँ ओर
ठाढ़ीं निरवारति वचननि करि सवही ढिंग आइ री। वलि वलि वृन्दावन
हितरूप महा कौतिक यह खेलतु सदेह प्रेम नंद भवन आइ री ॥

राग सारंग ताल आड़–पद ६३

कीये सखी सावधान वीरन तें पायौ मान तात मातु वूझति कुशराति
मुद भरी। व्रजपति सौं भयौ मिलाप किहिं विधि कीनौं अलाप मेरे ले चलन
की सुधाइ कौन धरी॥ अज्ञा दई तात श्याम काल्हि लै चलौं सुधाम सोदर
की वात सुनत हीय भई हरी। वलि वलि वृन्दावन हितरूप भवन आसन

रचि वीर कौं जिमावति है लाड़ सुख ढरी ॥

राग सारंग ताल आड़–पद ६४

वीर कहौ और बात जननी है नीके गात कैसें धौं रहत तात भूप जू भयाने कौ । महीभान कुल जेते नीकें सुख दैन तेते आनंद वरनि कहौ सव वरसाने कौ ॥ काकी और ताई भौजाई सव नीके हैं मंगल परम कहौ मेरे मन माने कौ । बृन्दावन हितरूप और हू कुशल कहौ खिरकनि में गऊधन सुख सरसाने कौ ॥

राग सारंग चौताला–पद ६५

माइ सुधि करि करि तेरी मोहि पठावनि नितही सुदिन सुधावै । वावा हू के वदन रट राधा सजल रहें दृग काहू न मरम जनावै ॥ भाँति भाँति कौ सुख वरसानें तदपि न तो विन शोभा पावै। बृंन्दावन हितरूप भान के वंश कुशल अति तेरो आगम भावै ॥

राग राइसौ ताल रूपक–पद ६६

कहि मेरी मदनी गाइ कौं रानी राखति कैसें । जैसे हौं जु जिमावती माइ जिमावति तैसें ॥ आइ अजिर मधि निर्त्तती मो मन की रुचि लीयें । हौं देती मुख ग्रास जब वह हरपति ही हीयें ॥ देखि देखि आनंदती छिन न विसरती जाकौं । बृन्दावन हितरूप अब कब देखौंगी ताकौं ॥

राग राइसौ ताल रूपक–पद ६७

कहि राधा हित महरि को हौं सुनौं श्रवननि दैकें । कौन भाँति के लाड़ नित करति अंक तोहि लैकें॥ कहा नाम कहि टेरहीं मन आनंदित ह्वैकें । और वधू पुर वगर की चलति कौंन विधि नैकें ॥ ब्रजपति मुख के वचन जे वरनि लाड़ सरसैकें । बृन्दावन हितरूप वलि सब सुख कहि ज़ु अघैकें ॥

राग राइसौ ताल रूपक–पद ६८

सुनि वीरन ब्रजराज जू जब जब मंदिर आवैं । भानुवंश कौ सुजस जो वदन आपनें गावैं ॥ बड़े बड़े भुवपाल जे भये तिन चरित सुनावैं । दिन

मणि कुल रोचक कथा कहि आनंद जु पावैं ॥ पुनि कछु मेरे तात सौं गरु हेत जनावैं । अधिक लाड़ मेरो करन व्रजरानी समुझावैं ॥ मंगल भवन नित नये साजि मोहि दुलरावैं । नाम भानु कुल मंडनी सादर कहि बुलावैं ॥ लाड़ नाम मेरे वहुत व्रजरानी कौं भावैं । वृन्दावन हितरूप सि रोहिनी सुविधि सिखावैं ॥

राग सारंग ताल आड़–पद ६६

व्रजरानी करति विचार है । मन धीरज धरिहै कैसें अव राधा चलं प्यौसार है ॥ या विन मोहि लगैगो सव यह सूनौं सौ घर वार है । निरखि होत द्दग सीतल दुलहिनि सुंदरता कौ सार है ॥ गुनवंती कुलवंती पुनि मे मंदिर कौ जु सिंगार है । निकर सुलच्छन भानु सुता फिरै सुख संपति जि लार है ॥ मो उर प्रेम रहत हौ सरसतु सुनि विछुवनि झनकार है । या दुलहिनि कौ सील सिंधु सम मैं नहि पायौ पार है ॥ एकौ अंग न भूल्यौ याकौ कोधौं सिर्जन हार है । सवै निहारि रहतु है अचिरज होत नहीं निरधार है ॥ सुकृती मेरे लाल वरी जो दवति लाज के भार है । भानुवंश भयौ धन्य जहाँ यह प्रगटी परम उदार है ॥ निकसि सकत नहिं चित्त वधू कौ नेह रच्यौ विधि जार है । वीतैगो कैसें निसि वासर किहिं विधि रुचै अहार है ॥ फूलति छवि फुलवारि अजिर जव वैठति सखिनु मँझार है । वृन्दावन हित-रूप महरि मुख ऐसें करति उचार है ॥

राग सारंग ताल आड़–पद १००

महरि सभागिनि कहति जु मेरो राधा चित्त गह्यौ है हो । मन परचौ चलन विचार सोच नहि अंतर परत सह्यौ है हो ॥ परम मोहनी यह गौरांगी मो मन उरझिरह्यौ है हो । जादिन तें आई इहि घर सुख सागर फिरत वह्यौ है हो ॥ कितौ जतन करि करि यह गरुवौ सुकृत सार लह्यौ है हो । कीरति सुता भवन मो भूपन दई सुदृष्टि चह्यौ है हो ॥ गोर श्याम जोरी वनी देखन कौन जो न उमह्यौ है हो । वृन्दावन हितरूप देव वर मुहि दियौ परै न कह्यौ है हो ॥

राग सारंग—पद १०१

लै आउ सखी तू जाइकैं॥ आउ आउ री वाट विदेसिनि मोसौं लै बत-राइकैं॥ श्रवन सुनौं तो मुख की वानी नीकें चित हित लाइकैं। धापौं नहीं अमी जो पीऊँ अपनौं भाग्य मनाइ कैं॥ तेरे लाड़ मोहि सुख जेतौ कासौं कहौं समुझाइकैं। कौन पुन्य प्रापति भइ हौं सुधि करि जु जाति वौराइकैं॥ मन रुचते पट भूषण देहौं बकुचा डवा भराइकैं। कौन धन्य ह्वै है वह वासर जब फिरि मिलि है आइकैं॥ यह मंगल दिन देख्यौ मैं गिरि श्रीपति कौं सिर नाइकैं। अभिलाषनि को सागर तरि दियौ तीर जिहाज लगाइकैं॥ फल्यौ मनोरथ बाग सत्य कहौं विधि तन गोद उन्हाइकैं। मेरी प्रान भाँवती राधा लै तू वेगि बुलाइकैं॥ मन अहलादिनि भानु नंदिनी देखौं नैंन अघाइकैं। मोकौं यह छिन दुर्ल्लभ सजनी काल्हि जाइगी माइ कैं॥ राज कुँवर श्रीदामा कौं रुचि भोजन दियौ कराइकैं। वृन्दावन हित-रूप कहा कहौं प्रेम पहेरी गाइकैं॥

राग आसावरी ताल रूपक—पद १०२

मुहि गौरांग बिछोह न भावै। जवतें सुनी चलैगी पीहर हियौ प्रेम सौं भरि भरि आवै॥ मुरलीधर हूतें अति प्यारी कहत बनैं नहिं चितहिं घुमावै॥ मोही सी अनुरागिनी कोऊ सो जु वात के मरमहिं पावै॥ सुत के लाड़ रँग्यौ हो मो मन यह जु रंग पै रंग चढ़ावै। अमल स्वाद अमली ही जानैं नहिं पट द्रव्य ताहि परखावै॥ वाम दाहिने लोचन दोऊ हीनौ होहि सो नाम धरावै। वृन्दावन हितरूप प्रेम की रीति न्याइ अचिरज उपजावै॥

राग आसावरी ताल रूपक—पद १०३

महरि प्रेम उर उघरि परचौ है। सुत के लाड़ ढँप्यौ रह्यौ बहु दिन दुलहिनि आये बल जु करचौ है॥ जो खेलत ब्रजपुर घर घर में सो याही उर तें उछरचौ है। दुहुँ घर बसत सदेह देखियत गौर श्याम के हिये भरचौ है॥ मोहन मन की महा मोहनी परम रसिक लै तहाँ धरचौ है। वृन्दावन

हितरूप खिलावतु खेल सुढार जहाँ जु ढरयौ है ॥

राग सारंग ताल आड़–पद १०४

रोहिनी वचन सुनि लीजिये। गद गद कंठ कहति ब्रजरानी मोहि सिखावनि दीजिये ॥ श्रीवृषभानु सुता जाकौ मुख देखि देखि नित जीजिये। वृन्दावन हितरूप ताहि अब विदा कौंन विधि कीजिये ॥

राग सारंग–पद १०५

प्यारी हँसति महरि सनमुख गई। फली सुसील सुलच्छन मानौं अद्भुत छवि वेली नई ॥ रानी जू अमी दृष्टि भरि चितई पुनि सादर भुज भरि लई। अपने हाथ सिंगारी नख सिख रुचिर भाल वैंदी दई ॥ मैया वड़ी रोहिनी ढिंग मुरलीधर लै वैठति भई। वृन्दावन हितरूप सुकृत फूली जु महरि वारी वई ॥

राग सारंग–पद १०६

वलि माइ सिंगारति लाल कौं। नख सिख पट भूषन पहिराये सुंदर मदन गुपाल कौं ॥ रतन पेंच माथे बाँध्यौ रचि उर वैजंती माल कौं। वृन्दावन हितरूप मुदभरी लखि दृग कमल विशाल कौं ॥

राग सारंग–पद १०७

लिये मेवा पाक मँगाइ कैं। अदलि वदलि मुख ग्रास दिवावति महरि प्रेम परचाइ कैं ॥ ग्रास देति लाल कौं मैया पहिले प्रियहिं खवाइ कैं। मोहन रहतु लजाइ रोहिनी तवही देति हंसाय कैं ॥ गावति हैं सुहाग मंगल सव वनिता जुरी जु आइकैं। कहति कुँवरि की धाइ गयौ लंगरि कौ गप गप खाइ कैं ॥ हँसी सकल ब्रजवाल रोहिनी वोली हिये सिहाइकैं। हाँ जू हाँ जानी हम तुम कीरति सम रावलराइ कैं ॥ जैंवत दिन दूलह दिन दुलहिनि रह्यौ कुलाहल छाइकैं। मिहीं घूँघटी माहिं वदन विधु दरसतु अव सरसाइ कैं ॥ ढीट महरि कौ जायौ चितवतु तिरछैं मुरि मुसिकाइ कैं। वारति रतन जसोमति गहरे सिंधु प्रेम के न्हाइ कैं ॥ सुख पैरति रोहिनी जु ताकी थाह न

सकौं बताइकैं। नित नव लाड़ अनोंखो जा घर कहा कहैं कवि गाइकैं॥ जल अचवाइ देत बीरी मुख दोऊनि खेल खिलाइकैं। कर चटकाइ असीसति सबहीं अंचल छोर उचाइकैं॥ आनँद उर आनंद उदै भयौ कहा कहौं अधिक बनाइकैं। वृन्दावन हितरूप महा रस गरुवौ चोप सुभाइकैं॥

राग पूरवी चौताला—पद १०८

थोरैं थोरैं हँसनि लसनि मुख गोरैं गोरैं मोरैं मोरैं घूँघटी फिरति है री लटकति। धोरैं धोरैं जोरैं हाथ फिरै छवि जाकै साथ अंबर तें उझकि दामिनि लजि सटकति॥ मोहनी मूरति धरैं वारनैं से लै फिर तन ऊजरी लखि करजनि चटकति। वृन्दावन हितरूप ऐसी गज गैंनी राधे जाकी पग हूलनि करेजा काम खटकति॥

राग पूरवी—पद १०९

आदि गुन पूरी अनादि सुख शोभा रासि लाड़ रस मूरति नील पट धरनी। वचन रसाइनि तो मिलि उपजत मंगल वर्द्धनि चरन परसि होहि हरषित धरनी॥ मुरलीधर की प्रान वल्लभा आनँद के उर आनँद भरनी। वृन्दावन हितरूप सुहाग सिर छत्र जु अविचल नव नव केलि कला विस्तरनी॥

राग पूरवी चौताला—पद ११०

नील पट धरन सुलच्छन चंपक वरनी या मंदिर कौ गहिनौं। बानी अमी श्रवित मन मुदिता लाड़ सुख पली गुन गरुवे न बनैं कहनौं॥ प्रान हू तें अधिक मोहि भावत हैं याके सुख में सुखी नित रहनौं। वृन्दावन हितरूप विनामित किहिं विधि सिरजी मेरे भाग्य कौ लहनौं॥

राग पूरवी चौताला—पद १११

गुननि आगरी नागरी को है री ऐसी या विधिना की सृष्टि। छवि कौ छत्र फिरतु है जा सिर मुख विधु किरनिनु होति सुधा की वृष्टि॥ श्रीराधा सम विपुल सुहागिनि दूजी नाहिन आवति दृष्टि। वृन्दावन हितरूप धन्य सखि रुचि लै सेवति पावति प्रेम उच्छिष्ट॥

राग श्री चौताला–पद ११२

साँझ के माँझ महरि के आँगना शोभा की फुलवारी। नवल वधुनि मधि नवल दुलहिनी फिरति है लाड़ मोद भरी भारी ॥ जसुमति कहति गाइ राधे गौरी मोहि लगति तो मुख की प्यारी। वृन्दावन हितरूप चतुर पुनि भोरी वाला गाइ रिझाई सवै गोप नारी ॥

राग श्री चौताला–पद ११३

वेगि पठै हों पीहर तो कों जो मोहि गौरी फेरि सुनावै। अरी भानु की कुलमणि राधा धार अमी की सी तू वरपावै ॥ राग मोहिनी वसति है तोमें सुनि मो हियौ प्रेम भरि आवै। वृन्दावन हितरूप मगन ह्वै कुँवरि अलापी रानी जू रीझि करज चटकावै ॥

राग श्री चौताला–पद ११४

लाल सुनि री माई भूल्यौ गो दोहन नाद वली नें चित आकर्ष्यौ। श्रवन लगाइ रहे मंदिर दिस प्यारी जू के सुर कौ सवाद जु परष्यौ ॥ घर घर तें वनिता आईं दौरी सुनिवे कौं सवकौ हिय हरष्यौ। वृन्दावन हितरूप विनामित आनंद आजु नंद ग्रह वरष्यौ ॥

राग श्री चौताला–पद ११५

आजु की राति पाहुनी मो घर दैजा री सुख कीरति जाई। जव लगि फिरि आवै जु सम्हारति रहौं रंक ज्यौं थाती पाई ॥ अव लगि तू सकुचति रहि वाला ऐसें मगन ह्वै न कवहुँ गाई। नाद अमी की धारा वरपी श्रवन पान करि छाती सिराई ॥ वार वार हौं देति असीसनि सुख सुहाग जस वढ़ौ सदाई। वृन्दावन हितरूप रीझि रानी चौकी रतन सुहथ पहिराई ॥

राग विहागरौ ताल रूपक–पद ११६

असन कराइ लै चली सजनी विरमि विरमि प्यारी चरन धरति है। महल उतंग रची अस सज्या जो मृदुता हू कों निदरति है॥ पाइल की झनक सुनत पिय श्रवननि विनु देखे दृग कल न परत है। मन की वृत्ति अगमनी

दौरति मनु सादर पाँवड़े करति है ॥ गरुवौ लाड़ भरयौ जाके हिय आगे चलि चलि पुनि उसरति है । वृन्दावन हितरूप सहज ही विन उद्दिम पिय धीरज हरति है ॥

राग विहागरौ ताल रूपक–पद ११७

जद्दपि प्रिया निकट ही आवति तद्दपि पिय हिय अधिक चटपटी । इत अलोलता उत आतुरता मनसिज लाग्यौ करन खटपटी ॥ गाढ़ प्रेम की गति जु दुहेली लगी रहै चित माँहि सटपटी । वृन्दावन हितरूप रसिक मन रस विलसन की चाह चटपटी ॥

राग विहागरौ ताल रूपक–पद ११८

लाल की दृष्टि पथिक ज्यौं धावति प्यारी जू फिरति निकट पल ओलैं। शशि की मयूष फटिक मणि मंदिर तहाँ भरि गई निहारति डोलैं॥ आपहू कोटि इंदु दुति वदनी छकि रही कौतिक घूँघट खोलैं । वृन्दावन हितरूप परचावति लावति सखी मन की वृति तोलैं ॥

राग विहागरौ ताल रूपक–पद ११९

कौतिक मुदिता सुहाग सुख उदिता रंग महल ओर चलन मन धरी । लाल की मिलनिया गई है दौरि ताही छिन देति है वधाई उर आनंद महा भरी ॥ प्राननि के प्रान सी जलद आनंद कौ सो आवति रस छकी नैंननि लखि परी । वृन्दावन हितरूप मिली सादर प्रीतम नें मानी धन्य आजु की सरवरी ॥

राग विहागरौ ताल रूपक–पद १२०

हँसि मनुहारि करत हैं प्रीतम तिरछी चितवनि कनक तनी की । भयौ है लाज भरि झुकनि छवीली लाड़ अधिक रुचि वढ़ी है धनी की ॥ चाहतु सुन्यौ वचन मृदु मुखतें मुसिकनि मधुर सुहाग मनी की । वृन्दावन हितरूप वलैया लेत प्रान संपति अपनी की ॥

राग विहागरौ चौताला–पद १२१

तलप शोभा सर मानौं वरन विलच्छण राजत हैं जुग हंस। लालत चिवुक प्रीति सौं प्रीतम उर मनसिज भरु एक भुजा धरें अंश॥ अधिक अधीन होत अनुरागी मृदु पद करत सीस अवतंश। वृन्दावन हितरूप झरोखनि निरखति प्रमुदित सजनी श्रीहरिवंश॥

राग विहागरौ चौताला–पद १२२

वृत्ति उर करुना सहेली सो तकि औसर आई सहाइ जु करन। अभिलापनि कौ सागर पिय हिय ताकौं विचच्छण उमगि उमगि लागी भरन॥ कोक कुशल आयुध कर भेदनि दाव पेंच से लागे करन। वृन्दावन हितरूप सुहाग भरी यह रजनी रति रन लगे विस्तरन॥

राग विहागरौ चौताला–पद १२३

नवल दूलह दुलहिनि कौ गरुवौ सुहाग सुख सजनी दृगनि अहार। मदन बाग छवि वेली अलौकिक मानौं फूली पिवति सुरति रस सार॥ भाग्य परावधि प्रेम परावधि इहि मंदिर की कौतिकहार। बृन्दावन हितरूप रस चाइनु चौंपनि विलसत भोगी रंग विहार॥

राग विहागरौ चौताला–पद १२४

निपट अभिलापनि निद्रा सेवा समय आई प्रेम अहुरावै। सनैं सनैं दृग-परसै सभागिनि अति लजवंती पलकनि परदा लगावै॥ वरजत मन उत्साह जदपि हू तदपि दरेरी वरवस धावै। वृन्दावन हितरूप राज रजनी है जाकौ अपनौं अमल जनावै॥

राग केदारौ आड़ चौताला–पद १२५

आदर नींद हूँ कौं दियौ। तदपि प्रेम वली सखी री मिल्यौ हिय सौं हियौ॥ श्रमित रति संग्राम अव विश्राम रंचक लियौ। रीझि चटकति करज सखी जल वारि फेरि जु पियौ॥ थाती नैननि प्रान साँवल गौर जुग जुग जियौ। बृन्दावन हितरूप हमकौं सुखित सव विधि कियौ॥

राग केदारौ आड़ चौताला-पद १२६

प्रीतम के जु दृग खुलि गये। टहल की अभिलाष उपजी पद पलोटत भये॥ कहा न करावै प्रीति गरुवी देखि कौतिक नये। मृदुता हू सरवर न जिन के भाल ते धरिलये॥ रसिक परम प्रवीन परसत प्रेम उर भिजये। बृन्दावन हितरूप इहि विधि प्रिया कौ सुख दये॥

राग केदारौ आड़ चौताला-पद १२७

नागरि जगी चाँपत चरन। कहा परी यह वानि प्रीतम गहि रही दुहुँ करन॥ तुम उर करुना घनी नागर मो उर आनँद भरन। नींद कौ औसर सरवरी श्रम जु तन कौ हरन॥ भुज गहि लिये पौंढ़ाइ पौंढ़ी वचन सुख विस्तरन। बृन्दावन हितरूप इत उत नेह छेद न परन॥

राग विभास ताल रूपक-पद १२८

रजनी कौ शेष रहै दोऊ उठि बैठे सेज देति हैं वधाई आये अलिनु के टोलना। प्रीतम कहत प्यारी मेरी मणि चौकी कहाँ प्यारी जु कहति लाल कहाँ मेरौ ढोलना॥ दीजिये सम्हारि बृषभानु की लड़ैती मोहि चिबुक प्रलोइ कहै लाल मिठ वोलना। बृन्दावन हितरूप प्रात सुख बोहनी यौं लाड़के रतन इत उत हिय खोलना॥

राग विभास ताल रूपक-पद १२६

छवि के भंडार मानौं वैठ्यौ है अघानौ चोर बदलि बदलि धरी संपति सिंगार की। समुझत दोउ आनंदित मन मन जब सुधि आवै रस छकनि विहार की॥ चकृत सहेली सब थाह लेति बुधिवल सुख दहलनि चित दोऊ रिझवार की। बृन्दावन हितरूप रति रन खेत अंग सूरता बढ़ावै उर वाहा रस सार की॥

राग विभास-पद १३०

सखी विभास जंत्र सजि गावति भोर सौ भयौ है जानि सुधि जु करत हैं। मन मिलि कहति कहाँ हे तुम प्यारे लाल समुझि समुझि कछु हँसि जु

परत हैं ॥ ओट दैकैं ठाढ़ी भई मननि की रुचि जानि भूपन वदलि लै लै अंगनि धरत हैं । वृन्दावन हितरूप तऊ रीझि गाढ़े गसे करनि कौ कंप देति नीठ उतरत हैं ॥

राग विभास–पद १३१

कुल की मर्जादा सींव कौ है ऐसी लोक और समयो विलोकि चली सासु के भवन कौं । सखिनु के जूथ संग छवि की मुनैया मानौं उपमा वर्नै न गति मंद या गवन कौं ॥ घूँघट औ गाती कौं सँवारति है कर वर विछुवनि नाद रुच्यौ महरि श्रवन कौं । वृन्दावन हितरूप रानी जू पसारे कर हौं वलि वलि प्यारी सील औ नवन कौं ॥

राग विभास ताल आड़–पद १३२

कैसे धौं कहैगी जाइ वूझै जव तेरी माइ मोसौं कहि समुझाइ कीरति लड़िलरी । प्रान की सी थाती पाइ अंक सौं लई लगाइ मोहि तौ विसरि है न प्यारी तू पल घरी ॥ हिता कौ सौ हित तो सौं कहा वनि सकै मोसौं एपै सुधि कीजियें सुहाग भाग की भरी। वृन्दावन हितरूप लाड़िली सजन भूप अति ही अनूप मेरे लाड़िले सुत वरी ॥

राग विभास ताल आड़–पद १३३

नाइन वुलाइ लेहु नगर वुलावौ देहु पीहर चलैगी वेटी रावल धनी की जू । रचि के सिंगार कियौ प्रेम सौं भरयौ है हियौ औरै छवि दरसी है कनक तनी की जू ॥ मुकुर से जाके गात देखें द्दग चौंधि जात मन ही प्रसंश करै सुवन वनी कीजू । वृन्दावन हितरूप सासु कौ सनेह देखें चित वृत्ति प्रेम भीजी कनक तनीकी जू ॥

राग देव गंधार ताल आड़-पद १३४

जिमावति जसुमति भीजी नेह । रहि रहि जाति कौर कर लैकैं विवस होति अति देह ॥ वदन विलोकि पलक गति भूलति उपजत मन संदेह । इहि विछुरैं कैसे ध्यव मोकौं नीकौ लगिहै ग्रेह ॥ सम्हरावति रोहिनी ग्रहो

रानी बहुरि ग्रास कर लेह। वृन्दावन हितरूप प्रेम भइ उमगनि उर जु अछेह ॥

राग देवगंधार ताल आड़–पद १३५

जेंइ लै रावल राज दुलारी। मारग चलत भूख जिनि लागै महरि करति मनुहारी॥ वड़े सजन की सुता सुलच्छन लजवंती सुकुँवारी। करि दधि पान जमायौ तो हित मेरी प्रान पियारी॥ पुनि जु पठाये राज कुँवर कौं पाक परसि भरि थारी। श्रीदामाहिं जिमावति रुचि सौं नगधर गोप विहारी॥ मंगल गावति हैं व्रज वनिता होत कुलाहल भारी। वृन्दावन हितरूप प्रेम की सृष्टि लोक तें न्यारी॥

राग विलावल ताल आड़–पद १३६

सुहाग जु आगरी हो नागरी राधा रसमय नाम। लोकनि तें गरुवौ सुख वरषत तो करि मेरे धाम॥ दई दयाल रची यह जोरी भूतल पर अभि-राम। इनके लाड़ चाव सुख भीजी हौं रहौं आठौं जाम॥ मिठ बोलनी दुलहिनी ऐसोई मुरलीधर मेरौ श्याम। वृन्दावन हितरूप असीसें देति सुल-च्छन भाँम॥

राग विलावल ताल आड़–पद १३७

डरति हौं डीठि तें हो वारिहौं अवही राई लौंन। हौं भरि लाड़ दुहुँनि छवि वरनौं समुझि गहौं पुनि मौंन॥ धनि व्रज लोक धन्य पुर तामें परम धन्य मो भौंन। वृन्दावन हितरूप सुधन मेरौ ऐसौ विलसै कौंन॥

राग देव गंधार ताल आड़–पद १३८

सजति व्रजरानी पाक डला। आई चलन शुभ घरी मंगल गावति हैं अवला॥ उर लगि मिलति कुँवरि सौं वारति मणि मुँदरी जु छला। गाढ़े अंक भरी नँदरानी लाड़ सुधन नवला॥ पुनि पुनि वदन विलोकति जसु-मति मनु शशि निकर कला। वृन्दावन हितरूप प्रेम उर वाढ़यौ अति सवला॥

राग देव गंधार ताल आड़–पद–१३९

कीजियौ आवन सुधि या घर की। मेरी प्रान भाँवती राधा दुलहिनि मुरलीधर की॥ भानुवंश जस दैंनी रुख लै चलनी सासु ससुर की। सबकौ मान बढ़ावनि शोभा मेरे नगर बगर की॥ तो बिन लाड़ कहानी कासौं कहिहौं उर अंतर की। वृन्दावन हितरूप बरषनी जोरी सुंदर वर की॥

राग रामकली ताल आड़–पद १४०

प्यारी जू जब डोला पगु राख्यौ। आरज बधू जितीं मंदिर में आसिक वचन सबनि मुख भाख्यौ॥ रोरी डवा राचिनी मँहिदी मोद मानि रोहिनी जु लाई। मधु पकवान विविधि मेवा चुनि लाड़ कोथरी महरि गहाई॥ पाटंबर भूपन मन रुचिते दै प्यारी सजनी सनमानी। औरो कहे सँदेसे नाँ नाँ कीरति कौं व्रजपति की रानी॥ मेरे मन की तुम जानति हौ राधा जननी निपट सयानी। जैसे प्रान भाँवती तुम कौं यौं गौरांगी मो मन मानी॥ व्रजपति कियौ तात कौ सौ हित रावलपति अतिलड़ी सुन लीजे। जाहि देहु आनंद भानु घर कोऊ दिन विरमि गवन ह्याँ कीजे॥ अंक लगाइ लयौ श्रीदामा जाइ प्रनाम भान सौं कहियौ। वृन्दावन हितरूप उहाँते नित सुधि करत हमारी रहियौ॥

राग रामकली ताल आड़–पद १४१

अश्व पलानि चल्यौ श्रीदामा श्रीराधा डोला जु चढ़ि चली। हलधर गिरिधर मिले अंक भरि इत उत बाढ़ी अधिक रंगरली॥ पुरवासी लागे सँग आवत सबकौं दियौ सनमान विधि भली। करत प्रसंश नारि नर ऐसें भानुवंश वेली जु सुख फली॥ मैया मिलन चटपटी उरमें जाके लाड़ चाव जु नित पली। वृन्दावन हितरूप खेल की ठौर बतावति जाति निजु अली॥

राग आसावरी ताल रूपक–पद १४२

बिरमी जहाँ संकेत सुभग बट। राधा नाम जहाँ पंछिन रट॥ भोजन कीने खोलि पाक घट। बैठी करि सखियनि कौ संघट॥ कुंज अलौकिक सर-

वर के तट। जिनहिं निरखि मुरझतु जु मेंन भट ॥ गावति वीर मल्हावति चटचट। वृन्दावन हितरूप मच्यौ झुरमट ॥

राग आसावरी ताल रूपक—पद १४३

वीर चलि दीजिये वधाई माइ मेरी। अश्व नचावत जाहु दै दरेरी ॥ आई है निकट राधा बेटी तेरी। तात मात सुनि ह्वै हैं हिय में हरे री। सुंदर सहोदर की ऐसी मति प्रेरी। आगे चढ़ि चल्यौ वाग अश्व की जु फेरी ॥ कह्यौ जाइ पुर वाजी दुंदुभी सु भेरी। मंगल कौं गावैं जुरि वनिता घनेरी ॥ कियौ है प्रवेश पुर शुभ घरी एरी। आरतौ करत सुख बरसी है ढेरी ॥ भुज भरि भेंटी रानी प्रेम मति घेरी। सुकृत की रासि गाढ़ अंक लै सकेरी ॥ सनैं सनैं सावधान करि निरवेरी। मिलति हैं पुनि आइ उर छोटी औ वड़ेरी ॥ मंगल समूह आइ भवन भरेरी। भानुपुर वासी आइ सुखित करेरी ॥ वृन्दावन हित-रूप अकह पहेरी। प्रेम है प्रधान व्रज विधि कह्यौ टेरी ॥

राग विलावल ताल आड़—पद १४४

दगनि आनंदनी हो कितौ सुख तोहि दियौ तेरी सास। हौं सुनि सुखित हौंहुँ मेरी अतिलड़ि करि मुख वचन प्रकास ॥ मैया मोहि आपु व्रज-रानी लै वैठति ही पास। देखि देखि मो उर वढ़तु हो जिनि उर अधिक हुलास ॥ सिद्या करति रहति ही निसि दिन जे घर दासी दास। वृन्दावन हितरूप हौंन जिनि दीजौ कुँवरि उदास ॥

राग विलावल ताल आड़—पद १४५

महरि सम कौंन है हो कृपा मूरति जग दूजी और। अष्ट पहर मन लियें रहति ही हौं उदास हौंहुँ जोर ॥ मोहि प्रसन्न करिवे कौं कौतिक रचे भवन सव ठौर। लै वैठति ही अंक प्रात मो मुख दिये अपु कर कौर ॥ कवहुं कहती भानु अतिलड़ी पुनि कहती तन गौर। वृन्दावन हितरूप न्याइ इनि गुन गोपिनु सिरमौर ॥

राग देव गंधार ताल आड़–पद–१३६

कीजियौ आवन सुधि या घर की। मेरी प्रान भाँवती राधा दुलहिनि मुरलीधर की॥ भानुवंश जस दैनी रुख लै चलनी सासु ससुर की। सबकौ मान बढ़ावनि शोभा मेरे नगर बगर की॥ तो बिन लाड़ कहानी कासौं कहिहौं उर अंतर की। बृन्दावन हितरूप बरषनी जोरी सुंदर वर की॥

राग रामकली ताल आड़–पद १४०

प्यारी जू जब डोला पगु राख्यौ। आरज बधू जितीं मंदिर में आसिक वचन सबनि मुख भाख्यौ॥ रोरी डबा राचिनी मँहिदी मोद मानि रोहिनी जु लाई। मधु पकवान विविधि मेवा चुनि लाड़ कोथरी महरि गहाई॥ पाटंवर भूषन मन रुचिते दै प्यारी सजनी सनमानी। औरौ कहे सँदेसे नाँ नाँ कीरति कौं व्रजपति की रानी॥ मेरे मन की तुम जानति हौ राधा जननी निपट सयानी। जैसे प्रान भाँवती तुम कौं यौं गौरांगी मो मन मानी॥ व्रजपति कियौ तात कौ सौ हित रावलपति अतिलड़ी सुन लीजे। जाहि देहु आनंद भानु घर कोऊ दिन विरमि गवन ह्यौं कीजे॥ अंक लगाइ लयौ श्रीदामा जाइ प्रनाम भान सौं कहियौ। बृन्दावन हितरूप उहाँते नित सुधि करत हमारी रहियौ॥

राग रामकली ताल आड़–पद १४१

अश्व पलानि चल्यौ श्रीदामा श्रीराधा डोला जु चढ़ि चली। हलधर गिरिधर मिले अंक भरि इत उत बाढ़ी अधिक रंगरली॥ पुरवासी लागे सँग आवत सबकौं दियौ सनमान विधि भली। करत प्रसंश नारि नर ऐसें भानुवंश बेली जु सुख फली॥ मैया मिलन चटपटी उरमें जाके लाड़ चाव जु नित पली। बृन्दावन हितरूप खेल की ठौर बतावति जाति निजु अली॥

राग आसावरी ताल रूपक–पद १४२

विरमी जहाँ संकेत सुभग वट। राधा नाम जहाँ पंछिन रट॥ भोजन कीने खोलि पाक घट। बैठी करि सखियनि कौ संघट॥ कुंज अलौकिक सर-

वर के तट। जिनहिं निरखि मुरभतु जु मैन भट ॥ गावति वीर मल्हावति चटचट। वृन्दावन हितरूप मच्यौ भुरमट ॥

राग आसावरी ताल रूपक–पद १४३

वीर चलि दीजिये वधाई माइ मेरी। अश्व नचावत जाहु दै दरेरी ॥ आई है निकट राधा वेटी तेरी। तात मात सुनि ह्वै हैं हिय में हरे री। सुंदर सहोदर की ऐसी मति प्रेरी। आगे चढ़ि चल्यौ वाग अश्व की जु फेरी ॥ कह्यौ जाइ पुर वाजी दुंदुभी सु भेरी। मंगल कौं गावैं जुरि वनिता घनेरी ॥ कियौ है प्रवेश पुर शुभ घरी एरी। आरतौ करत सुख वरसी है ढेरी ॥ भुज भरि भेंटी रानी प्रेम मति घेरी। सुकृत की रासि गाढ़ अंक लै सकेरी ॥ सनैं सनैं सावधान करि निरवेरी। मिलति हैं पुनि आइ उर छोटी औ वड़ेरी॥ मंगल समूह आइ भवन भरेरी। भानुपुर वासी आइ सुखित करेरी ॥ वृन्दावन हितरूप अकह पहेरी। प्रेम है प्रधान ब्रज विधि कह्यौ टेरी ॥

राग विलावल ताल आड़–पद १४४

हगनि आनंदनी हो कितौ सुख तोहि दियौ तेरी सास। हौं सुनि सुखित होंहुँ मेरी अतिलड़ि करि मुख वचन प्रकास॥ मैया मोहि आपु ब्रज-रानी लै वैठति ही पास। देखि देखि मो उर वढ़तु हो जिनि उर अधिक हुलास ॥ सिच्या करति रहति ही निसि दिन जे घर दासी दास। वृन्दावन हितरूप दौंन जिनि दीजौ कुँवरि उदास ॥

राग विलावल ताल आड़–पद १४५

महरि सम कौन है हो कृपा मूरति जग दूजी और। अष्ट पहर मन लियें रहति ही हौं उदास होंहुँ जोर ॥ मोहि प्रसन्न करिवे कौं कौतिक रचे भवन सव ठौर। लै वैठति ही अंक प्रात मो मुख दिये अपु कर कौर॥ कवहुं कहती भानु अतिलड़ी पुनि कहती तन गौर। वृन्दावन हितरूप न्याइ हनि गुन गोपिनु सिरमौर ॥

राग बिलावल ताल आड़–पद १४६

अधिक हित रोहिनी हो कियौ मोसों सुनि लै कीरति माइ। केश फुलेल डारि पुनि चोटी रचती सुहथ बनाइ ॥ श्रीदामा अनुजा कहि मोकों लेती निकट बुलाइ । ना ना लाड़ चाड़ विस्तरती लेती भूरि बलाइ ॥ पुनि कहती पुचकारि अरी कीरति की जाई गाइ । मेवा पाक अपूरब धरती मेरे आगे लाइ ॥ मेरी वय समतूल बधू ढिंग ढिंग बैठति हीं आइ। देतीं अति आनंद लेति ही मेरो मन परचाइ ॥ चतुर भाँम उहि पुर जु देखिये जिनि उर प्रीति सुभाइ। वचन अमी सम सुनत कौंन के श्रवननि भूख जु जाइ॥ दुहुँ रानिनु कौ लाड़ सिंधु सम कैसे कहों समुझाइ । वृन्दावन हितरूप चलत मोहि गई प्रेम बौराइ ॥

राग सारंग चौताला–पद १४७

भवन आइ आइ कहत हो रानों घोष की रानी तुम सुनि लेहु। श्रीदामा अनुजा गौरांगी नीके राखियो विमन होंन जिनि देहु॥ राज भवन नित पली सुखनि यह कियौ अलंकृत अब हम ग्रेहु । वृन्दावन हितरूप सकल सुख दैवें उचित है ज्यों बढ़े सजन सनेहु ॥

राग सारंग चौताला–पद १४८

ससुर ग्रेह अति सुख पायो एहो जननी मो मन रह्यो तो पास। रोहिनी महरि को लाड़ अति गरुवौ तिन एको छिन होंन न दीनी उदास ॥ छोटी बड़ी बधू उहि पुरकी कहतीं बचन भरे अधिक मिठास । वृन्दावन हितरूप तदपि छिन मोहि न भूल्यो बरसाने को वास ॥

राग सारंग ताल मूल–पद १४६

आये भवन रावलधनी । प्रेम दहले गात जब परी दृष्टि कंचन तनी ॥ अंक भरि पुचिकारि लीनी बड़ी करुना घनी । प्रान बिछुरे मनहुँ भेटे चित वृत्ति यों सुख सनी ॥ द्दगनि ते चलि वारि भूले देह सुधि अपनी । गगन आनंद सिंधु भये मुख गिरा परति न भनी ॥ सुखित यों नों भानु मनु पाई

भुवंगम मनी । लिये करुना जीति सब उर सिंधु ज्यों उफनी ।। चाची ताई कुँवरि की बैठी जु ढिंग सब जनी । महीभानु परिवार शोभा आजु नीकी बनी ।। प्रेम भयौ घट घट उदै लखि अमृत मुख श्रवनी । वृन्दावन हितरूप महिमा भाग की धनि गनी ।।

राग सारंग ताल मूल—पद १५०

श्री वृषभानु के सब भ्रात। प्रान सम भेंटी अतिलड़ी प्रथम जैसें तात।। बहुत दिन में कुँवरि आई निरखि नैंन सिरात। सबनि उर आनन खिले मनु सरद रितु जलजात ।। अधिक दै सनमान बूझत नंद पुर कुसरात । सकुचि काढ़ति वदन तें आधी जु आधी बात ।। कैसें तेरी सासु राधा सुनि लगति हँसि गात । वृन्दावन हितरूप सबके आनँद उर न समात ।।

राग पंचम ताल चर्चरी—पद १५१

आज आनंद की मित नहीं भानपुर राधिका कुँवरि जब भवन आई। नारि नर सबनि के उर भये डहडहे चर थिरनि हरपि मानी वधाई।। राधिका नाम कौ गान मैंना करै कुँवरि गौरांग के मन जु भाई । पढ़त सुक सारिका करत रस वाद मनु महा मोहन जु धुनि भवन छाई ।। गाइ मदनी जु नख सिख परम सोहनी सखी गहि डोरि ताकौं जु लाई । नचत आनंद भरि कुँवरि कौं देखि कैं बजति मणि पैंजनी पग सुहाई ।। फेरि कर पीठि पुचकारि कैं लाड़िली थार भरि पाक ताकौं जिमाई । सखिनु लै साथ बैठी जु भोजन करन मातु के हाथ रुचि अति बढ़ाई ।। कह्यौ जननी कथा हौं गई सासुरे तुम जु दिन रात कैसें बिहाई । आस आवन जु तो अधिक धीरज धर्यौ प्रान राखे जु करि करि लराई।। तात तेरौ जु होइ देखि व्याकुल महा खिलौंना धरौं तेरे दुराई । अलप भोजन जु कर जाहि उठि सभा कौं विथा मन की न काहू जनाई ।। खग भये विरह वस मोहि बूझति कहा वीर तो बहुरिया हौं जिवाई। सदन में डोलती लाड़ भरि बोलती हौं जु तब लेति ही उर लगाई।। आइ ढिंग बैठती मोहि समुझावती कुँवरि तेरी जु चाची रु ताई। बहिनि कौं

जाइ श्रीदाम लै आइ है जाति कहि यौं जु धीरज धराई ॥ धापि भो
कीयौ पुनि जु अंचवन लियौ मातु ने बात सब कहि सुनाई । बृन्दावन हि
रूप घोष रस रीति यह प्रीति सम सिंधु किहिं थाह पाई ॥

राग पंचम ताल चर्चरी–पद १५२

कौंन रस सृष्टि वृषभानु उर नंदपुर। शेष विधि शारदा चरित रस क
न कौं सदा पछितात नहिं ध्यान आवै जु उर ॥ मुनिनु कछु कही पै ल
नहिं रहसि रस तनक गिरि खेल में छुटे लगि चरन सुर । मित्र पुनि ब
पालक भये घोष के सहज सीतल किये दारुन सुमेटि जुर ॥ गौर अरु श्या
भोरे जु ब्रज जननि हित देखियत ललित लीला रचन अति चतुर । जा
सुख लेस नहिं लोक कछु पाइये खोजि हारे सुमति रमापति धाम धुर
गोप्य तें गोप्य रस घोष दरसाइ दियौ अहा कहा कृपा कौ जलद चरपै
दुर । बृन्दावन हितरूप रसिक बाँटै परचौ महा दुर्ल्लभ कियौ सुलभ सब
विधि प्रचुर ॥

राग पंचम ताल चर्चरी–पद १५३

नित्य सुख रास नित ही रचैं खेल बहु वृष्टि सुख करैं सबकौं भिजावैं
नित नये जुगल सबके जु दृग पाहुनें सखी बड़ भागिनी हिय सिरावैं ॥
कौतिक रचैं तरनिजा तीर में मुरलिका अधर धरि कैं बजावैं। रसिक को
जु ब्रजराज नंदन सखी प्रिया को मान दैकैं बुलावैं ॥ जूथ जुवतिनु
तरुनि मणि राधिका देखिबे रम्य कानन जु आवैं । महाराका लसै सरद
सरवरी इंदु बदनी जु शशि कौं लज्यावैं ॥ करत पल पाँवड़े झनक नूपुर
सुनि विपुल आनंद मन में बढ़ावैं । दैन आदर चली दृष्टि पिय अगम
प्रिया तैं मान त्यौं ही जु पावैं ॥ मिलि भयौ रास आरंभ मंडल विशद
सजि सखी मधुरे जु गावैं । तत्त थेई थेई वदति स्याम स्यामा सुघर सुगा
गति लै जु अभिनय दिखावैं॥ रुरति हारावली पीठ वेंनी ललित ठुमुकि
अगमनें जब चलावैं। आपनें आपनें गुननि पुनि विस्तरत दृगनि सौं

र मिलावैं । प्रिया परसंश करैं लाल के नित्त की लाल बहु भाँति प्यारी
बवैं ॥ सुलप के भेद संगीत रीतिनु रचत परम कोविद जु इहि विधि
वैं।रास करि कुंज कमनीय बैठे सघन रस छकैं सुख जु सजनिनु छकावैं॥
वन हितरूप कोक विद्या निपुन जुगल मन मोद हिलि मिलि मनावैं॥

राग पंचम ताल चर्चरी–पद १५४

कबहूँ इत कबहूँ उत जाहिं आवैं सखी वृष्टि आनंद रहे नंद वृषभानु
। कुँवरि वृषभानुजा रूप गुन की अवधि लोक सौभग सींव नंदनंदन
र॥ कौंन सुकृत कियौ घोप थिर चर सवनि जिनहिं सुख दैंन कौतिक
रैं मनोहर। देव मुनि वदन देखनि जु तरसत रहत दृष्टि आगे सु इनके
निरंतर॥ गौर अरु श्याम जब लाड़ गरुवे ढरैं कहा कहौं अमी कौ
गि तब लगै झर। गोप गोपी जु रस बाल लीला छकैं रस जु सिंगार कौ
यौ उर सखिनु सर॥ रसिक जन हित कृपा ललित लीला रची लोक अरु
द मरजाद कौ डारि डर। वृन्दावन हितरूप जुगल के लाड़ में हिये भीजत
ई घोप सब नारि नर॥

दोहा

यह जु लाड़ सागर विपुल बरनत लहौं न पार। लहरि रूप रस प्रेम
ो जामें उठति अपार॥ चितवनि में बरपत अमी बचन अमी रस सार।
जन उर सींचत सदा राधा नंदकुमार॥ ग्रह बन पद अंकित कियौ महा
बढ़े शोभ। द्रुम बेलिनु षट रितु रहति इहि सुख पोप जु गोभ॥ व्रज
नी सौभाग्य सुख विधि मुख कह्यौ न जाइ। जहाँ कृष्ण ह्वै बाछरू
टी जीभ लगाइ॥ गौर श्याम जननी जनक भाग्य प्रसंसै कौंन। सुर नर
ने क्यों कहिसकैं शारद विधि गह्यौ मौंन॥ राधा लाड़ सुहाग यह कह्यौ
॥ लहि भूर। पिय शोभा आसक्त नित प्यारी लाड़ गरूर॥ अष्टपहर
के रहै राधा लाड़नि चाह। थाह न काहू की मिलै गरुवौ मननि उमाह॥
लीला घोप की कहा बरनौं मति अलप। आदि कविनु अंत न लह्यौ

बरनत बीते कलप ॥ ठारह सै पैंतीसयौ नौमी सुकला माह । पूरन ग्रंथ यह रसिक दैंन उत्साह ॥ हीयौ प्रेम भिजावनी जुगल लाड़ रस री लिखी ललित कर अच्छरनि केलिदास करि प्रीति ॥ नृपति बहादुरसिं उपज्यौ हिये हुलास । तिनकी निर्मल भक्ति सौं भये रस रतन प्रकास ॥

॥ इति श्री राधा लाड़ सुहाग ॥

॥ इति श्री लाड़ सागर सम्पूर्णम् ॥

पुस्तक मिलने के पतेः–

(१) ला० जुगलकिशोर काशीराम
रोहतक मण्डी (पूर्व पंजाब)

(२) ला० मुसद्दीलाल आत्माराम
नई मण्डी, मुजफ्फरनगर (यू० पी०)

(३) रतलाल बेरीवाला
श्री नंदबाबा का मन्दिर, मु० नंदगांव, जि० मथुरा ।

(४) रतलाल बेरीवाला
श्री नंदभवन (पुरोहित पाड़ा) मु० वृन्दावन, जि० मथुरा